

AN ALPHABETICAL INDEX

OF

The Aphorisms etc. occurring in Nandisūtra, Anuyogadvāra, Āvaś'yaka, Oghanirukti

Das'avaikālika, Pindaniryukti and Uttarādhyayanāsūtra.

ALONG WITH

detailed lists of subjects treated in these seven Āgamas.

Copies 1250.]

Price Rs. 2-0-0.

[A. D. 1928.

विजयनेतरां श्रीमद्गणपतिद्वादशाह्नात्मा.

विदितपूर्वमेतद्विधाश्चितां यदुतागमवाचनाप्रकाशकारिण्या यथार्थोमिधानया आगमोदयसमित्या श्रीमञ्जिनवरेन्द्रवदनविनिर्गतनिपदी-
 हिमवज्रातप्रभवः कोष्ठबुद्धिकलाबनन्यसाधारणगुणगणभृद्भिर्गणभृद्भिः रचित आगमविचय ऐदंशुगीनश्रमणसोपकृतये वाचनायां सौ-
 क्यार्थं च मुद्रापितः, मुद्रापिते च तस्मिन् उत्तमोत्तममुद्रणलयसत्त्वोत्तमोत्तमाक्षरैर्जातमत्स्येव समेषां पाठकाध्येतृविलोककानां शर्मनूनं, परं
 येषामन्यग्रन्थावलोकनेऽनेकन हुर्येषा विपया अवभासेरक्षेपां यथार्थतया तद्विषयमूलस्थानजिज्ञासापूरणाय सूनाकारादिकमयुतो विषया-
 नुरक्तोऽवसुपदीक्षितभाणो विदुषां करिष्यस्युपकारमसमं, विषयानुरक्तो लघुस्तावद् अध्ययनानामनुरूपेण महास्तु विषयदर्शनपुरस्सरं
 वादादिस्थानविशेषपूजनयाऽलंकृतः, क्षन्तव्योऽपराधोऽनयत् मुद्रणसौकर्याय सर्वपामागमानां स्वानि सूत्राणि स्या गाथाश्चैकीकृताः, प्रति-
 वाक्यार्थं निर्युक्तिगाथा माध्यगाया अपि च समीप्य विवक्षिताः, अन्यथा प्रतिस्थानं श्रुतस्तन्वाध्ययनोद्देशसूत्रगाथानां पृथक् पृथगंकन्यासेन
 निर्युक्तिमूलमाध्यमाध्ययनशतकसंग्रहणीगाथादीनां पृथक्पृथगक्षरोपन्यासेन च गौरवं स्यात्, या च क्षतिमुद्रणे जाताऽङ्कानां विद्वारादिना
 कारणेन तस्याः मार्जनाय चानाङ्कशुद्धिरादावधृता लब्धौ महती च सा विलोकनीयाऽनश्यं, श्रारंभे दृष्टिगोचरीकार्येभ्य संकेतसूचकोऽधि-
 कारश्च सदैव तेन मुद्रापितो मतिमद्भिः, परशास्त्रगतसूत्रसूत्रगाथानिर्युक्तिमाध्यादिस्थानजिज्ञासायां अकारादिकमवलोककानां चोपकरिष्यति
 स्पष्टं विशिष्टाङ्कशुद्धिपत्रिकाऽकारादिकमस्य पुत्रो मय्ये धृतेत्यर्थयन्ते आनन्दसागराः १९८४ पौषकृष्ण १३ शुक्रवासे इडडुगै.

शान्तिं वृत्तः शान्तिविनस्य मूर्त्या, दुर्गास्यचैलालयमाश्रयन्त्या ।

अधिष्ठिते हीडरधाम्नि एषा, प्रस्तावनाऽकारि वनावदुद्धै ॥ १ ॥

श्रीआगमोदयसमितेः केषयंत्राः.

| अंक. | मूल्य. | अंक. | मूल्य. | अंक. | मूल्य. |
|-------------------------------------|--------------------------------|--------|----------------------------------|---------|--------|
| ३४ विशेष. गाथाकारादि विषयकमाः ०-५-० | ४३ अनुयोगद्वारसूत्रं सटीकं. | २-८-० | ४९ ग्रन्थ्याविधानादिकुलक ईर्याप- | ०-६-० | |
| ३५ विपारसारप्रकरणं छायायुक्तं ०-८-० | ४४ नन्दीसूत्रं सटीकं. | २-४-० | यिकी ३६ आदि सहित. | १-८-० | |
| ३६ मन्त्राचारपरमो सटीक ०-६-० | ४५ भक्तभरलोत्र पादपूर्ति काव्य | | ५० जीवसमाप्तः सटीकः | | |
| ३७ धर्मोद्देशुपकरणं सटीकं ०-१२-० | संग्रह भाग १ लो टीका तथा | | ५१ खुतिचतुर्विंशतिका चार संरुत | ६-०-० | |
| ३८ विशेषपरमभरण. मूल तथा | संग्रह भाग १ लो टीका तथा | ३-०-० | टीका सहित | | |
| दीक्षां गुजरतीभावांतर | भावांतर सहित. | २-०-० | ५२ खुतिचतुर्विंशतिका अनुगायदि | ६-०-० | |
| भा. १ लो | | २-०-० | सहित | ८-०-० | |
| ३९ जैन फिलोसोफी अभिनी | | १-०-० | ५३ चतुर्विंशतिका | | |
| ४० योग " | | ०-१५-० | ५४ भक्तभरपादपूर्तिरूपकाग- | | |
| ४१ कर्म " | | ०-१२-० | संग्रह भाग. | १ ३-०-० | |
| ४२ रायपसेणीय सटीक | | १-०-० | ५५ नन्दादि अकाराणुत्तमणि. | १-०-० | |
| | | | ५६ आवश्यक क्षीमलयागिरि रीतिगत | | |
| | | | टीका सहित भाग. १ लो | १-०-० | |

शेठ-देवचन्द-लालभाई-जैन-पुस्तकालय संस्थायाः कृतग्रंथाः

ग्रन्थाः

| क्र.सं. | ग्रन्थ. | क्र.सं. | ग्रन्थ. | क्र.सं. | ग्रन्थ. |
|---------|---|---------|------------------------------------|--|-----------------------------------|
| १० | आनन्द काव्य म० मौक्तिक | ५९ | तंदुलदेवाजीप्रथमो सटीक. | १-८-० | ६७ तत्त्वार्थप्रथमसूत्र भाष्यदोहा |
| १२ | " " ४ मुं ०-१२-० | ६० | विश्वसिद्धान्तपरिचयं पदार्थ | १-०-० | युक्त पूर्वार्थ ६-०-० |
| १३ | " " ५ मुं ०-१०-० | ६१ | फलसमूहसूत्राणि | २-०-० | ६८ नवप्रकरणं लघुयुक्तिः १-०-० |
| १४ | आत्मवैयर्थ्यसूत्राणि | ६२ | सूत्रोपा सामान्यी | ०-८-० | ६९ पंचवस्तुप्रथमं सटीकः ३-०-० |
| १५ | उपनिषद्. (प्रश्नोत्तरप्रकार) | ६३ | धीमलपरिचयं प्राकृते सब- | ७० आनन्दकाव्य म० मौक्तिक | |
| १६ | आपराधविमर्श. | ६४ | वैयर्थ्यं | ८ मुं. | १-८-० |
| १७ | तत्त्वार्थप्रकाश सटीक तत्त्वार्थ. २-०-० | ६५ | नवप्रकरणद्वाराः सटीकः ८- | ७१ वाचस्पत्यदीपः | १-८-० |
| १८ | धीमलपरिचयं संस्कृते. | ६६ | तत्त्वार्थ. | ७२ विचाररत्नाकर | ३-०-० |
| १९ | सूत्रप्रकाश. | ६७ | (द्रव्य) छोटप्रकाशः भाग १लो २-०-० | ७३ नवप्रकरणं पृथग्दृष्टिः | ४-०-० |
| २० | नवप्रकरणद्वाराः सटीक पूर्वार्थ. १-०-० | ६८ | आनन्दकाव्य म० मौक्तिक ७ मुं. १-८-० | ७४ (क्षेत्र) लोकप्रकाश भाग. २ लो २-८-० | |

॥ १ ॥

| गृथादि | नाममाहः | सूत्रादि | नाममाहः | सूत्रादि | नाममाहः | सूत्रादि | नाममाहः | सूत्रादि |
|-------------------|---------|----------|--------------------|----------|---------|----------------------|---------|----------|
| अस्तरलिअसंहिअहिं | ३ | १०२७ | अमलं वलिहं दारं | ५ | १६८३ | अस्यं रयणं चैव | ७ | १३७० |
| अस्तराणेवाणि. पर० | ५ | १८५ | अमिवावदतोने | २ | ८९ | अवतकालस समूल० | ७ | ११५६ |
| अयसेवणीअविरत्ना | ५ | २०७ | अमिन्मि हवीं हूयद | ५ | १०१ | अवतनियपलभा | ७ | ५९९ |
| अक्से वराडए वा | ३ | १५२९ | अमिगए पववए | ३ | १३८९ | अवातन्नजिरोहे दुस्खं | ४ | ३२७ |
| अक्खे वराडए वा | ४ | ३३५ | अमिगुत्तुहा देवा | ७ | १६३३ | अवाहापो न सहे | ३ | १२८० |
| अयसे वराडए वा | ६ | ७ | अमी अ इ के कुते | ७ | ८८३ | अचित्तमक्खिपमि | ६ | ५३७ |
| अगलीणिज्जवणे चैव | ७ | ४५६ | अमोकीअंमि व जरा | ३ | १०३४ | अवेद कालो वुरंति | ७ | ४३६ |
| अगलित्स य खड्गं | ३ | १०४ | अमणयणवारिणणे | ६ | १७५ | अवेद ते महामाग ! | ७ | ३९२ |
| अगणीओ छिद्विज यं | ३ | १९१३ | अचियत्तमंतरायं | ६ | ३७३ | अच्छिन्नंपि य तिविहं | ६ | ३६६ |
| अगणीण य तेणेहि व | ४ | ४३९ | अचियेवज्जगणं | ३ | १५७९ | अच्छिमुह मज्जमाणो | ७ | ११५ |
| अगविट्ठस उ गद्वं | ६ | ७८ | अचेलओ अ जो घम्मो | ७ | ८६० | अच्छिरे माहले अच्छि० | ७ | १५२ |
| अगरिसानादपंगाहं | ७ | १५० | अचेलगस्स छहस्स | ७ | ८२ | अच्छेरासन्नुदए | ७ | २७८ |
| अमुत्ती दंभवेरस्स | ५ | २६५ | अचेल्लो अ जो घम्मो | ७ | ८४४ | अच्छेदोदपिट्ठपासु | ४ | ३५८ |

| पृथगादि | आमात्र | पृथापङ्कः | पृथापदि | आमात्रः | पृथापङ्कः | पृथापदि | आमात्रः | पृथापङ्कः |
|-------------------|--------|-----------|-------------------|---------|-----------|--------------|---------|-----------|
| अच्छोदसिदृणामु | ६ | ३४ | अजीवकमनोद्व्यलेसा | ७ | ५४० | अक्षयपसाजयणं | ५ | २२ |
| अजयं भासमाणो य | ५ | ३४३ | अजीवं परिपयं नवा | ५ | १३६३ | अक्षयपसाजयणं | २ | १२५३ |
| अजयं परमाणो अ (३) | ५ | ३२३ | अजुगलिजा अतुरंता | ४ | ३१३ | अक्षयपसाजयणं | ७ | ६ |
| अजयं पिठुमाणो अ | ५ | ३३३ | अज आहं गयी हुतो | ५ | ४९०३ | अक्षयपसाजयणं | ५ | ३६२ |
| अजयं भासमाणो अ | ५ | ३७३ | अज आहं गयी हुतो | ५ | २९५३ | अक्षयपसाजयणं | ३ | १५०+ |
| अजयं गुंजमाणो अ | ५ | ३६३ | अज आहं गयी हुतो | ७ | ६२ | अक्षयपसाजयणं | ७ | ५४६ |
| अजयं रायमाणो अ | ५ | ३५३ | अज आहं गयी हुतो | ५ | २९२३ | अक्षयपसाजयणं | ३ | ७२४ |
| अजयं रायमाणो अ | ५ | ३५३ | अज आहं गयी हुतो | ३ | ११९४ | अक्षयपसाजयणं | ७ | ३७४३ |
| अजयं रायमाणो अ | ३ | २२४+ | अज आहं गयी हुतो | ७ | १४३३३ | अक्षयपसाजयणं | ७ | ३७६३ |
| अजयं रायमाणो अ | ७ | १६१६३ | अज आहं गयी हुतो | ७ | ४६८३ | अक्षयपसाजयणं | ३ | १२९९ |
| अजयं रायमाणो अ | ७ | १६१६३ | अज आहं गयी हुतो | ७ | ७९३ | अक्षयपसाजयणं | ६ | ३८८ |
| अजयं रायमाणो अ | ३ | २७८ | अज आहं गयी हुतो | ४ | ७४६ | अक्षयपसाजयणं | ७ | १३२२३ |
| अजयं रायमाणो अ | ५ | १४५ | अज आहं गयी हुतो | ४ | ७४८ | अक्षयपसाजयणं | ७ | ११३२३ |
| अजयं रायमाणो अ | ७ | १९६ | अज आहं गयी हुतो | | | अक्षयपसाजयणं | | |

नं. अं. आ.

जो.

व. सि. उ.

॥ २ ॥

| श्रुत्यादि | भागमाहः | सूत्रमाहः | श्रुत्यादि | भागमाहः | सूत्रमाहः | श्रुत्यादि | भागमाहः | सूत्रमाहः |
|----------------------|---------|-----------|---------------------|---------|-----------|------------------------|---------|-----------|
| अट् नरं य० जो टिओ | ३ | १५८५ | अट् विह् नम्यस्य० | ७ | २८७ | अट्वाए अण्वाए | ६ | १०३ |
| अट् नरं य० जो निवओ | ३ | १५०२ | अट् विह् नम्यस्य० | ५ | ३६७ | अट्वाण्डाहिंसाऽकथा | ३ | +६ |
| अट् नरं य० जो निस्तओ | ३ | १५८९ | अट् विह् नम्यस्य तु | ७ | ११२२ | अट्वास्त उ सहस्ता | ५ | १७८ |
| अट् नर यम्य मुक् | ३ | १५ | अट् विह् नम्यस्य | ५ | ३१९ | अट्वास्त ठाणां | ५ | २६९ |
| अट् नम्याइ युच्छामि | ७ | १२६७ | अट् विह् नम्यस्य | ३ | १०७९ | अट्वास्त गुरिस्तेमुं | ४ | ४४४ |
| अट् नम्याइ देवादिं | ४ | ३९८ | अट् विह् नम्यस्य | ५ | ३३ | अट्वास्त सागरपादं | ७ | १६०१ |
| अट् नम्याइ नम्याइ | ७ | १४३१ | अट् विह् नम्यस्य | ५ | ३०६ | अट्वास्त य नलीए | ५ | २० |
| अट् नम्याइ पयङ्गोण | ३ | १०६ | अट् विह् नम्यस्य | ७ | ११ | अट्वास्त यं पुञ्जित | ३ | ३०७ |
| अट् नम्याइ च यासा | ३ | ६६६ | अट् विह् नम्यस्य | ३ | ०२० | अट्वास्त यं पि सेछे | ३ | ४३४ |
| अट् निमित्तादं | ३ | +४९ | अट् विह् नम्यस्य | ३ | १५६३ | अट्वास्त देवास्त | ३ | १३३+ |
| अट् नम्या अंतपत्ती | ४ | ७३५ | अट् युवि समिर्गमु | ७ | ४६२ | अट्वास्त गंगा भोक्त्वं | ३ | ४०१ |
| अट् नम्या अंतपत्ती | ७ | १२१ | अट् सुहमाइ पेहाण | ५ | ३४७ | अट्वास्त सपत्तयं | ३ | ००५ |
| अट् नम्या अंतपत्ती | ३ | २६६ | अट् वगडा एमा | ३ | ४१४ | अट्वास्त देसिजं | ३ | ००४ |

| सूत्रादि | आगमादः | सूत्रादः | सूत्रादि | आगमादः | सूत्रादः | सूत्रादि | आगमादः | सूत्रादः |
|------------------------------|--------|----------|--------------------|--------|----------|--------------------------|--------|----------|
| अद्भुतब्रह्मदाने | १ | ३८५ | अणदंसनपुंसित्थी | ३ | ११६ | अणंत० जलपराणं | ७ | १५५०५* |
| अद्भुतज्ञा[अद्भुता उल्लसत्वा | ३ | २८४ | अणमिगादिआ भासा | ५ | २७२ | अणंत० वेददियदीवाणं | ७ | १५१६५* |
| अद्भुतज्ञा हत्था दीहा | ४ | ७०२ | अणमिगादिण यवा० | ४ | १४१ | अणंत० वेदजीवाण अंतरं | ७ | १४८८५* |
| अद्भुतज्ञेतु दीवसमु० | ३ | २५ | अणमिगाहियकुदिट्ठी | ७ | १०८६५* | अणंत० देवाणं हुज्ज अंतरं | ७ | १६१८५* |
| अद्भुतज्ञेहि रांदिपहिं | ३ | ८७५ | अणमोगकारणेण द | ३ | १२९६ | अणंत० नेरइयाणं तु | ७ | १५४१५* |
| अद्भुतरुगो उ वे दोवि | ४ | ३१५+ | अणमोगेण भण्ण य | ४ | ४८२ | अणंत० एणगजीवाण | ७ | १४७७५* |
| अणगारुगेहिं च | ७ | ११५२५* | अणमिच्छमीममम् | ३ | १२१ | अणंत० वेददियजीवाणं | ७ | १५०७५* |
| अणगारे निकेदो | ७ | ५४९ | अणसणमूणोअरिआ | ५ | ४७ | अणंत० वाडजीवाण अं० | ७ | १४९७५* |
| अणवाविअ अवलिअं | ४ | २६६ | अणसणमूणोअरिआ | ७ | ११०५५* | अणंत० विजटमि० काए | ७ | १५२६५* |
| अणवावियं अयलियं | ७ | १०१६५* | अणसीयणा य भत्ती | ५ | ३२८ | अणंत० विजटमि सए | ७ | १४६३५* |
| अणपुण्वीए ऊ | ७ | +३६ | अणंतकालमुणेस | ७ | १३८७५* | अणाइकालप्पमवत्स | ७ | १२६६५* |
| अणत्थदेहे चउन्विदे | ३ | ४५ | अणंतकालमुणेनं | ७ | १४५५५* | अणगयमइकंतं | ३ | १६६० |
| अणथोवं वणयोवं | ३ | १२० | अणंत० कायटिई एणगा. | ७ | १४७६५* | अणाटियं च थंद्धं च | ३ | १२११ |

[illegible]

| सूत्रादि | भागमात्रः | सूत्राद्यः | सूत्राद्यादि | भागमात्रः | सूत्राद्यः | सूत्राद्यादि | भागमात्रः | सूत्राद्यः |
|-----------------------|-----------|------------|--------------------|-----------|------------|------------------------|-----------|------------|
| अनुनाहंउदिद्वित० | ३ | १४८ | अणतममुत्तचं | ५ | ३६+ | असवणंतंरंपारंपरे य | ७ | ४०+ |
| अणुमिन्नोऽवि न रुसर्ह | ४ | ५८ | अण्वंसि गहोर्हंसि | ७ | १२८* | अत्तवज्जासंमि अ | ५ | ८३ |
| अणुकरयएणुगह० | ३ | १४९ | अण्यं गामं च वए | ४ | २४४ | अत्तद्वा गुरुजो दुद्धो | ५ | १९१* |
| अणुवटंते तहविहु | ४ | ४०२ | अण्यं च वएगामं | ४ | ५०७ | अत्तद्वा रंघंते | ६ | २७३ |
| अणुसमयनिरतर० | ७ | २१५ | अण्णाणमाकपरिय० | ३ | १५७ | अत्तद्विय आयागे | ६ | २५५ |
| अणुसासनमोवायं | ७ | २८* | अण्णायया अलोहे य | ३ | १३७२ | अत्तवयणं तु सत्वं | ५ | ३५+ |
| अणुसासिओ न कुप्पिजा | ७ | ९ | अण्णेण विसेसेणं | ७ | ११२०* | अत्तादिद्वियजोगी | ४ | २२६+ |
| अणुवोअगदिअयदु० | ५ | ५०१* | अतंतवावुदुगु | ४ | ५५४ | अत्तादिद्वियजोगी | ६ | ११२ |
| अणुसोअसुहो लोओ | ५ | ५०२* | अतंतवावुदुगु सेहा० | ४ | ६९३ | अत्तकरो अ-हियकरो | ३ | १०८३ |
| अणूणाहरितपडिलेहा | ४ | २६९ | अतंतस्स उ पासा | ४ | ३२५ | अत्तकहा अमकहा | ५ | १९० |
| अणेगटंशमिद माणनेहिं | ७ | ७७४* | अतंतो उ निसन्नो | ३ | १५९३ | अत्तवहुलं महत्वं | ५ | १७६ |
| अणेगवासा नउया | ७ | १९०* | अतंतो व निवज्जे | ४ | २१० | अत्तयगहत्तक्कालि | १ | ४१* |
| अणेगाय सदत्साणं | ७ | ८६६* | अतिहिसंविभागो नाम | ३ | ४९ | अत्तमहंतीवि कहा | ५ | २१६ |
| | | | अतिसिमे०अणभासी | ५ | ३६३* | | | |

| गुणवर्गः | भागमाहः | सूत्रावधः | सूत्राहः | भागमाहः | गुणवधः | भूतवर्गः | भागमाहः | सूत्रावधः |
|---------------------|---------|-----------|--------------------|---------|--------|---------------------|---------|-----------|
| अथस्य अह मुद्धी | ५ | २०+ | अविधितमभट्टमा | ५ | २२+ | अट्टमा सहस्रा | ३ | २०६ |
| अथदिगो इत्ये | ७ | ४२+ | अथिति मित्रिणो | ५ | २६+ | अट्टचेरसद्योदी | ३ | ३३२ |
| अथान्वमि आहवे | ५ | ३६२३ | अथि यट्टगमभगप | ५ | ११४ | अट्टचेरसलब्धा | ३ | २८० |
| अथ य धर्म य विद्या० | ७ | ३९१३ | अथि यययसद्य | ५ | १०७ | अट्टदं अदिवडो | ३ | ५८७ |
| अथद्विलसंभगो | ४ | १४ | अथि सगंरविद्या | ५ | ३२+ | अट्टमहमसिस्तु ति० | ३ | १५१ |
| अथान्वमि य सूरमि | ७ | ५४२३ | अथिरस पुन्यगदियस | ३ | ७०१ | अट्टमसगस सबं० | ६ | २५० |
| अथ भासद अथा | ३ | ०२ | अथिरसं तुपुस | ७ | ५३९ | अट्टाह अवट्टाणं | ३ | ५८ |
| अथार्ण इगद्वमि | १ | ७६ | अंरसं येर अकथं च | ७ | ११७० | अट्टागपरिसंतो | ४ | १५६+ |
| अथार्ण ओगद्वमि | ३ | ३ | अदीपो विनिमिसिचा | ५ | १८५ | अट्टाणं जो महंतं तु | ७ | ६१८ |
| अथसद्वगद्वपका भगो | ६ | ३३२ | अथगमंरं वा | ४ | २१५+ | अट्टाणं सपादेजो | ७ | ६२० |
| अथि णं पुं ठाणं | ७ | ९१२३ | अट्टि कि वेला तेमि | ४ | ६०+ | अट्टाणमि पवेसिचा | ३ | +६१ |
| अथि णो महदीवो | ७ | ८९५ | अट्टमहवसारं | ३ | २०० | अट्टाणो यल्लंथो | ३ | १३०९ |
| अथिसि ता विपण | ५ | ७७ | अट्टमा महग्मा | ३ | २७३ | अट्टाणे पासाए | ३ | १२४५ |

| मृगशालादि | क्षयमाहः | सुशायकः | मृगशालादि | अगमाहः | सुशायकः | सृतावादि | अगमाहः | सुशायकः |
|---------------------|----------|---------|---------------------|--------|---------|---------------------|--------|---------|
| अडाएवमखणं | ३ | १६७५ | अन्नवंसि महोदंति | ७ | १०१३ | अन्नोऽविय अणगारो | ७ | १०५ |
| अदिह दिद्विपण्य | ६ | ४८७ | अन्नं इमं मर्गं | ३ | १६४९ | अपरिवद्वयाणं भंते! | ७ | ४४ |
| अधिर्ग पुच्छा आसन्न | ६ | ५०६ | अन्नं पापं च पणं च | ७ | ७२७३ | अपरिवद्विणतो आगंसु | ४ | ५९० |
| अधुवं जीविभं नवा | ५ | ३६८३ | अन्नं पिच रो नामं | ५ | १६७ | अपराजिअविस्सेणो | ३ | ३२९ |
| अधुवे असासयमि | ७ | २०८३ | अन्नायउठ चरड | ५ | ४४२३ | अपरिणवपी य दुविहं | ६ | ६०९ |
| अनिअयवासं सिद्धत्य० | ३ | ४९२ | अन्नावएमओ नायिवादे | ५ | ८० | अपरिमियनेदुदुट्टी | ६ | ३१८ |
| अनिअयवासो समु० | ५ | ५०४३ | अन्नाविट्टसंगे पंता | ३ | १३२६ | अपरिमियपरिमाहं | ३ | ४१ |
| अविलेण न वीए न | ५ | ४६३३ | अन्निओ रायसरसेहिं | ७ | ५१०३ | अपसत्थो य असंजम० | ६ | ६३ |
| अन्नहुजडिया था | ६ | ३६५ | अन्नियपुत्तायरीओ | ३ | ११९५ | अपसमाणो पस्सामि. | ३ | ५५ |
| अन्नहं पयाहं रुयणं | ५ | ३८६३ | अन्नेणाहाअन्नं | ६ | ११४ | अपहुणते काले | ४ | ६४५ |
| अन्नसिद्धारसहुणा | ५ | ३७५ | अन्ने मणंति दमसुवि | ६ | ५९२ | अपुच्छिओ न भासिज्जा | ५ | ३८१३ |
| अन्नत्य निवडिण | ३ | १६८८ | अन्नसि दिज्जमाणे | ६ | ४६३ | अपुहुत्तुहत्ताइ | ५ | ४ |
| अन्नयरपमायजुयं | ३ | १४३८ | अन्नोऽन्नं अंकमि ३ | ४ | ३९२ | अपुहुत्ते अपुओगो | ३ | ७७३ |

| मृदागारि | आपवाध | सूत्राध्यानु | सूत्रागारि | आपवाधः | सूत्राध्यानु | सूत्रागारि | आपवाधः | सूत्राध्यानु |
|-----------------------------|-------|--------------|----------------------|--------|--------------|----------------------------------|--------|--------------|
| अपस्करारमसरिदं | ३ | ८८६ | अपस्तेष्विय वासे | ६ | २६ | अप्या हि अपुत्राजो | ४ | ११ |
| अपस्करारं महत्वं | ४ | ११५ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ३५ | अपिया देवकामाणं | ७ | १०९ |
| अपस्तेष्विय महत्वं वृत्तीता | ३ | ८८० | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | २४२ | अप्युत्वं | ३ | ६५३ |
| अपस्तेष्विय वा महत्वं वा | ३ | ३२३ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ६९३ | अप्युत्वं | ३ | १८१ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | १९६ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | ४७१ | अप्युत्वं दृष्ट्यां अस्मद्व्याजं | ४ | ११३७ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | १३० | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ३३७ | अप्ये सिवा भोजनज्वा | ५ | १३३ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ५ | २३० | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ३ | ९९ | अप्ये सिवा य सगा | ४ | १७३ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ५ | ४२८ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ७३५ | अप्ये सिवा य सगा | ४ | ३२२ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ७१० | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ५ | ५१५ | अप्ये सिवा य सगा | ७ | ५५२ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ६ | २८९ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | २६२ | अप्ये सिवा य सगा | ५ | ३५ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ६ | ५६१ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | ७३४ | अप्ये सिवा य सगा | ७ | ३२२ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ५ | ३८२ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | २१४ | अप्ये सिवा य सगा | ५ | २२४ |
| अपस्तेष्विय अपसीय वा | ४ | ३६१ | अपस्तेष्विय अपसीय वा | ७ | १५ | अप्ये सिवा य सगा | ३ | ६८० |

| सूत्राणां दि | भागमाहः | सूत्राणां दि | व्याख्यामाहः | सूत्राणां दि | सूत्राणां दि | सूत्राणां दि | भागमाहः |
|-------------------------|---------|--------------|--|--------------|--------------|----------------------|---------|
| अन्मत्स्यं सव्यजो सव्यं | ७ | १६६॥ | अव्युद्धानं अंजलिं० | ५ | ३१३ | अमणियपुव्वनिउत्तं | ४ |
| अन्मत्स्यं निम्मलत्तं | २ | ११७॥ | अव्युद्धानं अंजलिं० अमि० | ५ | ३२३ | अमचट्टियाण दाउं | ४ |
| अवंगियसंवाहिय | ६ | ४२३ | अव्युद्धानं अंजलिं० (अंजलिं०) लिक्खणं० | ७ | ११२९॥ | अमयं तुल्लं नरत्तं ! | ७ |
| अन्मत्तं (अव्युद्धानं) | ३ | ५४९ | अव्युद्धानं गुरुपूया | ७ | ९९८॥ | अभिईसवणघणिट्ठा | २ |
| अन्मासविपत्तिं छंदा० | ५ | ३१४ | अव्युद्धानं तवमा | ७ | ९९५॥ | अमिं कंसेतेदि सुमा० | ३ |
| अन्माहयंति लोतांति | ७ | ४६१॥ | अव्युद्धाने विणए | ३ | ८४८ | अभिक्खणं कोहीभवइ | ७ |
| अभिमतपरिभोगं | ४ | ३५४ | अव्युद्ध्यं रायारिं | ७ | २३३॥ | अभिक्खणं कुमारेदि | ३ |
| अभिमतपरिभोगं | ६ | ३० | अव्युद्ध्यमंमि नजइ | ३ | ६६९ | अभिगम चउरो समाहिओ | ५ |
| अभिमतपरिभोगं | ४ | १६८+ | अव्युद्ध्यं गमणाइ य | ६ | १९० | अभिपंणाल सुमतो | ३ |
| अभिमतपरिभोगं | ३ | १५०७ | अमए सिद्धिउमारे | १ | ७२॥ | अभिपेयवणमिपेओ | ७ |
| अभिमतपरिभोगं | ७ | १३२ | अमओ पल्लिवा ! तुल्लं | ३ | ९४९ | अभिभूअ काण पपी० | ५ |
| अभिमतपरिभोगं | ३ | ६३ | अमणं तस्स उ तस्सेव | ७ | ५५८॥ | अभिभावे संजोगो | ७ |
| अभिमतपरिभोगं | २ | ६९॥ | अमणं तस्स उ तस्सेव | ४ | ५९१ | अभिवादन अव्युद्धानं | ७ |

| सुश्रावदि | अध्यायः | सूत्रादि | अध्यायः | सूत्रादि | अध्यायः | सूत्रादि |
|-------------------|---------|----------|---------------------|----------|---------|----------------------|
| अधिवाहरो कतिश्च० | ३ | १८२५ | अधोहं यश्चं कुञ्जा | ५ | ३६७५ | अरहं भिटुलो क्वा |
| अभिसंभूता सा सति | ३ | १००२ | अयश्चक्रमोहं व | ७ | १८४५ | अरहं अचेल इती |
| अम् जिगा अति जिगा | ७ | ९३५ | अयाराहुरपरम् | ५ | १३५ | अरहं दुगुहाए |
| अमलो व होइ जीवो | ५ | ५४५ | अयगाइयदिगाले | ४ | २८३ | अरहं गं विसुइया |
| अमज्जमंसोसि अम० | ५ | ५०६५ | अयमवरो इ विक्रपो | ६ | ४१५ | अमज्जमंसरे दुणिग |
| अमणुष्माणं सराह | ३ | १६ | अवलपुरा गिरहते | १ | ३२५ | अरहं वित्तं यावि |
| अमणुष्मअन्नसंजो० | ४ | ४२१ | अवलपुरे जुवरावा | ७ | ९८ | अरहं चकवटी |
| अमरनरायमहिओ- | ३ | ५४० | अवले विजए भरे | ३ | ४१५ | अरहं वन्युक्षरो एवं |
| अमरोषमं जाणिअ | ५ | ४९२५ | अयसिवाणं व कुमुमिअं | ३ | १०३५ | अरहं वन्युक्षरो जीवं |
| अमराय ! मए मोगा | ७ | ६११५ | अवसिहारेमन्थनिउ० | ५ | २५५ | अरहं ताई निअमा |
| अमुंगी पुणे रत्नं | ६ | २४१ | अयसीपुण्णं कामा | ७ | १२९७५ | अरहं ताणं आसाराणादि |
| अमुगं विज्ज मन्थं | ३ | २४४५ | अवं साहसिमओ मीमो | ७ | ८८६५ | अरहं वणसेणं सिद्धा |
| अमुगांति वदिअ ठ | ६ | २३५ | अरहरुसरे पदोणसंथवे | ७ | ७७९५ | अरहं ते वंदिता पउइस० |

| गूणादि | भागमाहः | मूलादिः | मूलादि | भागमाहः | सूत्रादिः | सूत्रादि | भागमाहः | सूत्रादिः | सूत्रादिः |
|---------------------|---------|---------|--------------------|---------|-----------|-------------------|---------|-----------|-----------|
| अदिह० धन्वां भवकलयं | ३ | १२४ | अलियमुवपावजण्यं | ३ | ८८१ | अवत्तमपहू धरे पडे | ४ | ४६८ | सूत्रादिः |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ५ | १४७ | अलोए पडिहया सिद्धा | ३ | ९५९ | अवदली उत्तजो | ७ | ४०२ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | १२६ | अलोए पडिहया सिद्धा | ३ | १४२९५ | अवयास भागभेदो | ४ | २४४+ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | १७९ | अलोए पडिहया सिद्धा | ५ | ४४८५ | अवयासभाग (पाय) | ५ | ५८१ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | ४५१ | अलोए पडिहया सिद्धा | ७ | ९७५५ | अवरत्तुयस्स तसो | ७ | १३४८ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | १९ | अलोए पडिहया सिद्धा | ५ | ४७७५ | अवरत्तुयस्स तसो | ५ | ३४२ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | १२१ | अलोए पडिहया सिद्धा | ७ | १३६९५ | अवरत्तुयस्स तसो | ३ | १+ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | १०८ | अलोए पडिहया सिद्धा | ७ | २८२५ | अवरत्तुयस्स तसो | ३ | १५३ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ७ | १४३९५ | अलोए पडिहया सिद्धा | ७ | ३१९५ | अवरत्तुयस्स तसो | ३ | ११८+ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ४ | १३३+ | अलोए पडिहया सिद्धा | २ | ६१५ | अवरत्तुयस्स तसो | ५ | ३२४ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ४ | २२५+ | अलोए पडिहया सिद्धा | ३ | १२१५ | अवरत्तुयस्स तसो | ७ | १०२६५ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ५ | ३०४५ | अलोए पडिहया सिद्धा | ५ | ३२० | अवरत्तुयस्स तसो | ७ | ६५६५ | |
| अदिह० सव्यपावपणसो | ३ | ४३५ | अलोए पडिहया सिद्धा | ५ | ४४७५ | अवरत्तुयस्स तसो | ७ | ३२१५ | |

| सूत्रादि | आगमाङ्कः | सूत्रावङ्कः | सूत्रावादि | आगमाङ्कः | सूत्रावङ्कः | सूत्रावादि | आगमाङ्कः | सूत्रावङ्कः |
|-----------------------|----------|-------------|------------------------|----------|-------------|------------------------|----------|-------------|
| अयदाऽसमोदविवेग० | ३ | १९० | अविसुद्धभावलेसा | ७ | ५४४ | असद्वोसदुष्यतवेदे | ५ | ४७३ |
| अवेदेदियदिद्विसुततममे | ७ | ३८७ | अविसोसिया मई मईनागं | १ | २५ | असदं तु मणुस्सोहिं | ७ | २५५ |
| अवि अल्लो मरणनवा | ४ | ५१ | अविहीरवमसंविहो | ४ | १०१+ | असदं मल्लिमवेरो | ४ | २१ |
| अविणासी खलु जीवो | ५ | ४७+ | अविहीरविहीरिजो | ४ | १५+ | असदं य चिलिमितीए | ४ | २३५ |
| अवि नाम होज, सुलभो | ६ | ४५१ | अविहीरुच्छा अत्थित्व | ४ | ६५ | असदं य निवत्तेसुं | ४ | ५५६ |
| अवि गवपरिस्त्रेवी | ७ | ३३४ | अविहीरुच्छा उम्माहिं० | ४ | २६८ | असदं लभेपुण मत्तए | ४ | ७१९ |
| अवि भमरमदुयारिणा | ५ | १२५ | अव्वक्काजिअटेवं | ४ | ३७३ | असद्वोसं सभं च | ५ | २८० |
| अविय द्दु बत्तीसाए | ६ | ३७९ | अव्वक्किरात्ताउं | ४ | ५१६ | असत्ताइयजिजुसी | ६ | १४१८ |
| अवियारमत्तयवत्तण० | ३ | १८० | अव्वयाहं दुविहं दन्वे | ३ | १२३५ | असत्ताइयजिजुसी क्किं० | ३ | १५१३ |
| अवियलमणं वलं | ७ | २२२ | अव्वोच्छिन्ना तसा थाणा | ४ | ३२३ | असणं० तं च संघट्टिआ दए | ५ | १२० |
| अविटकाहीहारं | ६ | १९४ | असद अपज्जते वा | ४ | ५५+ | असं० ति जुंजता चरण० | ३ | १५१४ |
| अविसिंदुमिनि जोगमि | ४ | ५२ | असद मिहिं नालियाए | ४ | ३७ | असब्बाणं तु दुविहं | ३ | १४१९ |
| अविसुद्धो परिणतो | ६ | ५३० | असद वसहीए वीमुं | ४ | १८+ | असणं० उदुमिं हुज्ज | ५ | २१८ |

| सूत्रादि | आयमाहः | सूत्रायहः | पुत्रादि | वाममाहः | सूत्रायहः | सूत्रादि | आयमाहः | सूत्रायहः |
|---------------------|--------|-----------|-------------------------|---------|-----------|----------------------------|--------|-----------|
| असं पणगं चैव | ३ | १६८३ | असंस० अयतिष्ठे मुढवीणां | ७ | १४५४* | असिपते घणु कुम्भे | ३ | +११ |
| अलणं पणगं चैव | ३ | १६८७ | असंसत्ताळुकोसं | ७ | १३८६* | असिध्वजीवो अगिद्वे अनित्ते | ७ | ५०९* |
| असणं पणगं वावि | ५ | १०६* | असंस० वं कायं तु असुचजो | ७ | १४९६* | असिवाईकारमिजा | ४ | ७ |
| असणं पाणगं वावि | ५ | १०८* | असंसलमाणो पलियस्स | ७ | १५६४* | असियाइकारणेहिं | ३ | १३४३ |
| असणं पुप्फेसु हुल्ल | ५ | ११६* | असंसयं जीविय मा | ७ | १२५* | असिवे ओमोयरिए | ३ | १२९७ |
| असणं धणिग्गिद्धुर | ५ | ११०* | असंसयं न वंदिल्ला | ३ | १११७ | असिवे ओमोयरिए | ४ | ८ |
| असणं समणद्दा पगंड | ५ | ११२* | असंसयदा इमे जंबा | ५ | ३१०* | असिवे ओमोयरिए | ४ | ११२ |
| असणाईण चळ्हदि | ६ | १७० | असंसट्टेण हत्थेण | ५ | ९४* | असिवे सहसं कत्थं | ४ | १८+ |
| असमाणो चरे मिकखू | ७ | ६७* | असंसत्तं पलोइल्ला | ५ | ८२* | असिवोमाययेणसुं | ३ | १४५६ |
| असरीय जीवयणा | ३ | ९७७ | असासए सररंमि | ७ | ६१३* | असीहिं अयतिवणेहिं | ७ | ६५५* |
| असद्याइ सहायत्तं | ३ | १०१३ | असासयं द्दु इयं विहारं | ७ | ४४७* | असुद्धुमिमिदुदंसण० | २ | ७४* |
| असंस० अयतिठिई आऊणं | ७ | १४६२* | असिअसिरओ सुनयणो | ३ | ७०+ | असुद्धुणे पडिया | ३ | ११२३ |
| असंस० अयतिठिई तेऊणं | ७ | १४८७* | असिअसिरओ सुनयणो | ३ | १२२ | असुद्धुमलपरिय० | २ | ७५* |
| | | | | | | असुद्धुसुं अबबच्चवं | ४ | २८९+ |

| पद्यादि | भाग्यद्वयः | सूत्रादिः | स्वादि | आदि | सूत्रादिः | सूत्रादि | भाग्यद्वयः | सूत्रादिः |
|-------------------|------------|-----------|-----------------|-----|-----------|---------------------|------------|-----------|
| अमुरा नामसुखा | ७ | १५७८३ | अह अत्रया कयादि | ३ | ३५० | अह ओषयारिजो पुण | ५ | ३२१ |
| अमरुत्री य दोदया | ७ | १४७२३ | अह अत्रया कयादि | ७ | ४१२ | अह कालमि संपदे | ७ | १५९३ |
| असंतिजालोसिपिनि | ७ | १३२४३ | अह अत्रया कयादि | ७ | ४३२ | अह कीस पुण गिहया | ५ | ११३ |
| असंतिजालो भगोदि | ५ | १२६ | अह अत्रया कयादि | ७ | ४३९ | अह केसंमि वज्जणे | ७ | ३९३ |
| असंतिजालो गगं | ६ | ४६० | अह अत्रया कयादि | ७ | ४६८ | अह केसंमि वज्जणे | ७ | ५५१३ |
| असंतिजालो य पको | ३ | ७४० | अह अत्रया कयादि | ७ | ७६६ | अह कुमुसंभवे कठे | २ | २९३ |
| असंतिजालो पंदि ना | ३ | १३६३ | अह आगो तुंलो | ३ | ६०१ | अह कोई न इच्छिया | ५ | १५५३ |
| असापमाइयाजो जादि | ३ | ६७३ | अह नागो सपरिसो | ७ | २९२ | अह को पुणाद नियमो | ४ | ६२९ |
| असापमाइयो हो | ३ | ३६६ | अह आसगो राया | ७ | ५५३ | अह संतिमद्वज्जव० | ३ | १६९ |
| असा हपी मनुसा मे | ७ | ७१२ | अह आसगो राया तं | ७ | ३९७ | अह विचयुद्वप्परस्त | ३ | ६१४ |
| असिपिपिय नियसि | ३ | १३३० | अह उयअद्वस्त | ३ | ७२४ | अह चोइसादि ठागेदि | ७ | ३३२ |
| असि अ इ के वुणे | ७ | ८८८ | अह असिपण सुतेण | ७ | ७९३ | अह जगद गोलमं | ४ | ९० |
| अह अदि ठागेदि | ७ | ३३० | अह एसाइआए | ७ | ४७४ | अह जे संतुदे मिस्सु | ७ | १५२ |

| सूत्रादि | आगमाङ्कः | सूत्राद्यङ्कः | सूत्रादि | शब्दमाङ्कः | सूत्राद्यङ्कः | सूत्रादि | आगमाङ्कः | सूत्राद्यङ्कः |
|---------------------|----------|---------------|--------------------|------------|---------------|---------------------|----------|---------------|
| अह तस्य अइच्छतं | ७ | ६०५३ | अह पालियस्स घरणी | ७ | ७६२३ | अह मणई जयघोसं | ७ | ४७९ |
| अह तस्स पिआ पत्ति | ७ | ४३७ | अह पिच्छइ राबपदे | ७ | ४१३ | अह मवे पइआ उ | ७ | ८६४३ |
| अह तं अस्मापिअरो | ३ | ७६+ | अह पुण जुण्णा येरा | ४ | १६५ | अह मंसमि पहीणे | ४ | ५४१ |
| अह तं पागइलवं | ३ | ३६० | अह पुण निज्वाधजो | ३ | १४६२ | अह मंसमि पहीणे | ६ | ६३१ |
| अह ताअओ तस्य मुणीण | ७ | ४४८३ | अह पुंडरीअआयं | ७ | २९३ | अहमवि मे खामेमी | ३ | १६२५ |
| अह तेगेव कालेणं | ७ | ८३६३ | अह भगवं भवमहणो | ३ | ४३३ | अहमासी महापणे | ७ | ५७५३ |
| अह तेगेव कालेणं | ७ | ९५१३ | अह मणइ जिणवरिदो | ३ | ३६९ | अह नीसओ य पिंडो | ६ | ५३ |
| अह ते तस्य सीसाणं | ७ | ८४५३ | अह मणइ जिणवरिदो | ३ | ३७३ | अह मोणमस्सिओ सो | ७ | ३०९ |
| अह विवसे यासीई | ३ | ४८ | अह मणइ नेगमेसिं | ३ | ५१+ | अह मोणेण सो भगवं | ७ | ५५६३ |
| अह देहइ रायसुओ | ७ | ४१४ | अह मणइ नरवारिदो | ३ | ४४ X | अहयं च दसाराणं | ३ | ४३२ |
| अह पच्छा उज्जति | ७ | ८९३ | अह मणइ नत्वरिन्दो | ३ | ३७२ | अहयं तुब्भं एवं | ३ | ६७३ |
| अह पत्तरसहि ठागेहिं | ७ | ३३६३ | अह मणइ सत्तिनाणी | ७ | ४४० | अह राया तस्य संभंतो | ७ | ५५४३ |
| अह पंचहिं ठागेहिं | ७ | ३२९३ | अह मणइ जणगापो | ७ | ४७८ | अह रुविणीइ सहिओ | ७ | ४३८ |

| प्राधान्यः | प्राधान्यः | प्राधान्यः | प्राधान्यः | प्राधान्यः | प्राधान्यः | प्राधान्यः | |
|-----------------------|------------|------------|-----------------------|------------|------------|--------------------|------|
| अह सोमस्य | ४ | ७७० | अहवा गुणविविक्तस्य | १ | १ | अह सप्तमि मासे | ५९५ |
| अह पृथु सो भयं | ३ | ६९५ | अहवा चण्ड विद्या | ६ | ५८ | अह सव्यद्वयपरिणामः | ५९५ |
| अह पृथु सो भयं | ३ | १०१ | अहवा चाणवसरीः | २ | ५० | अह सव्यद्वयपरिणामः | ७७ |
| अह न कुजाहारे | ६ | ६६५ | अहवा जाणार्हणं | ३ | ६७३ | अह सा भयसन्निभे | ८१२ |
| अह न होसिं विज | ४ | १४७ | अहवा वयुपेरीसीप | ७ | १११८ | अह सारही तलो भयह | ७९९ |
| अह न सविस्मलो | ६ | ५४५ | अहवा न कुज जाहारे | ४ | ५८२ | अह सारही विचिदे | १०५८ |
| अह शुभुलीनाम | ७ | ३३५ | अहवा वि भयपार | ४ | ३०० | अह सा रायवरकना | ८२२ |
| अह निमिषार्हणं | ३ | २९५ | अहवा वि इमो हेतु | ५ | ८७ | अह सा रायवरकना | ७८९ |
| अह वयपरिणार्ह | ३ | ७१२ | अहवा वि निमिषार्हणं | ३ | ६७२ | अह सा सत्यसुखा | ४३४ |
| अहवा उपकने एधिहरे | २ | ७० | अहवा वि निमिषार्हणं | ४ | २०२ | अह से तव अणगरे | ९५२ |
| अहवा उपनिहिता वृत्ताः | २ | ९८ | अहवा सपरिक्रमा | ७ | १११० | अह से तव निजंतो | ७९६ |
| अहवा उपकने द | ३ | ५६७ | अहवा सयं करंत | ३ | ६७४ | अह सोऽपि रायपुत्रो | ८१८ |
| | | | अहवा संपात्रो साहयं च | ३ | १७४ | अह सो सुगंधं पिप | ८०६ |

| सूत्रादि | आपमात्रः | सूत्राद्यः | सूत्रादि | आपमात्रः | सूत्राद्यः | सूत्रादि | आपमात्रः | सूत्राद्यः |
|------------------------|----------|------------|-------------------------|----------|------------|---------------------|----------|------------|
| अहं सन्ने अनुवीद० | ३ | ४३९ | अहं ह ज्ञानो सीसे | ७ | ७९०० | अहुणा गुणित्तिदार् | ५ | ५२५ |
| अहं होत्र भावपासेसजा | ४ | ५४५ | अहिगममंति व अत्या | ५ | ३० | अहुणुद्वियं व अणवि० | ६ | ४१७ |
| अहं होत्र लेयपिरो | ४ | ३७३ | अहिगममंति व अत्या | ७ | ७ | अहुणुव्यासिअसकवाड | ४ | १०७ |
| अहं होत्र निद्रमहुताणि | ४ | २८५५ | अहिगरण मदपता | ६ | ४१४ | अहं वयह कोहेणं | ७ | २८१० |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | १३३ | अहिगारो सुबुधो | ५ | ६३५ | अहो जिणेहिं असाबला | ५ | १५१० |
| अहं च भोगरायस्स | ७ | ८२५० | अहिजल वेए परिविस्स विपे | ७ | ४४९० | अहो ते अजबं साहू | ७ | २८४० |
| अहं च भोगरायस्स | ७ | ४३२० | अहिमरअणिद्वरिसण० | ४ | २५५ | अहो ते निजिओ कोहो | ७ | २८३० |
| अहं च भोगरायस्स | ७ | ८६ | अहियासियाहं अंतो | ३ | १४६० | अहो निबं तवोक्रमं | ५ | २३१० |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | ६ | अहियासिया व अंतो | ४ | ६३४ | अहो वतो अहो हवं | ७ | ७०४० |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | ८ | अहिसरिया पायहिं | ३ | ८७३ | अकारंतं धनं | २ | २३० |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | ५ | अहिस संच च | ७ | ७७०० | अंगदसभागमेए | ७ | १५६ |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | ४ | अहीणपंचिद्वित्तंमि से | ७ | ३०७० | अंगपंचंगसंठाणं | ७ | ५१३० |
| अहं च भोगरायस्स | ५ | ७ | अहीवेगंतदिदीए | ७ | ६३८० | अंगपंचंगसंठाणं | ५ | ३९२० |

| गूदापादि | भागमाहः | सूत्राण्यहः | सूत्राणिदि | भागमाहः | सूत्राण्यहः | सूत्राणादि | भागमाहः | सूत्राण्यहः | सूत्राणादि | भागमाहः |
|----------------------|---------|-------------|---------------------|---------|-------------|-----------------------|---------|-------------|-------------|---------|
| आदममणाइअं | ६ | ३२९ | आउट्टियाअउराहं | ३ | १५०८ | आममणदायास्त | ४ | ४७८ | सूत्राण्यहः | ४ |
| आइ मउआउरांवा | २ | ४५५ | आउतवया जस्त य | ७ | ७३८५ | आममतो उवठतो | ५ | ३४३ | भागमाहः | ५ |
| आइमकाउस्तागे | ३ | १५१९ | आउत्तपुल्लमणिप | ४ | ६४९ | आममसत्थमाइणं | १ | ८७५ | सूत्राणादि | १ |
| आइमाणं तिण्हं | ३ | १६२+ | आउत्तपुल्लमणिपं | ३ | १४७४ | आममसत्त्वमाइणं | ३ | २१ | भागमाहः | ३ |
| आइमगसपसाजे | ५ | २ | आउरचिआइं यवाइं | ७ | २४९ | आममसिद्धो सल्लंगपराजो | ३ | ९३५ | सूत्राण्यहः | ३ |
| आउकायं न हिंससि | ५ | २३८५ | आएससिगं मुल्लुअ० | ४ | ३४६ | आमम पठिकतो | ४ | २०९ | भागमाहः | ४ |
| आठकायं विहिंसदो | ५ | २३९५ | आएसो पुण दुविहो | ७ | ४९ | आमम आगाढजोगवाही | ४ | ५४९ | सूत्राणादि | ४ |
| आठकाजो तिविहो | ६ | १६ | आओवमाइ परदुल्लम० | ३ | १०४४ | आगाढा माला | २ | २२५ | भागमाहः | २ |
| आउकायमइगाजो | ७ | २९५५ | आओसे संगारो | ४ | ९१+ | आगाढलो यया ईगाढतो | २ | २१५ | सूत्राण्यहः | २ |
| आउज्जनदुल्लसडावि | ३ | ११५६ | आकांपिया निमित्तेणं | ६ | ४३६ | आगाढेअण परं | ३ | १५५२ | भागमाहः | ३ |
| आउज्जोवणपणिप | ४ | ९०+ | आगाप कायवुत्समो | ७ | १०३५५ | आगासस्त पप्सा | ३ | १९९+ | सूत्राणादि | ३ |
| आउट्टिमउक्किं | ५ | १६९ | आगम इरियावट्टिया | ४ | ६५५ | आगासे गंगसोउव्व | ७ | ६३६५ | भागमाहः | ७ |
| आउट्टिमूलं दे पुक्के | ३ | +२८ | आगमउवएसणाणि | ३- | १६७ | आगासे वस्सं देसे य | ७ | १३७९५ | सूत्राण्यहः | ७ |

| गुणपादि | अममाङ्कः | सूत्राद्यङ्कः | सूत्रपादि | आसमाङ्कः | सूत्राद्यङ्कः | सूत्रपादि | आसमाङ्कः |
|---------------------|----------|---------------|-----------------|----------|---------------|----------------------|----------|
| अमोसे होमादरे य | ७ | २५५५ | आयरिए आरादेर | ५ | २०४५ | आयरियडवञ्जारादि | ७ |
| आयकियं पुन दुविहं | ६ | ३०७ | आयरिए नारादेर | ५ | १९९५ | आयरियडवञ्जाराणं | ७ |
| आयपस्तारिया | ५ | २०१ | आयरिए य गिलाणे | ३ | १३६२ | आयरियगिलाणद्व | ७ |
| आयपरोमयोसा | ४ | २४३+ | आयरिए य गिलाणे | ४ | ४२७ | आयरियगिलाणाय य | ६ |
| आयपरोमयोसा | ६ | ५८५ | आयरिए य गिलाणे | ४ | ६०८ | आयरियगिलाणं | ६ |
| आयपयायपुञ्जा | ५ | १६ | आयरिए य गिलाणे | ४ | ७१७ | आयरियजमोकारो एवं | ३ |
| आयपंमि य दुविहं | ४ | ७८३ | आयरिएहिं यादितो | ७ | २०५ | आयरियजमोकारो जीवं० | ३ |
| आयपआवरभाये | ६ | २०३ | आयरिओ तारिसिबो | ७ | ५८ | आयरियजमोकारो धन्नाण० | ३ |
| आयरिओगच्छाणुंयपाए | ४ | १२७+ | आयरिओयहि | ४ | ८९+ | आयरियजमोकारो सव्व० | ३ |
| आयरिअपाया पुन अप्प० | ५ | ४०८५ | आयरिअणुड्डाणे | ४ | ११२+ | आयरियपरिआदि | ७ |
| आयरिअवयणरोसा | ४ | १८९ | आयरियजमविपपाण० | ४ | ५५७ | आयरियमाइयंमि | ७ |
| आयरिअं अग्निमिवादि० | ५ | ४३९५ | आयरियडवञ्जारा | ६ | ४७५ | आयरियसीसपुत्तो | ७ |
| आयरिए आपुञ्जा | ४ | २४१ | आयरियडवञ्जारा | ३ | १२०७ | आयरियं कुवियं नञा | ७ |

| सूत्रावधि | अवध्याः | सूत्रावधुः | सूत्रावधि | अवध्याः | सूत्रावधुः | अवध्याः | सूत्रावधुः |
|-----------------|---------|------------|--------------------|---------|------------|---------------------|------------|
| आयसिर्वाहना | ४ | ४१५+ | आया चैव अहिंसा | ४ | ७५५ | आयसो नागादि वरसाव० | २०५ |
| आयसं च परसं | ६ | ४८६ | आयापवस्येयं | ७ | ५०५ | आयसो वधोरे पत्रची | २०५ |
| आयसस निपापं | ७ | ८३६ | आयापं नरयं विस्त | ७ | १६५ | आयसपटुमेजं | २३२+ |
| आयसमुत्थमससादयं | ३ | १५८० | आयागे निरसेवे ठाण० | ४ | ७११ | आयसवाहि चय सोग० | १०५ |
| आयसो उवसमो | ४ | २९२+ | आयागे परिमो | ५ | २२५ | आयसवति सिन्धु | २८ |
| आयसो उवसमो | ७ | १०२५ | आयापवस्यसंजम० | ४ | १७८+ | आयसिण पुवसुहो | ५५५ |
| आयसोपाणिदयावहो | ६ | ६६५ | आयापवस्यसंजम० | ४ | १९२+ | आया हु अरलो मे ससा० | १०४७ |
| आयसो जरादि | ६ | ६६७ | आयापवस्यसंजम | ४ | २४०+ | आयसदा समदा | २६७ |
| आयसो जरादि राया | ४ | २९३+ | आयानं चैव जवोपे | ७ | ५०६ | आयसदा समदा | १०१५ |
| आयसिपराणप | ६ | ६६६ | आयसपत्रिधरं | ५ | ३८४ | आयसो अविशो | १३१५ |
| आयसिलमगांवि० | ३ | १७०५ | आयसपत्रिहि लहुं | ५ | ३३५ | आयसो रसगिदी | २४८ |
| आयसपरापवेसो | ३ | ४३६ | आयसपत्रिहि लहुं | ५ | ४४० | आयसपत्रिहि लहुं | ८०९ |
| आया सलु सामदयं | ३ | ७९० | आयसो निरसेवे | ७ | ४८७ | आयसो निरसेवे | २७४ |

| | | | | | | | |
|---------------------|------|--------------------|---|-------|---------------------|---|-------|
| आरुग मोहिलानं | ११०५ | आलंबवर्णहीणो पुणं | ३ | ११८५ | आलोहचा सर्वं | ४ | ५२१ |
| वारेण भद्रपंता | २१४५ | आलंबवर्णां वायण | ४ | १४२ | आलोयपडिकमणे | ३ | १५१५ |
| आरोहुं मुनिवर्गिया | १६० | आलंबवर्ण लोमो | ३ | १२८० | आलोयणा णं मंते ! | ७ | १९ |
| आरोवणा य भयणा | ९०२ | आलंबवर्णेण केणइ | ३ | ११८३ | आलोयणा उ दुविहा | ४ | ७९१ |
| आलभमालमइवो | ९५५ | आलंबवर्णेणं कालेणं | ३ | ९२४५ | आलोयणा निरवलोवे | ३ | १३७१ |
| आलपणं न सक्को | ११६१ | आलुब्ध अ पलुब्ध | ३ | ६१६ | आलोयणा विपडणा | ४ | ७९२ |
| आलपणं विहारोणं | ११६० | आलुब्ध अ पलुब्ध | ३ | १०६९ | आलोयणमाहुंचन० | ३ | १२५७ |
| आलओ धीमणाइवो | ५२०५ | आलुब्ध अ पलुब्ध | ४ | १६११ | आलुब्ध एवमणेगल्लवे | ७ | १२५८५ |
| आलमिआए वासं कुंडागे | ४८८ | आलोअणमालोवो | ३ | ५६५ | आवण्णा दीहमद्धानं | ७ | १७२५ |
| आलमियाए हरिविज्जू | ५१५ | आलोअणा य विणए | ३ | १७८५ | आवत्ताइसु जुगनं | ३ | १२३८ |
| आलवते लवते वा | २१५ | आलोअणारिहाइयं | ७ | ११२८५ | आवरणेज्जाण दुण्हंमि | ७ | १२८६५ |
| आलवते लवते वा० | ४१५५ | आलोअं विगाळं दारं | ५ | ७४५ | आवत्ताइसु जह जह | ३ | १२२६ |
| आलस मोहइवणा | ८४१ | आलोअंमि चिलमिणी | ३ | १४९८ | आवत्ताइसु कयनियमा | ४ | १७४ |
| आलस मोहइवणा यंमा | १६० | आलोइए विणीअस | ३ | १८०५ | आवत्ताइसु सोहेउं | ४ | २१७५ |

अ. आ.
ओ.
द. पि. उ.
॥ १३ ॥

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|-----|--------------------|---|------|-------------------|---|------|
| आवसगात्स गं इने अत्था० | २ | ५८ | आवासं तु अहं | ३ | १४६५ | आसंमिदीमं चक० | ६ | ३६१ |
| आवसगात्स दसकालि० | ३ | ८४ | आवासं करि पंचप | ४ | २२१ | आसंदीपलियंकेसु | ५ | २६२ |
| आवसयत्स एतो | २ | ७६ | आवासिं च चूढं सेसे | ३ | १४५५ | आसं विसज्जयां | ७ | ५५५ |
| आवसयं अवसं | २ | २६ | आवीचि ओहि अंतिय | ७ | २१२ | आसादवहुलपक्खे | ४ | २८६ |
| आवसयंमि जुत्तो | ३ | १२२ | आसगजो ग पुच्छिजा | ७ | २२६ | आसादवहुलपक्खे | ७ | १००६ |
| आवसिअमासजं | ४ | २३१ | आसगीवे वाटव | ३ | ४२५ | आसादी दंमहो | ३ | १४३५ |
| आवसिदं च गितो | ३ | ६२१ | आसणं सयणं जाणं | ५ | ३०६ | आसादे मासे दुपया | ७ | १००४ |
| आवसिदं वंजणनेयं | ३ | ६२२ | आसणं सयणं जाणं | ७ | १८५ | आसादे मासे दो पया | ४ | २८४ |
| आवसिदं० सेजा मिसी० | ३ | १२० | आसणे उवचिद्धिजा | ७ | ३०६ | आसायणावि पेवं | ३ | ७१४ |
| आवसिगा उ आवसण्हि | ३ | ६२४ | आसत्रात्र नियत्ते | ४ | ४१७ | आसा हत्थी गवो | ३ | २०१ |
| आवाय चिलिमिणीए | ४ | २०० | आसमए विहारे | ७ | १११४ | आसिभो मायरा दोउवि | ७ | ४१० |
| आवायदोस तए | ४ | ३०९ | आसमपयंमि पासो | ३ | २३१ | आसी अ इस्सुभोई | ३ | ४६ |
| आवासग अहिरणे | ४ | २२० | आसवदवावाए वद | ३ | १८८ | आसी अ कंदहरा | ३ | ४६ |
| आवासं तु काव | ४ | ६३९ | आसवदरा संसारदेवो | ३ | १९५ | आसी अ पणिपंसी | ३ | ४८ |

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|------|---------------------|---|------|-------------------------|---|-------|
| आसीविसो उगतवो मोहसी | ७ | ३८५६ | आहाकम्भगहणे | ६ | १८१ | आहा० वह यापरा य | ६ | २४८ |
| आसीविसो वावि परं सुरुओ | ५ | ४०३६ | आहाकम्भहारं भणिय० | ६ | २१८ | आहाय जं तु कीरह | ६ | ३१+ |
| आसुआगिलणे | ३ | १३१६ | आहाकम्भमिंवरण | ६ | १८२ | आहारउवहिसेज्वा | ६ | ६८ |
| आहुं हुं समेई | ३ | १६८४ | आहाकम्भपरिणओ | ६ | १०७ | आहारउवहिसेज्वा | ६ | १२१ |
| आसुयमाइपदि | ६ | ४०५ | आहाकम्भपरिणओ० सु० | ६ | २०७ | आहारओ उजीवो | ३ | ८१५ |
| आहव चंहालियं कहु | ७ | ११३ | आहाकम्भंतरिया अस० | ६ | १३४ | आहारयुते अविभूसियप्पा | ३ | +४१ |
| आहव सवणं उहुं | ७ | १०३६ | आहाकम्भं मुंजइ न | ६ | २१७ | आहारतेयलंभो | ३ | ४३ |
| आह जह जीवपाए | ३ | १६७७ | आहाकम्भाईणं होइ | ६ | १३२ | आहारपक्कवाणेणं | ७ | ४९ |
| आहणगई दिंते | ४ | ३०७ | आहाकम्भियानामा | ६ | ९४ | आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं | ७ | ११५९६ |
| आहरणं तरेसे चठहा | ५ | ७३ | आहाकम्भियमायण० | ६ | २६३ | आहारंति तवस्सी | ६ | ६६० |
| आहरी सिआ तत्व | ५ | ८७६ | आहाकम्भुदेसिय० | ६ | ९२ | आहारंमि उ आ सा | ३ | १३५९ |
| आहा अहे य कम्मे | ६ | ९५ | आहाकम्भुदेसिय० | ६ | ३९३ | आहारं संघओ परिसाहो | ३ | १७०+ |
| आहा अहे य कम्मे | ६ | १२९ | आहाकम्भेण अहे करेति | ६ | १३६ | आहारं सिण कम्मे अ | ३ | २०३ |
| आहाकम्भोईदि | ६ | १२६ | आहाकम्भे य तथा ओह० | ३ | १३६० | आहारोवहिमाई | ६ | ३७२ |

इकारः

इअ सञ्जकालतिता

इअ सिद्धाणं सुखं

इइ एणु जो निक्खु

इइ इतरियंमि आउ०

इइ एस धम्मे अक्खार

इइ षडरिदिया एए

इइ पोवमजीवे य

इइ पाउकरे दुहे

इअसाय सयलेसुं

इअस्त दोण्ड व संकिंमि

इआ य पुवकोदी

इअरासवि गणहरे

इअसीइ यावत्तरी अ

इअिअ तिअि वारे

इअेअ वोसिअवरो

इअो अ अतन्मारे

इअोअि नयुअारो

इअसागडुले जाओ

इअसागमूमि छवता

इअसागायअयसहो

इअसागंअस मरहो

इअसागेसु मरीदे

इअेअं छन्नीअणिअं

इअेअयमिं दुवाल्सो

इअेए यावरा विविहा

इअेअइं पंच महन्वअइं

इअेअमाइ सव्वं

३

३

६

३

३

३

७

६

३

५

१

७

५

-३

२२९५

१४२६

७५

१६६

१४९

३८२

५८६

४७९

४४०

५९६

९८

१४७९

९

३१२

इअेअं संपसिअ सुद्धिअं

इअेअिं छहं जीव०

इअ्छाइ सामेसुं

इअ्छा पसत्थपसत्थिगा

इअ्छामि० अणु नाअह मे

इअ्छामि० इरियावदियाए

इअ्छामि० अबट्ठिओमि

इअ्छामि० कयाइ व

इअ्छामि सभा० पिपं व

इअ्छामि लयासमणो !

इअ्छा मिअ्छा वइअारो

इअ्छा मिअ्छा वइअारो

इअ्छा मिअ्छा वइअारो

इअ्छामि० जो मे देवसिअो

४९९

२

४८९

१६६

३

७

३४

३५

३२

३१

१६६

४८६

२६६

६

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|-------|---------------------|---|-------|------------------------------|---|-------|
| इच्छामि ठाडुं काउत्सगं | ३ | २६ | एणेमेव निगंगं पाव० | ३ | २२ | इत्थिकह भचकहा | ५ | २०९ |
| इच्छामि० एगामसिजाए | ३ | ८ | इति पाउकरे बुदे | ७ | १६४०३ | इत्थीगहणे घमं | ४ | ४२२ |
| इच्छामि० पुज्वि चेइ० | ३ | ३३ | इति वेइदिया एए | ७ | १५०३३ | इत्थीण कहिल्य चट्टइ | ७ | ३२७ |
| इच्छा य अनुभवमा | ३ | १२३० | इत्तरियमरणकाला य | ७ | ११०६३ | इत्थीपरिगहाओ | ५ | ३४२ |
| इच्छिन्नं न इच्छिन्न य | ४ | ६२६ | इत्तरियं न कणइ | ३ | ७२१ | इत्थीपुरिससिद्धा य | ७ | १४२२३ |
| इद्दगच्छंमि परिपिठियाण | ६ | ४६६ | इत्तरियाइविमत्ता | ३ | ७१९ | इत्थीरयणपुरोहियमिजाण | ७ | ३६४ |
| इद्दगपागाईणं | ४ | ३६९ | इत्तो उत्तरकरणं | ७ | १९३ | इत्थी वा पुरिसो वा | ७ | १११९३ |
| इद्दगपागाईणं | ६ | ३६५ | इत्थं य पमोअणमिणं | ३ | १०२२ | इत्थी विजाडभिहिया | ३ | ९३१ |
| इद्दगं विसयाईण | ३ | १८ | इत्थं पुण अहिगारो | ३ | ७९ | इत्थीविसयगिद्धे य | ७ | १८३३ |
| इद्दीए निक्खंदो | ७ | ४२१ | इत्थं पुण अहिगारो | ५ | २३१ | इत्थस्स वा नेरइअस्स | ५ | ४९६३ |
| इद्दीगारविए एगे | ७ | १०५२३ | इत्थं पुण अहिगारो | ७ | २३६ | इत्थं व परिसं वं व | ७ | १२१ |
| इद्दी जुत्ती जत्तो वओ | ७ | २०४३ | इत्थं पुण चउमंगो | ३ | १७१२ | इत्थं व मे अत्थिं इत्थं व मे | ७ | ४५५३ |
| इद्दी विसं व मिचे य | ७ | ६८७३ | इत्थं पुण समणोवासग० | ३ | ५० | इत्थं व मे अत्थि पमूयमत्तं | ७ | ३९३३ |
| इणमण्यं तु पमाणं | ४ | ६८२ | इत्थिजं पुरिसं चावि | ५ | १८८३ | इत्थं सरीं अजिबं | ७ | ६१२३ |

| | | | | | | | |
|-----------------------|----------|-----------------------|---|-------|---------------------|---|------|
| इमा दु अत्रादि अयाहया | ७३६६ | इय सव्यगुणाभाण | ३ | १०५ | इह जीविण राय ! जसस० | ७ | ४२६६ |
| इमे य यदा फंति | ४८५६ | इरिचं नडवि सोदेई | ६ | ६६४ | इह जीविं अमियमिचा | ७ | २२१६ |
| इय अविहोपरिहरणा | २०१ | इरिआवहमाईमा | ४ | ५५ | इहपलोगादानमकरा | ३ | ५१ |
| इय जालोदय पट्टविज | ५६० | इरिससभासाए | ७ | ३६०६ | इहमवमिआगारो | ३ | ९६८ |
| इय करणकारणानुमइ | १२३ | इरिचं नवि सोदेई | ४ | २९१५ | इहमेरो उ मंत्रादि | ७ | १६८६ |
| इय दुग्धदुग्धं मणुस० | ८३६ | इरियाइ पठिकतो | ४ | ६२५ | इहलोइ अत्यकामा | ३ | १०२३ |
| इय नागचरणदीपो | २४(प्र०) | इरियाभासेसणाऽऽदोणे | ७ | ९२२६ | इहलोइआ पवित्री | ४ | ६४ |
| इयरहवि वा न जुञ्जइ | १५५० | इरियावदिया हत्यदरेऽवि | ३ | १४८० | इहलोए फलमेयं | ३ | १५१२ |
| इयेरसरसजो | ३६५ | इरियासमिई भासेसणा | ३ | १३१२ | इहलोएपातचिअं | ५ | ३७८६ |
| इयेरेयु पोरीसिदिगं | २९४ | इरियासमिए सया जए | ३ | ५३८ | इहलोएग्मि सिंदी | ३ | १०२४ |
| इयोऽवि गुणसमिद्धो | ७५८६ | इस्ताअमरिसअवो | ७ | १३१४६ | इहलोएग्मि सुयरा | ३ | १६४७ |
| इयोऽवि गुरसगासं | ५२४ | इह कामानियट्टस | ७ | २०२६ | इहंसि उत्तमो भंते ! | ७ | २८५६ |
| इयोऽवि य पंवावे | ३२६ | इह कामानियट्टस | ७ | २०३६ | इहवऽअम्यो अवसो | ५ | ४९४६ |
| इय सिमानजसहिओ | ११५७ | इह सलु मो ! पवइएवं | ५ | २१ | इंगालं अगणि अणि | ५ | ३४२६ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|---------|---------------------|---|-----|------------------------|---|-------|
| इंगलं छारियं रासि | ५ | ६६३ | इंधणमादं मोपुं | ६ | २६७ | उक्कोसिउम वेकच्छी | ४ | ६७८ |
| इंदगोवसयाईया | ७ | १५१२३ | इंधनयगणीअवव | ६ | २६९ | उक्का विट्जू य वोदळ्या | ७ | १४८३३ |
| इंदलं जद सहा | ६ | १३५ | इंधनयूने गंधे | ६ | २६७ | उक्कुट्टि सीहणयं कळ० | ३ | ५६२ |
| इंधपुर इंधवत्ते | ३ | १३८८ | इंधनयूने गंधे अवय० | ६ | २६८ | उक्कोस तिसामासे | ४ | ६८३ |
| इंधपुरे रुदपुरे | ७ | ३६० | ईकारः | | | उक्कोसदब्बलेत्तं व | ४ | २३७+ |
| इंदियमानिमाही | ७ | १४१३ | ईसतयं पणुवेओ | ३ | १७+ | उक्कोसमजिमजहज्जणं | ६ | ३४६ |
| इंदियत्ते विवजिन्ना | ७ | १२८३ | ईसतलवरसांडविआण | ७ | ३१५ | उक्कोसयट्ठितीए पाडि० | ३ | ८१७ |
| इंदियमाउत्तानं हणंति | ३ | १४८५ | ईसीपम्भाराए० जोअंलि | ३ | १६५ | उक्कोसेण दुवालस | ३ | १४३९ |
| इंदियमाउत्तानं हणंति | ४ | ६६० | ईसीपम्भाराए सीअए | ३ | १६० | उक्कोसेणं चेयं अक्का० | ३ | ९८० |
| इंदियलक्ष्मीनिवत्तणा | ३ | २० प्र० | ईहा अपोह वीमंसा | १ | ८०३ | उक्कोसो अट्टविहो | ४ | ६७९ |
| इंदियवित्तवकसाए | ३ | ११९ | ईहा अपोहा वीमंसा | ३ | १२ | उक्कोसो व नित्यो | ७ | २३९ |
| इंदियवित्तवकसाया | ५ | १७७ | उक्कारः | | | उक्कोसोगाहणाए व | ७ | १४२६३ |
| इंदियवित्तयतिरोहो | ४ | १६७+ | उत्तवद्धपुवण वाउस | ४ | ३४९ | उक्कोसोगाहणाए य | ७ | १४२३३ |
| इंदियाणि उ भिक्खुत्स | ७ | १३५४३ | उत्तवद्धपुवण वाउस | ६ | २४ | उक्कोसो भणुपुं | ३ | ५३ |

नं. अ. आ.

अं.

द. पि. उ.

॥ १६ ॥

सुत्राधनु-

क्रमः

॥ १६ ॥

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|------|------------------------|---|------|--------------------|---|------|
| उक्लिताण्य संवाडे | ३ | +१६ | उगमकोडीभवव० | ६ | ३४७ | उगह ईहाडाभो | १ | ७५* |
| उक्लिताण्यवाए | ४ | ४७४ | उगमकोडीभवव | ६ | ३४४ | उगह ईहाडाभो य | २ | २ |
| उक्लिचं निक्लिपह | ६ | ३४० | उगम० जोगणं साहपुष्ट्या | ४ | ७४४ | उगह ईहाडवव | ४ | ४१९ |
| उक्लेवे निक्लेवे | ४ | ४८५ | उगमदोसाइजड | ४ | २९५ | उगह डंगवपष्टो | ४ | ६७७ |
| उक्लेवे निक्लेवे | ६ | ५७० | उगमदोसाइणं | ४ | ९५ | उगह ईकसमइए | ९ | ३५ |
| उगभो खणिसंसारे | ७ | ९०९* | उगमदोसा सोलस | ६ | ५२२ | उगं वं चरिचणं | ७ | ८३०* |
| उगभो विमलो भाजू | ७ | ९०७* | उगम० सदा अग्रथसोदीए | ४ | ७४७ | उगह कुलेसुडि | ६ | ४४१ |
| उगहुलभोगहादिज० | ३ | ५०+ | उगम० साहसणं विवागंनो | ४ | ५६९ | उगणं भोगणं | ३ | २२५ |
| उगम० जगदुदो अमुचिभोष्ट | ७ | ७४५ | उगम० साहू कुणइ लेमिभं | ४ | ५७० | उगा भोगा राणव० | ३ | २०२ |
| उगम० उमोवपमगणा | ६ | ८५ | उगम० साहू पावइ निबारं | ४ | ५७१ | उगावमपुणवं आह० | ३ | +४८ |
| उगमदपायणएसणा | ४ | ५०३ | उगमं से अ युचिजा | ५ | ११५* | उक्काए दणं दुसभ० | ६ | ३९२ |
| उगमउपायणसुदं | ४ | ५६८ | उगमुपायणं पदमे | ७ | ९३२* | उबारं कुम्भतो छावं | ३ | १३६८ |
| उगम० उवदि धारए भिक्खू | ४ | ७४३ | उगह ईकं समवं | १ | ७७* | उबारं पासवणं | ७ | ९३५* |
| उगमएसणकणं | ४ | ५३+ | उगह ईकं समवं | ३ | ४ | उबारं पासवणं | ५ | ३५२* |

उद्यारे पासवणे रोले

उद्यारे पासवणे लांढळ०

उद्यारे पासवणे सिमाण

उद्यालियंमि पाय

उद्यापयाहि सिज्याहि

उद्याणइ य विद्याजो

उद्योजय मधुसूक्तं य

उद्युद्धुद्धीराइयं विगारि

उद्यु वोलिदि धई

उद्यममाणस्स गुणा

उद्याण पुरिमवाळे

उद्याण सपत्तो

उद्याणे सपत्तो

उद्यितसेलसिहरे

उद्येणि अट्टणे सल्लु

उद्युण्णो अणुव्विगो

उद्येणि देवलासुव

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

उद्येणि अंतरिणी

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

१५२५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

उद्युमिनीयतुयट्टण

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

५

| | | | | | | | |
|-----------------------|---|------|-------------------|---|------|-----------------------------|------|
| उत्पापद्विभंगादपन्न० | ३ | १७७ | उत्पापं च लभेत्वा | ३ | १५११ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ८९४ |
| उत्पापगतौ दोषे | ६ | ५१४ | उत्पापकालभयो | ३ | ७८४ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १५५ |
| उत्पापगतदुष्टवार्दे य | ७ | १३१७ | उत्पापकालभयो | ३ | ८२९ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ४०० |
| उत्पापपरिश्वाय | ६ | २८१ | उत्पापकालभयो | ३ | १५८१ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ११६ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ५ | ८८ | उत्पापकालभयो | ७ | १२८७ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १६४ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ६ | ६२४ | उत्पापकालभयो | २ | ४९६ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ३६९ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ६ | ३४८ | उत्पापकालभयो | २ | १३१६ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १५८ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ४ | २९ | उत्पापकालभयो | ५ | १५९ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १५७ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ४ | ३८४ | उत्पापकालभयो | ७ | २४६ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १७२ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ७ | ८४१ | उत्पापकालभयो | ७ | ९८८ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १३६ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ३ | १७३ | उत्पापकालभयो | ४ | ११९ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ३१८ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ६ | ४४ | उत्पापकालभयो | ४ | १२८ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ५४८ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ६ | ४३२ | उत्पापकालभयो | १ | ६९६ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | ९९१ |
| उत्पापमिमांसा य महिला | ३ | ११५४ | उत्पापकालभयो | ३ | ९४६ | उत्पन्नोऽपि यदुच्छेद्योऽपि० | १००५ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. नि. उ.

॥ १८ ॥

सूत्राद्यनु-

क्रमः

॥ १८ ॥

| | | | | | | | | |
|--------------------------|---|-------|----------------------|---|------|--------------------|---|-------|
| उवक्षायननुहारो सव्य० | ३ | १०७ | उवसविज्ञ पुवं | ४ | २८८ | उवहिमि वसुचिण | ५ | ४७६* |
| उवक्षायननुहारो जीवं० | ३ | १०४ | उवक्षायो सव्यहे | ३ | १८६ | उवही वस्यहे संगहे | ४ | २६७ |
| उवट्टिया ने आयरिया | ७ | ७२०* | उवसमेण हणे केहे | ५ | ३७३* | उवसमाणं पठिमासु | ७ | ११४५* |
| उवणपणं तु कलणं | ३ | २३५ | उवसय वधिं ठाणं | ६ | ४१५ | उवहेमाणो उ परिवइला | ७ | ७७३* |
| उवणिज्झइ जीविमममाय० | ७ | ४३१* | उवसंपन्नो अं कारणं | ३ | ७२० | उवट्टमिउसंसत्तण | ६ | ३०३ |
| उवमोगपरिमोगवर | ३ | ४३ | उवसंपया य काले | ३ | २६७ | उवट्टिया पयोसं | ६ | ४२० |
| उवमा एतु एस कया | ५ | १३७ | उवसंपया य काले | ७ | ४८६ | उवत्तणनिस्सिक्कण | ४ | ११५ |
| उवमात्तरावोसा | ३ | ८८४ | उवसंपया य त्रिविहा | ३ | १९८ | उवत्तणसपत्तं व | ४ | ८६ |
| उवरिमा उवरिमा चेव | ७ | १५८७* | उवसंहारविसुद्धी | ५ | १३२ | उवत्तंविणसमुद्धानं | ३ | ३१३ |
| उवरि आयरियाणं | ३ | १३३७ | उवसंहारो देवा | ५ | ९२ | उवसमपुरं रायगिहं | ७ | १०० |
| उवरि गुंतु छिज्जति कस्स० | ७ | ३०५ | उवसंहारो भग्ग | ५ | १३० | उवसमसजिवां व वंदे | ३ | २* |
| उवरि देहा य पमाजि० | ४ | २६४५ | उवसमं उवणीवा | ३ | ११८ | उवसमत्त व पारजए | ३ | ३२० |
| उवल्लमममि मीगावइ | ५ | ७६ | उवहयमइविण्णायो | ३ | ५०३ | उवसमत्त कुमारत्तं | ३ | २७७ |
| उवल्लो होए भोगेसु | ७ | १८७* | उवहिणस्सालेणं मंते ! | ७ | ४८ | उवसमत्त पुरिमल्ले | ३ | २६४ |

| | | | | | | | |
|-------------------|----------|--------------------|---|---------|---------------------|---|-------|
| उसमस्त पुव्वलवरं | २७२ | उसिणत्स छट्ठो देवओ | ६ | ६२८ | उत्तिगनिसमग | ३ | १५५८ |
| उसमस्त पुव्वलवरं | ३०० | उसिणोदगमणुव्वत्ते | ४ | ३४५ | उत्तीस मायणाई | ४ | २३३ |
| उसमस्त भरहविज्जो | २८८ | उसिणोदयमणुव्वत्ते | ६ | १८ | उत्तेहो जस्त जो होइ | ७ | १४३७* |
| उसमे भरहो अजिए | ४१६ | उसिणोदगगि चेषइ | ६ | ५६३ | उत्तारः | | |
| उसमं अजियं संगव० | १८* | उसुआइएई महेहि | ६ | ४२४ | ऊगसयभोगं | ३ | ११३० |
| उसमे मत्तो अजिए | ४१६ | उसुअरनामगए | ७ | ३६१ | ऊगसयभोगं | ४ | ७७५ |
| उसमे सुमिच विजए | ३९९ | उसुआपुरे नगरे | ७ | ३६६ | ऊगहिय दुव्वलं वा | ५ | ३२७ |
| उसमो अ विणीआए | २२९ | उसुआरे निक्खेवो | ७ | ३५९ | ऊसु उत्तमलंछण | ३ | १०९१ |
| उसमो परवसमगई | २ (प्र.) | उससग छिउत्सएणु | ३ | १५४८ | ऊसव मंढणवगा | ६ | २२५ |
| उसमो वरवसमगई | ३१६ | उससगोण विसुअइ | ३ | १५२४ | ऊससिअं नीससिअं | ३ | २० |
| उसमो सिद्धवर्णाणि | २३० | उससगो निक्खेवो | ३ | ३१ प्र. | ऊससियरोमकूवो | ७ | ७५७* |
| उससिअं नीससिअ. | ८१* | उससअथाहरो अहवा | ३ | १२८१ | ऊससगणीससग | ३ | ८१४ |
| उसिउसिमो तइ उ० | १५५६ | उससियेयणमरो | ३ | १७३ | ऊहाए पणपं } | ३ | १४७+ |
| उसिणपरिवायेणं | ५६* | उससासं न निहंमइ | ३ | १६०७ | | ७ | १+ |

एकारः

एअं च अट्टमं वा

एअं च दोसं दहूणं

एअं च दोसं दहूणं

एअणं नं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअणं नेगमं अट्टं

एअं च व आवे

एअं च व दुवलस

एअं च व दोसा

एअं च व सिमाणा

एअं च व हवेजा

एअं च व विसलवा

एअं च व सुमिणे

एअं च व पुत्राणं पुत्रं

एअं च व अट्टं

एअं च व भावो

एअं च व ते जेसिगो रदो

एअं च व भावही चत्तारि

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

एअं च व देवनिवाया

१०७९९

६७१

३२०

३०२

३४२

५७५

५५५

६४

२९०

४५३

१६६

१२७६

८७५

२१६

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

एअं नव कवरसा

५१२३

८२३

९४३

३३६

९८०

११७३

३७०

१४९९

१६०४

२८०५

८९

५७८

५१

१५५९

४१३ ७३२ १७ ६५८ ७१८ ५३ ५५८ २६९ ५१२ ५३ ४८५ ५३६ २७९ ४२०

४ ४ ३ ४ ४ ४ ४ ३ ३ ३ ४ ४ ६ ६

एकानिगस्स दोसा
एकपञ्च पसंसति
एकवीसाय सबलेहिं
एकस्स दोण्ह व संकिं
एकंमि उ. पावगां गुरुणो
एकंमिवि पाणिवहंमि
एकं व दो व तिन्नि व
एकास्स उ गणहरा
एकारस्सवि गणहरा सन्वे
एकासणं अण्णत्थं
एक्किक्कोअवि अ तिक्किहो
एक्केक्कस्स य पासंमि
एक्केकं तं दुविहं
एक्केकाअवि य दुविहा

१४८९ १४७८ १४६४ १५७५ ३२६ ३६४ १२७८ ३११ ३१६ १६१ २५६ ५८३ १२७७ ७६०

७ ७ ७ ७ ३ ३ ३ ४ ४ ७ ३ ४ ३ ३

एणसिं विहाणां सहस्ससो
एणसिं विहाणां सहस्ससो
एणसिं संठाणादेसओ
एणसिं संठाणां विहाणां
एणसु पढमभिक्खा
एणहिं अद्धभहं
एणहिं अहं रद्धओ
एणहिं करणेहि उ केइ
एणहिं कारणेहिं
एणहिं कारणेहिं
एणहिं छहिं ठाणेहिं
एणहिं अहिं ठाणेहिं
एणहिं जो रज्जहं
एणहिं विट्ठियाए

१४९८ १५६६ १५०८ १५१३ ११० ११४ ११० २१० १०९ १५२ १५४ १४५ १६१ १५१

७ ७ ७ ३ ३ ३ ४ २ ७ ७ ७ ७ ७ ७

एणसिं गंधओ
एणसिं चैव विहाणां
एणसिं चैव संठाणा
एणसिं तं बवहारिअस्स
एणसिं मुहुमस्स अद्धा
एणसिं वं मुहुमस्स लेत्त
एणसिं हु विवज्जसे
एणसिं पहाणं
एणसिं भविज्ज वसगुणिवा
एणसिं रसनासओ
एणसिं रसनासओ सहस्स
एणसिं वज्जओ चैव
एणसिं वज्जओ संठाणा
एणसिं विहाणां

अ. आ.

ओ.

इ. सि. उ.

॥ २० ॥

एककीय दिसार

एकको चउमंगो

एकको य सयविहो

एकको कयमकज

एकको थरेद भाग

एकको य जइकोल

एकको य दो य तिनि व

एग एव चरे लाहे

एगजो विरं जुजा

एगजो सयसिक्ता यं

एगज्जववभानं

एगकजपवभानं

एगसुरा दुसुरा चैव

एगममजसति० मंते !

५६११

५६१८

५६१९

१८५५

१८५६

१८५१

५६१७

५६१६

११३६६

४६६६

८५५५

८५११

१५५३

३१

एगममस पसंतस

एगच्छत्तं पसाहिचा

एगद्धा एगवज्ज

एगद्धियामि सिणि व

एगत्तं व युहुत्तं व

एगत्ते जह मुट्ठि

एगत्तेण साहवा

एगत्तव दोइ मत्तं

एगदुसविगवववव०

एगनिकस्सम्य चैव

एगपएसोगादं

एगपणवदत्तासं

एगमो अजिए सत्तू

एगव्वसमणुणाण

३

७

६

३

७

३

७

४

४

३

३

४

७

४

२०३

५८१६

१३३०

१२२९

१०७३३

१०४८

१४३८

२५२

३१६

१२१६

४४

१६६

८६१६

८१

एगम्भूओ अरजे वा

एगमुगुंदा तूं एगं

एगया थवेअए होइ

एगया सविओ होइ

एगया देवलोएसु

एगस एगवणो

एगविहयणत्ता

एगविहयणत्ता

एगविहं दुविहेणं

एगविहं इसविहो

एगस सीरयोअण०

एगस यणजुत्तं व

एगं भिर छमासं दो

एगं हसइ पुच्छंमि

७

७

७

७

७

७

७

७

३

३

७

३

३

७

६७७५

१६११

६११६

१८१६

१७१६

३३३

१४७३३

१४५१६

१४५६

६०

३८०

३२८

५२०

३०४७

सुत्राधनु-

क्रमः

॥ २० ॥

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|-------|---------------------|---|------|--------------------|---|------|
| एग० अचिं पडिलेहिजा | ५ | १४५५५ | एगते० आलोए विणि | ३ | १३६३ | एगे जिए जिया पंख | ७ | ८६७५ |
| एगंतपसत्या विणि | ७ | २३४ | एगतेण निसेहो जोगेसु | ४ | ६६ | एगेण जणेगाह | ७ | १०८२ |
| एगंतमगापाए अचिंते | ३ | १३६१ | एगते य विविचे | ३ | ५४२ | एगेण वावि एसि | ६ | ६१२ |
| एगंतमगापाए | ४ | ६९६ | एगं पडुब हिदा तरेव | ३ | ८९९ | एगेव मीसएसु | ६ | ५४४ |
| एगामगा० दुणि | ४ | ६९७ | एगं पाय जिरुजियाण | ४ | ६८० | एगेदियनोएगेविय० | ३ | १२८७ |
| एगंतमगा० अचिंते | ४ | ६०६ | एगागि मिलाजंमि | ४ | ७३ | एगो अ सत्तमाए | ३ | ४१३ |
| एगंतमगापाए | ७ | ११२५५ | एगानिसुदिसगा | ४ | १०३५ | एगो काजो दुहा जाओ | ३ | १५४१ |
| एगंतमवचमं | ६ | २११ | एगा जोअणकोडी | ३ | ९६२ | एगो खस्स मागो | ६ | ६५३ |
| एगंतमवकमिया | ९ | १४० | एगा य होइ रयणी | ३ | ९७३ | एगो पढ पलेणं | ७ | १०४८ |
| एगतरते भरुसि | ७ | ११९४ | एगासणं० | ३ | ५३ | एगो भगवं वीरो | ३ | २२४ |
| एगतरसो० गये | ७ | १२०७ | एगा हिरण० | ३ | ८२५ | एगो भगवं वीरो | ३ | ३०८ |
| एगंतरसो करुसि | ७ | ११८१ | एगा हिरणकोडी | ३ | २१७ | एगो मूलं पि हारिजा | ७ | ११२ |
| एगंतरसामां | ७ | १६२५ | एगुणतीस आवसगा० | ७ | २६ | एगो व जणेगो वा | ४ | ६ |
| एगंतरसिनिदनी नोरिसिमेग | ६ | १३५ | एगुववअडोरवा | ७ | १५१४ | एगवद लकुवणे | ३ | ११४१ |

एकैत्रीय विसाए

एकैके चउभंगो

एकैको य सयविहो

एकेन रुयमकनं

एको घरेइ भागं

एको ब जहसंगं

एसो व दो ब तिमि ब

एग एब चरे छाटे

एगओ विरदं कुन्ना

एगओ संवसिजा नं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

एगअअवभानं

| | | | | | |
|--------------------------|------|---------------------------|------|--------------------------|------|
| प्राग्म० अचिनं गहिलेदिना | १४५४ | प्राग्म० आच्छेद तिग्नि | २३३३ | प्राग्म० जिया पंच | ८६७४ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | २३३४ | प्राग्म० निसेहो ओगोसु | ६६ | प्राग्म० अणेगाई | १०८२ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | २३३५ | प्राग्म० य विविधे | ६४२ | प्राग्म० बावि यस्सि | ६१२ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ६९६ | प्राग्म० पडुब दिहा तदेव | ८९९ | प्राग्म० मीसएसु | ६४४ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ६९७ | प्राग्म० पायं त्रिणकमियाण | ६८० | प्राग्म० एगेदियनोएगेदिय० | १२८७ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ६९८ | प्राग्म० गिलायंमि | ७३ | प्राग्म० अ सत्ताए | ४१३ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ११२५ | प्राग्म० मुदिसगा | १०३५ | प्राग्म० काओ दुहा जाओ | १५४१ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | २३१ | प्राग्म० ओअणकोडी | ९६२ | प्राग्म० इवस्स भागो | ६५३ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | १४० | प्राग्म० य होइ रयणी | ९७३ | प्राग्म० पड्ड पसेणं | १०४८ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ११९४ | प्राग्म० एगासणं० | ५३ | प्राग्म० भगवं बीरो | ५२४ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | १२०७ | प्राग्म० हिरण्ण० | ८२५ | प्राग्म० भयवं बीरो | ३०८ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | ११८१ | प्राग्म० हिरण्णकोडी | २१७ | प्राग्म० मूलं पि हरिणा | ११२४ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | १६२५ | प्राग्म० तीस आवस्सग० | २६ | प्राग्म० य अणेगो बा | ६ |
| प्राग्म० गहिलेदिना | १३५ | प्राग्म० वज्रधोरत्ता | १५१४ | प्राग्म० अकुब्बंतो | ११४१ |

प्राग्म० गहिलेदिना पोसिसिमेगं

एकेकीय हितार

एकेके चउमंगो

एकेको य सयविहो

एकेण कयमकलं

एको परेर भाणं

एको व जइमंगं

एको व हो व तिसि व

एण एव चरे छाढे

एणओ विरइ कुआ

एणओ सयसिसा णं

एणकउपवभाणं

एणअपवभाणं

एणमुण दुलुण चैव

एणमणसनि० मंते !

३

६

३

६

४

४

४

५

७

७

७

७

७

७

७

५६१

५६८

७५९

१८५

१८६

४०१

६१७

६६६

११३६६

४६६६

८५५६

८६१६

१५५३६

३९

एणगस्स पसंवस

एणच्छं पसाहिंसा

एणद्धा एणवज्ज

एणट्टियाणि तिणिण व

एणत्तं च पुहुत्तं च

एणत्ते जइ सुट्ठिं

एणत्तेण साइया

एणत्थ होइ मत्तं

एणदुगसिणवउक्क०

एणक्कस्समण चैव

एणएसोसाढं

एणणअदमासं

एणणो अनिए सत्तू

एणणइस्समणुण्ण

३

७

६

३

७

३

७

४

४

४

३

३

४

७

४

५९३

५८९६

१३०

१२९

१०७३६

१०४८

१४३८६

२५२

३१६

१२१५

४४

१६६

८६९६

८१

एणान्णो जउत्ते वा

एणमुग्धा तूरं णं

एणया अचेउए होइ

एणया लउत्तिओ होइ

एणया देवलोणसु

एणत्त एणवणो

एणविइमणणत्ता

एणविइमणणत्ता

एणविइं दुविरेणं

एणविइहं दसविहो

एणत्त स्तीरभोअण०

एणत्त माणजुत्तं व

एणं किर छम्मासं दो

एणं वसइ पुच्छंमि

७

७

७

७

७

७

७

७

३

६

७

६

३

७

६७७६

१५१

६१६

९८६

९७६

३३

१४७३६

१४५९६

३५५६

६०

३८०

३२८

५२९

१०४७६

| | | | | | | | | |
|--------------------|---|-------|--------------------|---|-------|-------------------|---|-------|
| एग० अचिं मदिदेहिआ | ५ | १४५* | एग० अलोए तिणि | ३ | १३३३ | एगो एिए जिआ मंज | ७ | ८६७* |
| एग० तसतथा तिणि | ७ | २३४ | एग० तिसिहो ओगेसु | ४ | ६६ | एगेण अणेगां | ७ | १०८२* |
| एग० तमणावाए अचिंते | ३ | १३६१ | एग० य विविचे | ३ | ५४२ | एगेण वावि यंति | ६ | ६१२ |
| एग० तमणावाए | ४ | ६९६ | एग० पडुच दिहा तरेव | ३ | ८९९ | एगेव मीसएसु | ६ | ५४४ |
| एग० तमणा० दुणि | ४ | ६९७ | एग० पायं जियकपियाण | ४ | ६८० | एगेदियनोएगेदिय० | ३ | १२८७ |
| एग० तमणा० अचिंते | ४ | ६०६ | एग० गिणंमि | ४ | ७३ | एगो अ ससमाए | ३ | ४१३ |
| एग० तमणावाए | ७ | ११२५* | एग० तिसुसिग्या | ४ | १०३+ | एगो कायो दुहा जाओ | ३ | १५४१ |
| एग० तमव कमणं | ६ | २११ | एग० जोअणकोही | ३ | ९६२ | एगो इवस्स भागो | ६ | ४६३ |
| एग० तमव कमिणा | ५ | १४०* | एग० य होद रयणी | ३ | ९७३ | एगो पवह पसेणं | ७ | १०४८* |
| एग० तस्ते रुहरि | ७ | ११९४* | एग० सणं० | ३ | ५३ | एगो भगवं वीरो | ३ | २२४ |
| एग० तस्ते रुहरि | ७ | १२०७* | एग० हिरण्य० | ३ | ८२+ | एगो भयं वीरो | ३ | ३०८ |
| एग० तस्ते रुहरि | ७ | ११८१* | एग० हिरण्यकोडी | ३ | २१७ | एगो मूलं पि हरि | ७ | ११२* |
| एग० तस्ते रुहरि | ७ | १६२५* | एग० तीस आवस्स० | ७ | २६ | एगो व अणेमो वा | ४ | ६ |
| एग० तस्ते रुहरि | ७ | १३+ | एग० वव्वडोरत्ता | ७ | १५१४* | एग० वव्वडोरत्तो | ३ | ११४१ |

एते अक्षरानुसंख्यस्य

एते ३ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

एते ११ अक्षराणां

५३१

३७

११०

२८८

४९३

५४४

११२

१४०

१९१

१८२

१५६

१४६

१४६

| | | | | | |
|--------------------|------|--------------------|------|--------------------|------|
| एमेव य भंगमिभ | ५७३ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २४४४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २७९४ |
| एमेव य समणीय | २५०३ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २५०४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २७७४ |
| एमेव रुयमि गओ पओस | ११८८ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २५६४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २७९४ |
| एमेव यादलाम | ३१५ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २६०४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २३५४ |
| एमेव विसक्यमिवि | ६०३ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २६८४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २३८४ |
| एमेव सतिह | १२०१ | एयमहुं०णमि रायरिसि | २७४४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २३६४ |
| एमेव सेमण्डवि | ७३ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४०४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४४ |
| एमेव सेतणवि | ५४३ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४६४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४४ |
| एमेव सेसियामुडवि | ४३१ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २५०४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४४ |
| एमेव शहण्डुमीलरुये | ७४८ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २५२४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २०२४ |
| एमेव रोह पुरिमो | ४९४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २५४४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४ |
| एयमेमविमुणं | १३४४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २५८४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४ |
| एयमेमविमुणं | ५१८ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २६४४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४ |
| एयमेमविमुणं येणं | ३८९ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २६६४ | एयमहुं०णमी रायरिसि | २४४ |

एवमेव धर्म मूढा
एव य कालायमी
एवं अट्टापीसद्विहस्स
एवं अणगारस्स निकरंतो
एवं अदीणव निक्खुं
एवं अमिच्छुणतो राय०
एवं अनियुजंतो
एवं उगामदीसा
एवं उदवसे ससिगिद्धे
एवं उत्सक्किया
एवं एए कहिया
एवं एएक्कदिणं
एवं एगस्स विही
एवं कथारल्लो

४८३३# एवं करति संबुद्धा
१३१७ एवं करति संबुद्धा
३६ एवं करिस्सि संबुद्धा
९९०# एवं करेति संबुद्धा
१९९# एवं खलु आययणं
२८६# एवं सु अहं सुद्धो
८८+ एवं सु सीलमंतो
२५० एवं सु सीलवंतो
९२# एवं गच्छसमुदरे
१२२# एवं गुणसमाज्जा
७८४ एवं गेल्लन्नद्धा वाचाओ
६१७ एवं चक्खिदियमिगारेणं
५५३ एवं च चित्तइत्ताणं
१०४१ एवं च पुणो ठविए

१६# एवं चरयामि ठिक्का
६९६# एवं चिय वयजोये
२८९# एवं जण्णेवदि
८३१# एवं जिबं सयेहाए
७८६ एवं तवोगुणओ
११५ एवं ता कारणिओ
७८ एवं तु अणुणयेही
११३२ एवं तु अणसंभोइयाण
११८ एवं तु अवयवाणं
९८१# एवं तु इहं आवा
८५ एवं तु गविट्ठसा
७७ एवं तु पुब्बलिचे
७३१# एवं तु सगुणयेही
१३२+ एवं तु संजयस्सवि

१ ७६
७७
१९६#
५३८
११६
२००#
९७+
१४३
६३
५१३
३५०
२०३
११०३#

| | | | | |
|------------------|---|------------------|---|------|
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ६३ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | १०१५ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ४१३५ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | २०० |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | २६३ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ९७९५ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | २४४ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ९२७ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ४० |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | १२२+ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | ३६२ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | १६८१ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | १०२६ |
| कम्पाय तेष मावेण | ३ | कम्पाय तेष मावेण | ३ | १४८५ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|------|-----------------------|---|------|-----------------------------|---|------|
| कपरी दिसा प्रसत्या | ४ | १४० | करणाय भमुहि सीस० | ४ | २६९+ | कसिणं पि जो ह्यं लोबं | ७ | ७९८* |
| कपरे आगच्छइं दितरुवे | ७ | ३६४* | करेमि भंते ! सामाहयं | ३ | १ | कस्स (अ)हा इमे पाणा | ७ | १०२ |
| कपरे राउ धेरेहि | ७ | ३ | कलमोतणो उ पयसा | ४ | ३०७+ | कस्सइ दुडी एसा. | ५ | ४६९ |
| कपरे तुम इय अंदसिजे | ७ | ३६५* | कलहकरो उमरकरो | ३ | १०८५ | कस्स चर पुच्छिऊणं | ४ | १३७ |
| कपल्लि समाम भोयण | ३ | ४८३ | कलहइमयज्जइ | ७ | ३३९* | कस्सचि पुच्छियमी | ६ | १३७ |
| कपाकयं केग कयं | ३ | १०३९ | कलुसइवे असइ य | ४ | ३०८. | कस्स न, होदी वेसो | ३ | २६८+ |
| ककंहुकडिगानं | ७ | ५९२* | कसं सज्जिणीए | ३ | ३३५ | कहणाइ अबकिस्सवे | ४ | २६७+ |
| ककंहु कडिगेसु | ३ | २०९+ | ककिट्टे मावलिगं भ | ५ | १८२* | कहणाइं वक्खिस्सवे | ३ | १०४० |
| ककंहु कडिगेसु | ७ | २६४ | कविलगणामगेयं | ७ | २५२ | कह सामाइअलंभो | ५ | ३९८* |
| ककडिगसु भसुइएणे | ४ | २४५+ | कविलो निक्खियपरिवेसि० | ७ | २५४ | कहं चरे मियसु ! वयं जयामो ! | ५ | ३८* |
| ककडुयं भत्तजलदं | ६ | ४६४ | कमायकुसीलो उतरिं | ७ | २८+ | कहं चरे कं चिट्ठे | ७ | ६००* |
| ककणतिर ओअविए | ५ | ३४१ | कमायववसणोणं भंते ! | ७ | ५० | कहं धीरे अहेजहिं | ७ | ५९८* |
| ककणसणे नं भंते ! | ७ | ६५ | कसाया अगिणो वुत्ता | ७ | ८८४* | कहं धीरो अहेजहिं | ५ | ६* |
| ककणे भए अ भंते | ३ | १०२८ | कसिणं केवलकणं | ३ | १०९० | कहं नु कुज्जा सामण्यं | | |

कडिऊण ससमयं तो

पदि पढिहया सिद्धा

ऊदि पढिहया सिद्धा

कंसुयपल्लुंगीं अ हयो.

कटागतोपा राजा

कंडायाणुगालाविलंमि

कंडागमाई य अहे

कंडिवादिगुणकंठा

कंडूअमत्तचंडो

कंतामि ताव पेळुं

कंतारे दुधिमयसे

कंतारे दुग्गिबले

कंदम सोळुईया

कंदपमाभिओंगं

कंडो कंडुंगीसु

कंडं मूलं पलं वा

कंडाई सचितो

कंसिद्धपुरवर्णि

कंसिद्धपुरादिबई

कंसिद्धिमि य नवरे

कंसिद्धं गिरिवहंगं

कंसिद्धे नवरे राजा

कंसिद्धे मलयवई

कंसिद्धे संभूओ

कंसुसु कंसपाणुसु

कावसमोणं भंते !

कावससंगंमि ठिओ

कावससंगंमि ठिओ विते

७

५

७

७

७

७

७

७

७

७

७

५

७

३

६४१९

१२९९

२९८

३९४

४००

४०८

३४२

९४८

३४०

४०७

२५९

२६

३२२

५१३

कावससंगं मुक्कसपद०

कावससंगो वह मुट्टियस्त

काउं पडिगाईं करवलेमि

काउं हिआए दोसे

काऊण एगळचें

काऊय तयवरणं

काऊण तयवरणं वहुली

काऊण नमोकारं

काऊणयेगाईं जम्म०

काऊण य अभितेमं

काऊण सपणरूपं

काऊण य सामंतं

काए जम्मंगमि य

काएजि व अवलणं

१५९४

१६४८

२७३+

१६९७

३६+

४०४

४४२

१०९+

८३९

६६+

३६७

३६३

२३२+

१५६७

| | | | | | | | | |
|--------------------------|---|-------|-----------------------|---|-------|-------------------------|---|------|
| काए सरीर देहे | ३ | १५४३ | कायठिई रहयणं | ७ | १५६५# | कालचवठं वकोसएण | ३ | १४११ |
| काजो कामदे नामे | ३ | १५२८ | कायठिई यलयरणं | ७ | १५५९# | कालचवठं पाणचयं | ३ | १४८४ |
| पगगियालकसइयं | ४ | ५९३ | कायठिई मणुयाणं | ७ | १५७४# | कालचवठं नाणसयं | ४ | ६५९ |
| कामं उभयाभावो | ३ | ११४६ | कायवमणो तिग्नि च | ६ | २६+ | कालजविच्छविदेसा | ३ | ८८३ |
| कामं परणे भावो | ३ | ११५२ | कायसमाधारणाद् पं भंते | ७ | ७२ | कालपडिलेणए णं भंते! | ७ | २९ |
| कामं तु देवीदि विभूति० | ७ | ११७१# | कायसा वयसा क्त्ते | ७ | १३४# | कालपुरिसे व आसज | ४ | ५६३ |
| कामं देहापयया | ३ | १५०६ | कायंस्स उ निक्खेवो | ३ | १५२६ | कालमकाले सण्णा | ४ | ३१० |
| कामं भविय सुपादसु | ३ | १५३५ | कायंस्स फलं गह्वं | ७ | १२२९# | कालमणं प सुए | ३ | ८५३ |
| कामं सयं न कुल्लइ | ६ | ११११ | कायं वायं प मणं च | ५ | १३६ | कालं छंदेवयारं च | ५ | ४३५# |
| कामं सुओवओनो | ३ | १४३६ | कायाण छक्खेवयाण | ३ | +४५ | कालाए सुजगारे | ३ | ४७६ |
| कामाणं उ निक्खेवो | ७ | २०८ | काएणअविभागावो | ५ | ४५+ | कालियसुए अणुओगस्स | १ | ३५# |
| कामाणुगिहिएमयं सु दुक्खं | ७ | ११७४# | काएणक्खविभागो | ३ | ११६८ | कालियसुयं च इसिभासियाइं | ३ | १२४X |
| कामो चट्ठीसविदो | ५ | २६१ | काएणविभागएण० | ५ | २२७ | कालीपव्वंगंसकासे | ७ | ५१# |
| कायसुखवाद् पं भंते! | ७ | ६९ | काएणिज्जइहेसे | ४ | ७६ | काले चउण्ह वुट्ठी | १ | ५४# |

काले वदण् वेढुं
 कालेण असंखेण वि
 कालेण फओ कालो
 कालेण कालविदी रजसिद्धे
 कालेण शिक्खमे भिक्खू
 कालेण निक्खमे भिक्खू
 काले तिपोरिसिद्धं च
 काले य महुपत्ते
 काले मिएण वहुमाणे
 कालेऽपि नतिव करणे
 कालो अ नाळियाहिं
 कालो लो जावइओ
 कालोऽपि सोधिय जहिं
 कालो सन्धा व सहा

३६
 ५७५
 ७२९
 ७७३९
 २१६
 १६३९
 १४४८
 ५१९
 १८३
 १०३०
 ६२
 १९७
 १३८
 ६४७

कालो सहा य सहा
 कालाणि सरसंखे
 कालोयणीलकाला
 कालोयणीलकाला
 कालोवा जा इमा विची
 कालसुअंमिण मा हू
 कालचगुत्ता सन्ने
 काली इ फहेइ छं
 कालुसिद्धे नेगसा
 कालिअमस विसेही
 कालिअम प पसता
 कालिअमं जे जे विरइठाणा
 कालिअमणि करितो
 कालिअमणि वसीसामन्न०

१४७३ किङ्कमाइविहिस्सु
 १३०२ कित्तो कइओ होइ
 ११४ किण्हवट्टसिरणि
 १२५ किण्हइया ट सेसा
 ६३३९ किण्हा नीला य काऊ य
 १६०८ किण्हा नीला काऊ
 ३३४४ किण्हा नीला य ऊहिंरा य
 २१४५ किचिअरोहिणिस्सिसिर०
 १५७५ किचिअवमियमहिआ
 २५२५ किचेमि किचणिजे
 १२७४ किमिणो सोमूलाय वेव
 १२०६ किरियां वकिरियं विणयं
 १२९७ किरियं च नेवए श्रीरो
 १२२४ किरियासु मयुवागिसु

३
 ७
 ७
 ६
 ७
 ७
 ७
 २
 ३
 ३
 ७
 ७
 ७
 ७

१७११
 १३६६
 २००
 ३०५
 १२३४
 १३४७
 १४४५
 ८६
 ६
 १०८८
 १५०३
 ५७७
 ५८०
 ११४६

| | | | | | | | | |
|-----------------------------|---|-------|--------------------------------|---|-------|---------------------------|---|------|
| किं लिङगाए पंकेनं | ७ | ८४३ | किं ? जीवो त्वपरिणतो | ३ | ८१२ | किं पुन जे सुअगाही | ५ | ४३१* |
| क्वियेसु दुग्मणेसु य | ६ | ४४९ | किं- एवं पडिज्जामि ? | ७ | १०४१* | किं वधुणा ? सत्त्वं चिय | ३ | १६२ |
| किं० अंत्यित्तिसंसजो तुल्लं | २ | ६२० | किं तं आहकम्भंति ? | ६ | १०६० | किं मणिय अत्थिय कम्मं | ३ | ६४४ |
| किं० अत्थिय न अत्थियत्ति | ३ | ६३२ | किं० (ति)ह एत्थया मियत्था | ६ | ५२६ | किं मण्णे तिब्बाणं | ३ | ६४० |
| किं अट्ठिहत्ति पुच्छा | ६ | ५१० | किं दुट्ठिक्खं जायइ ? | ५ | १०२ | किं मत्तसि संति देवा | ३ | ६२४ |
| किं० इहभवंमि सो तारितो | ३ | ६१६ | किं चेत्तिन्नरएइ | ४ | ३८६ | किं यत्ति अत्थिय जीवो | ३ | ६०० |
| किं कइविहं कस्स कहिं | २ | १३४३* | किं न ठविजइ पुत्तो | ६ | ५०९ | किं माइणा ! जोइ समारमंता | ७ | ३९६* |
| किं कइविहं कस्स कहिं | ३ | १४१ | किं मांमे किं गुत्ते कस्सट्ठाए | ७ | ५६८* | किं मे परो पासइ | ५ | ५१३* |
| किं कय किं वा सेलं | ४ | २६३ | किं नु गिही रंधंती | ५ | ११० | किं० याणसी तेसित्तो अत्थो | ३ | ६२८ |
| किं कार्त्तं चमत्थणा | ४ | २३८ | किं नु भो अल मिहिआए | ७ | २३४* | किं तोइअकरणीओ | २ | ७३* |
| किं कीरउ ? जं जाणत्ति | ४ | ३७+ | किं ? ० परलो गो अत्थिय | ३ | ६३६ | किं वा कहिल छाया | ६ | ३१४ |
| किं य दुमा पुफंति | ५ | १०४ | किं ० पंच भूयां अत्थिय | ६ | ६१२ | कीयपडंणि य तुविहं | ६ | ३०३ |
| किं विच भएकाले | ३ | ३०+ | किं पिच्छत्ति साहूणं | ३ | १०११ | कुइयं रुइअं गीयं | ७ | ५१४* |
| किं ची सक्कयसत्तयं | ५ | २३३ | किं पुण जयणाकरणुज्ज० | ४ | ४१+ | कुइयं रुइअं गीयं | ७ | ५२१* |

| | | | | | | | |
|--------------------|------|-------------------|---|---------|-------------------------|---|-----|
| केयलियो विउय निजं | ५५९ | कोडीकरणं दुविहं | ५ | ६२४ | कोसंबीए सिट्टी आसी | ७ | ०० |
| केवलियपरिउं मत्तो | ३०१ | कोडीकरणं दुविहं | ६ | ४०१ | कोसंबी कासवजसा | ७ | २५३ |
| केसाईउयखणं | १६१४ | कोडीवरिसचिछाए | ३ | १४०७ | कोसंबी चंदसुरोयरणं | ३ | ५१७ |
| केसि एयं युयाणं तु | ८६२३ | कोडीसगहिं नवहि उ | ३ | ८(प्र.) | कोसंबीजणप्रदो | ७ | १०८ |
| केसिचि हुंति अमोहा | १४३३ | कोडीसहियमायां | ७ | १६२७ | कोसंबीनाम नयरी | ७ | ७१६ |
| केसी कुमारसमणे | ८४० | कोसंबीगारिअपरणं | ४ | २२३ | कोसंबीजणं भंते! | ७ | ८१ |
| केसी कुमारसमणे | ८४१ | कोसंबीगारिअपरणं | ६ | १६२ | कोहं च माणं च वहेव मायं | ७ | १२५ |
| केसी कुमारसमणे | ८४६ | कोसंबीगारिअपरणं | ७ | २३२ | कोहं मागं च मायं च | ५ | ३७१ |
| केसी गावह नहुं | ५४ | कोसंबीगारिअपरणं | ६ | ४२७ | कोहं माणं मायं लोहं च | ५ | ३०१ |
| केसीगोअमओ निबं | ९१९ | कोसंबीगारिअपरणं | ७ | १०६ | कोहं सि उ सिगहिए | ३ | १०७ |
| कोउइल आगमणं | १९० | को वा से ओसहं देह | ७ | ६७९ | कोहा या जइ या हासा | ७ | ९७१ |
| को फारओ फांतो | १०४६ | कोवो बडवागमं | ६ | ४३४ | कोहे माणे माया | ५ | २७६ |
| कोटम सभा वं पुल्लि | २०१ | कोसंबीए सयाणीओ | ३ | ६२० | कोहे माणे मायालोमे | २ | १२४ |
| कोसिपि देसि अजेचि | २५७ | कोसंबीए सयाणीओ | ३ | १३८३ | कोहे माणे य माया य | ७ | ९२९ |

न. अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ २९ ॥

कोहो अ मागो ध

कोहो सिं पणसेर

कोहो यणो भाया होमे

कोहो य मागो य कहो य जेसिं

कोहो य मागो य कहो य जेसिं

एकारः

सहवमि वटभणत्स

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि न एमं कांठ

सहवमि न एमं गंठु

सहवमि आरमए

सहवमि पुसुकरा धहु कलदुकरा

सहवमि मे महाएय

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

सहवमि वटभणत्सो

१०५१

१०४६

१०४०

१०३५

१०३०

१०२५

१०२०

१०१५

१०१०

१००५

१०००

९९५

९९०

९८५

पञ्चापनु-
क्रमः

॥ २९ ॥

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|-------|----------------------|---|-------|--------------------------|---|------|
| संघा य संघदेसा य | ७ | १३८३* | खीरदहिमाइयां | ४ | १४५५ | खेत्तदिसाअलमाइ | ३ | ८०४ |
| खंघेसु अ दुपरसपसु | ७ | १४७ | खीरददिसपिमाई | ७ | ११२३* | खेत्तं कालं पुरिसं | ५ | २१७ |
| खाइचा पाणिं पांठ | ७ | ६८१* | खीरददिसुक्कटलमे | ७ | ६३७ | खेत्तं विहा करेत्ता | ४ | १४६ |
| खामेमि सव्वजीवे | ३ | १८* | खीरददीधियदां | ३ | १७०४ | खेत्तंमि अणुअंभी | ४ | १२०५ |
| खिइवल्लयदीवसागर० | ३ | ५४ | खीरदुमहेइपंघे | ३ | ३४० | खेत्तंमि अवकमणं | ५ | ५६ |
| खिति वणय वसम कुसगं | ३ | १३८१ | खीरदुमहेइपंघे | ३ | १२२ | खेत्तं वल्लू धणधत्तसंचलो | ७ | २४२ |
| खित्तस्स नत्थि करणं | ३ | १०६९ | खीरमिव जहा हंसा | ३ | ४५* | खेत्तं काले जम्मे | ३ | ३४२ |
| खित्तंमि जंमि खित्ते | ३ | १०८४ | खीरहोरो रोवइ | ३ | ४१२ | खेत्तं काले य वहा | ७ | ४७ |
| खित्तं वल्लू धिरणं च | ७ | १११* | खीरे य मज्जणे मंढणे | ७ | ४१० | खेत्तं समानदेसी कालंभी | ६ | १४० |
| खित्तं वल्लू धिरणं च | ७ | ६१६* | खुट्ठलविगट्टेणा | ७ | २१३ | खेत्तेणं आणए वंघं | ७ | ७६३* |
| खित्तस्स अवद्धानं | ३ | ५७ | खुट्ठलियार असई | ३ | २३४ | खेत्तेणं संपत्तो सो | ७ | ४३५ |
| खित्तानि अमहं विइयाणि लोए | ७ | ३७१* | सुरेहिं विक्खयाराहिं | ७ | ६६२* | खेयविणोओ सीसगुण० | ३ | ५८८ |
| खिणं न स सजेइ विवेगमेतं | ७ | १२४* | सुहं पिवासं दुस्सिजं | ५ | ३६१* | खेइयमइगलेच्छा० | ६ | २१० |
| खीर दहि जा उ कट्टर | ६ | ६२५ | सुहापिवासासीउहं | ३ | +३४ | खोइयमअणवेअउ | ४ | २७० |

श्रीं श्रुतुतुतुतुतु

मकारः

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

६५५

१२२

१२४

१२६

१०६९५

१९८५

१९८५

१०२५

१२३५

१२४५

१२५५

१२६५

१२७५

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

६५०

१०२

१५१०

५२२५

१०९५

१०९८

१५६८५

११२५

३०४

४७५

१६३०

२२७

१९४५

९९६५

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

गदभातुः श्री

७१

४२

३२२

५४५

५६५

५६५

११०५

४८१

१०५१

२१

६६४५

१६४५

२३६५

९३१५

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

मकारः

॥ ३० ॥

| | | | | | | | | | | | | | |
|---------------|--------------|----------------|---------------|-------------|-------------|-----------------|-------------------|----------------|-------------------|------------------|------------------|----------------|-----------------|
| १४०१# | १४००# | १३९०# | १४३१ | १२६६ | १२०४# | १४४ | २४४ | १२०८# | १२१३# | ३४# | १२१०# | १२१५# | १२०५# |
| ७ | ७ | ७ | ३ | ३ | ७ | ७ | ६ | ७ | ७ | २ | ७ | ७ | ७ |
| गंभीरविजया एए | गाढालंघनलामं | गाम० रायंतियरे | गामदुवाल्लासे | गामआसे ययरी | गामगविहलजकब | गामाण दोण्ह वें | गामाणुगामं रीयंतं | गामायारा विसया | गामे गंतुं पुच्छे | गामे नगरे तह एव० | गामे परितलिअगमाइ | गामे य कालभाणे | गारवपंक्रमिबुडा |

५ ३ ४ ४ ४ ३ ६ ७ ३ ४ ४ ४ ७

| | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|----|-----|-----|
| २६४३ | १६८० | १४३१ | ६७ | १४२१ | ४८६ | ४३३ | ६२५ | २३३ | २४२ | १११३# | ८२ | ६०६ | २१० |
|------|------|------|----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|----|-----|-----|

गहणं तण्डमवया
गहणं तण्डुडं
गहणे पम्तेवमिय
गहणेषु न चिद्विज्ञा
गहियंमि अट्टरत्ते
गंभाए दोनिरिया
गंभाओ दोकिरिया
गंभी गभी भयली
गंतु दुवपमूल
गंतु पिआमंतण
गंतूण आपणं सो
गंतूण गुक्कफासं
गंतूग गुरुसमीवं
गागु जोजणं जोजणं

| | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|------|------|------|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ३ | ७ | ४ | ५ | ३ | ७ | ३ | ७ | ४ | ६ | ६ | ४ | ४ | ३ |
| ७०२ | ३४८ | २८७+ | ३४५# | १४२३ | १६६ | ७८० | ६४ | ३८५ | ४९६ | १९९ | ७९८ | १५८ | ९६४ |

गंधओ जे भवे दुब्बी
गंधओ जे भवे सुब्बी
गंधओ परिणया जे य
गंधवदिसविजुकाजिए
गंधवन्नामदत्तो इच्छइ
गंधस्स पाणं गहणं
गंधगमोसहंगं
गंधाहणसमिद्धं
गंधाणु०
गंधाणुवाए०
गंधारे गीतजुत्तिज्या
गंधे अतिवे
गंधे विरत्तो०
गंधेसु जोगेहिं

| | | | | | | | | |
|----------------------------|---|------|---------------------|---|------|--------------------------|---|------|
| गारविण काशीण | ४ | ४१४ | गिहिं नहेहि सण्ह | ७ | ३८४ | गुणसंवेग पुग्गि | ६ | ४१० |
| गारवेसु कमारसु | ७ | ६११ | गिहिं रेवयं नंती | ७ | ८१५ | गुणगं आसवो टब्बं | ७ | १०६६ |
| गारविणभासाओ | ४ | २७०+ | गिहवासं परिससा | ७ | १३५४ | गुणहिए वंदणं | ३ | ११५० |
| गामी महिसी उट्ठी | ५ | २६० | गिहवासो अट्टारस | ३ | २८८ | गुणिवदुगइसे | ५ | २२३ |
| गाहासोलसएहिं | ७ | ११४७ | गिहिणो जे पव्वएण | ७ | ५०३ | गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू | ५ | ४४१ |
| गिण्हइ णांमं एगस | ३ | १३४४ | गिहियोऽवि सवारंभा० | ५ | ३३८ | गुमिअ मेसण समणा | ४ | २०२ |
| गिण्हइ य कारएणं | ३ | ७ | गिहिणो वेआयडियं | ५ | २२ | गुण गुहणा गुरु लुहणा | ६ | ५६२ |
| गिण्हइणुणयवहर० | ६ | ३८१ | गिहिणो वेआयडिअं न | ५ | ५०८ | गुरुवन्नेण व मिहिअं | ४ | २५१+ |
| गिण्हइते य अविणं | ३ | +२५ | गीयपरिगाहिअ | ४ | ३८३ | गुरुपधस्सणगिल्लण० | ४ | ३५७ |
| गिह्वाइमस्सरणं गिह्वादिदु० | ७ | २३४ | गीयत्थो व विहातो | ४ | १२२ | गुरुपस्सणिगियण० | ६ | ३३ |
| गिह्वाणेने य मच्चणं | ७ | ४८५ | गीयस्स अ इवइ जोणी ? | २ | ४३ | गुरुपरियोसणं | ३ | ७०० |
| गिण्हसु तिण्णि पडळा | ४ | ६०० | गुणनिण्णं गोणं | ६ | १+ | गुरुमिह सयं पडिअरिअ | ५ | ४५३ |
| गिण्हसु पंय पडळा | ४ | ७०१ | गुणमवणणइण० | १ | ४ | गुरुमूलेवि वसंता अतुल्ला | ३ | १३७० |
| गिण्हसु इंती चट्ठी | ४ | ७०० | गुणसंवेण पट्ठा | ६ | ४०२ | गुरुमाहिमियसुस्सणयार | ७ | १८ |

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|------|----------------------|---|------|---------------------|---|-------|
| गुथिणि गढमे संपट्टणा ३ | ४ | २४६+ | गोट्ठण्णत्त सग्गे | ३ | २१२+ | गोयदिसुट्टिण्णं | ३ | १०८२ |
| गुविण्णिगढमे संपट्टणा | ६ | ५८३ | गोट्ठिनिउतो घम्भो | ६ | २४६ | गोमिज्ज य रुक्खे | ७ | १४४८* |
| गुडिणीए उवण्हयं | ५ | ९८* | गोणइ कालभूमीइ | ३ | २८५० | गोयमनामगोयं | ७ | ४५३ |
| गूहापारा न करेति | ६ | २०६ | गोणादि कालभूमीइ | ४ | ६४४ | गोयमवाई यामाइयं | ३ | ७४५ |
| गेम्यसु तिप्पि पड्डा | ४ | ६९९ | गोमीपंदपड्डा | ३ | १३६- | गोयरणपविट्ठस्म | ७ | ७७* |
| गेद्वज्जप्पिज्ज-सेट्ठिज्ज | ५ | ९३* | गोमीहरण सभूमी | ६ | ११९ | गोयत्तमिगहज्जुयं | ३ | ५३१ |
| गेळन्नकज्जुविओ | ४ | ४२८ | गोमे महिसे आसे | ४ | ४६४ | गोयं कम्मं दुविहं | ७ | १२८०* |
| गेळन्नविममाणं | ४ | ६१४ | गोणसंगयाइरित्तं | ६ | ५+ | गोरी गायति महुरं | २ | ५५* |
| गेत्तआर अयाह, पुणिए | ४ | ४३५ | गोणं समयकयं वा | ४ | ३३४ | गोवपओ अच्छेत्तुं | ६ | ३३८ |
| गोअगकेसीओ अ | ७ | ४२४ | गोणं समयकयं | ६ | ६ | गोवनिमित्तं सक्कस्स | ३ | ४६१ |
| गोअमो पट्टिरुत्तु | ७ | ८४६* | गोखासिउ महुराए | ३ | ४४६ | गोवाला य भयए | ६ | ३६७ |
| गोअरण० निस्सिआ जस्म | ५ | २६५* | गोन्नं नामं तिप्पिहं | ३ | १६०० | गोवालो मंडवालो वा | ७ | ८२७* |
| गोअराणापविट्ठो अं | ५ | ७८* | गोभूमिवज्जलढे | ३ | ४९१ | गोत्तसुहणवगाइ | ३ | १५०६ |
| गोअरणपविट्ठो अ | ५ | १६७* | गोमदिसिअयाहां | ६ | १३२ | | | |

चक्रारः

यद्वास्तुतिअरुंदा

४

११

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

११

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

७

५८५४

यद्वास्तुतिअरुंदा

४

२७५

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

२१५

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

७

५८६४

यद्वास्तुतिअरुंदा

३

२००

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

७४

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

७

५८९४

यद्वास्तुतिअरुंदा

६

१७

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

७२

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

५

३५४

यद्वास्तुतिअरुंदा

४

३४४

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

३२१

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

४

३९०

यद्वास्तुतिअरुंदा

४

७३९

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

६

६१३

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

२

३१४

यद्वास्तुतिअरुंदा

४

७०८

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

४

१६०

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

५

२७८४

यद्वास्तुतिअरुंदा

६

३७६

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

६

३५६

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

७

१०२७४

यद्वास्तुतिअरुंदा

६

२६६

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

१३४३

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

३

१६६९

यद्वास्तुतिअरुंदा

३

९५

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

७

२६९४

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

३

२६९

यद्वास्तुतिअरुंदा

७

१२०३४

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

३

१४८

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

७

१५९९४

यद्वास्तुतिअरुंदा

६

६३६

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

७

२२८४

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

३

२७४

यद्वास्तुतिअरुंदा

६

६३६

विपुं च सुहं मुहयुण्ण०

७

२२८४

चइत्ता० चफाट्टी मदिहू

३

२७४

चउज्या य परिसप्ता

चउभागउयेसाए

चउरंगं दुस्रं मडा

चउरंगीए सेंगाए

चउगुलसद्दाणा

चउगुलमन्सं जाणु०

चउगुलमुहुपत्ती

चउगुलमुहुपत्ती

चउगुलं विहत्ती

चउगुलीइ विसत्तारि

चउगुलीइ वावत्तरी

चउगुलीइ वावत्तरी

चउगुलीइ विसत्तारि

चउरिदियागमद्दाणा

१५५२३

६३३

११४

७९४

७३४

२६६

१६४

५११

७१२

३०३

३०५

३०४

४०६

३०१

३०१

चउरिदिया व जे जीवा

चउरिदियाग मविसय०

चउरिदियाग मच्छिबपिहारे

चउरुलोए य दुवे

चउरो अइमवक्कमा

चउरो य हुंति मंगा

चउरोडेवि विविइजोगे

चउरोडेवि विविइवेदे

चउरो साइस्तीओ

चउरीसह्यवस्त उ

चउरीसत्यएणं भंते !

चउरीस सामराइ

चउरीसंति य संत्ता

चउरीसा चउरीसा

१५१८

३६८

४९

१४२

१७९

१७०

८२०

८१८

३१५

१०६७

२३

१६०

१०८९

२६३

चउन्विहा० अयात्समाही

चउन्विहा तवसमाही

चउन्विहा० विणयसयाही

चउन्विहा खलु सुअसमाही

चउन्विहेडेवि आहारे

चउसुवि गइसु

चउसुवि गरीसु णियमा

चउहा खलु आहरणं होइ

चउहि समएहि लोभो

चउपुरं रायपुरं

चउयंमि ममाहो

चउवही महिहुओ

चउिहुगं हरिणगं

चउे थूमे पडिमा

२०

१९

१७

१८

६३०

३०५०

८१२

५४

११

३२५

८३-१०५

४०९

४२१

१२०

| | | | | | | |
|------------------------|-------|-----------------------|-----|-------------------------|---|-------|
| चक्रमुचयवशूरोहिस्स | १२७२४ | चत्तारि परंपराणि | १५४ | चरसे नागपराणं | ३ | १२६ |
| चक्रमुचय असम च | १५८ | चत्तारि मंगलं अहिंता | ३ | चतुं विरयं दूतं | ७ | ५४४ |
| चक्रमुला पडिलेहिंता | १३४४ | चत्तारि य मिहिंलो | ७ | चरिजं च कपिजं वा | ५ | ५३ |
| चक्रमुदस रुं गहणं | ११७७४ | चत्तारि ओमुत्तमा | ३ | चरिचमायागुणमिह | ७ | ७५०४ |
| चक्रमुदस रुलसस | २४२४ | चत्तारि कमे सया कंसार | ५ | चरिचमोदणं कल्पं | ७ | १३७६४ |
| चत्तारि अद दस दो | १८४ | चत्तारि सरणं पवजामि | ३ | चरिचसंप्रभाणं पं मंते ! | ७ | ७५ |
| चत्तारि अ दीसाहं | २६१ | पत्ता होमि गिलाणा | ४ | चरिचसरीरो साहू | ७ | २१० |
| चत्तारि अ रयमीओ | १७२ | चमहिंदंतभूरोमं | ४ | चरिसाण संदिद्धो | ४ | ३१५ |
| चत्तारि व अणुभोगा चरणे | ५५ | चमहिंदंतभूरोमं | ६ | चरिसे परितावियं | ४ | १४१ |
| चत्तारि ज्यभासे | ८४ | चरणमरुगाइआणं | ५ | चरियं च कपियं वा | ५ | ४३० |
| चत्तारि गाठयाइं | ४७ | चरणकणालसंमि य | ६ | चरिया य विचिया | ७ | ५४२ |
| चत्तारि दुबालस अट्ट | ८४४ | चरणपडिचिहं | ४ | चरे पयाइं परिसंक्रमणो | ७ | २३ |
| चत्तारि दो दुबालस | १६२८ | चरणविहिं पयक्यामि | ७ | चलदुपडणकटगविलस | ४ | १२१४ |
| चत्तारि पडिकामो | १२१३ | चरणे लको हन्वे | ७ | | ४ | ४६६ |

चलचलभूसणयरा

चलणहण आमडे

चलणहण आमडे

चलनं वम्मगाई रलु

चलमाणमणकै सभए

चवैवमुडिमाईहिं

चंवजस चंवफता

चंवजसा रावगिहै

चंवणगेठयंसयम

चंवणमा य सीआ

चंवइयगहाणं पहा

चंवदा सूर य तरलता

चंदिमसूरभरागे

चंदेशु निमलयर

३

१

३

५

४

७

३

३

७

३

३

७

३

३

३

११५

७४५

१५१

१२२

३३

६६७५

१५९

१४००

१४४९५

१२५

१११३

१५८०५

१४३४

७५

चाउलोदगंभि से वेहि

चाउलोयगमाईहिं जल०

चाणकपुच्छइहाल०

चारणभासीविस०

चालिचइ बीमेइ य

चिचिरासवालसावय

चिबाग धयं च भारियं

चिबा दुपयं च वरपयं च

चिबा रुं पखइओ

चिण्ढा उवगणं दोसा

चिचयहुलट्टमीए

चित्तिभिंति न निवहाए

चित्तमंतमचितं वा

चित्तमंतमचितं वा

चित्तमंतमचितं वा

चित्तमंतमचितं वा

२१२

२८६

१३९०

७५९५

१३९९

४३१

११७

९३

४८२

५२३

८४३५

८५४५

२३६५

२३७५

६

३

६

३

३

४

७

७

७

३

३

५

५

७

१६७

१३१७

४६५

७०

१११

४९

३१८५

४३९५

५६७५

१३४०

११८७-३१४

३८९५

२२२५

१७२५

विषादवधासेरी दशाभिजोग्ग

चित्तस सुदृढा

चित्तं देवग सत्ता

चित्तं तिरादविसरं

चित्तं घाताणं

चित्ताभावे विसया

चित्ते अ विद्रुमाल

चित्ते द्रुलपवती

चित्ते संनूतं अ निस्सेवो

चित्तेसंभूतं वेभंतो

चित्ते दुद्धिगारसि

चित्ते पुग नामो

चित्तोद्वि दानोद्विस्तकाभो

चित्तसंभूतं चित्तरिचिं

२१५

२४९

२२६

१९५

५६२

१८६

३३७

२६२

३२८

३३०

२४३

४०७

४४०

३०३

विदंसे से गुंढदई

विता छोदगरिए

वीर्याजिणं निगिणिणं

वीर्याणि विसारंती

पुत्रे जंढाणे पाणभे

पुलसीइ पंचनउई

पुलसीइ च सहसरा

पुलसीइमणइहे

पुल्ला पासां वने

पुल्लाविदामुग्गा

पुल्लो यवधुदो वा

पुल्लपरुलिया दोए

पुल्लसरा कम्माई

पुल्लं तु पवस्सामि

७३९

९५

१४८

८१६

५००

२६६

२६६

४४८

१६९

३८३

३४५

२६०

२६२

५००

चेदअवंदनिमंण

चेददुमपेट्टइव

चेदइकुलणसंवे

चेदइकुलणसंवे

चेदइयूवा कि वयरसानिणा

चेयणमवेयणस व

चेयणमवेयणं वा

चोअग इंधणमार्दई

चोअगणुसज्जिहे

चोअगवयणं भाणा

चोएद पुणो ठेवं

चोएसि जइ हु सिद्धो

चोदगवयण गंतुव

चोदगवयणं छट्ठी

१००

५५३

१११२

११२१

११२२

६६१

१५६३

२६१

२३०५

४२५

२००५

७११

१९८५

४५

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|------|-----------------------|---|---------|------------------------|---|------|
| चोदसपुत्रवधरतो | ७ | २०+ | छत्रमत्स्यपरीयामं | ३ | ४६३ | छट्टि हिट्टिमग्रिहम | ३ | ५० |
| चोदस नासामि यया | ३ | १२५५ | छत्रमत्स्यपरिजायो | ३ | ३३१ | छट्टेणं मत्तेणं | ३ | ९६+ |
| चोदस सोलस वसा | ३ | ७८२ | छत्रमत्स्यमरण केवंलि | ७ | २१३ | छट्टमन्नयरे ठाणे | ४ | ५८० |
| चोदसहि भूयगमेहि | ३ | १६ | छत्रमत्स्यपुत्रभा | ५ | ४१+ | छचोसगुणतमभागण | ४ | ७९५ |
| चोदा दो वाससया | ३ | १२९+ | छत्रमत्स्यपुत्रस | ६ | २२२ | छचीसा सोलसगं | ३ | ६५१ |
| चोयग इंधणसाहिहि | ६ | २६१ | छत्रमत्स्यो सुमनात्री | ६ | ५२३ | छचोसे अट्टगुणे | २ | ४६६ |
| चोयगपुच्छा दोसा | ४ | १८७ | छकायदयावंतोडवि | ४ | ४४२ | छमुव्वससहरसा | ३ | १९६ |
| चोयगवयणं अप्पणुंदिमो | ४ | १४८+ | छकायवत्सणद्धा | ४ | ६९२ | छन्नगवागमाई | ६ | २७८ |
| चोयगवयणं वीहं | ४ | १५१ | छकायवगहत्था | ६ | ५७५-५९१ | छम्मागि गोव फवसल० | ३ | ५२५ |
| चोरा मंडव भोजं | ३ | ४८१ | छचेर य मासाज | ७ | १५२४३ | छम्मासब्बंतरो | ३ | ५२३ |
| चोरोयणयविवाहे | ३ | २०६ | छजीवकाए अ समारमंता | ७ | ३९९३ | छम्मासे अणुमंदं | ३ | ५१३ |
| चोहग पासग धण्णे | ३ | ८३२ | छजीवमायसंजमु | ३ | १९५+ | छम्मासे छत्रमत्स्यो | ७ | २५८ |
| छकारः | | | छजीवणिपाए एलु | ५ | २१९ | छलया व सेसणं | ३ | १४३७ |
| छत्रमत्स्यकालमिचो | ३ | ३०२ | छट्टणा विगठाणा | ४ | ७९० | छव्वाससयाइं म्बुत्तराई | ३ | १४५+ |

छन्वीसं सागादं

छन्वीसार सहस्तेहिं

छहिं कारणेहिं साधू

छहिं नासेहिं अहिं

छंषणा द्रववाणं

छंषणा नामं इच्छाकरो

छंषिरीहेण ववेति मुक्कं

छंषणजुजागामि

छापरं जणुक्कमइ

छायंसि विवज्जती

छावाहिं वडसट्ठि

छिण्णंसि ससयंसि

६०५, ६२१, ६४१, ६२९, ६३७, ६१३

६०१, ६२३, ६०९, ६२५

छिंदित्तु जालं अरुलं व

छिन्नमच्छिन्नं दुविहं

छिन्नमछिन्नो दुविहो

छिंजमि रजो उरुद्धियमि

छिंमं सरंभोमं अंतस्सिपुं

छिन्नाले तिंदइं सिद्धिं

छिन्नावासु पंथेसु

छिजो दिट्ठमदिट्ठो

छुहा तथा य सीरुहं

छेलावणमुच्छिद

जकारः

जइ अण्यपविट्ठस

जइ अत्थि आयमावो

जइ अन्मत्थेज पं

जइअन्मासे गमणं

जइ असणमेर सव्वं

जइआ चेव व सेत्तं

जइ आनसगस

जइ उक्कालिअस अणुभोगो

जइ उवसतक्कसाओ

जइ एणां चित्तं

जइ एवं संसट्ठं

जइओ वीसाअभिगह

जइणो सावगलिण्वव

जइ उक्कजो निरुवहओ

जइ तं अइसि भावं

जइ वं अइसि भावं

जइ ता पासत्थोसण्ण०

१८२

१९८३

१७०

६

५

११९

१५६८

१५०+

१५६

१५७

६०९

१४६

८२६६

४८+

४

३

४

२

२

३

३

४

६

६

४

५

७

४

४७५६

२३१

३८४

३९१

५००६

१०५०६

५३६

३८५

६३१६

२८+

७

६

६

६

७

६

६

६

७

७

७

६

७

३

२

३

३

३

१६०९६

११५०

६६१

३७२

११७६

१९४६

१२२६

१२३६

३१७+

१७२

२५८

६१७

६०५, ६२१, ६४१, ६२९, ६३७, ६१३

६०१, ६२३, ६०९, ६२५

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|-----------------------|---|-------|--------------------------|---|------|
| जइ सिद्धि सब्दगमयं | ४ | १५७ | जइ मुहा कगियाएया | ३ | १२२५५ | जइसि हवेण वेसमजो | ७ | ८२३५ |
| जइ ते चितं शायं | ३ | १५८४ | जइ फुसइ तहि तुंडं | ३ | २२५५ | जइ सुद्धा संवासो | ४ | ९८ |
| जइ ते छिंग पनायं | ३ | ११३५ | जइ मब्बा कारणाएए | ७ | ८०१५ | जइ सुयनास जइसो | २ | ३ |
| जइत्ता विठले जमे | ७ | २६५५ | जइ य पडिक्कियव्वं | ३ | ६८३ | जइ से न जोगहाणी | ६ | ६१८ |
| जइं दोण्ह एग निफ्फा | ४ | ४२० | जइ रितो तो दवमचंगमि | ४ | २६३ | जइ हुन्न सस्स अणलो | ३ | ४७० |
| जइ पाई कीस पुणो | ५ | १०८ | जइ छियमप्पमाणं | ३ | ११३६ | जउपरपासावमि | ७ | ३५६ |
| जइ पच्छकम्मदीसा | ६ | ६१४ | जइ छुद्धो राइमिओ | ४ | ५६३ | जम्भो तहिं तिदुयठम्भवासी | ७ | ३६६५ |
| जइ पुण दह्वणीए | ४ | १५२ | जइ वाहुदेवु पढमो | ३ | ४३१ | जगनिसिपाहिं भूएहिं | ७ | २१७५ |
| जइ पुण गच्छंताणं | ३ | १४६९ | जइविय वा पब्जत्ता | ६ | ४६७ | जअंजणधाउसम्पद्दण | १ | ३१५ |
| जइ पुण निब्बायाए | ३ | १६१५ | जइविय पडिमाउ | ३ | ११४७ | जअिय वेहावत्था | ३ | १३९ |
| जइ पुण निज्यायाओ | ४ | ६३६ | जइवि ययमाइएहिं | ३ | ७१३ | जइ महिसे चारी | ४ | २३२ |
| जइ पुण पासवंगं से | ४ | २६५५ | जइवि सुओ मे होही | ६ | ५११ | जहा जं बा तं वा सुकुमारं | ४ | १३१५ |
| जइ पुण वषंताणं | ४ | ६४२ | जइ संका दोसअरी | ६ | ५२९ | जणणी सब्बत्थ विणिच्छणसु | ३ | १०९३ |
| जइ पुण वियाल पत्ता | ४ | १०९ | जइसि भोगे चइडं असत्तो | ७ | ४३७५ | जणल्लवो परगमे | ४ | १४०५ |

| | | | | | | | | |
|--------------------|---|---------|-----------------------|---|------|---------------------------|---|------|
| जगत्पयसमयव्यवस्था | ५ | २०६ | जस्य यज जगणेन्या | २ | १३३८ | जस्य एतद् एतद् एतद् सुयसस | ६ | ७६ |
| जगत्सावनाग सिंसण | ६ | ५०४ | जस्य य नसि वनां | ३ | १३३८ | जस्य मंगलीरे | ७ | ३२४ |
| जगणे साद होवसामि | ७ | १३२४ | जस्य याया सय चोरो | ७ | १३३ | जस्य चिचाईया | ५ | २१५ |
| जगत्सवसमवार | ३ | २०६ | जस्य० लिगवेसपडिक्का | ४ | ७८२ | जस्य दसणनाग | ३ | ११७९ |
| जगत्सादगदेअ | ४ | ५७८ | जस्य साहम्मिया वहवे | ४ | ७८० | जस्य विणयद कम्म | ३ | १२२९ |
| जस्य अनुजोसरण | ३ | ५४४-५६८ | जस्य० सोलमंता बहुसुखा | ४ | ७८४ | जस्य जगजीवजोणी | १ | १३३ |
| जस्य उ सद्मो भंगो | ६ | १५९ | जस्येय पसे ऊर | ५ | ५१३३ | जस्य सुवाण पमवो | १ | २५ |
| जस्य० उषणुणपडिसेवी | ४ | ७८१ | जसि पडनं न तेल्ला | ४ | ६२२ | जस्योसा अणसाया | ७ | ४६५ |
| जस्य उ थोवे थोवे | ६ | ५६९ | जस्येयमति पुरिस० | ३ | २११५ | जस्यजस्यं च मिही | ४ | ५० |
| जस्य उ सविचरिसि | ६ | ५४५ | जस्यमिजडा हेलुज | ७ | १४५ | जस्यनाग विहरा | ४ | १२५ |
| जस्य पुणा पडिगाहो | ४ | ५७४ | जस्यं दिया य रामोय | ७ | १२३ | जस्यं चरे जव चिह्ने | ५ | ३९५ |
| जस्य पुत्तां पीआरं | ५ | ८०५ | जस्यण विणीव उव्वा | ३ | ३९७ | जस्य म कुहुयसस | ५ | ४८८ |
| जस्यउदे यसाओ | ४ | ३०५ | जस्यणे नामवुट्टी अ | ३ | १८३ | जस्य अ थेल्लो होद | ५ | ४८० |
| जस्य ए एतो सिद्धो | ३ | १७५ | जस्यदुक्खं जरादुक्खं | ७ | ६१५ | जस्य अ पूढो होद | ५ | ४८५ |

| | | | | | | | | |
|--------------------|---|------|--------------------|---|-------|----------------------|---|------|
| जया अ नानिनो होइ | ४ | ४८६३ | जया य चबई धम्मं | ५ | ४८२३ | जसमोरे तिरिंका | ३ | १३८० |
| जया अ थंदिमो होइ | ५ | ४८४३ | जया य पडूमो होइ | ५ | ४८५३ | जसस वणुनाए | ३ | ७६७ |
| जया ओहाविओ होइ | ५ | ४८३३ | जया य से सुही होइ | ५ | ६८०३ | जसस आवं सलु | ३ | १६३ |
| जया धम्मं राविताणं | ५ | ५६३ | जया रत्नं य रटुं च | ५ | २७६ | जसस खलु दुप्पणिहिआणि | ५ | ३०० |
| जया गइं वटुविइ | ५ | ४६३ | जया लोगमल्लो व | ५ | ५४३ | जसस जहा यडिजेहा | ५ | ६६२ |
| जया ययइ संजोगं | ५ | ४९३ | जया सब्बसं नाणं | ५ | ५३३ | जससलिय मवुणा सकयं | ५ | ४६७३ |
| जया जीवमजीवे अ | ५ | ४५३ | जया सत्तवं परिबज्ज | ५ | २७८ | जसस पुण पिडवायट्टया | ५ | ३५ |
| जया ओगे निरुनिता | ५ | ५५३ | जया सत्तवं परिबज्ज | ५ | ५५९३ | जसस य इच्छाकरो | ५ | ६९० |
| जया ते पेइए रत्ने | ५ | २७७ | जया संवसुकिइ | ५ | ५९३ | जसस य जोगमकाऊण | ५ | ४६९ |
| जया धुणइ कम्मरयं | ५ | ५२३ | अरमरपवेगेणं | ५ | ८९९३ | जससवि अ दुप्पणिहिआ | ५ | ६०२ |
| जया तिन्निवइए मोगे | ५ | ४८३ | अरा आव न पीडिई | ५ | ३७०३ | जसस सामाणिओ अप्पा | ५ | १२७३ |
| जया पुणं य पावं व | ५ | ४७३ | अराअरपंअरे | ५ | ६४६३ | जसस सामाणिओ अप्पा | ५ | ७९७ |
| जया मिंगस आयको | ५ | ६७८३ | जळवळनिमिसिया जीवा | ५ | १३६३३ | जससलीए धम्मपयाइ | ५ | ४९०३ |
| जया मुंटे भविताणं | ५ | ५०३ | जसमइं धुंमियं | ५ | २४३ | जससोरिसा जोग० | ५ | ५९४३ |

| | | | | | | | | |
|-----------------------|---|-------|---------------------|---|------|--------------------|---|-------|
| जह धाऊ कणगाई | ७ | ३४ | जह मम न पियं दुखलं | ५ | १५६ | जह सुखलोडवि विजो | ४ | ७९६ |
| जह नरवइयो अपणं | ४ | ४५+ | जह रणो विसएसुं | ४ | ८+ | जह सुंरिहिसुमंगो | ७ | १३०८* |
| जह नाणेणं न विणा चरणं | ३ | ११६५ | जह रोगसयसमणं | ३ | १०० | जहा अगिासिहा दिता | ७ | ६३९* |
| जह नाम आवरस्सिह | ५ | ३६६ | जह बडसाओ हल्लि गामा | ५ | ६४ | जहाऽऽइजसमारुढे | ७ | ३४३* |
| जह नाम कोइ सिद्धो | ३ | ९८३ | जह वंते तु अमोजं | ६ | १९१ | जहा इहं अगणी उगो | ७ | ६४७* |
| जह नाम महुरसलिलं | ३ | ११३१ | जह वा पयसंधाया खजेण | ३ | १०२ | जहा इहं इमं सीयं | ७ | ६४८* |
| जह नाम महुरसलिलं | ४ | ७७७ | जह वारिमत्तइडोव | ३ | ८३७ | जहा इ पावगं कम्मं | ७ | १०९८* |
| जहमेण कोळपटो | ४ | ४१६ | जह वेलंकाणिं | ३ | ११४९ | जहाऽऽएसं समुदिस | ७ | १७८* |
| जह परिणयंइगरसो | ७ | १३०४* | जह समिजा पम्भडा | ३ | ८३४ | जहा अणेणुपरिकिण्ये | ७ | ३४४* |
| जह धालो जंपतो | ४ | ८०२ | जह सबवकामगुमिअं | ३ | ९८५ | जहा कागिणीए हेवं | ७ | १८८* |
| जह धूरस्सवि ससो | ७ | १३१०* | जह सवसररीरणं मंतेण | ३ | १७१ | जहा सुकुडयेजत्स | ५ | ३८८* |
| जह अमरोसि य पयं | ५ | ९७ | जह सायंसि मीणा | ४ | ११७ | जहा कुसगो उदयं | ७ | २००* |
| जह मझे एअमहुं | ७ | ३०४ | जह सावजा किरिया | ३ | ११४५ | जहा सरो चंदणभावाही | ३ | १०० |
| जह मम ण पियं दुखलं | २ | १२९* | जह सा हिरण्णमाईसु | ४ | ५०१ | जहा सलु से ओरुमे | ७ | १८१* |

अदा योदे फडिपेसि

अदा पंदे गहरांरा

अदा जलंदाय फडांर

अदा मुखाय होलेइं

अदा दवागी पडिपेसि यो

अदा दुरसं मीरे जे

अदा दुगलस पुलोगु

अदा निमडे सवगिबाली

अदा योगसं जे जालं

अदा पिराजयसरस मूले

अदा मुगारि गरिं

अदा मरादागाम

अदा निर एगजोगेवारी

अदा बरगमी भरुनीउल्लेखो

६२२२

९६४४

१४०९

६४११

११६६६

६४००

२६

४११२

९७४४

११६८

६४२२

११०२

६८३३

४५८४

अदा य अंठपमवा मलागा

अदा य क्रियागफला

अदा य सिधिय यनिया

अदा य मोई' कलुं मुयंगी

अदा लसो सदा लोमो

अदा लोरो सदा लोरो

अदा बरं पममजपनागा

अदा ससी गोगुरजोगजुलो

अदा संमसि पयं निदिं

अदा सामठिजो जालं

अदा सा दुमाय पवरा

अदा सा नरुंय पवरा

अदा सुपी पुईरुणी

अदा सई सभुवा

११६१

११७५

१९११

४७४४

२२४४

२६६६

४६००

४१२३

३४११

१४११

३९३३

३५४४

४४

१०९७

अदा से सहुबई बदे

अदा से बंनोयाणं

अदा से चाअरि

अदा से तिसराशते

अदा से तिसरासिंयो

अदा से तिमिरावेइसे

अदा से तगाय पवरे

अदा से बाहुदेवे

अदा से संयंगूरलो

अदा से सहरसन्हले

अदा से सामावयणं

अदादिअमी जलं नयंसे

अदिज संगंध सदा०

अदिय तु मासठणं

३५११

३४२३

३४८४

३४६६

३४५५

३५००

३५५५

३४७७

३५६६

३४९९

३५२३

४०९९

४६९९

२५५०

| | | | | | | | | |
|--------------------------|---|-----|----------------------|---|-----|--------------------------|---|------|
| जदेव कुंभारसु पुत्रालिचे | ६ | ३६४ | जं ध महाकणसुव | ३ | ७७७ | जं बुकहंतिमिच्छा तं मुजो | ३ | ६८४ |
| जदेव सीहो व मियं गहाय | ७ | ४२७ | जं ध मे पुच्छसी कलि. | ७ | ५७९ | जं दु० तं चैव | ३ | ६८५ |
| जकारण निष्कर्मणे | ३ | ६९५ | जं चैव आउयं | ३ | १६२ | जं नेद सया रति | ७ | १०१० |
| जं निर वलं हुलं | ७ | ४९३ | जं अस्स आउयं | ७ | १६३ | जं पप्प नेगममओ | ७ | ८१ |
| जं किंवाहारणगं विविहं | ७ | ५०५ | जं जह ध कयं दाहं | ६ | २४२ | जं पित्त व पायं वा | ६ | २२८ |
| जं किंचि कदमकजं | ४ | ८०१ | जं जं जे जे मावे | ३ | ७९४ | जं वलं व पायं वा | ५ | ५४७ |
| जं कुणह भावसहं | ४ | ८०५ | जं मिज्जीवीणं कीरु | ३ | १५७ | जं पुण अचिसद्वलं | ३ | ५४७ |
| जं केसवत्स ड वलं | ३ | ७६ | जं जणेल्ल चिययोयं | ५ | १३५ | जं पुण जरिसमाणा | ३ | १३३३ |
| जं पद्दा संघट्टो-मामी | ४ | ३४५ | जं जुज्झ ल्वकरणे | ४ | ७४२ | जं पुण सुवत्स सेसं | ४ | ५७६ |
| जयापरितिय सट्ठी | ६ | ६०७ | जं तु पुल्लसवभावं | ३ | २३३ | जं पुण सपमाणाओ | ४ | ७२८ |
| जं यावाह तरी इव जले | ५ | ३३१ | जं तेहिं दायलं | ३ | ११० | जं पुण सुणियकंयं | ३ | १७९ |
| जयादीणा नोमे | ६ | ४४५ | जं विरमन्दवसाणं | ३ | १२ | जं बुदीवे लवणे | ३ | १२५ |
| जं घण एवमादी | ४ | ७३० | जं दलं उवगाइसु छटमहे | ६ | ९८ | जं अ चास मउरे | ४ | १०८ |
| ज व तवे उज्जुला | ५ | १३७ | जं दिसि विअदियं | ३ | १३४ | जं व चास मउरे | ४ | ८४ |

जं भगिरी नयि भावा

जं भगपणउवगरण०

जे भवे० न मे हणइ वारिसं

जे० भावे परिणइ

जं मिपरगणविपी

जं भियगामे नगणस

मिय बहि उजुवालिय

जं मि निसेविजंते

जं मे पुढाशुतासंति

जं वं बं वयमाणस

जं पाइं पबमेलियं

जं विविपममदं

जं वेळं छावगजो

जं संठाणं तु इइ भवं

७१

२५

१०३६

७९६

३४६

५२४

५२६

५७

२७६

२९०

२०

५१०६

१३२५

९६९

जं संभगमि जं प

जा अ सभा अवत्तवा

जाइमं पठियइ

जाइमणजो सुवइ

जाइमं इमे रुक्ता

जाइ सद्धा निवसंतो

जाइसरो अ भयं

जाइं पणारि मुजाइं

जाइं सारि भयं

जाइं पणसनिवेयं

जाइं पुढागणमे

जाइं वुळे विमासा

जाइं जगमभुमयमिमाया

जाइं जगमभुमयमिमाया

३

५

७

५

५

५

३

५

७

७

६

६

७

२४

२७९६

३६३६

४६०६

३०८६

३९५६

१९३

२५५६

२२९६

३५३

४३७

४३८

४४४६

१२६

जाइं पणमिजो राहु

जाइंसरो अ भयं

जाइंसरो समुणजे

जा उ अस्माविणी नवा

जाइ रिवाइ उ गवा

जाइ रिवाइ गमो तवो

जाइ रिवाइ गिलाणो

जा रिवाइ ठिइं सलु

जा वेव उ आगिइं

जा वेव उ आगिइं

जा जयमाणस भवे

जा जयमाणस भवे

जा जा ववइ रयणी

जा जा ववइ रयणी० धम्मं तु

७

३

७

७

४

३

४

७

७

७

६

४

७

४०६६

७१५

६०८६

९०३६

२४७

१३३९

८४

१३४०६

१५४०६

१६१७६

६७१

७३०

४६४६

४६५६

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|-----|-------------------------|---|------|------------------------|---|------|
| जा जेग होइ वंशेग | ६ | ४१९ | जाणमवियसरीरा | ७ | २८१ | जाण० मावंमि असमिइओ | ७ | ४६१ |
| जाण० अउदपससाणयणे | ७ | ५४७ | जाणरा० भावे सम्भरिहो | ७ | ५५० | जाण० मावंमि दसविहं | ७ | ४८४ |
| जाण० | ७ | ३६० | जाणग० सभा कठकरणाई | ३ | १५३+ | जाण० मावंमि दसविहाए | ७ | ४८८ |
| जाण० अहुविहकम्ममुको | ७ | ५०० | जाणमसरीर० | ७ | ३९२ | जाण० भावंमि नाणदंसण | ७ | ५०२ |
| जाण० अउयमोहयवालय | ७ | ५१० | जाणमसरीर० | ७ | ४४४ | जाण० भावंमि होइ दुविहो | ७ | ५१४ |
| जाण० आचरणे आचरणं | ७ | ५१८ | जाणमसरीरभविप | ७ | २५१ | जाण० भावे अभाणअसंव० | ७ | ५०८ |
| जाण० कम्मे नोकम्मे या | ७ | ५३१ | जाणमसरीरभविप वव्य० | ७ | २३८ | जाण० भावे पंचविहा ललु | ७ | ५०४ |
| जाण० | ७ | २६१ | जाणमसरीरभविप | ७ | ३२९ | जाण० भावे पंचविहा ललु | ७ | ४२४ |
| जाणरा० गगिपिहागं होइ | ७ | ४५९ | जाणमसरीरभविप | ७ | ६६ | जाणयमविय० | ७ | ४०६ |
| जाणरा० जीवाणमजीवाण | ७ | ५५७ | जाणमसरीरभविप | ७ | २४५ | जाणय० भावे द भावे य | ७ | ४५२ |
| जाणरा० निदाविकहुकसाया | ७ | ५२३ | जाणमसरीरभविप | ७ | ४९१ | जाणवसरीरभविप | ७ | ३१९ |
| जाणरा० परिणामो अ (अ) जीव | ७ | ५५५ | जाणरा० हुंति दुविहा उ | ७ | ५३८ | जाणमसरीरभविप० जो भिवेइ | ७ | ३७४ |
| जाणरा० परिणामो जीवदव्वस्स | ७ | ५५३ | जाण० तवसंजमेसु | ७ | ४६४ | जाण० सा पुणे दुविहा | ७ | ५३४ |
| जाणरापुच्छं पुच्छइ | ७ | ३०५ | जाण० भावविही पुण दुविहा | ७ | ५२० | जाणं आहम्मिए जोए | ३ | + ५७ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ ४० ॥

जाणंतिए वाए व

जाणुं अजाणंतो

जाणुं वा इमे समणा

जाणंतोऽनिय हरिं

जाणावरणपहरणे

जाणावरणपहरणे जुद्धे

जाणादि संभूय ! महापुत्राणां

आ तेज्ज दिई खलु

जा दब्बुअमसेसा

जा देवसिअं दुगुणं

आ नीळारिदिई खलु

वा पहाइ दिई खलु

जानाहुत्तपद्माराणं व

जायणपरीसइमि

जावतेव न इच्छंति

जावतेण, बहुजणं

जावत्तं जहा मंढं

जायसु न परिसोऽहं

जाया व बलपाए

जासिए विव लद्धा

जासिए लोअगुरु

जासिआ मम सीसा व

जासिआ साणुसे लोए

जावइआ तिसमयादारा०

जावइयं खवज्जइ

जावइया निर दुम्भा

जावइया तिसमया०

जाव गुरुण व लुआ

जावजीवमविरसामो

जावत्तवधारणिमि

जाव न एवसि आणसो

जाव मं बहुणसं व

जाव ये कुहगामो

जाव पुच्छं मुदं कुच्छं

जावत्तहा सिद्धं मेये

जावत्त देवत्ता

जावत्तविज्जाएरिसा

जावसि अज्जवारा

जावतिए विसोही

जावतियसुरेसं

जावति लोए पाणा

जा सममण पुल्लि

६३५*

१०५४

१८०*

२१*

११+

१३१

२७२

१४२

१६०*

७५३

३९०

२३०

२१८*

२००

॥ ४० ॥

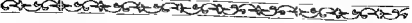
सुत्राधनुः
क्रमः

| | | | | | | | |
|----------------------|-------|----------------------------|---|--------|--------------------|---|-------|
| जा सप्तमयवज्जा खलु | १११ | जिणवयणंमि परिणए | ४ | २६६ | जीमवूविद्वसंकासा | ७ | १२१५* |
| जा सा अणसणा मरणे | ११०९* | जिणवयणं सिद्धं चेव | ५ | ४९ | जीवरणं तु दुविहं | ७ | २०३ |
| जादे य उअयाइ | ४९१ | जिणवयणे अणुरत्ता | ७ | १६३२* | जीवंचंमि अविमए | ६ | ६१० |
| जादेऽमि य परितंता | ११८८ | जिणवरमणुणविप्ता | ३ | १०७+ | जीवदयासुरकंदर० | १ | १४* |
| जा दोइ पगइमहुरा | ४६* | जिणवसइसंभवार्त्ता | ३ | ४ प्र. | जीवनिकाया भावो | ३ | ०१३ |
| जिह्ममूले आसाह सावणे | १००७* | जिणसाहगुणकित्तण | ३ | १६८ | जीवरणोपकरणं दुविहं | ३ | १५८+ |
| जिह्मसादेसु नासेसु | १२९ | जिणणं णंतणणीणं | ३ | + ५५ | जीवमजीवे० अजीवरणं | ३ | १०३१ |
| जिह्मसादेसण जमालि | १६७ | जिणा धारसरूवाइ | ४ | ६७२ | जीवमजीवे पाओगिअ | ३ | १५६+ |
| जिणसिद्धिसाराणं | ३६८ | जिणे पासिचि नामेणं | ७ | ८३२* | जीवमजीवे रूवमत्तवी | ३ | १९७+ |
| जिणवेसियाए उक्कखण० | १५२ | जिम्भाए रत्तं | ७ | १२१५* | जीवस्स उ निप्पेखो | ५ | २२२ |
| जिणपववणउप्पपरी. | १२८ | जिद्धिमदियनिमारेणं मंते !. | ७ | ७९ | जीयस्सं उ परिमाणं | ५ | ५६+ |
| जिणवयणएदुडुइवि | १४१ | जियकोहमाणमाथा | ३ | १०८७ | जीवस्स एस घम्मो | ५ | २४+ |
| जिणवयणवाहिरा | ११७५ | जियससु देवि चित्तसय | ६ | ८० | जीवा चेव अजीवा य | ७ | १३७५* |
| जिणवयणएए अतिविणे | ४५८* | जियससुदेविचित्तसयप० | ४ | ४५१ | जीवाजीवविमस्मि ने | ७ | १३७४* |

| | | | | | | | | |
|------------------|---|-------|------------------|---|------|----------------|---|-------|
| श्रीराजीराजिनामो | ५ | २३५ | श्रीबो गमावदूगो | ३ | ८०२ | ते भो भो भगवते | १ | ४३० |
| श्रीराजीराजिनामो | ७ | १०४४० | श्रीबोराजमयुगदो | ३ | २१० | ते भो भो भगवते | ७ | ८९२० |
| श्रीराजीराजिनामो | ५ | २१८ | गुणी मयुगमो | ३ | ११५५ | ते भो भो भगवते | ७ | १४१९० |
| श्रीराजीराजिनामो | ३ | ९०१ | गुना अक्षमयुगदो | ३ | ११३२ | ते भो भो भगवते | ५ | ४३७० |
| श्रीराजीराजिनामो | ७ | २१९ | गुना गमा गेमो | ३ | ११३ | ते भो भो भगवते | ३ | १२०२ |
| श्रीराजीराजिनामो | ६ | २२० | गुनागदो गेमो | ४ | ११७ | ते भो भो भगवते | ५ | ४३७० |
| श्रीराजीराजिनामो | ५ | ५५ | गुनागदो गुनागदो | ३ | २४० | ते भो भो भगवते | ५ | ४०२० |
| श्रीराजीराजिनामो | ७ | ५१०० | गुनी १ गमागदो | ४ | ४०४ | ते भो भो भगवते | ५ | ४००० |
| श्रीराजीराजिनामो | ७ | ७१०० | गुनीगमागदो गुना | ५ | ३६३ | ते भो भो भगवते | ७ | ११७१० |
| श्रीराजीराजिनामो | ३ | ८०५ | गुनी गेमो न गुना | ५ | ३०२० | ते भो भो भगवते | ७ | ४०३ |
| श्रीराजीराजिनामो | ७ | ७५३ | गुनागदो गेमो | ३ | १०३७ | ते भो भो भगवते | ७ | ३१७ |
| श्रीराजीराजिनामो | ३ | १२४४ | ते भो भो भगवते | ५ | ४१८० | ते भो भो भगवते | ७ | २३० |
| श्रीराजीराजिनामो | ३ | ११२७ | ते भो भो भगवते | ५ | ३६७ | ते भो भो भगवते | ७ | ५२९० |
| श्रीराजीराजिनामो | ३ | ७७२ | ते भो भो भगवते | ४ | ७३० | ते भो भो भगवते | ७ | ५२७० |



| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|------------------------|---|------|---------------------------|---|-------|
| जे केइ पलिया तुल्यं | ७ | २५९३ | जेण जीवंति सत्ताणि | ७ | १३० | जे पावकम्मेहि घणं मणुस्सा | ७ | १६६* |
| जे केइ सरीरे सत्ता | ७ | १७१३ | जेण पुणो जहाइ जीवियं | ७ | ४९९३ | जे वंमचेरभट्ठा | ३ | ११२१ |
| जे तिढे कामभोगेसु | ७ | १३२३ | जेण भिक्खं वळिं देमि | ७ | १२३ | जे मावा अंकरगिजा | ७ | ३८९ |
| जे वेव अंघारे | ४ | २७८+ | जेण य धट्ठ भवगओ | ५ | ८+ | जे भावा दसवेआलिअम्भि | ५ | ३३२ |
| जे वेव पडिच्छण० | ४ | ९४ | जेण रोहंति बीयाणि | ७ | १२५ | जे मामिया सयं | ५ | ४५१३ |
| जे जसिआ अ हेळ | ४ | ५४ | जेण व अं च पडुवा | ५ | १३ | जे य कंते पिए मोए | ५ | ८३ |
| जे जल्य जणा जइया | ३ | १२०१ | जेणं वंधं बहं पोए | ५ | ४२९३ | जे य वेयविक्र विप्पा | ७ | ९५४३ |
| जे जाय जया मग्गा | ३ | ११८५ | जेणुद्धरिया विजा | ३ | ७६९ | जे यावि दोस | ७ | १२०६३ |
| जे जहि दुगुठिया सल्ल | ४ | ४४३ | जेणुग्गहिओ ववइ | ३ | १५३२ | जे यावि दोसं समुवेइ | ७ | ११८०३ |
| जे जमि वडमि य कया | ४ | १८०+ | जेणेविस्सरियं पीए | ३ | + | जे यावि दोस समुवेइ | ७ | ११९३३ |
| जेठा किरिय सई | ३ | ६४५ | जे ते देवेहि कया | ३ | ५५७ | जे यावि दोइ निविजे | ७ | ३२८३ |
| जेठामूले आसाढ सावणे | ४ | २८७ | जे न बदे न से कुल्ले | ५ | १८९३ | जे लक्खणं च सुविण च | ७ | २३०३ |
| जेठामूलो आसाढ सावणे | ७ | १००७३ | जे निक्काणं मग्गायंति | ५ | २५७५ | जे वल्ल एए च सदा | ७ | ५४७३ |
| जेठा सुंदसन जमालि० | ३ | १२५४ | जे पव्वइत्ताण महव्वयाइ | ७ | ७३७३ | जे विज्जमंतदोसा | ६ | ५०१ |



| | | | | | | | | |
|------------------------|---|------|----------------------|---|-------|---------------------|---|------|
| जेवि न सयन्ती | ४ | ७६४ | जोलाणसदस्य मातया० | २ | १०१६ | जोगपदसराणेणं भंते ! | ७ | ५१ |
| जेद्विपरिवेसिती | ६ | १२० | जोअगस ३ जो तव | ७ | १४३६६ | जोगसणेणं भंते ! | ७ | ६६ |
| जे मरुत्तरागपसाय | ३ | ५४२ | जो अविदसायधर्म | ७ | १०८७ | जोगं व समणधर्ममि | ५ | ३७७४ |
| जे मागया० एवे मे सस्ये | ७ | ९६२६ | जोइपदे गुणइ व | ६ | ३०४ | जोगमि व अविदया | ४ | ६०१ |
| जे समाया समुदाय | ७ | ९५५६ | जोइसतणोत्तरीणं | ६ | ८७ | जो गुणयदि थालो | ३ | ७३६५ |
| जे समाया समुदायं० मदे | ७ | ९५९६ | जोइसियभगवत्तर० | ३ | ११७५ | जोगुवजोगअसाए | ७ | ४२४ |
| जे संराया गुच्छरसवारी | ७ | १२७६ | जो इअंउं समळकिंयं तु | ३ | २१४५ | जोगे जोगे जिणसासणमि | ४ | २७८ |
| जेति स्मो अणुभोगे | १ | ३३६ | | ७ | २७२ | जोगे जोगे जिणसासणमि | ४ | २७७ |
| जेमि तु पमाणे | ७ | ५२८ | जोए छणे सत्ता | ५ | १७९ | जोगा अजिण मारय | ६ | ८१ |
| जेमि तु रिद्धा सिसया | ७ | ११८६ | जो पमाए पण्ये व | ३ | ७६८ | जो विदे सरीरे | ५ | २३५ |
| जे गुणगुणा गुणा | ३ | १३०१ | जो वेंचणवपदे पाणिदया | ३ | ८६९ | जो पूअरुअं तु मणमि० | ७ | २७५ |
| जेमिरे लयि आया | ५ | ७५ | जो राहु तीसावरिसो | ३ | २३९५ | जो चयअसं तु | ४ | २१६५ |
| जेदि मागिया न दीसाइ | ४ | ६९८ | जो गळंतमि विदी | ३ | १४७९ | जो वेव असणविदी | ४ | ६६५ |
| जे हुनि समवमिदीया | ७ | ५६१ | जोगाणिं पुजममिअं | ४ | १७३५ | | | |

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|------|------------------------------|---|------|----------------------|---|------|
| जो चेव य हरिपुं | ४ | २०८४ | जो न सव्वइ आगंतुं | ७ | १६७६ | जोयणसहसस छंगाडआइ | २ | १०२३ |
| जो (तो) जल्य समाहाणं | ३ | १३७ | जो निवसिद्धजत्तो | ३ | १३६ | जो य तवो जणुविणो | ३ | ५२७ |
| जो जस्स इ आहारो | ७ | १११२ | जो पव्वयं सिरसा भित्तुमिच्छे | ५ | ४०६ | जो य पणोगं जुंजइ | ४ | ७५६ |
| जो जइ व तइ व छं | ४ | ४४७ | जो पायगं जळिअववसमिवा | ५ | ४०४ | जो य पमत्तो पुरिसो | ४ | ७५३ |
| जो जइवायं न हुणइ | ६ | १८६ | जो पुण करये जहो | ३ | १३१५ | जो छरतणं सुविण० | ७ | ७४३ |
| जो जइयं सो वत्तो | ३ | १३४५ | जो पुण मूले जीवो | ५ | ५९४ | जो लोए वंमणो वुत्तो | ७ | १६६ |
| जो जाहे आबसो साहू | ३ | १२५९ | जो पुण वीसामिजइ | ६ | २९ | जो वंवंमि विही | ४ | ६५३ |
| जो जिणविट्ठो नावे | ७ | १०७८ | जो पुण हंवेअ समजो | ४ | ५६५ | जो सत्तिवाइओ खलु | ७ | ५१ |
| जो जीवेवि न यागेइ | ५ | ४३ | जो पुण हिंसायणसु | ४ | ५९ | जो सत्तिवाइओ पत्तरस० | ७ | ५३ |
| जो जीदेववि वियाणेइ | ५ | ४४ | जो पुब्बरत्तापरत्तकाले | ५ | ५११ | जो समो सव्वभूएसु | २ | १२८ |
| जो भवि वट्ठइ रागे | ३ | ८०३ | जो पुब्बि वरिद्धो | ५ | २४७ | जो समो सव्वभूएसु | ३ | ७९८ |
| जो तिहि पयहि सत्तं | ३ | ८७२ | जो पुब्बि चरिद्धो आयारो | ५ | २९५ | जो सव्वसिपकुसलो जो | ३ | १३० |
| जो तेसु धम्मसरो | ५ | ९६ | जो भिक्खू गुणरहिओ | ५ | ३५८ | जो सव्वकम्मकुसलो | ३ | १२९ |
| जो देवणवि देवो | ३ | १५ | जो मागहजो पव्वो | ४ | ७१४ | जो सव्व व मागहजं | ५ | ४७१ |

अ.आ.

ओ.

द.मि.उ.

॥ ४३ ॥

जो सहरं सहरां

जो सहरं सहरां संगं

जो संतसो पमसो

जो सुपमाइवो

जो सो अरिदुनेमी

जो सो इतरितवो

जो सो नमितियरो

जो हुज व असमयो

जो हुज व असमयो

जो होर निसिहपा

जो होज व असमयो

इकारः

सांवा निरवजं

सांवापडिवतिको

७

७

५

७

७

७

७

३

३

३

४

३

३

२६५*

२६१*

२१३

१०८१*

४४८

११०७*

२६८

१६१७

१४६४

१२१+

६३८

१४६

१४४

शाणस्स भावणावो देसं

आणोवरमे प्रि मुणी

ठकारः

ठवणुळ सलढीय

ठवणुळमि न साहे

ठवणाळमं एसं

ठवणा मिलवसु नेहं

ठाणनिसिपासणा

ठाणनिसिपासणा

ठाणनिसिपासुयट्टं

ठाणनिसिपासुयट्टं

ठाणनिसिपासुयट्टं

ठाणनिसिपासुयट्टं

ठाणं पमत्तिअं

ठाणाइ जत्थ चेप

३

३

४

४

५

४

४

६

४

४

४

३

४

१२८

१६५

२३

७२+

६७

४४१

५६४

५५१

१५१+

३४३

७०४

१७१+

ठाणा वीरसणाईया

ठाणासद विट्सु

ठाणासति विट्सु

ठाणे अ इ इ के तुते ?

ठाणे उवसणे वा

ठाणे निसिगणे वेव

ठाणे य दावद चैव

इकारः

ठको जेण मणूसो

ठको जेण मणूसो

ठको ठं सव्वविससुदणं

ठहरा गाममए वा द

ठहरे मिससगामे

७

३

४

७

४

७

४

३

३

३

३

३

११२४*

१४८९

६६२

९१३*

५६४

९४४*

४६२

१२६८

१२७०

१२७५

२२७+

१७६

सवाद्यनु-

क्रमः

॥ ४३ ॥

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|-------|-------------------------|---|------|------------------------|---|-------|
| दङ्कुरसर छुअमुहो | ६ | ४२६ | गत्थि य से कोइ वेसो | २ | १३०* | गवि अत्थि गविअ होही | २ | १२२* |
| गइ खेव जणवज्जुग | ३ | १३४+ | ण पक्खओ ण पुरओ | ७ | १८* | ण विणा आगासेणं | ७ | ११६ |
| गउईए कोडीहिं | ३ | ९(३०) | ण पटिअविज्जा सयणासणा० | ५ | ५०७* | गवि दाव जणो जाणइ | ३ | ३१ X |
| गउईय सहस्तेहिं | ३ | ६(३०) | जमिपव्वज्ज दुमपत्तवं च | ७ | १४ | ण संवसे ण यारिजा | ७ | ५९* |
| ण कोत्रए आयरियं | ७ | ४०* | जमी जमेइ अप्पाणं | ७ | २८८* | ण सेण्णो अत्ति बहुसुओ | ३ | ११७० |
| णक्खत्तवेयकुले | २ | ८५* | जमुक्कारेण पारिचा | ५ | १५२* | गहु जिणे खज्ज दीसइ | ७ | ३२०* |
| णचा उप्पइयं दुक्खं | ७ | ८०* | ण मे जीवारणं अत्थि | ७ | ५५* | णावस्स सब्बस्स पाासणाए | ७ | ११५७* |
| णचा जमइ मेहावी | ७ | ४५* | जयरमहादाय इव | २ | १४३* | णाणं पयासां सोइओ | ३ | १०३ |
| ण तेण भिक्खू गच्छिज्जा | ५ | १२५* | जयरं च सिंखवट्ठण | ३ | १४१४ | आणादी सब्बोवत्ति | ७ | १३+ |
| गत्थि गणहिं विहूणं | ३ | ७६१ | जयरं सुवंसणपुरं | ३ | १३९५ | आणायट्ठा दिक्खा | ३ | १३०७ |
| गत्थि जूणं परे ओए | ७ | ९२* | ण या लभेज्जा निउणं | ५ | ५०९* | आणवरणे नेए | ७ | ७३ |
| गत्थि य सि कोइ वेसो | ३ | ८६८ | ण लविज्ज पुट्ठो सावज्जं | ७ | २५* | आणे जोरुवओओ | ३ | ८०५ |
| | | | जण घणुसया य | ३ | १५६ | आणे विचउन्नासो | ३ | । ३१ |
| | | | जवमो अ महापवमो | ३ | ३७५ | आणे दंसणवरणे लिंओ | ७ | ६+ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|--------------------------|---|------|-----------------------|---|------|
| नामं शंगलपरलो | ७ | १२४ | नामं ठवग सरीरे | ५ | २३० | नामं० पञ्चवगपु० वल् | ५ | १६२ |
| नामं सनिम नामं | ७ | १०९०४ | नामं ठवग दविए | ३ | १३२ | नामनि जाणि नामिनि | २ | १७५ |
| नापुढो नामरे दिसि | ७ | १४५ | " " | ६ | २२० | नामो छविवहणामे | ७ | ३७४ |
| नामचो ठवगरो | ३ | १०८१ | नामं ठवग दविए | ७ | १४१ | नामं० वयएसो सो नओ | ५ | १६१ |
| नामदुगो ठवगलुगो | ५ | ३४ | नामं ठवग दविए | ७ | १४२ | नामं मिगिद्वज्जे | २ | १४०५ |
| नामपवं ठवगपवं | ५ | १६८ | नामं ठवग दविए माउव० | ७ | ३७९ | नामं मिगिद्वज्जे | ५ | १६० |
| नामं० अणुगह भावे | ३ | १२४८ | नामं ठवगपग्गो | ५ | ३० | नामि अ पारिवज्जे | ३ | ४२८ |
| नामं० एगो व उगहएसा | ३ | १२३३ | नामं ठवग मिमरू | ५ | ३३५ | नामो पपिसद्वगं | ७ | ६५ |
| नामं० एगो व पाएणए | ३ | १२४० | नामं ठवग सुदी | ५ | २८५ | मिक्खेवो व विहीपं | ७ | ५१९ |
| नामं० एगो एउ एणए | ३ | १२३१ | नामं० द्वांमि होद विविहा | ६ | ४०४ | मिक्खेवो राएणमी | ३ | ७३७ |
| नामं० एगो गण्डु निमए | ३ | १२५१ | नामं० दसगस उ छविवो | ५ | ९ | मिगंय सुदुएरागे मुक्क | ७ | २५४ |
| नामं० एगो पटिइमएसा | ३ | १२४६ | नामं० पञ्चवमावे य | ५ | ८ | मिगंथो य सिणतो | ७ | १९४ |
| नामं० एगो पटिइएणए | ३ | १२४७ | नामं० पञ्चवमावे य | ५ | २२० | मिओ अण्णिदिएण | ५ | ४९४ |
| नामं० ठवगं | ७ | १४३ | नामं० पञ्चवलोगे अ | ३ | १०६८ | मिओचि दासदुणा | ५ | ४२४ |

| | | | | | | | |
|------------------------|------|----------------------|---|------|----------------------|---|-------|
| मिञ्जुत्ता ते अत्ता जं | ८८ | मेगम०आणु०कतरंमि भावे | २ | ८८ | मेगम०आणु०कतरंमि भावे | २ | १३५६ |
| मिहाए भावओऽविय | ८१६ | मेगम०आणु०कालओ० | २ | ८५ | मेगम०आणु०कालओ० | २ | ७२ |
| मिरादिगहापरि० | ७०७ | मेगम०आणु०सेसदब्बाणं | २ | ८७ | मेगम०आणु०सेसदब्बाणं | २ | +७० |
| मिस्फेडियमि दोण्णिवि | ८७० | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ७६४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ४५३ |
| मियना मणुयगतीए | ७४४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ४ | १२४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ४ | २२+ |
| मिनिवियति पच्चरुति | ५४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | २ | १३६४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | २ | |
| मिनेदणमुद्वेष्टे | ८०६ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ७६५ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ४६६ |
| मिसंते सिया धसुहरी | ८४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | २०१+ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | २१ |
| मिसावसरसंता व | ३८४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ६६ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | १६२४ |
| मीअनुवारं तमसं | ७९४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | २ | १३९ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | २ | २९९+ |
| मीई हप्पाराई | १६+ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | १३६४ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ६२१ |
| मीयदुवावओगे | २५२+ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | १२९० | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ११० |
| मीसवमाणो जीवो | ८२८ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ६७ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | ३०९ |
| मेगम०आणु०अंतरं कालओ | ८६ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | १३६८ | मेगम०आणु०सदब्बाणं | ३ | १०२२* |

तकारः

तस्य सप्तमि कथा

तस्य आठमि कथा

तस्य नवमि कथा

तस्य दशमि कथा

तस्य एकादशमि कथा

तस्य द्वादशमि कथा

तस्य त्रयोदशमि कथा

तस्य चतुर्दशमि कथा

तस्य पञ्चदशमि कथा

तस्य षोडशमि कथा

तस्य सप्तमि कथा

तस्य अष्टमि कथा

तस्य नवमि कथा

तस्य दशमि कथा

तस्य एकादशमि कथा

तस्य द्वादशमि कथा

तस्य त्रयोदशमि कथा

तस्य चतुर्दशमि कथा

६०० तस्य सप्तमि कथा

१८७ तस्य अष्टमि कथा

८७ तस्य नवमि कथा

७३२ तस्य दशमि कथा

१६० तस्य एकादशमि कथा

१५८ तस्य द्वादशमि कथा

८५६ तस्य त्रयोदशमि कथा

५६३ तस्य चतुर्दशमि कथा

१३५ तस्य पञ्चदशमि कथा

१३८ तस्य षोडशमि कथा

५२३ तस्य सप्तमि कथा

१६२ तस्य अष्टमि कथा

१७९ तस्य नवमि कथा

१६२ तस्य दशमि कथा

१७९ तस्य एकादशमि कथा

१६२ तस्य द्वादशमि कथा

१७९ तस्य त्रयोदशमि कथा

१६२ तस्य चतुर्दशमि कथा

१२६० तस्य पञ्चमि कथा

१४३ तस्य षष्ठमि कथा

७२९ तस्य सप्तमि कथा

९१ तस्य अष्टमि कथा

९२ तस्य नवमि कथा

५२१ तस्य दशमि कथा

४०३ तस्य एकादशमि कथा

२०७ तस्य द्वादशमि कथा

६०८ तस्य त्रयोदशमि कथा

४९८ तस्य चतुर्दशमि कथा

७०७ तस्य पञ्चदशमि कथा

४६५ तस्य षोडशमि कथा

३४४ तस्य सप्तमि कथा

१५१ तस्य अष्टमि कथा

१५१ तस्य नवमि कथा

१५१ तस्य दशमि कथा

१५१ तस्य एकादशमि कथा

१५१ तस्य द्वादशमि कथा

४३८

६५९

२३४

३३२

११९८

१२११

११८५

१६९१

१८६५

१९५५

६६८

३२२

६३०

१६९२

मन्त्राद्यनु-

क्रमः

॥ ४५ ॥

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|-------|-----------------------|---|---------|----------------------|---|-------|
| ततोऽप्येहाओ लेसा | ३ | १२९ | तस्य असंपत्तो अत्यो | ५ | २६२ | तस्य मये आसंका | ५ | १४८ |
| ततो दुत्रि दुगुलं | ७ | ३३३ | तस्य आलंघनं नापं | ७ | १२५* | तस्य मरीई नामा | ३ | ४२२ |
| ततो य अपमत्तो | ३ | +९ | तस्य उ भमिज कोई | ३ | १५६४ | तस्य य तिरयणविणि० | ३ | १६१ |
| ततो य अहक्कायं | ३ | ११५ | तस्य किठ सोमिलजो | ३ | ५४१ | तस्य य दो आइहा | ३ | १५२१ |
| ततो य बुआ संता | ७ | ३६४ | तस्य चणारि नाणाई | २ | २ | तस्य य मइदोब्बलेणं | ३ | १४७ |
| ततो य णंगलाए | ३ | ४८० | तस्य उद्वरणं पढमं | ७ | २८ | तस्यवि णणे | ७ | ३९+ |
| ततो य पुरिमताले | ३ | ४२० | तस्य ठिवा जहाठाणं | ७ | ११०* | तस्य विभागुदेसियमेवं | ६ | ३२+ |
| ततो य रायपिंहं कीयं | ३ | +२२ | तस्य णं जा सा उवणिहिआ | २ | १००-१०५ | तस्यवि य कालियसुर | ७ | ४१+ |
| ततो य वरावगो | ७ | ११०८* | तस्य णियंठुलातो | ७ | ३+ | तस्यवि सो इच्छं से | ३ | ६७५ |
| ततो य समं तेणं | ३ | ५५१ | तस्य पढमा विमत्ती | २ | ५९* | तस्य समजा तवरली | ५ | ११९ |
| ततोऽवि य उवट्टिणा | ७ | २२२* | तस्य परिचारिणि ज | २ | ६४* | तस्य समणेवासओ लिच्छ० | ३ | ३६ |
| ततोऽवि से षइत्ताणं | ५ | २०७* | तस्य पंयविहं नाणं | ७ | १०६४* | तस्य सिद्धा महाभाग | ७ | १४३६* |
| ततो सुमंगलाए सणकुं० | ३ | ५२२ | तस्य पुरिसस्स अंता | २ | १९* | तस्य से चिट्ठमाणस्स | ५ | ८६* |
| ततो विमवन्तमइत० | १ | ३४* | तस्य पुलवो दुविहो | ७ | ५+ | तस्य से चिट्ठमाणस्स | ७ | ६९* |

तस्य से गुंजमानस

तस्य गो फलप साद्र

तस्यानंता उ परितपज्वा

तस्याशयं दुर्बिदे

तस्यादलं दुर्बिदे

तस्यमे पदगं ठागं

तस्यमे पदगं ठागं

तथेय भंवर पा

तथेय पट्टिरेहिजा

तथेयिवाइयं ठागं

तथेयिरेगविरया

तदुभय गुपं पट्टिरेहजा

तदियगभोरआदे

तदिसं पट्टिरेहा

१४३५ तदेमयुज्विणीयाव्यवच्छ०

७०२५ तण्णारे पट्टग

२८४ तनुजिया अट्टवा

२९८ तमइकमित्तु न पविसे

५१ तमविमिरपड्ड०

३१७५ तनंतमेजेव उ से

१३१५ तन्मूलं संसरो

११३ तन्मेव य ननराणं

८४५ तन्हा असणपागादे

१४०५ तन्हा०आउआवसमारंभं

११८ तन्हा आवापरहमेणं

१७३ तन्हा जावसयं

१४४३ तन्हा उ जप्पसयं

२११४ तन्हा व निम्मनेणं

१४३५ तदेमयुज्विणीयाव्यवच्छ०

७०२५ तण्णारे पट्टग

२८४ तनुजिया अट्टवा

२९८ तमइकमित्तु न पविसे

५१ तमविमिरपड्ड०

३१७५ तनंतमेजेव उ से

१३१५ तन्मूलं संसरो

११३ तन्मेव य ननराणं

८४५ तन्हा असणपागादे

१४०५ तन्हा०आउआवसमारंभं

११८ तन्हा आवापरहमेणं

१७३ तन्हा जावसयं

१४४३ तन्हा उ जप्पसयं

२११४ तन्हा व निम्मनेणं

४६९

५५

५६७

१७०५

११५

७४४५

४३९

१०११५

२५८५

२४०५

५०३५

७

३१०

१६५१

तन्हा व सुनराणं

तन्हा एएसि कन्नागं

तन्हा एअं विअणिचा

तन्हा एएसि लेसाणं

तन्हा एडुण्णमायं

तन्हा एडुंअव

तन्हा गच्छामो वस्सामो

तन्हा जइ एस गुणो

तन्हा जिणपक्खे

तन्हा ण पक्खरणं

तन्हा०ससआयसमारंभं

तन्हा०तेउआयसमारंभं

तन्हा तेण न गच्छिज्जा

तन्हा ते न सिणायंति

५

७

५

७

७

७

५

४

७

३

५

३

५

५

५

५

५

५

५

तम्हा० वेई होई सो

तम्हा दयाइगुणसुद्धिपदि

तम्हा दुचकषइया

तम्हा धम्मे रइकारताणि

तम्हा न एस दोसो

तम्हा पडिलेहिअ

तम्हा पमाणजुचा

तम्हा पुळ्वं पडिलेहिलणू

तम्हा० बणत्सइसमारंभं

तम्हा० पाडकायसमारंभं

तम्हा विणयमेसिब्बा

तम्हा सया विसुद्धं

तम्हा सुयनहिठेजा

तरियन्वा य पडणिया

तरुणं या पवालं

तरुणदिवारनयणो

तरुणा वाहिरमावं

तरुणिलं पा छिवाहिं

तरुणित्थि एकमागे

तरुणो चढवं तरुणो

तरुणोअसि जल्लो ! पन्वइमो

तवतेणे वयतेणे

तवनारायजुत्तेणं

तवनियमनारुक्खं

तवसंजमगुणधारी

तवसंजसमयल्लण

तवसंजमो अणुमज्जो

[तवसियं किसं दंतं]

५

३

४

५

४

३

७

५

७

३

५

१

३

७

१७८५

१२६७

१३६

१७९५

४९२

१६३९

७०६५

२०५५

२४९५

८९

२१२

९५

७८९

९६९५

सवहेउ चल्त्याई

सवहेउ चल्त्याई

सवं कुळवइ मेहावी

सवं विमं संजमजोगयं च

सयेणं भते !

सवो अ दुविहो दुलो

सवोगुणपहाणत्स

सवो जोई जीवो जोइठाणं

सवोबहाणमायाय

सवयुयंमि पुरिसो

सवयणं सोअणं

ससकायं न हिंसवि

ससकायं विहिंसतो

ससपाणेहि जा सा

४

५

५

५

७

७

५

७

७

५

३

५

५

३

२९४+

६६८

२०१५

३९६५

४१

१०९४५

५८५

४०२५

९१५

८५

४३०

२५२५

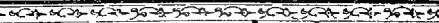
२५३५

१२९१

| | | | | | | | | |
|---------------------------|----|-------|------------------------|---|------|--------------------------|---|-------|
| तस्यैव यावराजं च | ७ | १३६१॥ | तस्य पसहं कल्याणं | ५ | २०२॥ | तस्मात्तद् वृणीष्ट | ४ | २६ |
| तस्ते पाणे न हिस्तिज्ञा | ५ | ३४६॥ | तस्य पंडित्यमानिस्त | ४ | २७+ | तस्मत्तुलीकरणेन | ३ | २७ |
| तस्ते पाणे विद्याणिता | ७ | ९७०॥ | तस्य पाद उ वंदित्वा | ७ | ७०५॥ | तस्तेव य सेलेसिगयस्त | ३ | १८२ |
| तस्य अनुजोगदारा | ७ | ३३१+ | तस्य भज्या दुवे आसि | ७ | ७८४॥ | तस्तेवं वेरगुगामेन | ६ | ९० |
| तस्य जसचेज्यओ | ४ | ७५२ | तस्य भज्या सिवा नाम | ७ | ७८६॥ | तस्तेस मगो गुरुविद्वसेवा | ७ | ११५८॥ |
| तस्य कृडनिद्रियंभी | ६ | १७८ | तस्मभयं गोपमे नाम | ७ | ८३७॥ | तद् त्वदंसनिमत्तण | ३ | १६९ |
| तस्य कसाया पत्तारि | ३ | १५६४ | तस्ते मे जपपडिंवंस्त | ७ | ४३४॥ | तद् येव दीवण चळकण | ४ | ७२ |
| तस्मभंणसोवणपरि० | ३ | १५ | तस्य य पायच्छिंचं | ४ | ८०३ | तद् जिणवरण आणं | ४ | ४६+ |
| तस्मभंणसोवणपरि० च | ७ | ९६०॥ | तस्ते य वेसमणस्ता | ७ | २९४ | तद् तिक्ककोद् लोहाउलस | ३ | १२१ |
| तस्स गं अयमद्वे एव० | ७ | १४ | तस्ते य सकम्मजणियं | ३ | १५६ | तद् सिद्धुयणवुविसयं | ३ | ७२ |
| तस्य गं इमे एगडिआ | १ | ३१ | तस्ते य संतरणसहं | ३ | १५८ | तद् नाणलद्धनिजामओडवि | ३ | ९६ |
| तस्य गं इमे एगडिआ आव० २ | २८ | २८ | तस्ते रुवदं भजं | ७ | ७६५॥ | तद् वारस यासाइं | ३ | २४० |
| तस्य गं इमे एगडिआ० गणअए २ | ५७ | ५७ | तस्ते रुवं तु पासित्वा | ७ | ७०३॥ | तद् रेवदत्ति एह पत्तरस | ३ | १३३१ |
| तस्य गं इमे एगडिआ० सुअ० २ | ४३ | ४३ | तस्ते लोणपईवस्त | ७ | ८३५॥ | तद्दवि य अठावयाणो | ३ | १५२१ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|--------------------------|---|-------|----------------------------|---|-------|
| तद् रिसंयन्दीणो | ३ | १७४ | तदेव गंतुमुज्ज्वलं | ५ | ३०३* | तदेव सत्तुबुद्धाई | ५ | १३०* |
| तद् मूलसीसरोगाद | ३ | १७ | तदेव गंतुमुज्ज्वलं | ५ | ३०७* | तदेव संताडि नथा | ५ | ३१३* |
| तद् सो जहाइ समत्था | ३ | १८ | तदेव गाओ दुग्गाओ | ५ | ३०१* | तदेव सावज्जुमोअणिगिर | ५ | ३३१* |
| तद् फेडमुरिसिअं | ५ | १८०* | तदेव चाउलं पिटुं | ५ | १८१* | तदेव सावजं जोगं | ५ | ३१७* |
| तद् नंदओ पुग्गाओ | ५ | ३१५* | तदेव उदरं च महल्लगं या | ५ | ४५०* | तदेव सुविणीअप्पा | ५ | ४२१* |
| तद् पडारं पक्काई | ५ | ३०९* | तदेव देवजक्खला अ गुज्झगा | ५ | ४२५* | तदेव सुविणी० देवा जक्खला अ | ५ | ४२६* |
| तद् य पणुबुद्धाई य | ७ | १३२१* | तदेव फरसा भासा | ५ | २८८* | तदेव हिंसं अलियं | ७ | १३५५* |
| तदियं गोपोदपुल्लकासं | ७ | ३९४* | तदेव फलमंयमि | ५ | १८३* | तदेव दोले गोलित्ति | ५ | २९१* |
| तदियमं तु भावानं | ७ | १०७५* | तदेव मचपाणेसु | ७ | १३६२* | तदेवासंजयं धीरो | ५ | ३२४* |
| तदेव अविणीअप्पा उय० | ५ | ४२०* | तदेव मानुसं पसुं | ५ | २९९* | तदेयुगां तवं किंवा | ७ | ५९७* |
| तदेव असणं पा०उदिअ | ५ | ४६९* | तदेव मेहं व तहं व माणनं | ५ | ३२९* | तदेवुक्खवयं पणं | ५ | १३४* |
| तदेव असणं होदी अटो | ५ | ४६८* | तदेव०ओयंमि नरत्तारिओ | ५ | ४२२* | तदेवुक्खवया पाणा | ५ | १६६* |
| तदेव कायं कायसि | ५ | २८९* | तदेव०ओगंसि नरत्तारिओ | ५ | ४२४* | तदेयोसहिओ पक्खओ | ५ | ३११* |
| तदेव कासिरायासि | ७ | ५९५* | तदेव विजओ रागा | ७ | ५९६* | तं अन्नमन्नयायं | ७ | ४७१ |

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|---------|----------------------|---|------|---------------------|---|------|
| तं अपणा न निष्कृति | ५ | २२३३ | तं ठाणं सासयं वासं | ७ | ११५३ | तं पासिऊण इहिं | ७ | २१९ |
| तं इकां तुच्छसरीरां से | ७ | ४३०३ | तं दुल्ललअणाणे | ६ | ३८९ | तं पासिऊण पिजं जं | ७ | ३६२३ |
| तं वस्त्रिविदु न निस्सिदे | ५ | १४४३ | तं तद्ध दुल्लहलं | ३ | ८४० | त पासिऊण संविगो | ७ | ७६७३ |
| तं पत्तिगुणोवेअं | ५ | ३५५ | तंतिमं तालमं | ५ | १७५ | त मिय सुखं सुखं | ६ | ७०८ |
| तं केतु कीरई तल्य | ३ | १७६५ | तं दइण पवसो | ३ | २२५ | तं पुण गुवस्स सेसं | ४ | ५७५ |
| तं च अरुपिलं पूरं | ५ | १३८३ | तं द्यपइ जिणिदो | ३ | ४२३ | त पुण णां विविहं | २ | १८३ |
| तं प वम्मिदिआ रिज्जां | ५ | १०५३ | तं दिव्य देवोसं | ३ | ५९१ | तं पुणनेहेण कथापुणं | ७ | ४२०३ |
| तं प पटं | ३ | ४५५ | तं दिंतिअं पडिआइक्खे | ५ | १०२३ | तं पेहई मियपुणे | ७ | ६०५३ |
| तं प पटं वेज्जइ ? | ३ | १८३-७४३ | तं दिंतिअं पडिआइक्खे | ५ | १११३ | सवाए नंदितेणो | ३ | ४८४ |
| तं प दुविदं उप्पज्जइ | १ | १८ | तं दुविदं सुअनोमुअ० | ३ | २४५५ | तं विंठउप्पापियरो | ७ | ६२४३ |
| तं पइसि बलगाही | ३ | १२७२ | तं देहवासं अमुइ | ५ | ४८१३ | तं विंठउप्पापियरो | ७ | ६४४३ |
| तं प होज अफामेण | ५ | १३९३ | तं घमंसइहामि | ३ | २३० | तं विंठउप्पापियरो | ७ | ६७५३ |
| तं जइ उ हलकमं | ३ | ५२१ | तं न मवइ जेण दुगा | ५ | १०६ | तं बुद्धिमएण रदेण | ३ | ९० |
| तंजहा सामाअं पटवीसत्थओ २ | २ | ५९ | तं पवइयं सोउ | ३ | ६०२ | तं भवेअकपिअं | ५ | १७६३ |



७१९५ २३९ २५७ २१६ ४४९ ४८१ ५३५ ६२४ १०६५ १३३३५ १३३२ ८५५ २२० २६०

७ ३ ३ ४ ३ ४ ३ ४ २ ५ ३ ३ ३ ३

१७४५ ७५४५ ३४५ ६५५ १५५५ १९९ ३४३ १०७५ ४१५ ६३३५ ११३५ २४६५ ३४३५ २७४५

५ ७ ७ ६ ७ ३ ३ ५ ४ ७ ३ ५ ५ ४

१२१५ ११९५ १००५ १२३५ ११७५ ११३५ ८७७५ ७४५ ४२५ ३६९ १६ ३७ २ १०९५

५ ५ ५ ५ ५ ५ ७ ३ ३ ७ १ १ १ ५

तं भवे० द्वितिशं० न मे०
तं भवे० न मे कम्पइ तारिसं
तं भवे भत्तयणं तु
तं भवे मत्तयणं० संजयणं
तं भवे मत्त० संजयण
तं भवे० सजयण अकम्पिअं
तं छयं सजसो छिता
तं ययणं सोऊणं
तं ययणं सोऊणं
तं ययणं सोऊणं नगपओ
तं समासओ० दुव्वओ सितओ१
तं समासओ० दुव्वओ सितओ१
तं समासओ० पच्चकलं च
तं० सजयण अकम्पिअं

सिअं मे अंतरिच्छं च
सिमदुगसिका
सिणि अ अट्टाज्जा
सिणि दिणे पाहुअं
सिणि य गोयमगोता
सिणि विहयी चउरुलं
सिणि सए विवसानं
सिणि सल्ल महाराय !
सिणि सहरत्ता सत्त य
सिण्णुदही वल्लिओवम०
सिण्णोव उतराणं पुणव्वसू
सिण्णोव य कोटिसवा
सिण्णोव य कोटिसया
सिण्णोव य लम्बाइं

तं० सजयण० न ने कम्पइ
तंसि नाहो अणहणं
तं सोऊण कुमारो
तं होइ सङ्गलं
तानि ठाणइं गच्छति
तापो सोसो भओ जोगणं
तायंमि पूइए सल्लु
तारिसं भत्तयणं तु
तारेहि अयणकरणे
ताठणा तज्जणा चेव
ताठमिसायं दो कोइला
ताळिअटेण पणेण
ताळिअटेण पणेण
ताहे य दुयल्लोइव

विष्णवे य वाससया

विष्णो दुःसि अण्णं मं

विष्णुमयरागस्त

विष्णु सहरसपुहुव

विष्णु सहरसमंदा

विष्णु अण्णाराणं

विष्णु पण्णं समं

विष्णुपि नेगमनो

विष्णं य कुरुनं य कसायं

विष्णीम अट्ठवीसा

विष्णीससागराज

विष्णीससागराज

विष्णीससागरोवमा

विष्णारव्यगकुरणे

२९८

३२३

२६८

८५७

८५८

१०१

१९५

७०

१५६

२६८

१५३

१६१

१२८

४७५

वित्थार सिद्धमुग्धव

वित्थमराणं चोपमा

वित्थपणमं कोउ

वित्थपरवेवलीनं

वित्थपराणा पडिमासु

वित्थमराणं पडियो

वित्थपरा ययाणो साहू

वित्थवरं मयवंते

वित्थयो किं कारण

वित्थं गणो गणदो

वित्थं चाट्ठवणो

वित्थादसेससंबय

वित्ति उ पणत्त समया

वित्ति य पाणात्तरे

३२७

४३५

५६३

३१६

११४२

३३८

२६२

८०

७४२

२११

२६६

५५८

५५

५४८

वित्ति सया वित्तीसा

वित्ति सया वित्तीसा

वित्ति ताई दविण

वित्ति ताई दविण

वित्ति अहोरात्ता

वित्ति य पच्छाणा

वित्ति य पच्छाणा

वित्ति य पच्छाणा

वित्ति सहसाहं

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

वित्ति सागराज

१६६

१७१

१७१

३४७

१४८

१७३

१७३

१७०

१४९

१४९

१४९

१४९

१४९

१४९

१४९

१४९

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|----------------------|---|-------|----------------------------|---|-------|
| तिरियं उन्मुहोऽविय | ४ | २५७+ | तिविहो य होइ कालो | ४ | ४८४ | तिहि नाणेहि समगो | ३ | ५८+ |
| तिरियायय उदुगण्ण | ६ | ३६५ | तिविहो य होइ जडो | ३ | १३०५ | तिहिरिस्संमि पसत्ये | ३ | ७९+ |
| तिहं वेगिच्छमुओ | ३ | १७४ | तिविहोवायमेयं | ४ | ४२० | तिहि नाणेहि समगा | ३ | ११०+ |
| तिमिदू अ दिविदू | ३ | ४०+ | तिविहो वणस्सई रल्लु | ४ | ४२ | तिहुयणविसयं कमसो | ३ | १७० |
| तिमिहंमि सरिमी | ३ | ८ | तिविहो व नवविहो वा | ७ | १३११* | तिदुयं नाम उज्जाणं | ७ | ८३५* |
| तिविहा उ वन्नमुद्धी | ५ | २८६ | तिविहो सरिरज्जो पंथे | ३ | १३०८ | तीयनणयवभावं | ३ | १७३४ |
| तिविहाणुरसगायं | ३ | १६४४ | तिविहो होइ पसथो | ४ | ४१० | तीसं तु सागरादं | ७ | १६१३* |
| तिविहा येद्विया | ४ | ४३ | तिव्वयंइयगाढाओ | ७ | ६७२* | तीसा थारस दसयं | ३ | ६५२ |
| तिविहेणंति न जुत्तं | ३ | १०५८ | तिव्वो रणो अ दोसो अ | ३ | २०३+ | तीसे अ जाईइ उ पाविपाए | ७ | ४२४* |
| तिविहो उ द्यवपिहो | ६ | ८ | विसमयदीणं सुद्धं | ३ | १६५+ | तीसे सो वयणं सुवा | ७ | ८२८* |
| तिविहो उ होइ जल्लो | ४ | ३३+ | विसमुदसायकिंवि | १ | २७* | तीसे सो वयणं सोवा | ५ | १५* |
| तिविहो वेडकाओ | ६ | ३६ | विमु विणिण वारगाड | ४ | ३९२+ | तुय्यऽट्ठाए कयमिणं | ६ | २०५ |
| तिविहो पुगविआओ | ४ | २३ | विसु तिनि तारयाओ | ३ | १४८८ | तुय्य विया महु पिउणो | ५ | ८६ |
| तिविहो य वव्वपिहो | ४ | ३३६ | तिहिकयंमि पसत्ये | ४ | ८०+ | तुय्यं सुलढं खु मणुस्सजंमं | ७ | ७५३* |

गुह्योऽशो देवीओ

गुह्ये य रिजययोसे

गुह्यो अ सेगिओ रावा

गुह्योऽशो ! मात्वरं गिराणं

गुह्ये चदया ज्ञानं

गुह्ये चमगुणं

गुह्ये एष य शम्भ ! हे छदे

गुह्ये तमगं ज्ञानं

गुह्ये भान पाळमं

गुह्ये च निसेमसाय

गुह्येऽवि अनिपाए

गुह्ये गिरां मंसादं

गुह्ये गिरा सुरा संह

गुह्ये चमगिओ

६३५ गुह्ये चमगिओ

९८३५ गुह्ये च य पेहे

७२२५ ते चयलभावा आयच्छद

३७३५ तेजकमणं पुनः

९८४५ तेजभावाद्यगं

९८५५ तेजसिपरायसङ्गओ

१३६५ तेजसिपरा य जे जीया

१३७५ तेजसिपरायसङ्गओ

२०७५ ते च पदसाविपची

१५७५ ते च पदसिसेवणए

६५ तेजसिपरा य जे जीया

६६९५ तेजसिपरायसङ्गओ

६७०५ तेजसिपरायसङ्गओ

६७१५ तेजसिपरायसङ्गओ

६७२५ तेजसिपरायसङ्गओ

६७३५ तेजसिपरायसङ्गओ

६७४५ तेजसिपरायसङ्गओ

७७४ तेजसिपरायसङ्गओ

७९५ तेजसिपरायसङ्गओ

७९६ तेजसिपरायसङ्गओ

७९७ तेजसिपरायसङ्गओ

७९८ तेजसिपरायसङ्गओ

७९९ तेजसिपरायसङ्गओ

८०० तेजसिपरायसङ्गओ

८०१ तेजसिपरायसङ्गओ

८०२ तेजसिपरायसङ्गओ

८०३ तेजसिपरायसङ्गओ

८०४ तेजसिपरायसङ्गओ

८०५ तेजसिपरायसङ्गओ

८०६ तेजसिपरायसङ्गओ

८०७ तेजसिपरायसङ्गओ

८०८ तेजसिपरायसङ्गओ

८०९ तेजसिपरायसङ्गओ

८१० तेजसिपरायसङ्गओ

८१५

८१६

८१७

८१८

८१९

८२०

८२१

८२२

८२३

८२४

८२५

८२६

८२७

८२८

८२९

८३०

८३१

३३७३
१०१
१०२
४५२३
४१०
४४७
६०२३
१५६३
२१२३
१५
१५
३१४
३६८
८०३
११७

वेसिं वाच्छणजोएण
वेसिं उत्तरणकरणं
वेसिं गुरुणमुदएण
वेसिं गुरुणं गुणसायराणं
वेसिं दुण्ढवि पुत्तो
वेसिं पुत्ता चउरो
वेसिं पुत्ते यलसिरी
वेसिं सुत्ता सपुत्ताणं
वेसिं सो निहुओ दंतो
वेसुवि च यम्मसरो
ते०मुहुमो आगच्छई
तेहि अ पढइअब्बं
तो उद्धरंति गारवरहिता
तो उवगारित्तपओ

वेयाकम्मसरीरे
वेरंससे अभियाणं
वेद्वद्विसयाजोगा
वेद्वोक्कं असमर्थंति
ते०वचामि ण वंदामी
ते वंदिअण सिरसा
ते०वंदिता पज्जवासानि
तेउवि तं गुरुं पूजंति
तेवीसई सुगण्डे
तेवीससागराई
तेवीसं च सहसा
तेवीसाए नाणं
तेसि पडिच्छण पुच्छण
तेसिमेव य पर्णीणं

तेनेति नप्यमाणो
तेणो व संजयद्वा
ते०तइओ आगच्छई
तेवीसइने कम्मं
तेवीसाए आसएयणा०
ते पयए०वचामि ण
ते पयए०वंदामि वंदिता
ते पासिवा संडिय कट्टमूए
ते पासे सग्नसो छिन्ना
ते पुण ससूरि चिय
ते ने विगिच्छं दुवंति
ते०मेयज्जो आगच्छई
ते०मोखिओ आगच्छई
ते य वित्तोसेण सुभामवाइओ

३३७३
१०१
१०२
४५२३
४१०
४४७
६०२३
१५६३
२१२३
१५
१५
३१४
३६८
८०३
११७

तो देसनालेचेद्वानिम्यो

वो नाणदंसणसमगो

वोयनिव नालियाए

तो वरिऊण पाए

वो समणो जइ सुमणो

वो समणो जइ सुमणो

वो समणो जइ सुमणो

वोसालिहुसीसरुयं

वोसिआ परिसा सख्या

वो सो पइसिआ राया

वोडइ साहो जागो

धकारः

यथे यथावडियं

धणं विजेमागी

१।४१ अखा निरेखयाय

२१०॥ थवधुइंगलेणं मते!

१।७५ थलेमु वीकाइ वंविता तासया

२८७॥ थकिलयाएणं अइवासि

१३३॥ थंडिठ पुब्बमानियं

८६७ थडिमुसइ चीर

१५८ थंभा कोहा अणमोणा

५०९ थंभा व कोहा व

१२०॥ थावरं जंमं चेव

७०८ थियुवामारज्जणो

७३३॥ थिरकयजोगाणं पुण-

शुद्ध शुणय वंदण

१६६ शुद्ध मंगलमांसदण

१०१॥ शुद्धीए विवहणवो

११३॥ थूणइ पूसमिचो

२८ थूणए वडि पूसो

३७०॥ थूम संयमाइगाणं

१३३७ थूला अइवादाणं

६१० थूला पाणाइवायं

६३५ थूला मुसाबायं

२५७५ थूं रयवविचिं

३९९॥ थेर प्हु थरयंते

१५५॥ थेरी दुबललीरा

५४ थेरे ताणहरे तागे

१३६ थेरो राळंतखलो

११०३ थेरो पंढं न याणइ

१३८ थोवमासावणट्ठण

४२६ थोवंगि पमायकयं

४४१

४७२

४५५

३९

३७

३८

१०९९

५९८

४१८

१०४४॥

५८०

१८

१३७॥

२०४

३

३

३

३

३

३

३

६

६

७

६

४

५

५

धोयं मुंजइ वहुअं

धोवावसेसपेरिसि

धोवावसेसियाए

धोवावसेसियाए संझाए

धोवावाहो धोवभजिओ

धोवे योषं छुटं

वृकारः

वृहण वरिण वा

वृहण वरिण वा

वृमरात्तणं पुरिसस

वृमरात्तणं पत्तो

वृगतीरे ता चिट्ठे

वृगतीरे संयट्ठण

वृगमदिअ आयाणे

४

३

४

३

३

६

४

६

५

७

४

६

५

५९+

१४२३

६६३

१४७६

१२८२

५७१

३६३

४२

१९३

२५५

३६

५८८

८५५

दुगवारेण भिहिअं

दुहं कयं विवाहं

दुहुं तिणेहणं

दुहुं कीरमाणि

दुहुं वेडियणं

दुहुं तसस रुं

दुहुं ताहि समणे

दुहुं य अणगारे

दुहुं रहनेमिं तं

दुहुं नीए बहिआ

दुत्तिव्य दाणमुसं

दुत्तीहि उ कवलेहि व

दुत्तेण पुच्छिओ जो

दुहर सिलोवाणे

५

३

३

३

७

४

७

६

७

३

३

३

३

६

१०४५

२४+

१५४

३४७

९५

२३८+

३७१

२९३

८२१५

४९७

२५+

१६७२

८७१

३६४

दयदंते मेयजे कालय

दया य संजमे लजा

दरहिदिण व भाणं

दव अण कलुस

दवगिणा जहा रणे

दवदवचारऽपमजिय

दवदवस्त चरई

दवदवस्त न गळेलो

दवमादनिगयं वा

दविअं कारणगहिअं

दविण वत्तो भंगा

दवलो सिचओ चव

दवलो सिचओ चव

दवलो चक्खुसा पेहे

३

७

४

४

७

३

७

५

४

५

३

७

७

७

८६५

१५७

२५५

३०६

४८२५

+१८

५३४५

७१५

२४३

५८

१८६+

९२६५

१३७६५

९२७५

द्वयकरणं तु दुर्विदं

द्वयकरणं पंतो

द्वयराग सितपञ्चय

द्वयरागो भाषयञो

द्वयमितं द्वये

द्वयपमागणा

द्वयमरणं दुसुमाहसु

द्वयविरसलो ललु

द्वयसुय पोटयाह

द्वयं व कप्रियापयार०

द्वय लेण व द्वयेण

द्वयमि असुमं

द्वयमि कुडालमिच्छति

१८४

१२६+

२०४+

१९४+

२४३+

१३६+

२०९

१०६२

३१२

४०

३२०

१०६

१०६९

१०६२

८३

२३२

२९६

२३४

६४

३१७

१०८४३

९९

७३६

१०४

५५

१८२+

२५४

१०७३

१५४५

६७

११

६६०

११२१५

८२५

७८+

२२१+

३६१

२७३

३६४

| | | | | | | | | |
|-------------------------------|---|-------|------------------------|---|-------|-----------------------|---|-------|
| द्वन्द्वे० नैरह्यादिग्न मन्वे | ३ | १९०+ | दसवदहीपलिओवम | ७ | १३३४* | दस वासवहरस्ताइ | ७ | १३३९* |
| द्वन्द्वे भावे पासेतणा ड | ४ | ५४० | दस उवेसणकाला दसाण | ३ | +४३ | दस वासवहरस्ताइ, तेऊइ | ७ | १३४४* |
| द्वन्द्वे भावे य पळ | ४ | २०५+ | दसकाडिअस एसो | ५ | २६ | दस ससिहागा सावग | ६ | १४० |
| द्वन्द्वे भावे य दुहा सोही | ३ | -१६०६ | दसकालियति नामं | ५ | ७ | दससागरोवमाऊ | ७ | १५३६* |
| द्वन्द्वे भावे य दुहा पय० | ३ | १७१३ | दस चेव० वासाणुकोसिया | ७ | १४७५* | दससु अ छको दन्वे | ७ | ३८० |
| द्वन्द्वे मासेविश मंगलाइ | ५ | ४४ | दस चेव सागरांद | ७ | १५९८* | दसहा व भवणयासी | ७ | १५७७* |
| द्वन्द्वे भावे सजोभणा उ | ६ | ६३६ | दस बोदसअठ [अ] हारसेव १ | १ | ८२* | दसहि सहरसेहि वसमो | ३ | ३११ |
| द्वन्द्वे मणवयकार जोगा | ३ | १०५१ | दसणगरजं मुइयं | ७ | ५९१* | दसासीइस्त य सेणियस्ता | ३ | ११७२ |
| द्वन्द्वे रसे गुणे वा | ३ | १७०० | दस दगलेवे कुब्जं | ३ | +२९ | दहि घय वंजं पयमंविंलं | ४ | १११+ |
| द्वन्द्वे वरदपरा | ४ | ७६६ | दस दो य निर सहणा | ३ | ५३२ | दहण छट्टिया चेव | ४ | ७२९ |
| द्वन्द्वे सचित्ताइ | ५ | ३६२ | दसपुरगगरुच्छुचरे | ७ | १७५ | दंड कवाडे मंभंवरै | ३ | ०५५ |
| द्वन्द्वे सणा व निविहा | ५ | २३९ | दसपुरगगरुच्छुचरे | ३ | १४२+ | दंड मसस्त ररजू | ३ | ७२५ |
| द्वन्द्वे सरिरमविओ | ५ | ३७० | दस य नपुसए एसुं | ७ | १४२४* | दंड धणू जुग नलिआ य | २ | ९३* |
| दस अट्ट य ठाणाइ | ५ | २१६* | दस वासवहरस्ताइ | ७ | १३३२* | दंडसत्यापरिजुआ | ५ | ४२३* |

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|------|----------------------------|---|-------|------------------------|---|-------|
| १८०० नेरद्वार्द्वं मये | ३ | १९०४ | दस उददीपलिओवम | ७ | १३३४* | दस वाससहस्साहं | ७ | १३३९* |
| १८०१ भावे पातेसणा उ | ४ | ५४० | दस उदेसणकाळा दसाण | ३ | ४४३ | दस वाससहस्साहं, तेऊद | ७ | १३४४* |
| १८०२ भावे य पळं | ४ | २०५४ | दसकालिअस्स एसो | ५ | २६५ | दस ससेहाणा सावण | ६ | २४६ |
| १८०३ भावे य दुहा सोदी | ३ | १६०६ | दसकालिंयंति नामं | ५ | ७ | दससागरेवमाऊ | ७ | १५३६* |
| १८०४ भावे य दुहा पळ० | ३ | १७१३ | दस ये० वासाणुकोसिया | ७ | १४७१* | दससुं अ छको दढे | ७ | ३८० |
| १८०५ भावे शिवम मंगलाहं | ५ | ४४ | दम येव सापसाहं | ७ | १५९८* | दसहा उ भवणयासी | ७ | १५७७* |
| १८०६ भावे रंजोभजा उ | ६ | ६३३ | दस चोदसअह [अ] द्वारसेव १ | १ | ८२४ | दसहि सहस्सेहि वसभो | ३ | ३११ |
| १८०७ मणयपराए जोगा | ३ | १०५१ | दसणरजं मुहयं | ७ | ५९१* | दसास्सीहस्स य सेणियरसा | ३ | ११७२ |
| १८०८ रते गुणे या | ३ | १७०० | दस दगळेवे कुजं | ३ | ४२९ | दहि यय तत्तं पयमंदिलं | ४ | १९१४ |
| १८०९ दहादपरा | ४ | ७६६ | दस दो य फिर महणा | ३ | ५३२ | दंढए लट्टिया चेव | ४ | ७२१ |
| १८१० सविताहं | ५ | ३६२ | दसपुरनाकचुवरे | ७ | १७५ | दंढ कवाडे मंथरे | ३ | ९५६ |
| १८११ रणेसणा उ तिविहा | ५ | २३९ | दसपुरनाकचुवरे | ३ | १४२४ | दंढकससस्वरज | ३ | ७२६ |
| १८१२ सरीरभविओ | ५ | ३७० | दस य नंसुप एसुं | ७ | १४२४* | दंढ यणू जुग नालिआं यं | २ | ९३४ |
| १८१३ अट्ट य ठाणाहं | ५ | २१६* | दस वाससहस्साहं | ७ | १३३२* | दंढसत्यापरिजुआ | ५ | ४२३* |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|---------------------|---|------|-------------------|---|-------|
| दंडाणं गारवाणं च | ७ | ११३८३ | दंसनाजचरित्तु | ३ | १०८० | दाणे अमिगमसंदु | ४ | ४३६ |
| दंसपुरदन्तबो सखदी | ३ | १३७७ | दंसमनाजमव जरणं | ६ | ११ | दाणे अमिगमसंदु | ४ | १२१+ |
| दंसोदनादस | ७ | ६२७३ | दंसमनाजे चरणे | ४ | १४१ | दाणे कयविए वा | ६ | ३५३ |
| गते तिष्ठि विरिचण | ३ | १४२४ | दंसमनसो सावय | ३ | ११७७ | दाणेति दत्तमिण्डण | ५ | १२४ |
| दंडे अ यद्वुद्धी | २ | ११३ | दंसमनोहे दंसमपरिसहो | ७ | ७७ | दाणे लभे य मोरे य | ७ | १२८१* |
| दंसम०एए उ यंदुग्गिना | ३ | १२०५ | दंसमनयसमाइव | ३ | ५४ | दाणत्र षं तरणं | ३ | २+ |
| दंसमचले पदमो | ६ | १५४ | दंसमणिण आवसए | ३ | १८० | दाणं च माइणावं | ३ | ३६६ |
| दंसनाजपरिवाण | ६ | ६५ | दंसम० | ३ | ४२२ | दाणं न होइ अफळं | ६ | ४५५ |
| दंसनाजचरित्तमि | ५ | ३०७ | दंसम० समिइंदु करमोए | ३ | १३०६ | दावज्वनदायव्यं च | ६ | ६०७ |
| दंसनाजचरिसे | ७ | १०८५३ | दंसमसंमयाए णं भंते! | ७ | ५४ | दां जा पठिजेहे | ४ | ३०८ |
| दंसनाजचरिसे | ३ | १२०३ | दंसमसमसमागा | ७ | ४६५ | दागमि य मुया चैव | ७ | ५६१* |
| दंसनाजचरिसे | ५ | २८९ | दंसिअंदिज्जुसुसप्यु | ४ | ३९० | दावरे उदगाए | ३ | +१७ |
| दंसनाजचरिसे | ५ | ३१६ | दाउं सरवाणं | ४ | २१०+ | दासा दसत्रये आसी | ७ | ४११* |
| दंसनाजचरिते | ५ | १८३ | दाअण निवियकमं | ४ | ५८७ | दादिमि तेण मणिए | ६ | ४७० |

| | | | | | | | | |
|-------------------|---|-------|-------------------|---|------|---------------------|---|-------|
| रंशानं गणनं प | ७ | ११८७ | रंमनाजचिनु | ३ | १०८० | शाने अमिमसु | ४ | ४३६ |
| रंशुरागके गवशरी | २ | १३७७ | रंमनाजन्मवं परानं | ६ | ०१ | शाने अमिमसु | ४ | १२१+ |
| रंमोदनाग | ७ | ६२७७ | रंमनाजो परने | ६ | १४१ | शाने फयविका वा | ६ | ३५३ |
| रंने सिद्धि सिधित | २ | १४४४ | रंमनाजो सावय | ३ | ११७७ | शाने सिद्धि सिधित | ५ | १२४ |
| रंने म सुनन्दि | २ | ९१७ | रंमनाजो रंमनाजो | ७ | ७७ | शाने व्यभि य भोगे य | ७ | १२८१५ |
| रंमनाज उ यंमिना | ३ | १२०५ | रंमनाजसावय | ३ | +४ | शाने पंय नयनं | ३ | २+ |
| रंमनाजो गवशरी | ६ | १५४ | रंमनाजो आशमय | ३ | १८० | शानं प सावयानं | ३ | ३३६ |
| रंमनाजचिनु | ५ | ९६ | रंमना | ३ | ४२२ | शानं न होर अरुडं | ६ | ४५५ |
| रंमनाजचिनु | ५ | ३०७ | रंमनाजो रंमनाजो | ३ | १३०६ | शाने मयवयानं प | ६ | ३०७ |
| रंमनाजचिनु | ७ | १०८५७ | रंमनाजो रंमनाजो | ७ | ७४ | शानं ज चिनु | ४ | २०८ |
| रंमनाजचिनु | ३ | १२०३ | रंमनाजो रंमनाजो | ७ | ४२६ | शाने य गुया वेव | ७ | ५६१५ |
| रंमनाजचिनु | ५ | २८० | रंमनाजो रंमनाजो | ७ | ३०० | शाने य गुया वेव | ३ | +१७ |
| रंमनाजचिनु | ५ | ३१६ | रंमनाजो रंमनाजो | ४ | २१०+ | शाने य गुया वेव | ७ | ४११५ |
| रंमनाजचिनु | ५ | १८३ | रंमनाजो रंमनाजो | ७ | ५८७ | शाने य गुया वेव | ६ | ४७० |

दाहोवसमं तद्वद्विच्छेदधनं

विनिष्ठापित्यायेण

विज्ञते पडिसेधो

विज्ञादि माणपूति

विद्व अरुममपिबो

विद्वमदिदं च वहा

विद्वमदिदं दुनिदा

विद्व लोद लीरं

विद्वतमुदि एसा

विद्वतो अरदंता

विद्व निभं असदिदं

विद्व व समोसरणे

विद्वे सुएणुमए

विज्जे गुरुदि वेसि

३

७

६

४

४

३

४

६

५

५

५

४

३

४

१०७७

५०३

३११

६८५

५७+

१२२२

९६

१३१

११७

९१

३८३३

९७

८४४

५२५

विद्याविद्या विरिला

विज्ञात वात पंचवि

विज्ञे कोदिने या

विद्यगठउपबवाएव०

विद्वसस्त चररो भागे

विद्वसस्त पोरिसीणं

विद्वमाणुस्तोरिच्छं

विद्वे य जे उवसगो

विद्वो मणुसवोसो

विद्या अवरदविद्वणा

विद्विदाह छिन्नमूलो

विद्विपवणामसूरिय

विद्विपए सिविदे पन्नते

विद्विपवणमहियस

४

६

७

४

७

७

७

७

३

३

३

४

३

३

३०३

२२३

२९६

७५+

१००२

११६३

९७३३

११३९

१०८+

१३२०

१४३२

३१७

४२

४७

दीदे अ इ के बुजे

दीसति वदवे लोए

दीदकाळयं जंतुकम्मं

दीहं वा हासं वा जं

दीहाउया दित्तिमंता

दुकरं राहुभो ! भिबं

दुकरं दं करित्ताणं

दुक्खं हयं जस्स भ होइ

दुगतिगचररो पंच व

दुगमाई सामने

दुगुणो चरगुणो वा

दुगवो वा पभोएणं

दुग्गाद्वोसिबनिवो

दुग्गासे तं समद्विज्जुडं

७

७

३

३

७

७

५

७

३

६

४

५

३

६

८९८

८७१

९५३

९७०

१५४

७६

३०

११६३

१५४२

६११

७२२

४३४

१४२५

३३+

दुग्धं शमयोगे य

दुग्धं सुमानसाय०

दुग्धं सु गुंजमानं

दुग्धं देवप्रि पत्य निमित्तं

दुग्धं दीर्घादिभे

दुग्धं य स्वामी मादि०

दुग्धं य मित्रि य पत्नारि पं०

दुग्धं गमी विदेहा

दुग्धं चउरपपपप०

दुग्धं द्विप्रजोमी पुन

दुग्धं रिया हने कामा

दुग्धं मित्रि इकेन

दुग्धं पप पंदुगं उहा

दुग्धं वेगोमं

५२३५ दुग्धं मित्रा य आहारसमा ५

७४० दुग्धं मित्रिनिजुषी ५

९६५ दुग्धं मित्राहवा रकु ५

९७५ दुग्धं मित्राहवा रकु ७

५४१५ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

१४८ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

२२७ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

२६७ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

३४० दुग्धं य पावना रुक्ता ५

३०८ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

२१३५ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

४३८ दुग्धं य पावना रुक्ता ३

२९०५ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

२८३ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

३७ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

१५३ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

१०२ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

२८२ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

३६५ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

१२७५ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

२९३५ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

३१५ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

७२० दुग्धं य पावना रुक्ता ७

२३०५ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

१५९५ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

५१६ दुग्धं य पावना रुक्ता ७

१६६५ दुग्धं य पावना रुक्ता ३

५६६ दुग्धं य पावना रुक्ता ५

७८२५

५३१

१२८०

७३९

१८८

१४४

२१३५

१४५७५

५४३

८२४

२५७

१३६६

१४८९५

८०१

१५३६ १०७४ १०७५ ४६२ ४३१ २४५ ४२५ ०२ १८० १२५ ८५१* ५२५* ८०४* २५*

३ ३ ३ ३ ६ ४ ६ ४ ४ ३ ७ ७ ७ ७

दुहओऽणंतरहिवा १०७०
दुह दव्य भाववम्भो ७३०
दुह होइ भाववम्भो ३६
दूइजंतया पिठणो ४०१
दूइवं खु गरहिअं ६४०
दूइज खुइलए २४०
दूरा भोग एगानि २०६
दूइज खुइलए ४९५
दूइज खुइलए ५२३
देवगर आणुपुब्बी ४३
देवदाणवांगववा ६६५
देवदाणवांगववा ४७*
देवमणुस्सपरिचुवो १९४*
देवदेवलोगवुवो संतो १६३७

३ ३ ७ ४ ४ ७ ७ ४ ४ ५ ३ १ ७ ३

दुविहो खलु छवोओ १४४३*
दुविहो पमाणकालो ७१८
दुविहो परमाणूणं ९५
दुविहो य भावपिठो ७९४
दुविहो य होइ कालो ३७८
दुविहो य होइ गंयो १४६५*
दुविहो य होइ दीवो १४९०*
दुविहो य होइ भावो १५४४*
दुविहो य होइ साहू ५९
दुविहो लेगुतरिओ ४८४
दुविहो वेवकामकालो १४६६
दुविहो जहान य १५१६
दुहो गती वालस्स ५९८
दुहोऽणंतरभवियं ५६०

७ ३ ५ ४ ४ ७ ७ ७ ६ ६ ३ ३ ४ ४

दुविहा पुदविवीया उ
दुविहा य चरित्तमी
दुविहा य हुंति जीया
दुविहा य होइ सोरी
दुविहा य होइ पाया
दुविहा एणस्सजीवा
दुविहा वाउजीवा य
दुविहा वि ते भवे
दुविहो व भावपिठो
दुविहो व संयवो खलु
दुविहो व होइ कालो
दुविहो कायमि न्णो
दुविहो खलु जमिओओ
दुविहो खलु जालोको

| | | | | | |
|------------------------|------------------------------|---|-------|--------------------|-------|
| देवलोगसमागो अ | ४११॥ देवेषु अनुष्टुप् शृङ्गा | ३ | ८१७ | देवो समोपिगो रुडु | १५+ |
| देवा वसिष्ठा वृषा | १५७६॥ देवेहि संपत्तिवो | ३ | ६५+ | दो अयमवणा चूलिय | २४ |
| देवानं प्रयुज्यां व | ३२७॥ देवो भुजो मदिहीमो | ३ | ५१४ | दोमोणव अहाजां वं | १२१४ |
| देवपुत्रसि भती | ५८३ देसिवदसिमगो | ३ | १५६९ | दो केव मयगदं | ७०५ |
| देवादीयं होयं | २१७० देसिय रादय पस्विय | ३ | १५९८ | दो चैय प छट्टसए | ५३३ |
| देवा भविषाण दुरे मवंती | ४४१॥ देसिय रादय पस्विय | ३ | १६२६ | दो चैय तामरादं | १५९४॥ |
| देवानिमोनेग निओइएणं | ३७९॥ देसियं च जंइयां | ७ | १०३०॥ | दो चैव सुवण्णसुं | १६५ |
| देवा व देवलोमिम | ४१२॥ देसुणं च वसिं | ३ | १८९ | दो केव नमुकारे | १६०५ |
| देवाहुल्लुएणुं अरिहा | ९२२ देअसरीण व | ४ | २५३+ | दो छव सव अट्ट व | १६०४ |
| देवदवक्कवट्टिसाण | १९ देहयइअसुदी | ३ | १५५९ | देणि व दुद्धरिसिअए | २२०+ |
| देवदवंपिअहि | ७७४ देविवितं पेच्छद | ३ | १९२ | देणि विहयायामा | ३१९+ |
| देवी अ नामदत्ता | ३३८ देहि इमं मा सेउं | ६ | २३३ | देण्णं वरयाहिलणं | ६०+ |
| देवी सुमांणए | ४४ देहियाहरितो | ५ | १४+ | देणि व साहु समत्वा | ५१५ |
| देवे णए य मजो | ३०३॥ देहियाहरितो | ५ | ३८+ | देणि व विववुसेसे | १३२८ |

दोषि अ जमला माअ

दोमगीसि जठतो

दोसालं परिहारो

दोसेन जस अयसो

दोसेन जेन हुइ

दो सोला बसीसा

धकारः

धनंदे बहुमिले

धनपप्रपेतकगोसु

धनतयसाह दोस्तण०

धनं धनूयं सह इत्थियाहिं

धनुमुपरायभरणं

धनुं परकर्म निधा

धनेण किं धम्ममुपाहिगारे

धमार्इ वडब्बीसं

धमार्णि रयण थावर

धम्मवह वाय रामणं

धम्मवहाअक्सिचो

धम्मकहाअक्सिचो

धम्मकहाए णं भंते !

धम्मकहा दोहब्बा

धम्मनिषाओ संती

धम्मजियं च ववहारं

धम्मलिकाए वदेसे

धम्मरथिकाय धम्मो

धम्मनियत्तमईया

धम्मरुइ अजवयरे

धम्मलद्धं मियं काले

१७

२२१

२२७

१५७७

१५९१

३०९५

१५७६

१५८७

१५९०

१५८८

४२

४९३५

१३८१५

१८६

७

३

५

३

३

७

३

३

३

३

७

५

७

७

५

५

७

७

धम्मसद्धाए णं भंते !

धम्मस्स कुमारं

धम्मं फलं गोक्खो

धम्मं०नवि शायइ

धम्मं०नवि य अट्ठरुइ

धम्मं०नवि सहंता

धम्मं सुकं च दुवे शायइ

धम्मं सुकं च दुवे शायइ

धम्मं सुकं०जो निवओ

धम्मं सुकं०नवि शायइ

धम्मइएसाणं पंचण्ह

धम्माव भट्टं सिरिओ अवेंयं

धम्माधम्मगासा

धम्मोयधम्मगासा एयं

२५४

२५२

३१२

३६१

३१३

३७

१९५

१४ प्र.

४२५

१३७८५

४१

११६९

४५७

५१७५

५१७५

| | | | | | | |
|---|-------|----------------------|---|------|--------------------------|-------|
| ७ | ११८०० | पादं दृढं निमित्ति | ६ | ४०८ | पोषंति निरावयवं | २६४ |
| ७ | ५२४० | पादेयं तु हवं | ५ | ११८ | पोषंति निरावले | १५०१ |
| ७ | ४०४० | पादेयं पील्य वा | ६ | ४११ | पोष्यं विमिश्रिते | ११५ |
| ५ | २०८ | पिदं मर्दं य संतो | ३ | १३७१ | नकारः | |
| ५ | २६५ | पित्तु वेदमसोद्यमी | ५ | १२० | नानुपविन्न दीदे | ५०३ |
| ७ | १०६७० | पित्तु वेदमसोद्यमी । | ७ | ८२४० | नदोद्वज्जनमुद्रा | १७१ |
| ७ | १०६८० | पीलाय वसत धीरपं | ७ | २०६० | न दपं सन्नेषु मिकलुगुं | १४६६ |
| ५ | २५१ | पीरो पितायपुलो | ३ | ८७४ | न व दंरियां ल्यलद्विमिति | ३९५ |
| ५ | ०० | पुनन्ना विण्ण परेणं | ५ | १६५५ | नदं असीद् गत्तारि | ३७९ |
| ३ | ५७४ | पुनन्नेति वसने य | ५ | २५५ | न कजं गाम मिसोने | १८६५ |
| ५ | २४८ | पुं ष पटिदेत्तन्ना | ५ | १५१० | न क्कमयसुलेहि य | ११०३ |
| ५ | १० | पुनन्नेति विभागो | २ | ११८० | न क्कममोणा ससयं विसि | १२५६५ |
| ५ | १३९ | पुण्णुए वीसो | ६ | ४७६ | न क्कित्तमर ओ लपमा | ०५२ |
| ३ | २७० | पुं निमिदिआओ | ३ | ५०२ | न क्कण्ण विमोगुपं | १५१२ |

५९२३ १६१९ १६९३ ४९७३ २१ १३६ ४७३ ७६० ३३८३ ३५७३ १४१६ १३९८ ४७०३ ७६९

७ ३ ३ ५ ३ ५ १ ४ ७ ५ ३ ३ ५ ४

नमी नमोद अण्णं नमुकार चववीसग नमुकार पोरिसीए न मे चिरं दुक्खमिणं नमो चववीसाए न य सगमाइसुद्धं न य कयइ निम्माओ न य तत्त तन्निमित्तो न य पवपरिक्खेवी न य भोभ्रणं निद्धो नवी य चंपतासा नवी य पंडुमहुए न य तुमहिअं कंढं न य हिंससित्तेणं

३८५३ २७३३ ६७३ ६८३ १७०३ ४७९३ ५१७ ४१९३ २६० १५७३ ३९४ ३९४ ४२८३ ७४६३ ४३८३

५ ५ ५ ५ ७ ५ ४ ७ ६ ७ ४ ४ ४ ७

नगराण सुमिणं जोरं नगिगसा यावि मुढास न परेत्त थारे जालो न परेत्त वेसतामो न विप्ता तापए मासा न जाणंते न य रूपमचे नट्ठं पळं मासं नोटिं नीपदि य पाइणदिं ननु गुहमइयरसा नउण्णं पाणदेउं या न वरेत्ता जइ तिप्पि न वत्ता दुयसं विभयंति नावओ ७ द.सं अरी कंठ छिन्ना न गग्न भोगे पईऊज बढी ७

| | | | | | | | | |
|-----------------------|---|-------|-------------------------|----|-------|--------------------------|----|-------|
| नाऊण चयजिञ्ज | ४ | २६० | नाणं० एके सन्धेसुवि | ४ | ५३० | नाणावरणं पंचविहं | ७ | १२७०* |
| नाग्व्य वयणं छिता | ७ | ४८८* | नाणं० एयं जीवस्स लक्खणं | ७ | १०७१* | नाणावरणिजस्स व | ३ | ८०३ |
| नागो जह पंकजलावसण्णो | ७ | ४३५* | नाणं० एयं भगमणुपचा | ७ | १०६३* | नाणाविहोवगरणं | ५ | २३० |
| नागचरिचा एवं | ६ | १४८ | नाणं च दंसणं चैव | ७ | १०६२* | नाणी कम्मस्स सयदुसुट्ठिओ | ४ | ७५१ |
| नागदंसणविकमो | ३ | २८ | नाणं दंसणं तव संजमो | ६ | ६१ | नाणेण जापार्ह भावे | ७ | १०९५* |
| नागदंसणसंपन्नं | ५ | २१०* | नाणं पंचविहं एण्णत्तं | १० | १ | नाणेणं दंसणेण य | ७ | ४१९ |
| नागदंसणसंपन्नं | ५ | ३२६* | नाणं पंचविहं एण्णत्तं | २ | १ | नाणेणं दंसणेणं व | ७ | ८०८* |
| नागमेगमचित्तो अ | ५ | ४५६* | नाणं भावुजोओ | ३ | १०७१ | नानिन्विहं लम्भइ | ६ | ३७० |
| नागवररयणदिमंत० | १ | १७* | नागंमि दंसणंमि अ | १ | २९* | नामी जिजससू आ | ३ | ३८७ |
| नागसंपन्नया ए पं भते! | ७ | ७३ | नागंमि दंसणंमि अ इत्तो | ३ | ९७९ | नामी विणीअभूमी | ३ | १७० |
| नागस्स केवलीणं | ७ | १६३* | नाणं सविसयनियवं | ३ | ११५५ | नामकम्मं व गोयं व | ७ | १२६९* |
| नागस्स जइवि हेऊ | ३ | २२५० | नाणं सिक्खइ नाणं | ५ | ३१८ | नामकम्मं दुविहं | ७ | १२७९* |
| नागस्स दंसणस्स डवि | ५ | ३२ | नामादुमलयाइव | ७ | ७०१* | नामद्वयओ | २ | ४५ |
| नागस्सावरणिञ्ज | ७ | १२६८* | नाणा रइं व छंदं ज | ७ | ५७७* | नामद्ववणणं को पइविसेतो? | १२ | ११ |

| | | | | | | | |
|-------------------------|-------|----------------------------|---|---------|----------------------|---|------|
| नामं० इत्यंति कुंरा गगा | ७२ | नायमि गिण्डियन्वे | ३ | २०६५ | निगारजिअ भमटण | ४ | ८० |
| नामं० इरणाई | ४११ | नायमि गिण्डियन्वे | ३ | १७१८ | निर्विचणा य समणा | ३ | ३५५ |
| नामं० इन्दे पावज्जुहं | ४५९ | नारी पीकराज्जा | ४ | ८३+ | निबूहं सविसेसं | ३ | १६३८ |
| नामं० इन्दे भादे एकेसया | ७४ | नारी पीकराज्जा | ४ | १०६+ | निकरम पवेस मंडलि | ४ | २७५+ |
| नामं० इंगरा नाण पदिते | १३८ | नारीसु नो पणिगिज्जा | ७ | २२६५ | निकरम पवेस मोचुं | ४ | २८१+ |
| नामं० भादे गहमेगन्था | ५१६ | नावा अ इर का बुत्ता | ७ | १०३५ | निकरम्ममाणा इअ | ५ | ४६१५ |
| नामं० अ तिरंति अ | ५६ | नावा (प) वत्तारिउं | ३ | ३६ प्र० | निकरंती गयवराजो | ७ | १०७ |
| नामं० गिरिगामो | १३९ | नावानिमो उगगहंमंतो | ४ | ३१३+ | निकरंती इत्यिसीसा | ३ | १५१+ |
| नामं० गतमिया भाविसा | ८०९ | नासंईपलिवयिमु | ५ | २६३५ | निक्खिविउं किइकम्मं | ४ | ६९ |
| नामं० उज्जग पगाइ जीहे | १०५५ | नासाए पंचमं यूआ | २ | २७५ | निक्खेवावसरो पुण | ७ | ४३+ |
| नामा पउजेय | ५२४ | नासीले ण विसीले | ७ | ३३१५ | निक्खेवु पवयणंमि | ७ | ४५८ |
| नामाई वज्जरम्मप० | २८ | नाइं रमे पकिराणि पंजेरे वा | ७ | ४८१५ | निक्खेवेगट्ट निरुता० | ५ | ५ |
| नापमुदाएणधि अ | १२९३५ | निक्खमा म्मुगगईए | ३ | ४५६ | निक्खेवेगट्ट विहाण० | ३ | १५२५ |
| | ५२ | निक्खंण्या य नवमे | ७ | २० | निक्खवो अ (उ) वउके | ५ | २७१ |

| | | | | | |
|-----------------------|-----|------------------------|-----|-------------------|------|
| निस्रसेवो अ (५) जीवमि | ५५४ | निस्रसेवो ज्ञमि अ | ४५३ | निगंवे पावणे | ७६० |
| निस्रसेवो अयमाए | ५५७ | निस्रसेवो जीवमि अ | ४५२ | निगंथो विहमंथो | १०२४ |
| निस्रसेवो अयमाए | ५५२ | निस्रसेवो निपंमि | ४५३ | निबकलउमतेज | ६३६ |
| निस्रसेवो अ मिआए | ४५५ | निस्रसेवो निपंमि चउ० | २३७ | निबं चिध जुवदपसू | १३५ |
| निस्रसेवो अ मुअमि | ५५९ | निस्रसेवो पयडीए | ५३३ | निबं सीएण तयणे | ६७१ |
| निस्रसेवो इ वरुमे | २४४ | निस्रसेवो सिस्नुमि चउ० | ३७३ | निबुविमो जहा सेजो | १९८ |
| निस्रसेवो इ गंइए | ५५३ | निस्रसेवो मयमि (मि) | ५०१ | निचुयजो दुजेयं | ७१६ |
| निस्रसेवो उ तमि | ५१३ | निस्रसेवो मुस्तमि म | ४०९ | निचुयजो सविरो | ३३९ |
| निस्रसेवो इ दुममि | २८० | निस्रसेवो विमतीए | ५५६ | निचुयजो सविरो | ११ |
| निस्रसेवो उ तमि | २६० | निस्रसेवो संजडमि | ३९१ | निचुयजो सविरो | १०५ |
| निस्रसेवो इविठ्ठी | २६० | निस्रसेवो साममि (य) | ४८३ | निचुयजो सविरो | ७६२ |
| निस्रसेवो राहुंमि | ४९० | निगमण सुखी सितंयवि | १३४ | निचिउमयस चरणाय० | ९८८ |
| निस्रसेवो गोअममि | ४५१ | निगम देउल दाणं | २३८ | निचुयजो सविरो | २७९ |
| निस्रसेवो बणमि (मी) | ५१७ | निगम सव तावस | ४४५ | निचुयजो सविरो | २८५ |

निज्जवण भरगुत्ते

निज्जवं मुचूणं परवयणे

निज्जामगरणणं

निज्जायकारणी

निज्जहिक्का आहारं

निज्जालं रत्तनिज्जुलं

निज्जं च न बहुमानिज्जा

निज्जा वरेव पयला

निज्जामणे न सरह

निज्जेसवसंसाप

निज्जेसविती पुण जे गुह्यं

निज्जेसे षडमा होइ

निज्जेसमणसमादणसं०

निज्जेसं सारबन्वं च

७१६

१४५७

११४

१६७१

१३७२५

३५६५

३७६५

१२७१५

१६२२

३३१

४३८५

५७५

८०५

८८५

८८५

८८५

८८५

८८५

८८५

८८५

८८५

निज्जेसं सारबन्वं च

निज्जमदुगणि पुब्बं

निज्जवसपरिणामो

निज्जमगं च मामं

निज्जेयो च कालो

निज्जेसं अयसत्ये प्र

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

निज्जेसं अयसत्ये

+६०

२५१+

१५८५

११४८

४३५

१८४

१३५

१६३३

९०५

७४७५

१८९+

२३८

१५५७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

३८७

२

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

३

५१५

२८४+

१३१३५

७२७

१२+

३५

६७५

९४४

७२८

६८९५

१३७३५

९६१

३०८

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

३५५

नियहुवहि यणिहीए

नियमाट विट्ठमाही

नियमा चित्तं भाणं

नियमा निजेसु उ गुणा

नियमा तिक्कलविसएडवि

नियमा मणुयाईए

नियमूसियकणयसिलायल०

नियवमहिजो व काजो

निरट्ठगं सि विरजो

निरट्ठया तम्मारुई उ दास्त

निरट्ठक्को वक्को

निरामयापयभावा

निरणुस्सिजो निवत्तो

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

निबिषिद्धो गयमत्तं

| | | | | | | | |
|-----------------------------|----|-------------------------|---|------|------------------------|---|-------|
| नेगमं०आणु०टो०फिं संखेज्जइ०२ | ८४ | नो इत्थीणं कदं कदिचा | ७ | ४ | नो रक्खसीसु गिण्णेज्जा | ७ | २२५* |
| नेगम०आणु०डोगसु फिं | २ | नो इत्थीहिं सदिं संवि० | ७ | ५ | नो विभूसाणुवाई | ७ | ११ |
| नेगमववहराणं आणु० | २ | नो इंदियडगिण्णु अमुत्त० | ७ | ४५१* | नो सकिपयिच्छई न पूलं | ७ | ४९८* |
| नेगमसु णं एणो | २ | नोइवगरणे जा सा | ३ | १३६७ | नो सरत्तवरसांगव | ७ | १२ |
| नेगंगिरंपरपरिसादि० | ४ | नोऊम्मदवकम्मं | ७ | ५३२ | नोसप्पाकरणं पुण | ७ | १८५ |
| नेच्छइ तमिसमिं तथो | ६ | नोऊम्मदव्वलेसा पजोग० | ७ | ५४६ | नोसुअकरणं दुविहं | ३ | १०३३ |
| नेमिओ पासणिओ | ३ | नोऊम्मो इव्वाइं | ७ | ५३५ | नोसुअपवक्खाणं | ३ | २४६+ |
| नेरइयतिरिक्खाव | ७ | नो कयपवक्खाणो | ३ | १६७८ | नोसुअकरणं दुविहं | ७ | २०४ |
| नेरइयतिरियमणुया | ३ | नोपरंत्तरडोगविहं | ६ | ३३४ | पइसुइएण पायं | ५ | १८१ |
| नेरइय देव तिलंकरा य | १ | नो तिविहं विविहेणं | ३ | १६७९ | पइठणे नागवद्द | ३ | १३८२ |
| नेरइया सत्तविहा | ५ | नो निगम्ये इत्थीणं | ७ | ७ | पइण्णवाई दुहिले | ७ | ३३५* |
| नेव पत्तहत्थियं डुब्बा | ७ | नो निगम्ये पुव्वरवं | ७ | ८ | पइरिक्खुवस्सयं डुब्बं | ७ | ७१* |
| नो अइमायाप पाणमोक्खणं | ५ | नो ण्णीयं आहारं | ७ | ९ | पत्तमपहत्तामाओ | ३ | ७(५०) |
| नो इत्थीणं इंदियाइं | ७ | नो पाळाणं विविहं | ५ | १७१ | पत्तमसु कुमारं | ३ | २८२ |

पञ्चोत्सवगाइ हव

पद्मायकियमिअयं

पट्टा मत्तय सयमोगाहो

पट्टोवि होइ एको

पट्टवज्जो अ दिवसे

पट्टविय बंदिप या

पट्टविय बंदिप वा

पट्टवियमि सिलोने

पट्टाहं रयत्ताणं

पट्टंति नरए पोरे

पट्टिओ खलु पट्टज्जो

पट्टिकमणं देसियराइयं

पट्टिकमणं पट्टिकमलो

पट्टिकमणं पट्टिथरणा

३

२

४

४

३

४

३

३

४

७

४

३

३

३

१४६४

७९५

६३१

३१४४

१६६६

६५७

१४८२

१४९७

६७४

५७२५

४८०

१२६१

१२४३

१२४५

पट्टिकमणे सव्याए

पट्टिउट्टुलं न पविसे

पट्टिउट्टुलणं युण

पट्टिउट्टुदिये बज्जिअ

पट्टिकमणेणं भंते !

पट्टिकमामि एगविहे

पट्टिकमामि गोयरचरियाए

पट्टिकमामि बाइकांलं

पट्टिकमामि छहिं जीव०

पट्टिकमामि तिहिं सल्लेहिं

पट्टिकमामि पसिणाणं

पट्टिकमामि पंचहिं काम०

पट्टिकमामि पंचहिं किरियाहिं

पट्टिकमामि चिंसल्लो

३

५

४

३

७

३

३

३

३

३

३

७

३

३

१२१२

७६५

४४०

१८१४

२५

११

९

१०

१५

१२

५७८५

१४

१३

१०३२५

पट्टिकमिसु निस्सल्लो

पट्टिभहं संलिहिचाणं

पट्टिजगियंमि पट्टमे

पट्टिणीयगेहवज्जण

पट्टिणीयसरिरुहुणे

पट्टिणीवं ब बुद्धाणं

पट्टिपुच्छणाए णं भंते !

पट्टिमगगस्स जयत्त व

पट्टिमं पट्टिवज्जिआ मत्ताणे

पट्टिमंत थंभणाई

पट्टिमा भइ महाभइ

पट्टियरणपओसेणं

पट्टित्त्वयाए णं भंते !

पट्टित्त्वो खलु विणजो

७

५

३

४

३

७

७

४

५

६

३

६

७

५

१०४०५

१६०५

१४९४

४२४

१३६५

१७५

३४

५३४

४७२५

४९९

४९६

३६९

५६

३२२

| | | | | | | | | |
|--------------------|---|-------|-----------------------|---|------|---------------------|---|-------|
| पडिहुरो सलु विणओ | ५ | ३२६ | पडिबिज वंगमार्दं | ६ | ४७७ | पढमपोरिसि सञ्जायं | ७ | १००९५ |
| पडिहामिय वंरता | ६ | ५०६ | पडिसडियंहुपंचं | ६ | ५१७ | पढमविदया वरित्ते | ५ | २८४ |
| पडिलेहओ य पडिलेहणा | ४ | ५ | पडिसिद्वानं करणे | ३ | १२८६ | पढमविदया गिलणे | ४ | ६२ |
| पडिलेहणा उ दुविहा | ४ | ६२९ | पडिसेवणा पडियुवणा | ६ | १२४ | पढमवित्तिवारं गमणं | ४ | ९४+ |
| पडिलेहणा संपारग | ४ | ११५+ | पडिसेवमार्दणं | ६ | ११३ | पढमविचार गमणं | ४ | १८३ |
| पडिलेहणं करंतो | ४ | २७३ | पडिसेवणार्दं ठेणा | ६ | ११८ | पढमवीयाणं पढमां | ३ | १६८ |
| पडिलेहणं हुगंतो | ७ | १०२०५ | पडिसेवणा मड्डणा | ४ | ७८९ | पढमस्त धारसंगं | ३ | २३६ |
| पडिलेहणं च विंढे | ४ | ३ | पडिसेवणा य दुविहा | ४ | ७८७ | पढमं आदम्मजुचं | ५ | ८१ |
| पडिलेहणा दिसांगवर | ३ | १३१८ | पडिसेदिए व विसे वा | ५ | १७२५ | पढमं जोगे जोगेसुवा | ३ | । ८३ |
| पडिलेहणियागळे | ४ | १७४+ | पडिसेवण संगण० | ३ | +६६ | पढमं विट्ठिजुळं | ३ | ३२+ |
| पडिलेहंतविज | ४ | ७९+ | पडिच्छिदीर सतरं | ४ | ८८ | पढमं नाणं तउ दवा | ५ | ४१५ |
| पडिलेहेइ पमसे से | ७ | ५३६५ | पढमचरिमाउ सिसिरे | ४ | ३०० | पढमं पोरिसि सञ्जायं | ७ | १००३५ |
| पडिलेहेइ पमसो | ७ | ५३५५ | पढमद्वयणं दुम० | ५ | २६ | पढमं पोरिसि सञ्जायं | ७ | १०३४५ |
| पडिलोमे जह जमओ | ५ | ८२ | पढमविदसंमि कम्मं सिमि | ६ | २६८ | पढमंमि जह मंगा | ७ | ७१ |

| | | | | | | |
|---------------------|-----|----------------------------|---|---------------|---|------|
| पढमंमि सव्वजीवा | ७११ | पढमे मंते ! सहव्वए पाणाइ०५ | ३ | पणवीसमद्वतेरस | ३ | १६२१ |
| पढमा आवसिसया नामं | ७ | पढमे वए महारायं ! | ७ | ७१७ | ३ | २८६ |
| पढमाए वल्लि पढमा | ४ | पढमे वासचत्तमि | ७ | १६२४ | ७ | १६०८ |
| पढमाणुजोगसिद्धो | ३ | पढमे विण्णो वीए | ७ | १८ | ३ | २७३ |
| पढमापढमा वरिणे० | ७ | पढमो अकलमबू | ३ | १९४ | ३ | १२१८ |
| पढमा विचारलोणं | ४ | पढमो चइइसपुब्बी | ३ | १७७ | ७ | ११५१ |
| पढमासइ अन्नपुत्तेव० | ४ | पढमो घण्णअई | ३ | ४०३ | ५ | १८७ |
| पढमित्थ इंदूई | १ | पढमो य कुमारते | ३ | १६४ | ७ | ५१६ |
| पढमित्थ इंदूई | ३ | पण्णीसा तीसा पुण | ३ | ३९३ | ३ | ३८० |
| पढमित्थ वइरणो | ३ | पणपण्णगस्स हाणी | ४ | १६४ | ३ | २७९ |
| पढमित्थ विमलवाइण० | ३ | पणवचत्तं च तिगं | ३ | १६७ | ३ | २८९ |
| पढमित्थुअस्स वटए | ३ | पणथा पंचत्तिवा | ३ | ११०१ | ३ | २४३ |
| पढमित्थुयाण वटए | ३ | पणयाअ सयसहस्सा | ७ | १४३१ | ७ | ४२५ |
| पढने धम्मपसंसा | ५ | पणयालीसा बारस | ७ | ४१ | ३ | २८५ |

एणा छायालीला

एणागा छसोदि

पाटवणे दद गुच्छओ

पत्तळदुससालाया

एताम र पडिलेहा

एवे व मगमगो

एवे एतापेयो पायवुयलं

एवे एतापेयो पायवुयलं

एवे एमजिऊलं

एताग सेव जयणा

एतापंदपमगं

एवे प एउलोमे

एवेयदुदकरले

एवेयदुद जिणछमिया

एवेयदुद जिणवः

एवेयमकरांद

एवेयसरीए द

एवे वसंतमासे

एतेण व कुलण व

एनरस तीसरेविहा

एनामानपरिसरा

एमूयरणो राणा

एमाणे छाते आवससए

एपरिउरएसाणुयावमिन्नं

एममुजोहमाणो व

एवतपकाचि व पत्तमालवे

एवताया पडिपुच्छ

एवलयंत मुमुषो

| | | | | | | |
|---|------|---|-------|---------------------|---|------|
| ३ | ३६० | ३ | १५८ | पवसस दुगात्रव्यासे | ६ | ५५५ |
| ३ | ३५० | ३ | १७ | परकमं अतकमीकरेय | ६ | १०८ |
| ४ | ६९५ | ७ | १४६७३ | परवितियवगहएदतास० | १ | १०३ |
| ६ | २१४ | ३ | १४१२ | परदारागणं समणो० | ३ | ४० |
| ४ | ४७९ | ५ | ५७+ | परसक्केडवि अ दुविहं | ४ | ३०० |
| ४ | ३२७ | ३ | १५६९३ | परसक्तो उ गिहल्ला | ६ | १७७ |
| ४ | ६६९ | ४ | ७४ | परसवइया हाया | ६ | १७३ |
| ४ | ६७५ | ४ | ४००३ | परससंखवो वा | ७ | १०८३ |
| ४ | २१५ | ४ | ४१२ | परसराहसमिसीमं | ४ | ७६१ |
| ४ | २३७ | ३ | १५१ | परसाणुगळा खडु | ७ | ३७ |
| ४ | ६९४ | ७ | १३२०३ | परसाणू वसरेणू | २ | १९३ |
| ६ | ६४० | ५ | ३१९३ | परमोदि वसंसिजा | ३ | ४५ |
| ३ | ११६३ | ३ | १६४० | परलोणु मुत्तियगो | ५ | २६८ |
| ४ | १२६ | ३ | १५७८ | परवमणं अदिनंद | ३ | १२७ |

पररा सं देव सए य गोह

परिअरयणेण भंडे

परिअरयणेण भंडे

परिआगो एअज्जा

परिवारमासी सुसमाहि०

परिगलमाणा हीरेज

परिआगिअण जीवे

परिआगिअण य जभो

परिअुमेहि परयोहि

परिअूए० पाणवले

परिअूए० वक्खुवले

परिअूए० ते सरिरयं

परिअूए० ससवले

परिअूए० रसगवले

३५२ परिअूए० सवले

८४४ परिअरिअपेरंतं

११६X परिअिअुया गणहरा

४१२ परित्तो धायणाए

३२४ परिअिअियुअुवो

१७६+ परिभासणा उ पढा

८७८ परिसंहल संठाणे

३३ प्र० परिसंहले य वट्टे

६० परिअिअभक्तगदो

३१२ परिअट्टणयाए णं संते !

३११ परिअट्टिअ अभिहडे

३१० परिअट्टियलावणं

३१४ परिअट्टिमि दुविहं

३१३ परिअय परिअ पुअिसे

३१५ परिअय धंमचेरं

१२० परिअडिएण चिअिअ

६५८ परिअूत्तिणं वूआ

१२० परिअेसणपंतीए

४१५ परित्वयंते अनियत्तकामे

३+ परिसडियपंडुपत्तं

१४१५ परिसेयपियणहत्थाइ०

३८ परिसेयपियणहत्थाइ०

१३८+ परिअिणं वं दव्वं

३५ परिसहरित्तं वंता

९३ परिसहाणं पविभत्ती

३०७ परिसहा दुअिसहा अणेगे

३२३ परेसु गासमेसिअ

११४० पलाळं फासुभं वत्त

२०६+

३२*

३००*

३४५

४५४*

४६०

३४८

२३

१२८+

२९*

४९*

७७५*

७८*

८४८*

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

| | | | | | | | |
|---------------------------|---|-------|------------------|---|------|-----------------------|-------|
| पंढामा धूमामा | ७ | १५३०॥ | पंचमहव्यं धम्मं | ७ | ९१८॥ | पंचसय अद्धपंचमं | ३१२ |
| पंढाविहूणो व जहेव पत्तंसी | ७ | ४७०॥ | पंचमा छंदणा नामं | ७ | ९१४॥ | पंचसया चुलसीया | १४१+ |
| पंचा धारसां ररु | ७ | ३९ | पंचमियाएँ असंखडि | ३ | १३२२ | पंचसया चुलसीया | ७८३ |
| पंच पउरो अभिगाहि | ३ | १६९७ | पंचमी अ अवायणे | २ | ५८॥ | पंचसया चोयाला | १३५+ |
| पंचणहमणुषयाणं | ३ | ३९५० | पंच य अणुवयाइ | ५ | २४९ | पंचसया जंतेणं | ११३ |
| पंचण्हं किइकम्मं | ३ | १११९ | पंच य पुत्तसाइ | ३ | ४५ | पंचहि समणसपहिं | ३०९ |
| पंचण्हं पंचसया, | ३ | ५९७ | पंच य महव्याइ | ३ | १२६२ | पंचहि लक्खेहिं वओ | १७५० |
| पंचण्हं यण्णाणं | ३ | ७३१ | पंचअहंते वंदंति | ३ | ४१९ | पंचाणवइ सहस्सा | ३०५ |
| पंचत्थिपायमहयं | ३ | १५३ | पंचविहअसज्जायस | ३ | १४५९ | पंचाणवइ सहस्सा | ३९६ |
| पंचपय्या उ जा लही | ४ | ७३३ | पंचविहविसवोक्ख० | ६ | २२६ | पंचालायाअविब धंमदत्तो | ४३९॥ |
| पंचमसरमंता उ | २ | ३६॥ | पंचविहं आयारं | ३ | ९९४ | पंचासइआयामा | ९३+ |
| पंचमहव्ययजुतो | ३ | १२०९ | पंचविहं माणुसे | ३ | ८०+ | पंचासवपणिषाया | २७॥ |
| पंचमहव्ययजुतो | ७ | ४७३ | पंचविहो अ पमाओ | ७ | १८१ | पंचासवपमत्तो | १३१२॥ |
| पंचमहव्ययजुतो | ७ | ६८८॥ | पंचसमिओ विगुत्तो | ७ | ११०॥ | पंचासीह सहस्सा | ४०७ |

| | | | | | | | | |
|-------------------------|---|-------|-------------------------|---|-------|------------------------|---|-------|
| पाणिपदमुसावाया | ७ | १०९९५ | पायपमज्जणदेउं | ४ | ६२७ | पावं छिंदह जम्हा | ३ | १६०५ |
| पाणिपयो विसु गहणे | ४ | २२१४ | पायसमा ऊसावा | ३ | १६३६ | पावंति जहा पारं संमं | ३ | ११२ |
| पाणीपचं गिद्धिदंयं | ३ | ४६३ | पायस पडोयारं | ४ | ३५३ | पावंति निब्बुइपुरं | ३ | १०६ |
| पाणै य नाइवाइज्जा | ७ | २१६५ | पायस पडोयारे | ६ | २८ | पावण वज्जणा रलु | ७ | २२ |
| पाणेहि व संसत्ता | ४ | २५८ | पायस ० पणवज्जो व | ६ | ८४ | पावणं कम्माणं | ५ | २०३ |
| पाभाइयकालंमि व | ३ | १४१५ | पायस ऊसरणमउसस० | ४ | ६८६ | पाडुआई कीरव | ३ | १६३४ |
| पाणिचंमिय दुविहं | ६ | ३१६ | पांरपरणसिद्धी | ३ | ११७८ | पावे छवं दववे सविद्या० | ७ | ३८६ |
| पायगाहंमि देसिधमि | ४ | ३७६ | पाहिद्धावणियविहिं | ३ | १२८२ | पासट्टियो य पुच्छेज्ज | ४ | १९ |
| पायच्छिउत्तरणेणं भंते ! | ७ | ३० | पायिफाठसगो | ७ | १०३१५ | पासत्ताई बंदमाणस | ३ | ११२० |
| पायच्छिउत्तरण० | ३ | १४१७ | पायिकाउसगो | ७ | १०३१५ | पासत्तो ओसन्नो होई | ३ | २१२० |
| पायच्छिपं विणओ | ५ | ४८ | पायि० वं चंपडिवज्जिन्ना | ७ | १०४२५ | पासवणुचारभूमिं च | ७ | १०२९५ |
| पायच्छिपं विणओ | ७ | ११२७५ | पालंति जहा गावो गोवा | ३ | ९१५ | पासस शुमारत्तं | ३ | २९९ |
| पायपमज्जणिसिद्धिआ | ४ | ५१० | पावसमभिजं वह संज० | ७ | १५ | पासंडियसमणणं | ६ | १४५ |
| पायपमज्जणसिद्धेह० | ४ | ४३२ | पावसुयपसंगेसु य | ४ | ११५३५ | पासंडीसुयि एवं | ६ | १४३ |

न. अ. आ.

ओ.

इ. पि. उ.

॥ ६६ ॥

पाणा अ इ ऋ ए

पाणाए ऋराणा णं

पाणुसमासोर्गतिअ०

सार्गेहि एएजागेहि

पाणो अट्टिनेमी

पाणोक्तिरा कडादे

पाणोक्तिरा यडादेअ०

पाडागे मट्टित्तये

पाट्टिठिरियाणोसा

पाट्टिठिमां भुंरइ

पाट्टिठिं प ठवंगी

पाट्टिठिमादिदु दुपिरा

पाट्टिठिसंसादने

सिअरिएआगंधप०

८७३३

२५१३

७७३

६६३३

२३२

५५२

५५४

३४

५०५

२०१

५७७

२८५

१४१+

७८३

विज्जदोसमिच्छादंस०

विट्ठापवांसं

सिद्धि संणए जग्हा

विणए एसओ देवो

विणयत्ते दवयम्मे

विणयम्मे दवयम्मे

विणयम्मे दवयम्मे

विणयुक्ता य दुमिदि

विण ये सच्चसार्पि

विणाय भूया जस्ता व

विणुणा षोववावी

विणुणासम्भय

विट्ठिअम्मकडादे

विट्ठे यवदत्तस

६

४

६

४

४

६

४

५

७

६

४

३

५

५

विट्ठण यट्टुल्लवाणं

विट्ठ निक्काय समूहे

विट्ठ निक्काय समूहे

विट्ठविसोदी समिद्धे

विट्ठस उ निक्खोवो

विट्ठस उ निक्खोवो

विट्ठं व एसणं या

विट्ठं सिन्नं च वार्यं च

विट्ठायमपट्ठिमासुं

विट्ठे उग्याम उग्याणोस०

विट्ठेय सुत्तकलं

विट्ठेयसिन्धिरिया

विट्ठेयणा य सन्ना

विट्ठो व पम्पणा य

२+

४०८

२

३+

३३२

३

३३१

२५६३

११४३३

१

२३६

+४७

२४२

२३५

| | | | | | | | | | |
|------------------------|---|-------|--------------------|---|---|--------------------------|------|---|-------|
| पिंडोत्तरं यं दुस्सीलो | ७ | १४९* | पुंठं सुणेइ सरं | ३ | ५ | पुढवितसपाणसमुट्ठिण्हि | १४३५ | ३ | १४६९ |
| सीढए पंगवेरे अ | ५ | ३०५* | पुढो जहा अबद्धो | ३ | ५ | पुढविं न राणे न राणावर | १४३५ | ५ | १४६९ |
| सीरती निप्पिठे फासुं | ६ | ६०२ | पुढो जहा अबद्धो | ७ | ७ | पुढविं मिंसि सिंलं लेलुं | १७६ | ५ | ३३८* |
| पुरुरवररदीवणे | ३ | १०* | पुढो य वंसमसरहिं | ७ | ७ | पुढवी आउक्काए | ५८* | ३ | १३८८ |
| पुच्छ भते ! जहिच्छं ते | ७ | ८५३* | पुढविकायं पहिसंति | ५ | ५ | पुढवी आउक्काए | २३५* | ७ | २७७ |
| पुच्छंताण पहेइ | ३ | ४३७ | पुढविकायं विहिसंलो | ५ | ५ | पुढवी आउक्काए | २३६* | ७ | २७७ |
| पुच्छाए फोगिओ रालु | ५ | ७८ | पुढविकाओ सिविहो | ४ | ४ | पुढवी आउक्काए | ३३८ | ५ | ६४१ |
| पुच्छाए तिणिणि तिआ | ४ | १५ | पुढवितसे तसरहिइ | ४ | ४ | पुढवी आउक्काए | ४* | ७ | १०२१* |
| पुच्छा निदिणो पिंता | ४ | २४० | पुढविदए य पुढविण | ४ | ४ | पुढवी आउक्काए | ४४ | ७ | १०२१* |
| पुच्छामि ते महाभाग ! | ७ | ८५२* | पुढविदगअगणिमारुअ० | ४ | ४ | पुढवी आउक्काओ | १६९+ | ७ | १४४२* |
| पुच्छिअण सए तुभं | ७ | ७५५* | पुढविदगअगणिमारुअ० | ५ | ५ | पुढवी आउजीवा य | ३३६* | ७ | ५३२ |
| पुच्छिअ पंजलिउडो | ७ | १०००* | पुढविदगअगणिमारुय | ३ | ३ | पुढवी आउवणस्तइ | +१४ | ७ | १० |
| पुज्जा जसस पसीयंति | ७ | ४६* | पुढविदगअगणिमारुय | ४ | ४ | पुढवीकाओ विविदो | ४६६ | ७ | २९४* |
| पुढं सुणेइ सरं | १ | ७८* | पुढविदगअगणिमारुय | ५ | ५ | पुढवीजायमइगओ | ४६ | ७ | |

| | | | | | | | | |
|-------------------------|---|-------|------------------------|---|------|----------------------------|---|------|
| पुलही य सक्ता वातुवा | ७ | १४४६५ | पुष्कलं पत्तणं सखु० | ६ | ४६ | पुरिमा च्छुज्जहा ४ | ७ | ८५७५ |
| पुलही सारी जहा चेव | ७ | २७६५ | पुष्कणि अ बुसुयणि | ५ | ३६ | पुरिमाणं दुब्बिसुवो | ७ | ८५८५ |
| पुणरिय अयं गुमिजा | ४ | ७० | पुण्णराज पवणं | ७ | २७० | पुरिमेण० | ३ | ४६४ |
| पुणरिज समोसालो | ३ | ३६७ | पुमत्तमागमा इमार दोडवि | ७ | ४४३५ | पुरिमेण पच्छिमेण य | ३ | १८२ |
| पुणरवि भरिअत्तारे | ३ | ४८७ | पुरजो जुगसायाए | ५ | ६२५ | पुरिसज्जएडवि वहा | ३ | ६७९ |
| पुण्णिमा मासकप्पो | ४ | १२९ | पुरजो पररासन्नं | ३ | ५६८ | पुरिसावायं सिविहं | ४ | ३०१ |
| पुण्यं रणं य अलंकियं | २ | ४८५ | पुरजो सग्गे वह मत्ताओ | ४ | १७८ | पुरिसुबद्धिविवातो | ४ | ३७२ |
| पुण्णा य नदं पउमासत्ता० | ४ | ६५५ | पुरकम्मं उदरत्तं | ४ | ४८६ | पुरिसो इरियानपुस्सा | ४ | १६ |
| पुण्णारत्तरीकिजो | ५ | ४८९५ | पुरकम्मं पच्छकम्मे | ४ | ५२० | पुरेकम्मेण हत्थेय | ५ | ९१५ |
| पुत्तस्त पिगाहरिणं | ६ | २८८ | पुरतो जुगमायाए | ४ | ४३१ | पुरोदियं वं कम्मसोप्पुणंदं | ७ | ४५१५ |
| पुत्तो धणंजयम्मा | ३ | ४४९ | पुरपच्छकम्म ससिणिदू० | ६ | ५३४ | पुरोदियं तं समुयं सदाहं | ७ | ९७७५ |
| पुत्तो पथायदस्सा | ३ | ४४७ | पुरवत्तकाडवट्ठा | २ | ११९५ | पुत्तागकुसीलणं | ७ | २७५ |
| पुत्तो मे भाय नादति | ७ | ३९५ | पुरिमंतरीति मुत्तपुह | ३ | १३६५ | पुत्ताग वज्जुम कुसीला | ७ | ४५ |
| पुत्तकजोदपल्लेणु | ४ | ७०३ | पुरिमंतरीति मुत्तपुह | ७ | १७२ | पुत्ताग वज्जुम कुसीला | ७ | ७७ |

| | | | | | | | | |
|-----------------------|---|-------|-------------------------|---|-------|---------------------------|---|-------|
| पुलागरस सहस्रादे | ७ | २६+ | पुव्वसुहा रादिणिआ | ४ | २८२+ | पुव्वि अक्खिवा माणुसेदि | ३ | ९८+ |
| पुले य सुदी जह | ७ | ७४०* | पुव्वसयसहसादे | ३ | २८३ | पुव्वि कयाह पणुणो | ३ | २१+ |
| पुव्वकयभासो भावणादि | ३ | १३० | पुव्वं अदिट्ठमसुअ० | १ | ६२* | पुव्वि च इण्हि च अण्णागयं | ७ | ३९०* |
| पुव्वकोडीपुहुतं तु | ७ | १५४९* | पुव्वं च अं तहुतं | ३ | १५८२ | पुव्वि पच्छा संयव विआ | ६ | ४०९ |
| पुव्वपहलेक्काणं | ४ | ३८० | पुव्वं ठंति य गुरुणो | ३ | १६४१ | पुव्विपि वीरसुणिआ | ४ | १२४+ |
| पुव्वपहलेवगहणे | ४ | २०३+ | पुव्वंते होज जुगं | ३ | ८३३ | पुव्वुदिहो ठावे ठां | ४ | ५१२ |
| पुव्वदिहो इच्छइ | ४ | १५५ | पुव्वं इन्वाखेयण पुव्वि | ३ | १३२३ | पुव्वुदिहो व विही | ४ | २३० |
| पुव्वदिहो य विही | ४ | ६२८ | पुव्वं दुदीह पेहिआ | ५ | २९४ | पुस्से पुणब्बसू | ३ | ३२८ |
| पुव्वपडियत्ता पुण | ३ | ८०८ | पुव्वार्हासु महादिआसु | ३ | ८१० | पुहवी य वारणी | ३ | ६४८ |
| पुव्वपयोगओचि (वि) य | ३ | १८५ | पुव्वानुपुव्वि न कपो | ३ | १०२० | पुंडरीय किरियट्ठाणं | ३ | +३६ |
| पुव्वभव जम्मनामं | ३ | १५२ | पुव्वभाभिगाहधुट्ठी | ४ | २०+ | पूअणट्ठा जसोकामी | ५ | १९४* |
| पुव्वमवे संसरस उ | ७ | ३२१ | पुव्वावरसंजुतं वेरगं० | ३ | १३०० | पूईकम्मं दुविहं | ६ | २४३ |
| पुव्वमवे संपादिआ | ७ | ३६२ | मुविक्खंति चत्थागे | ७ | ९९९* | पूवणि अलगा अगणी० | ४ | ३७५ |
| पुव्वमदिट्ठमसुअमवेइअ | ३ | ९३९ | पुव्विहंति चत्थागे | ७ | १०१२* | पेडा य लद्धपेडा | ७ | १११६* |

नै. अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ ६८ ॥

पेरित्या पलिउं चिदि

पेरैर दिअणुसत्तणं

पेरैणा संजमो पुत्तो

पेअण वात्थरुत्तिणं

पेमाअणं एरिणमं

पेणानवमदप्पो

पेरिति अपुण्णया

पेरितिरणं अदवापि

पेरितिसिगमचित्तो

पेरिति वमानकालो

पेरितीण पडसीए

पेरितीए पडम्माए

पेरितीए पडम्माए

पेरितीए० पंदिचाण सवो

१०५६६

१०५५६

१०५०५

१०५०८

१०५०६

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

१०५०५

पेरिति पवस्यति

पेरिति पुणिमाए

पेरिति सुद्धट्ठी

पेरिति चत्तविदे

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

पेरिति

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

५२

पासओ निहए जे उ

पासओ परिणया जे उ

पासओ सवए जे उ

पासओ लुहए जे उ

पासओ लुसए जे उ

पासओ सीअए जे उ

पासओ कायं गहणं

पासओ पालियं केव

पासओ विनिगहणं भंते !

पासओ अणमादे

पासओ जे भेदिमु०

पासओ अणोअणारण

पासओ पविची

पासओ व परिरणं

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

१४१३६

१४१३६

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

१४१०८

सत्राधनु-
क्रमः

॥ ६८ ॥

पिडियंमि अट्टरे कलं
कुसद अमंते सिद्धे
फेडेल व सदकालं

यकारः

बहुसपडिसेवगणं

यद्वद य जेण कम्मं

यत्तीसदोसपरिसुद्धं

यत्तीसं किर कबला

यत्तीसंगुल दीदं

यत्तीसाह परेणं

यत्तीसा सामन्ने ते कहिं

यद्धमवद्धं तु सुजे

यलहुट्टे यलकोटो

यलदेववासुदेवा

१४०२ वलं थामं पेहाए
०७६ वला संताखतुदेहि
५२५ वलिपविसपसयकालं

बुवं च वालवं चैव

२४५ बहली ल ओणगा

३४ बहली मंहबह्ला

१२२५ बहवे इमे असाहू

३४२ बहिजा य पायसडे

७०९ बहिघोवरदपको

६४५ बहिया बहुमायाय

३७८ बहुअट्टियं पुगलं

१०३२ बहुआममविजाणी

३२५ बहुआणं सदयं सुबा

४०४ बहुगहणे अंबियत्तं

३६९५ बहुजणस्स नेयारं

६५८ बहुमब्बदेसभागे

५८६ बहुभाई पमुहरी

१९८ बहुयाणं सदयं सोबा

३३७ बहुयाणि व वासाणि

३३६ बहुयातीयसइवहुं

३२५ बहुराय जमालिपमंवा

१११५ बहुराय जमालिपमंवा

१४५ बहुराय पएस अव्वत्त०

१७३ बहुराय पएस अव्वत्त०

१३२ बहुबाहल अगदा

१६३ बहुसालासालवणे

३७४ बहुमुए पूजाए यं

२६१ बहुसुयं चित्तकं

५५३

०६३

५६७

२१५

६९५

६४७

७७९

१६५

७७८

१६४

३१६

४८९

३१०

१२४

३

३

७

३

७

६

३

७

३

७

७

५

३

७

७

| | | | | | | | |
|---------------------|-------|-------------------|---|-------|-----------------------|---|-------|
| यहुं तु सुणिगो मंदं | २४३३* | वायरा जे च पजसा | ७ | १४६६* | वारस सोलस अहार | ३ | ६५४ |
| यहुं परपरे अतिथ | १८६६* | वायरा जे च पजसा | ५ | १४८२* | वारसहिं जोयगेहिं | ७ | १४३०* |
| यहुं सुगेइ सनेहिं | ३५४* | वायरा जे च पजसा | ५ | १४९१* | वारसंगविउ बुद्धे | ७ | ८३८* |
| यंपइ अई भवाउ | १०१ | वायादीसिसजसंकडमि | ६ | ५४६ | वारसंगो निगस्सजो | ३ | १००१ |
| यंपयसहुनयानं | १०१५ | वायादीसिसजसंकडमि | ३ | ६३४ | वारसेव च वासाई | ७ | १६२३* |
| यंमगुण पजवीसे | २४ | वारसइ अरहमिसे | ७ | १४०५ | वारस सिट्ठमि | ४ | ४०० |
| यंमगुणसे मंदोवनंद | ४७५ | वारसइ वेयरणी | ३ | १४०२ | वालमरणणि बहुसो | ७ | १६३३* |
| यंममि (मी) उ चउळं | ३८१ | वारस अंगुल दीहा | ७ | २८ | वालस पस वालचं | ७ | २०५* |
| यंममि नायसयोगसु | ११४८* | वारस इकारसने धार | ७ | ८३* | वालाई वधरणं | ४ | ८८५ |
| यादंति भाणिऊणं | ५३५ | वारस चेन च वासा | ३ | ५३७ | वालाईणजुऊपा | ४ | १३५ |
| याणइई चउहत्तरि | ६५५ | वारस वासे अहिए | ३ | ५३४ | वाला किडा मंदा बला | ५ | १० |
| यायरा सुहुमं भावे | २४९ | वारसवासे अहिए | ६ | ५२७ | वालचं अभागं तु | ७ | १३०* |
| यायरा जे च पजसा | १४४४* | वारसविहम्मिनि तवे | ७ | १८८ | वालमिगामेसु दुहावेसु- | ७ | ४२२* |
| यायरा जे च पजसा | १४५८* | वारसविहं कसाए | ७ | ११३ | वाले बुद्धे मत्ते | ६ | ५७२ |

| | | | | | | | | |
|------------------------------------|---|-------|-----------------------|---|------|-----------------------|---|-------|
| वालेदि ^१ मूदेदि अयाणरदि | ७ | ३८९* | वाहुबलि कोवकरणं | ३ | ३४९ | वीओडवि आणसो | ५ | १८ |
| वालो अबालभावो | ३ | ७३+ | विद्वयःसमायाणदए | ३ | १०९ | वीओडवि आणसो | ७ | ५४ |
| वावत्तर् कलाओ अ | ७ | ४३६ | विद्वयदुयस्त विक्खो | ५ | १४२ | वुदस्त निसम्म भासियं | ७ | ३२६* |
| वावत्तरी कलाओ अ | ७ | ७६४* | विद्वययआ मित्रसास० | ५ | ९३ | वुदार्इ उव्वारो | ५ | १४३ |
| वावीसत्तहत्साई | ७ | १४५३* | विद्वयस्त पेसवगं | ४ | ४९९ | वुद्वे परिणिब्बुए चरे | ७ | ३२५* |
| वावीत्त साणएइ | ७ | १६०५* | विद्वयंमि होति सिरिया | ३ | ५६३ | वेइदियकायमइआओ | ७ | २९९* |
| वावीससागराऊ | ७ | १५३८* | विद्वयं सुत्तगाही | ४ | १६२ | वेइदियपरिमोओ | ४ | ३६७ |
| वावीसं तित्थयरा | ३ | १२६० | विद्वमुब्बेइमं जेण | ५ | २२६* | वेइदियपरिमोओ | ६ | ४८ |
| वावीसं वायस्सपए | ७ | ७९ | वियतियचउरो पंचिदिया | ४ | ३६६ | वेइदिया ढ जे जीवा | ७ | १५००* |
| वाहाए अंगुलीय | ४ | ४३८ | वियतियचउरो पंचिदिया | ६ | ४७ | वोडिय सियमूईओ | ३ | १४८४ |
| वाहिरलिचमि ठिओ | ३ | १२३४ | विद्व दीए [य] परिणय | ३ | १४७७ | वोडियसिवमूईओ | ७ | २+ |
| वाहिरगामे वुच्छा | ४ | १०४+ | वीए जोणिन्पूए | ५ | २३४ | वोहण अपाडियुदे | ४ | १० |
| वाहिरलंभे भज्जो | ३ | ६२ | वीओदग संवट्टण | ४ | २४५+ | भकारः | | |
| वाहि जइवि असुद्धा | ४ | १०१ | वीओडवि नमीयाय | ७ | २६९ | मइणीओ मे महाराय ! | ७ | ७२५* |

भगवं धर्मापणसो

भञ्जनी य दल्लो

भट्ठेण चरित्तो

भगइ अ आहिंविंत्ता

भगइ अ धारैअत्ता

भगइ य नाहं वेत्तो

भगगं भरणं

भगता अकरिंता य

भगियं दत्तविहनेयं

भत्ताट्ठेन आवत्तग

भत्ताट्ठेन उन्वरिं

भत्ताट्ठिआ व खवगा

भत्ताट्ठियावसेतो

भत्तपक्खमाणेण भत्ते !

३१८

५७४

११७१

७७०

७७१

४२६

२८६

१६९६

१६७६

२१२

३०४५

११७५

५८५

५४

भत्तमरिप्पा इमिणी

भत्तं वा पापं वा सुत्तुं

भत्तिविहवणुत्तुं

भत्तीइ० पत्ताए लीण०

भत्तीइ निणवणं

भत्तुवगियं ललु संख०

भत्ते पाणे सवणासणे

भत्ते वा पाणे वा आव०

भत्तणेन होअव्व

भत्तसुभदा सुप्पम

भत्तं च भट्ठमारं

भत्तं धिद्वेलापरिपवस

भत्तं सव्वजुज्जीयास

भत्तं सीटपट्ठाणसिंसस

३२५

११७७

५८२

११०९

११०८

२३२

२३८५

११०५

३२३

४१०

५३०

११६

३६

६६

३८३

७०६

१०४

६६६

९४३

५२६

३४

६३६

९४०

६४६

९४१

१४५

५२८

५२७

३

२

७

६

३

३

३

६

६

६

३

३

४

४

भरिलपुर सीहपुर

भयजणरुत्तसंघ०

भयवंगि धूलभट्टो

भरनियणसमाथा

भरनित्थर० तिवगा०

भरइम्मि अट्ठमासो

भरइम्मि अट्ठमासो

भरइत्तित्ठ पणियं

भरत्त सित्त पणिय

भरत्त सित्त मिट

भरत्त सित्त मिट कुकुड

भरइत्तत्तत्तत्तत्तत्त

भरइत्तत्तत्तत्तत्तत्त

भरइत्तत्तत्तत्तत्तत्त

| | | | | | | | |
|------------------------|-------|-----------------------|---|------|---------------------|---|-------|
| मुंज अजीर पुरिमहुं० | ३३९ | भेजयो भेजणं चैव | ५ | ३३६ | मयसु वंमगुत्तीसु | ७ | ११४४* |
| मुंज न भुंवे मुंजसु | १२२ | भेत्ताऽऽमोवत्तो | ५ | ३४४ | मन्वियकंदगडाईण | ४ | २७७+ |
| मुंज माणुसए भोए | ६४३* | भेत्ता य भेजणं वा | ७ | ३७५ | मगसिर सुद्धिआरसि | ३ | २५१ |
| मुंजइ मुत्ता अन्हे | २१५ | भोगळं वाहुवलं | ३ | १७८ | मगहा गोव्वरगामे | ३ | ६४३ |
| मुंजतो चिचक्रमं | ४४६ | भोगसमत्वं नाउं | ३ | १९५ | मगहा गोव्वरगामे | ३ | ४९३ |
| मुंजतो आयमणे | ५८७ | भोगमि चकिमाई | ३ | १९१+ | मगहापुरनयरओ | ७ | २८४ |
| मुंजतो आहारं गुणोव० | ५८४ | भोगमिसदेसविस० | ७ | २१२* | मगहा रायगिहाइसु | ३ | २३४ |
| मुंजिउ भोगाई पसग्ग० | ४९५* | भोरो मुष्ठा वमिचा य | ७ | ४८४* | मग० अहिगरो भावमगो | ७ | ५५१ |
| मूत्तायेणाहिगया | १०७७* | भोबा माणुसए भोए | ७ | ११३* | मगमईणं दुप्पवे | ७ | ५१५ |
| मूत्ताणमेत्तापाओ | २४३* | मकारः | | | मगसिरसुद्ध इआरसीइ | ३ | २५० |
| मूत्तापरिणचविग० | १०३३ | मइयं अरोणि दीहाउओ | ६ | ४१३ | मगी फोरविआ हरिया | २ | ३९* |
| मूत्ताइएसु तं पुण | ५६६ | मइल कुत्तेले अब्भंगिए | ४ | १०५+ | मगो अविष्णामो | ३ | ९०३. |
| मूत्तापंरा य तराण | २५८ | मइल कुत्तेले अब्भंगि० | ५ | ८२+ | मगो० केसी गोयमब्बवी | ७ | ८९३* |
| मूत्ताइअणग्गमे वंदेऽहं | ३९* | मइलिय फालिय | ६ | ३२१ | मणुणाऽब्बाहओ लोओ | ७ | ४६३* |

मयगुचवाए नं मते !

मच्छा च कच्छमा य

मच्छिदगन्ना अतो

मच्छुन्नचं मगसा

मज्जनिसेजमसरा

मज्जं विमय कसाया

मज्जारराइयमसा

मज्जारसुसाइय वारे

मज्जिण्ण पगसिक्खं

मज्जसस उ मुगिणो

मज्जिमिन्दे दो मोरिसी

मज्जिमसमंता उ

मज्जिमा मज्जिमा चैव

मज्जं मयस देहो

मज्जो पडुब सेजमणेण

७ १५४५५

६ ३०२

६ १२२०

३ ७०३

७ १८०

६ १९२

४ २२८

४ १४८

३ १११

६ १४५

७ १५८६५

३ २६५

५ १५५

मयगुचो वयगुचो

मयगुचो वयगुचो

मयपज्जवनां पुण

मयपज्जवनां पुण

मयपज्जोहिनाणी सुख०

मयपरिणामो अ कज्जो

मयपरिणामो अ कज्जो

मयपत्तहायज्जणी

मयसमाधायणाय नं.

मयसहिण्ण उ कापण

मयसा वावारीलो

मयसस मावं गहणं

मयज्जिअई दोगहसु

मणिकणगरयणविसे

मणिकणगरयणविसे

मणिरयणकुट्टिगतो

मणिरयणहेमयाविय

मणुए चउमणावरं

मणुपदि रल्लु आ सा

मणुया दुविहमेया उ

मणोमयं वक्कायं

मणो साहसिजो मीमो

मणोहरं चित्तपरं

मणं च गंधर्वादि च

मत्तेण लेण दाहिरे

मरववाए नं मते !

मयगहणं आयरिजो

७ ६७

७ ३६१५

७ ८२९५

३ ५८५

३ ७५

७ २२३

३ ८९५

७ ८०३५

७ ५११५

७ ७०

३ १५८३

३ १५७५

७ १५४२५

३ १५५

५४५

५४७

६०४५

५५०

५५५

१२९४

१५५५५

४३५

८८९५

१३५५५

७९२५

६५५

६३

१६१

| | | | | | | | |
|-----------------------|-------|---------------------|---|-------|--------------------|---|------|
| मयमाइच्छांगिव | ४४४ | महर्षे संखीए | ६ | २२८ | महिया यं मिश्रवासे | ३ | १४२४ |
| मयहरगागारेहि | १६७० | महत्वरुवा वयणभमूया | ७ | ४१६५ | महुगारसभा बुढा | ५ | ५५ |
| मयहरपणए बहु० | १४४४ | महृणभावस महाजसरस | ७ | ६९७५ | महुगुगलरसवाणं | ३ | १७०५ |
| मरणविमर्चोपरुवण० | २१० | महरिहसिज्जारुहणंमि | ३ | १०९६ | महुपुमाछाई तिन्नि | ३ | १७०३ |
| मरणविमर्सी पुण पंच० | १९ | महत्तेण देहि मा | ४ | २६०+ | महुपरिणाम सामं | ३ | १०४३ |
| मरणं च होइ इससे | २६३ | महाउदयवेगेणं | ७ | ८९६५ | महुपरिणाम सल्लिजं | २ | ६७५ |
| मरणंमि सपुण्णं | १४५५ | महागरा आयरिया महेसी | ५ | ४१४५ | महुरे हेवसिजुचं | ५ | १७३ |
| मरणंमि इक्षतिके फइमा० | २११ | महाजलो एस महापुममो | ७ | ३८१५ | महुपइ इंदवचो | ७ | ११८ |
| मरणे अगवभागो | २३१ | महाजंतसु उचरू बा | ७ | ६५३५ | महुपइ कालवेसिय | ७ | ११५ |
| मरिहिसि ययं ! जया तथा | ४८०५ | महावगिसंकासे | ७ | ६५०५ | महुपए बठणराया | ३ | १३७९ |
| मत्तेदेवि विजयसेणा | ३८५ | महामेहपसूयजो | ७ | ८८२५ | महुपए तिणदासो | ३ | ४७० |
| मलए पिसायरुवं | ५०८ | महासुका सदस्सारा | ७ | १५८३५ | महुपए संसो रउ | ७ | ३२३ |
| मह्निजिणाओ सुणि० | १६ ग. | महिजावासं सह अंतरि० | ४ | ३० | महुसिथ सुदिमके | १ | ६५५ |
| महिससवि वाससयं | २९५ | महिया उ गव्ममासे | ३ | २२०+ | महुसिथ सुदिमके | ३ | ९४२ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ ७३ ॥

मंगलि मंत्र सुभरा

मंगलदेवं पुनट्या

मंगलपुनट्या

मंगलि अदरागिआ

मंगलिमायण भोयक

मंगलि मोरियपुते

मंगलि मोरियपुते

मंग मूळ विविदि विज

मंगलोगं वां

मंग य असा यहुओम

मंगिरे यगिगुई

मंगलपुनट्या

मंगिरे यगिगुई

मंगिरे यगिगुई

मंगिरे यगिगुई

मंगिरे यगिगुई

मंगिरे यगिगुई

४७३

२९०

६००

२८३+

५२७

२९५

५९४

५०१

१६३६

१२६

४४२

५३९

१०४९

२३५+

मा एयं देहि शं

मा कंहंति अवणं

ना गलियस्सेव फसं

माय्वाइ विजयो

माणविजयं भंते !

माणं तु रयताणे

माण्माणपमाण०

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

माणस्तं भवे मूळं

६

६

७

३

७

४

२

७

७

७

३

७

३

७

३

७

२३७

२३९

१२५

३४८

८२

७०४

९६५

१९३

१०५

६१४

८३२

१५८

१४५२

१५५

माणस्सं विगाहं लहुं

मा ताव श्रुत पुचय !

मा ते फसेव कुं

मा विच्छिदंति तो

मा मे एवढ दवति

मा मे चळउमि तणू

मा य चंढालियं कासी

मायवि पुनरसंख

मायमि व निस्सेवो

मायं विपं चावि

मायए उस्समं

मायागारसहिओ

माया मिया षुसा भाया

माया पुचं जहा मंटे

माया पुचं जहा मंटे

माया पुचं जहा मंटे

माया पुचं जहा मंटे

७

६

६

४

३

३

७

६

७

३

३

५

७

३

३

३

३

१०२

२८६

५०८

२२३

१५७१

१५७३

१०

४८५

४८५

१२०८

१३३७

३०५

१६२

११५

मायादुदयमेवं दुः

माया (वि) मे महाराय !

माया य दहसोमा

माया य दहसोमा पिपा य

मायाविजयणं मंते ।

मायावी चहुयारी

मारण्या जीप्रबहो

मांलमि कुहे मोया

माळामिमुहं दहू

माळोहडं पि दुविहं

मा वेयणा उ तो उदरं

मासन्नंवरलो या मादं

मा ससिणेद्धोदज्जे

मासं पाजोवया

७

७

३

७

७

६

३

६

६

६

३

३

४

३

५७३३

७२३३

७७५

९६

८३

४८९

१९५

३६०

३५९

३५७

१५१९

५२४

२५८५

६५९

मासाई संतता पदमा०

मासियपारणाऽष्टा

मासे मासे अ तबो

मासे मासे व जो वलो

माहणकुलसंभूजो

माहणकुंडगामे

मा तु तुमं सोदरियाण संभरे

माहेसरीउ सेसा

मिअजाठनामगोयं

मिठमहवसम्पन्ने

मिठमहवसंपन्ने

मिप दुभिचा हयगओ

मिमचारियं चरिसत्तामि

मिगदेवीपुत्ताओ वळसिरि०

३

६

३

७

७

३

७

३

७

९

७

७

७

७

५५

२०९

१६६७

२७१३

१४८३

४५५७

४७३३

७७२

४०७

३६३

१०६०

५५०

६८४

४०८

मिगावई उमा चैव

मिच्छत्ताळियावाय०

मिच्छत्तायिरीकरणं

मिच्छत्तापटिकमणं

मिच्छत्तामोहगिज्जा

मिच्छत्तं वेयन्तो जं

मिच्छदिही जीया

मिच्छदिही वसयावण

मिच्छदिही सासायणे

मिच्छभयपोसणनिवे

मिच्छा० वेसि पुण दुसहा

मिच्छादंसणरत्ता

मिच्छादिही जीवो

मिच्छादिहीयाणं

३

३

६

३

३

५

७

५

३

३

७

७

५

३

४०९

९१३

४४७

१२६४

११०४

२११

३१४

३३९

५८

१४२१

१६३१

१६२९

१६२

७८८

नै. अ. ओ.

ओ.

द. पि. उ.

॥ ७४ ॥

अष्टाधनु-

क्रमः

॥ ७४ ॥

| | | | | | | | | |
|-----------------------------|---|-------|-----------------------|---|------|---------------------------|---|-------|
| मिच्छा भवे च सञ्जला | ५ | २८५ | मुक्तामंगं श्ववेसु | ७ | २७९ | मुसावाजो च लोममि | ५ | २२१* |
| मिचवं नाहं ह्येद | ७ | ११२* | मुक्तामिरेखिसि | ७ | ११८* | मुहणतरण गोच्छं | ४ | २८२ |
| मिचि मित्रमवत्ते | ३ | ६८६ | मुक्तो मगो अ गई | ७ | ५०५ | मुहयोवण दंतवणं | ४ | ४९८ |
| मिचि मित्रमवत्ते | ३ | १००२ | मुक्तेरेहिं मुमुडीहिं | ७ | ६६१* | मुहपत्ति पडिडेहिजा | ७ | १०१४* |
| मिचो ह्यो निर्दं * | २ | ९०* | मुनिचंद कुमार | ३ | ४५७ | मुहमूलमि अ चारी | ४ | ७७५ |
| मिहिलं सपुरलगनवं | ७ | २३१* | मुगिसुन्नर नमिमि | ३ | ४१८ | मुहचदुम्बला ए हवंति कंटया | ५ | ४४५* |
| मिहिलाए चेयए वच्छे | ७ | २३६* | मुगिसुन्नजो अ अरिहा | ३ | ३८१ | मुहचदं० तिचासं सामरा | ७ | १३३०* |
| मिहिलाए छिच्छरे | ३ | १३२* | मुगिसुन्नयतेवासी | ७ | ११२ | मुहचदं तु जहन्ना | ७ | १३२५* |
| मिहिलाए छिच्छरे | ७ | १७० | मुक्तामिरेख सुन्नर | ६ | ५६ | मुहचदं तु० तिष्णुहरी | ७ | १३२७* |
| मिहिलाए ससर गमिलो | ७ | २६६ | मुक्तामिरेखे चक्ख | ४ | १९८ | मुहचदं तु० देण्डुहरी | ७ | १३२८* |
| मिहिला सोरिअनयर | ३ | ३८४ | मुक्तामिरेखे | ३ | ७२६ | मुहचदं० इसवदहिपलि० | ७ | १३२६* |
| मीसजायं जावतिंयं | ६ | २७१ | मुक्तामिरेखे भते! | ७ | ६१ | मुहचदं० नवहिं वरिसेहिं | ७ | १३३७* |
| मुक्तामिरेखे सपागडं० | ३ | ११३८ | मुक्तामिरेखे चक्खि | ४ | २४८५ | मुहचदं० नागव्या पक्कं० | ७ | १३२९* |
| मुक्तामिरेखे सपागडं० (त्वं) | ७ | १०६१* | मुक्तामिरेखे चक्खि | ७ | २४८* | मुहचदं० मोदगुणे जयवं | ७ | १२५* |

| | | | | | | | | |
|----------------|---|------|----------------------|---|------|-----------------------|---|-------|
| मूअं हुंअरे वा | १ | ८९५ | मूअठ सन्यपमवो दुमस्त | ५ | ४१६५ | मोरीय नवलि विगली | ७ | १७४ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | २३ | मूअउगुणल्लस्त | ३ | २९५० | मोरी नवलि विगली | ३ | १३८५ |
| मूअं हुंअर वा | ४ | ५६९ | मूअं जंदे खंवे खवा | ७ | ३२ | मोरीयसन्निवेसे | ३ | ६४४ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | ७६२ | मूअयल्लजवेरे | ४ | ७०५ | मोसलि पुळुदिहा | ४ | १६३५ |
| मूअं हुंअर वा | ४ | ३०९५ | मूअयल्लजवेरे | ४ | २९१ | मोसलि संघिसु मागह | ३ | ५१० |
| मूअं हुंअर वा | ३ | १४७८ | मूसाइ म्हाकायं | ३ | २२२५ | मोसस्त पच्छा य | ७ | ११९९५ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | १२२३ | मेवगिरिगुसरिसो | ३ | १२९९ | मोसस्त पच्छा य पत्त्य | ७ | ११८६५ |
| मूअं हुंअर वा | ५ | २३५ | मेवगिरिसमारे | ३ | ३५१ | मोसस्त पच्छा | ७ | १२१२५ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | १७१० | मोक्खट्टा नाणाई लणू | ४ | ७४१ | मोहचिचिच्छविगिहं | ४ | ५८२ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | १११ | मोणं चरिसामि समिब | ७ | ४९४५ | मोहणियंणिय दुविहं | ७ | १२७४५ |
| मूअं हुंअर वा | ५ | ६१५ | मोणं अकम्मभूयानर० | ७ | २२१ | मोहणियंणिय दुविहं | ३ | १५५१ |
| मूअं हुंअर वा | ३ | ३८५० | मोणं गिल्लकअं | ३ | १३१४ | मोहणियंणिय दुविहं | ४ | १२३ |
| मूअं हुंअर वा | ४ | ३०५५ | मोचूपमोसिमिहं | ३ | ७८५ | मोहणियंणिय दुविहं | ३ | १२४४ |
| मूअं हुंअर वा | ५ | २२५५ | मोचूपमोसिमिहं | ३ | १९५० | मोहणियंणिय दुविहं | ३ | १२४४ |

ः अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ ७५ ॥

स्कारः

स्नाशओऽनि य

स्नाभि य अवाणा

स्नो निहृदं य

स्नो तगपरकणं

स्नो तदि फोसलिरस

तपि न पेय कपद

तपि चउरो भाद

तुक्ता व इमी अट्ट

स्नो या दुदो या

स्नर पट्टि सासं

स्नागि पञ्चवीसं

स्न पहे जोई

स्नुप्या व विन्तो

स्ववाण भाग परणा

स्वमादित्स्वगुहा

स्वहरण पट्टेत्ता

स्सओ भविहे जे उ

स्सओ कडुए जे उ

स्सओ फत्ताद जे उ

स्सओ तित्तओ जे उ

स्सओ परिणवा जे उ

स्सओ महुए जे उ

स्स ककर पिङ्गुला

स्समागण्डं वा

स्सवद पवित्तण पाला

स्सस्स जीहं गहणं

स्सहेउं पडिसिद्धो

३

७

५

४

७

४

७

३

४

७

५

६

७

२१३

४७९

७५३

४४४

३७८३

९२४

१००८३

१४५३

७५८

३४३

२५३

२९९

३५२

४

४

४

७

७

७

७

७

७

६

६

४

७

६

६

१७५४ रसो बंठुंभीसु

६९६ रत्ता प्पासं न हु सेवियञ्जा

७२६ रसेसु जो गेहिं (१३)

१४०५ रदभाससुमाई

१४०३ रदनेमिनामोअं

१४०४ रदनेमिस्स भगवओ

१४०२ रदनेमी अहं मरे!

१३९१ रदनेमीत्तिकेवो चउ०

१४०६ रदपण अत्तिमाहं

२८३ रदवीसुं नयरं

२३८ रदवीसुं नयरं

५४४ राइयिं वञ्जेत्ता

१२१७ राइयं विविदे

६४१ राइयं च अइवार

६५१

११५५

१२१८

३७३

४४५

४४२

८१९५

४४३

१९३४

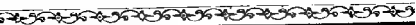
१४६५

१७८

६७१

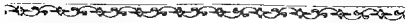
८११

१०३८



| | | | | | |
|------|---|------------------------|-------|------------------------|------|
| ४४१* | ५ | रायणिस्तु विणयं पठजे | ११३ | रायणिस्तु विणयं पठजे | ४४१* |
| ३६३ | ३ | राया आइयनसो | १०८०* | राया आइयनसो | ३६३ |
| १४२२ | ३ | राया इह तिरयरो | ११६२* | राया इह तिरयरो | १४२२ |
| ३६५ | ७ | राया उसुयरो या | २२२ | राया उसुयरो या | ३६५ |
| १९८ | ३ | राया करेइ दंढे | १४११ | राया करेइ दंढे | १९८ |
| ३७५* | ५ | रायाणिस्तु विणयं | ३५१ | रायाणिस्तु विणयं | ३७५* |
| २११* | ५ | रायाणो रायनबा य | ९१ | रायाणो रायनबा य | २११* |
| ३६४ | ७ | राया य तत्य वंमो | ४४४ | राया य तत्य वंमो | ३६४ |
| ३३६ | ७ | राया य वंमदसो | ४४५ | राया य वंमदसो | ३३६ |
| १२७ | ६ | रायारोहउवरोहे | ११० | रायारोहउवरोहे | १२७ |
| ५८४ | ३ | राया व रायमसो | १२८+ | राया व रायमसो | ५८४ |
| ६२५ | ४ | राया विज्जिंमि मए | १६८ | राया विज्जिंमि मए | ६२५ |
| ४९३* | ७ | राया सह देवीए | ४७४ | राया सह देवीए | ४९३* |
| ३३* | २ | रिसिहेण उ एसजं (पसेजं) | ४७७ | रिसिहेण उ एसजं (पसेजं) | ३३* |

| | | | | | |
|---|---|----------------------|-------|---------------------|------|
| ३ | ३ | रागो दोसो मोहो य वेण | ३ | ३ | ४४१* |
| ७ | ७ | रागो दोसो मोहो | ५८९ | रागो दोसो मोहो | ३६३ |
| ७ | ७ | रागो य दोसोउवि | ४९५* | रागो य दोसोउवि | १४२२ |
| ३ | ३ | रागुलेउवि जाया | ६५७ | रागुलेउवि जाया | ३६५ |
| ३ | ३ | रागिह मगहउदरि | ९१८ | रागिह मगहउदरि | १९८ |
| ३ | ३ | रागिहमिहिलहस्त्रिण० | १५० | रागिहमिहिलहस्त्रिण० | ३७५* |
| ७ | ७ | रागिहमि वयंसा | ८७४* | रागिहमि वयंसा | २११* |
| ३ | ७ | रागिह विस्संदी | ३७७ | रागिह विस्संदी | ३६४ |
| ७ | ७ | रागिहविस्समई | ११३७* | रागिहविस्समई | ३३६ |
| ७ | ७ | रागिहि मालगारो | ११६४* | रागिहि मालगारो | १२७ |
| ५ | ५ | रागिहे गुणसिलप | २४६ | रागिहे गुणसिलप | ५८४ |
| ३ | ३ | रागिहे गुणसिलए | २५५+ | रागिहे गुणसिलए | ६२५ |
| ३ | ३ | रागिहे यम्मरुई | १५०९ | रागिहे यम्मरुई | ४९३* |
| ६ | ६ | रागघरे य कयाई | ६५९ | रागघरे य कयाई | ३३* |



रुद्र ए द्रविडवर्षी

४

१५३

रोचयसंस्तवा य

२

३७३

लहरी ज्ञानपमणा

४

७३१

रुद्रं दंके विसमाहर०

३

११५०

रोद्रयनापवयणे

५

४६५३

लहं पदेणां ने

६

३४१

रुद्रं पतेयदुहा दंके

३

११५१

रोमस्तुमयसभा

५

४८४

अदिष्टिजं० कलं यादं

३

११११

रुद्रा बहुसंभूजा

५

३१२३

रोमहरणं विमिच्छा

३

१८४

अदिष्टिजं य वोहि

३

१११०

रुद्रययवैसभावा

२

७६३

रोद्रा य सत्त वैयण

३

४६४

लघूण य सम्पत्तं

३

१४७

रुद्रस चक्रं गहणे

७

११७८३

रोद्रिजां य नयं

३

१४१५

लघूणऽवि कारित्यत्तं

७

३०६३

रुद्रं धरो य वैलो वृक्षत्तं

५

१५४

रोद्रिदं कणं छहे

३

१५२०

लघूणवि वचमं सुदं

७

३०८३

रुद्राणुगसाणुग य

७

११८२३

लकारः

७

लघूणवि देवसं

५

२०६३

रुद्राणुरात्त नरात्त एवं

७

११८७३

लक्ष्मणमियाणि दुरं

५

११४

लघूणऽवि माणुसत्तं

७

३०५३

रुद्राणुबाण परिगहणे

७

११८३३

लक्षं बहु सयाणि अं

३

२६२

लक्ष्मंति न गिहद

५

४८१

रुद्रिणो वेवऽरुसी य

७

१३७७३

लक्षिजऽहति मज्ज

५

१२४

लगा य इति का नृणां

७

८७८५

रुद्रे वतिरो अ परिगहंमि

७

११८४३

लक्ष्मिद्विषमि वीए

३

१५१८

लक्ष्मणपवणसमयो

७

१२८

रुद्रे विरचो मणुजो

७

११८९३

लज्जाद गारोण य

७

२१८

लज्जा एदंफले

३

२५७

रुद्रेणु लो निदिमुवेद

७

११७९३

लज्जा इवा संवम नंम०

५

४११३

लज्जेसु य सबसया

३

४८२

| | | | | | | | |
|----------------------|------|---------------------|---|-------|-----------------------|----|-------|
| लाभालाभे सुदं दुस्वे | ६९०॥ | छिमे उ भायलिगे | ७ | २३+ | लोइया वेइया चेव | ५ | ३०+ |
| लामिय नेंगे पुढो | ३८० | छिमेण उ साहमी | ६ | १५१ | लोइंदियमुंवा | ३ | ३५४ |
| लामेण जोजवंतो | ५६५ | खयइ चमढणा | ४ | १८७+ | लोए०कालविभागं | १० | १५५५॥ |
| लामे सति संघावो | ६१३ | खइविचो सुसंखुटे | ५ | ३५९॥ | लोएगदेसे ते सन्वे | १० | १४४०॥ |
| लढा हु ते सुलढा | ४२७ | छेत्तारियाणि आणि व | ४ | ३९५ | लोएगदेसे ते सन्वे | ७ | १५४६॥ |
| लित्तंति भाणिऊणं | ६१५ | छेवालेयचि जं दुतं | ६ | ३८+ | लोएगदेसे लोए अ | ७ | १३८४॥ |
| लित्तंति मायणंमि व | २१२+ | छेसणहणं पवक्खासि | ७ | १२९३॥ | लोएवि० असुइंणा | ६ | २६५ |
| लित्तं छगमिअउरो | ३९७ | छेसाओ णामावो | ५ | १७+ | लोए वेए समए | ३ | १७०१ |
| लिप्पणहरपी इतियसि | १५३० | छेसा कसावेवण | ७ | ५२ | लोए संभारम्मि य | ७ | ८५ |
| लिणपुलावो अन्नं | ७+ | छेसाणं निक्खेवो | ७ | ५२७ | लोएत्त एगदेसंमि | ७ | १५३१॥ |
| लिणं जिणपणजंतं | ११४३ | छेसासु छसु काएसु | ७ | ११४२॥ | लोएत्त एगदेसंमि | ७ | १५८९॥ |
| लिणोदं तंस वत्सण० | १२६ | छेसाहि० चरमे समयंमि | ७ | १३५०॥ | लोएसुजोअतए | ३ | १०७२ |
| लिणोदंदिपि एवं | १५० | छेसाहिं सन्वाहिं | ७ | १३४९॥ | लोएसुजोयगरे | ३ | १॥ |
| लिणेण उ नामिगइ० | १५२ | छेहं लिनीविहाणं | ३ | १३+ | लोगे अच्छेज्जअंभेज्जो | ५ | ३१+ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. नि. उ.

॥ ७६ ॥

धवाधनुः

क्रमः

॥ ७६ ॥

| | | | | | | | | |
|----------------------------|---|-------|---------------------|---|------|------------------------|---|------|
| रह्य टंडिलवसदी | ४ | १५३ | रेवसरमंगा व | २ | ३७६ | लट्टी आवपमाणा | ४ | ७३१ |
| रह्य टंडं विसमाधय० | ३ | ११५० | रोमनायपवणे | ५ | ४६५६ | लट्टं परेणां मे | ५ | ३४१ |
| रह्य परेवबुहा टंडं | ३ | ११५१ | रोमसाममसमा | ५ | ४८४ | लट्टिद्विअं०अत्रं दाहं | ३ | ११११ |
| रह्या श्रुतमूला | ५ | ३१२६ | रोमहरं विमिच्छा | ३ | १८४ | लट्टिद्विअं च वोटि | ३ | १११० |
| रह्यववसमासा | २ | ७६६ | रोरा य सत्ता वेयण | ३ | ४६४ | लट्टण य सम्भवं | ३ | १४७ |
| रह्यत्त यस्तु राह्यं | ७ | ११०८६ | रोरिहां च नपरं | ३ | १४१५ | लट्टणडवि वारिवत्तणं | ७ | ३०६६ |
| रह्यं यओ य वेसो दस्समं | ५ | ११४ | रोरिह वणं छट्ठे | ३ | १५२० | लट्टणवि वत्तणं सुहं | ७ | ३०८६ |
| रह्यागुगागुगर य | ७ | ११८२६ | लकारं | | | लट्टणवि देवत्तं | ५ | २०६६ |
| रह्यागुत्तस्स नात्तस्स एवं | ७ | ११८७६ | लत्तममियाणि दां | ५ | ११४ | लट्टणडवि माणुसत्तणं | ७ | ३०५६ |
| रह्यागुदाण्ण परिग्गहेण | ७ | ११८३६ | लत्तं अट्ट सयाणि अ | ३ | २६२ | लत्तंवांवि न विग्गह | ६ | ४८१ |
| रह्यो वेवड्ढी य | ७ | १३७७६ | लत्तिसज्जहि नत्तह | ५ | १२४ | लत्ता य इति आ बुत्ता ? | ७ | ८७८५ |
| रह्ये अत्तिषे अ परिग्गंभि | ७ | ११८४६ | लत्तुद्धियांमि वीर | ३ | १५१८ | लत्तणपणसमत्तो | ७ | १२८ |
| रह्ये विस्सो म्णुओ | ७ | ११८९६ | लत्ताइ मारणेण य | ७ | २१८ | लत्ताय पांडवले | ३ | ९५७ |
| रह्येणो जो निदिमुत्ते | ७ | ११७९६ | लत्ता इया संजम वंअ० | ५ | ४११६ | लत्तेसु य लत्तमाणा | ३ | ४८२ |

लभालाभे सुहे दुक्खे

लभिय नत्तो पुढो

लभेज्ज जोजयतो

लभे सत्ति संघावो

लाहा हु ते सुलखा

लित्तंति माणिज्जं

लित्तंमि भायंमि व

लित्ते छगगिभय्यारो

लिप्पगह्दथी हत्थिचि

लिगपुलातो अत्तं

लिगं जिणपणत्तं

लिगाँ वत्त वत्तण्णं

लिगाँहिचि एयं

लिगेज्ज नत्तिमाहं

६९००००

३८०

५६५

६१३

४२७

६१५

२१२५

३९७

१५३०

७५

११४३

१२६

१५०

१५२

लिगे व भावलिगे

लिगेज्ज व साहम्मी

लयाइ चमढणा

लुहविचो सुसंखुहे

लेत्थारियाणि जाणि व

लेबलेवत्ति जं वुत्तं

लेसण्णयणं पवक्खामि

लेसाओ णामावो

लेसा कवाववेयण

लेसाणं निस्सेवो

लेसासु वसु कायसु

लेसाहिं चरमे समयंमि

लेसाहिं सव्वाहिं

लेहं लिबीविहाणं

लोइया वेइया वेय

लोइदियसुंघ

लोए०कालविमांगं

लोएगदेसे ते सव्वे

लोएगदेसे ते सव्वे

लोएगदेसे लोए भ

लोएवि० असुइयंवा

लोए वेय समए

लोए संयारम्मि व

लोगत्त एगदेसंमि

लोगत्त एगदेसंमि

लोगत्तुज्जोअरा

लोगत्तुज्जोयारे

लोगे अच्छेज्जडेज्जो

२३५

१५१

१८७

३५९

३९५

३८५

१२९२

१७५

५२

५३७

११४२

१३५०

१३४९

१३५

७

६

४

५

४

६

७

५

७

७

७

७

७

७

३

३०५

३५४

१५५५

१४४०

१५४६

१३८४

२६५

१७०१

८५

१५३९

१५८९

१०७२

१५

३१५

५

ने. अ. आ.

ओ.

द. मि. उ.

॥ ७७ ॥

लोमो वेप समए

लोमोवपारविणओ

लोमं दग अगि

लोमगवोदए एवं

लोमविणणं भंते !

लोमणुं देसंते

लोमविरोगादिभं

लोमविरुत्तमंगं

लोमयुगहअरिसु

लोळ् मदीए धूलिय

लोहस्सेस अणुगस्से

लोहि मीहू य धीहू य

वकारः

वदयाइ मंरामाई

वइसाहसुदणकारसीए

वणसु इंसियलो

वक्कं तु पुब्बमणिजं

वक्कं वणं च मिरा

वक्कणस्समीए

वस्सित्तपराहुते

ववित्तस पराहुते

वणस्स मए मीएणं

वणो वा सणो वा

ववह हिंदह न करेमि

ववंती छक्काया पमए

वक्कते जो उ क्को क्को

वक्कं व व दिहं

वच्छगोणी खुजा

वच्छो यण्ण नासइ

वज्जरिसहसंघण्णा

वज्जरिसहसंघयणो

वज्जंतं वज्जमीह

वज्जेसु अणयतणं

वज्जेमिस्सि परिणओ

वटं समचउरंसं होई

वटपुलावंसकयं

वट्टइ हावइ छाया

वट्टइ सुंडिआ तस्स

वट्टइ वायगंभो

वट्टते परिणामे

वट्टे तण्णसंगं

वणसंखेव कुमुमिओ

२०७+

१५७

७८८५

३५८

७६५

६१

६८७

३४३

१७४

१९७५

३०५

८२३

१८७

१०१+

४

३

७

३

४

४

४

५

६

५

१

३

६

३

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|------------------------|---|------|------------------------|---|------|
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ६ | ४३ | वणेत जहा विहिणा | ७ | ४५५ | वसाइजुयावि वली | ३ | १९५ |
| पणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | २९८३ | वणोण वाहुदेवा | ३ | ४०२ | वयगंडुहवणु० | ३ | ४१६ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ५ | २४९३ | वतवावक्खणो कालो | ७ | १०७० | वयणुवयाए णं भंते ! | ७ | ६८ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ५ | २५०३ | वत्तणा संघणा चैव | ३ | ६९९ | वयछक्खमिदियाणं च | ३ | ५४४ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | ३४७ | वत्तगंघमलंकारं | ५ | ७३ | वयछक्खं कावलक्खं | ५ | २७० |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ५ | १७१३ | वत्थुमि हत्थ मेज्जं | २ | ९४३ | वयणविभत्तिअकुसलो | ५ | २९२ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | ८८ | वत्थुमो संक्रमणं | २ | ९३३ | वयणविभत्तिकुसलस्स | ५ | २९१ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | १३९५ | वत्थुमो संक्रमणं होइ . | ३ | ७५८ | वयणविभत्तिकुसलो | ५ | २९३ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | १३९६ | वत्थे अण्णमि स | ४ | १६१५ | वयणविभत्ती पुण | ५ | २३ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | १३९८ | वत्थे कावडुमि अ | ४ | १५९५ | वयमिक्खसंजोगा | ३ | ४०५० |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | १३९७ | वत्थो गंयओ चैव | ७ | १३८८ | वयसमणधम्म संजम | ४ | २५ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | १३९९ | वत्थो परिणया ने | ७ | १३८९ | वयसमाहारणयाए णं भंते ! | ७ | ७१ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ५ | २८७ | वत्थवत्थवे | ४ | ५०० | वयं च वित्ति लब्धमो | ५ | ४३ |
| वणस्तद्वग्नो विविदो | ७ | २०२ | वत्थसंगंघसंवाण० | ३ | २०५५ | वरकणमवविअगोरा | ३ | ३७७ |

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

शरत्कण्ठविषयपङ्क

३७५५ वसन्ते य द्वादशे

१०४५ वसन्ति क्व निसिद्धिर्विय

८४५ वसन्ति० चेन गाम मोचय्यो

२१९ वसन्ति निषेधन साही

१३०५५ वसन्तिष्ठ वसन्तद्वहा

११०० वसन्ति समग्रणेषु

१६५ वसन्ति धनमिषे

५११ वसन्ति गुरुते निबं

१४६८५ वसन्ति वसन्तपराण होर

३६६ वसन्ति वसन्तपराण

४३३ वसन्ति वसन्तपराण

२०४ वसन्ति वसन्तपराण

१२३५ वसन्ति वसन्तपराण

२६६ वसन्ति वसन्तपराण

२६६ वसन्ति वसन्तपराण

२१०५ वसन्ति वसन्तपराण

५२ वसन्ति वसन्तपराण

२३४२ वसन्ति वसन्तपराण

२३४२ वसन्ति वसन्तपराण

२१४५ वसन्ति वसन्तपराण

१०६ वसन्ति वसन्तपराण

६४७ वसन्ति वसन्तपराण

३४०५ वसन्ति वसन्तपराण

४६४५ वसन्ति वसन्तपराण

१०४५ वसन्ति वसन्तपराण

७३३ वसन्ति वसन्तपराण

१३१६५ वसन्ति वसन्तपराण

४७८५ वसन्ति वसन्तपराण

१०७ वसन्ति वसन्तपराण

१०७ वसन्ति वसन्तपराण

२४

१११४

८१

८३६

१०५७५

३८

३९७५

२०९५

३३७५

१४०५

३२८५

१८४

४७८

२४३७

| | | | | | | | |
|-------------------|-------|----------------------|---|------|---------------------|---|-------|
| धापते वदन्तो सिं | ४४१ | चारण सङ्कुमारो | ३ | ५१९ | वासहं वारसेव उ | ७ | १५०५* |
| पाडेसु य रत्नासु | १११५* | वारिमब्देऽवगाहिजा | ३ | ५५१ | वासण कुमारचं | ३ | २८७ |
| वागारसिनयरीप | ४६६ | वारैयन्तु उवाण जइ ता | ५ | ७० | वाससु नरिय अगणी | ४ | १७७+ |
| वागारसीइ यहिया | ९५०* | वाडियये देणा | ३ | ५०७ | वाससु य तिणि विसा | ४ | ३११+ |
| वागारसी य कोडे | १४०४ | वाडियकवले चेव | ७ | ६३७* | वाससु य तिनि विसा | ३ | १४८७ |
| वागारसी य जवरी | १४०८ | वाविचि दारमहुणा | ५ | ५१+ | वाससुं उन्मिण्णा | ४ | ११४ |
| वासिगगोमाऽव्यावण | ४९५ | वासइ तो कि विगं | ५ | १०३ | वासी वंदणकणो जो | ३ | १६४५ |
| वायण पडिगुणाय | ६८९ | वासइ न तणत्त कर | ५ | १०० | वासुवेवो अ णं भणई | ७ | ८०७ |
| वायणा पुच्छणा चेव | ११३१* | वासगसो अ सिण्हं | ७ | ८३ | वासुदेवो० संसारसारं | ७ | ८१३* |
| वायणाए णं मते ! | ३३ | वासचणावरिया | ३ | १४२७ | वासोदयस्त व जहा | ३ | ५७७ |
| वायनिसागुदोए | १६०९ | वाससहसं वारस | ३ | २३८ | वासोवगहिओ पुण | ४ | ७२७ |
| वायं विविहं समिब | ५०८* | वासस य आगमणे | ४ | ८१+ | वाहिओ वा अरोगी वा | ५ | २६९* |
| वायाइ नमोफारो | ११३९ | वाससहसं वगं | ७ | ५२६ | विइयमेयं कुरंगणं | ४ | ४५३ |
| वायाइभाउणं | १५६५ | वासहए वणुबता | ६ | ८८ | विइयमेयं कुरंगणं | ६ | ८२ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|--------------------|---|------|------------------------|---|------|
| विदग्धमेयं गजकुलायं | ६ | ८४ | विज्वार होरगारी | ४ | ५०० | विणञ्जोव्यारयुब्धगुरु० | २ | ७२५ |
| विदग्धमेयं नयकुलायं | ७ | ४५५ | विज्वाचरणयुं | ४ | १०५४ | विणञ्जोव्यार माणस्त | ३ | १२२७ |
| विज्वा विमला मुद्रमा | ३ | ९३७ | विज्वा चरणं च तयो | ५ | ११७ | विणञ्जो सासणे मूलं | ३ | १२२८ |
| विज्वा हस्तिगणार्य | ४ | १०० | विज्वाण चक्यदी | ३ | ९३२ | विणयनयपयमुनिवर० | १ | १६५ |
| विज्वायमानं पसडं | ५ | १३१५ | विज्वातवपमावं | ६ | ४६२ | विणयसुरं च परिसह | ७ | १३ |
| विगण्डिदियदि जा सा | ३ | १२९२ | विज्वातपुरुषण | ६ | ४९४ | विणयस्त समाहीर | ५ | ३११ |
| विगहाकसायसभायं | ७ | ११४०५ | विज्वासिप्पमुवाजो | ५ | १२१ | विणवंपि जो उवायणं | ५ | ४१९५ |
| विगिह कन्नुजो हेडं | ७ | १०७५ | विज्वागति न दंसद | ६ | ५५० | विणियट्ठणयाए नं भंते! | ७ | ४६ |
| विगिहमे दूरनोहाडे | ७ | १३८५ | विज्वायमुनिगण्डमेव | ६ | ५४९ | विठहकरणे च दुरिभं | ४ | १६२+ |
| विग्युय सत्ये मूसग | ३ | १३७+ | विणएण पट्टविण | ४ | ५२२ | विठहं पि तहा मुत्ति | ५ | २८२५ |
| विग्युय सत्ये मूसग | ७ | १७३ | विणएणं पदिसिण | ५ | १४७५ | विठासेज्ज हसेज्ज व | ३ | १३२७ |
| विजडमि सार फार | ७ | १५६०५ | विणए सुर अ तवे | ५ | ४५४५ | विती न सुवण्यस्ता | ३ | ५८० |
| विजडिगु पुन्नसंडोमं | ७ | २०९५ | विणओणयदि | ३ | १३८ | विणे सचेदए निव | ७ | ४४५ |
| विज्वायमानं पसडं | ३ | १३३ | विज्वातवपमावं | ६ | ४६२ | विणयसुरं च परिसह | ७ | ११९५ |

४५७३
६०९३
३९३३
२७४
३६३
२५०
१३६४
१७९५
१४३
१३३६
७३७
१०१२
१६६
१४७

विविद्गुणतवोर
विसप्तसु अरजंतो
विसप्तसु मणुषेसु
विसद्याइय पिसियासी
विसद्याइसायण
विसतिगिसवायवंजुल०
विसमे सन्वभोधारे
विसम पलोदृण आणा
विसमंमि समारोइइ
विसमा जइ होल तथा
विसमेसु य पठेसुं
विसयसुइनिअत्ताणं
विसयसुहेसु पसत्तं
विसारिसदंसजजुचा

१५६१
३६८
६९८
६२८
१२६१
८६३
४३६
२६६
५३८
१७४
७८०
४५
११६७
३८७

विययपम्मी य बोद्धव्या
वियरिज्जइ सज्जइ मुज्जई य
वियणिआ दुक्खविबहुयं
विरई अंभवेरस्स
विरज्जमाणस्स य इंसियत्था
विरयाविरई संबुद्धमंसंबुद्धे
वियत्ती अविणीअस्स
वियत्ती यंभवेरस्स
विवायं वंउदीरेइ
विक्कि कम्मणो हेउं
विवितलयणां भइज
विविसयणासण्याए
विचित्तासिआसज्जंति०
विदिता ज भवे सिज्जा

२१८
३१५
६६५
५८५
५१८
३९९
२७५
२७४
१३५
१०९
३७९
१९५
४९३
६८५

४ ४ ७ ५ ७ ५ ५ ५ ३ ३ ३ ३ ६ २

विधिण्णा खुहुलिया
विधिण्णे दूरमोनादे
विदंसयदि जालोदि
विद्वत्ताविद्वत्ता
विमूसं परिषज्जिआ
विमूला इत्थिसंस्सी
विमूलावत्तिअं चेअं
विमूलावत्तिअं मिक्खु
विमलजिणा लम्पणो
विमलतणुपुद्धि जणणी
विमलमणंतइ धम्मो
विमलमणंतय धम्मं
विमलीकयइइ चक्खु
विम्वयकरो अपुज्जो

| | | | | | | | | |
|--------------------------|---|-------|----------------------|---|------|----------------------------|---|------|
| वेद्यय वेद्याये | ४ | ५८१ | वेदद्वयं सुरभि | ३ | ५४६ | समाये सम्भाणे | ४ | १५३ |
| वेद्यय वेद्याये इरिय० | ४ | ५८२ | वेदल पुष्टो न याणे | ४ | ४२६ | सका सहं आसाह | ५ | ४४४* |
| वेद्यय वेद्याये | ७ | १०२३* | वोगाह दंडियमादी | ३ | १४४१ | सफीसाणा पठमं | ३ | ४८ |
| वेद्ययिपिगिहु (य) दुविहं | ७ | १२७३* | वोच्छिन्ने स धडसो | ७ | २१५ | सको अ वरसमक्यं | ३ | ७७+ |
| पेयायं य मुहं दूहि | ७ | ९६१* | वोयाणेणं भंते ! | ७ | ४२ | सको अ देवराया समा० | ३ | ४९८ |
| वेद्याययगो या | ४ | ३२१+ | वोलिवा ते व अन्ने वा | ६ | १६४ | सको वंसदुवणे | ३ | १९० |
| वेद्याययं निययं करेह | ४ | ५३३ | वोलीने अणुलोमे | ४ | ४० | सक्यं हु वीसिह तवोविसिस्तो | ७ | ३९५* |
| वेद्याये अग्मुटियस | ४ | ५३८ | वोसिदुमायाणं | ४ | ५०८ | सदुदुमविअचाणं | ५ | २९५* |
| वेद्याययेणं भंते ! | ७ | ५७ | सकारः | | | सगरोऽवि सांगरं | ७ | ५८२* |
| वेद्याये निरत्तेणं | ७ | १००१* | सकाले वरे भिक्खू | ५ | १६५* | समहनिच्चुद पवं | ३ | १४४० |
| वेविय परिसाहण्या | ६ | ५८२ | सअणि यउपयं नागं | ७ | १९९ | सगाग्र परग्गामे सदेस० | ६ | ३३० |
| वेसमणययणं चोइआ | ३ | ६८+ | सओवसंवा अमगा | ५ | २७७* | सगाग्र० सा वा सो वा | ६ | ४२८ |
| वेसालि भूयणरो | ३ | ५१८ | सकमसेसेण पुयकणं | ७ | ४४२* | सगाभेऽवि य दुविहं | ६ | ३३३ |
| वेसालीर पडिभं | ३ | ४९४ | सकया पायया चेव | २ | ५३३* | सचरित पच्छयावो | ३ | १०६० |

ॐ अ. आ.

ओ.

व. पि. ज.

॥ ८० ॥

रिसं गु रीयं :

रिससितोदि सजिदि

विहगहं पलजगहं

विहमागसं भण्णहं

विहमा पजययइया

विदिगहियं विदिनुचं

(विदि० वध गुरुहं पा०)

विदिगुछायं पवेसो

विदिगुछायं सण्णी

विदिप्रबंधण धरणे

वीरमय देवइता

वीरतागपाय पं मंते !

वीरवरस भगवओ

वीरं अदिनेदि

७

७

५

५

४

३

३

४

४

४

७

७

३

३

७४२३३-वीरं सुष्ठाणमिदुह०

१०८३-वीरिय धम्म समाही

१२१-वीरिय भावे य तदा

११९-वीरिय विवन्वमिदि

२२२-वीरियसजोगवार

१७०७-वीरो अदिनेमी

१७०७-वीरो सिंगरो अम्भुओ

८२-वीसज्जण आसं

५०-वीसमंतो इमं विते

२९६-वीसमिज्जण निवंतो

९४-वीससर रुअंते

५९-वीससकरणमपाहं

४७१-वीस उओसण

२२१-वीसं गु सगणं

३

३

३

५

३

३

२

७

५

३

३

३

७

७

११

४१३

७६२

२०२

१६१०

२२६

६६३

३९८

१५३३

१२४

२३१+

१५४+

८२

१६०३३

वीसा दो वाससया

वुच्छिद सिगेहमण्णो

वुद्धिं च हाणिं च ससीव

वुट्ठी या हाणी वा

वुद्धोऽणुहं पणिज्जो

वेखा अशीआ न मवंति

वेगच्चिसंयाओ जहसु०

वेगवि वाउडे वासिए

वेएज निजरायेवी

वेकच्छिया उ पटो

वेजे मंते तह इंदणा०

वेणइयस्सा[र]पटमया

वेमाणिवा उ ले देवा

वेमायादि सिक्खादि

३

७

७

३

४

७

३

४

७

४

३

५

७

७

१३१+

३१७३

२७६

६९

६९+

४५२३

१६७+

७२३

८५३

३१८+

८४६

२०६

१५८१३

१९७३

सूत्राद्यनु-

क्रमः

॥ ८० ॥



१२२ ४४४४ ४८ ७७+ ४९८ १९० ३९५* २१५* ५८२* १४४० ३३० ४२८ ३३३ १०६०

५ ३ ३ ३ ३ ३ ५ ५ ७ ३ ६ ६ ६ ३

सकरो सम्माणं
सका सहेउं आसाह
सकीसाणा यदं
सको अ तससमकं
सको अ देवराया सभा०
सको वंसदवणे
सकं हु दीसेइ तवोविससो
सकुडुगविभत्ताणं
सगरोऽवि सांगरं
सगहनियुड एवं
सगाम परगामे सवेस०
सगाम० सा वा सो वा
सगामेऽवि य दुविहं
सचरित पच्छयावो

५४६ ४२५ १४४१ २९+ ४२ १६४ ४० ५०८ १६५* १९९ २७७* ४४२* ५३*

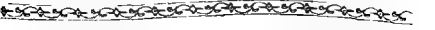
३ ४ ३ ७ ७ ६ ४ ४ ५ ७ ५ ७ ७ २

वेटुहं सुरभि
वेटल पुडो न यामे
वोगह दंडियमादी
वोच्छिणो उ वडसो
वोयाणेणं मंते !
वोल्लिवा ते ष ज्ञे वा
वोलीने जणुलोमे
वोसिहुमागवाणं
सकारः
सकाले चरे भिक्खु
ससणि वडपयं नयं
सखोवसंता अममा
सकम्मसेसेण पुराकरणं
सक्या पायया चेव

५८१ ६६२ १०२३* १२७३* ९६१* ३२१+ ५३३ ५३८ ५७ १००१* ५८२ ६८+ ५१८ ४९४

४ ६ ७ ७ ७ ४ ४ ४ ७ ७ ६ ३ ३ ३

वेयण वेयावचे
वेयण वेयावचे इरिय०
वेयण वेयावचे
वेयणियंयिहु (य) दुविहं
वेयणं च सुहं दूहि
वेयावचरो या
वेयावचं नियं करेह
वेयावचे जम्मुट्टियस्त
वेयावचेणं मंते !
वेयावचे निवसेणं
वेविय परिताडणया
वेसमणवयणसुंचेइआ
वेसालि भूयणंदो
वेसालीप पढिमं



| | | | | | | | | |
|-----------------------|---|-----|----------------------|---|------|------------------------|---|------|
| सख्यपयपुष्पा | ५ | १७ | सखिचो पञ्चवज्र | ४ | ३७० | सन्निहला दो वणिवा | ४ | ४९६ |
| सखसोअपगदा | ७ | ४१४ | सखं च जगज्जीवाए | २ | ३६६ | सट्ठाण परट्ठाणे दुविहं | ६ | २७७ |
| सखा खेव मोसा व | ७ | ९४२ | सखं खइ मअओ | २ | २८६ | सट्ठि पणपण वण्णे | ३ | २६३ |
| सखा खेव मोसा व सा | ७ | ९४० | सखं खइ मुअणो | ३ | ३०६ | सहुत्त केसर भावण० | ६ | ४८३ |
| सखिसुवपिकाए | ६ | ५४२ | सखेण खइ विणिं | २ | ३२६ | सहुत्त थेवदिनत्तेसु | ६ | २७० |
| सखिसुवदिलिणं | ६ | ३४९ | सखे रिसइ गंधारे | २ | २५६ | सहेसु चरिअकामो | ४ | ६६ |
| सखिससविययंमी | ६ | ५३६ | सखमसखं कअं | ६ | २६२ | सहो व अन्नदंभण | ४ | ४७३ |
| सखिसमीसएमु | ६ | ५४० | सख्याणं भंते । | ७ | ३२ | सणकुमारो मणुस्सिवो | ७ | ५८४ |
| सखित्तिसिटाहेले | ६ | ३३३ | सख्यामसाणववओस० | ३ | १६० | सण्णानाणेवगए | ७ | ५८१ |
| सखिचो अविसे | ६ | ६२७ | सख्यायमाचिंतवा | ३ | १४७० | सति खामे पुण हव्वे | ४ | ६१२ |
| सखिसे अविसे मीसंग | ६ | ५५८ | सख्यायमाचिंतवा रुणं* | ४ | ६४५ | सत्तहं पवडीणं | ३ | १०६ |
| सखिसे अविसे मीसाग | ६ | ५६३ | सख्यायसख्याणवत्स* | ५ | ३९५६ | सत्त षण्णणि से थोवे | २ | १०५ |
| सखिसे ० आहतिए पडिसेहो | ६ | ६०५ | सख्यायसंजमतवे | ५ | ३९८ | सत्तस विहुणहं मरवे | ७ | २१४ |
| सखिसे पञ्चवज्र | ६ | ५१ | सख्यायं पअअणं | ४ | ६६४ | सत्तसत्त सागराहं | ७ | १६०० |

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|-------|------------------------|---|-------|----------------------|---|-------|
| सत्तरससागराङ्क | ७ | १५३७॥ | सत्तेव सागराङ्क | ७ | १५३६॥ | सदाद्विसयसाहण० | १ | १२२ |
| सत्तवहवेहवयण० | ३ | ११९ | सत्त्वमहणं विसमस्तर्णं | ७ | १६३९॥ | सदागुसाणु० | ७ | ११९५॥ |
| सत्तविभागेण करं | ४ | ४२० | सत्यपरिष्णा लोको | ३ | ४४६ | सदाणुवाएण परिगहेण | ७ | ११९६॥ |
| सत्त सरा तयो नामा | २ | ५६॥ | सत्यं जहा परमस्वित्तं | ७ | ७१८॥ | सदाणुवाएण० | ७ | १२००॥ |
| सत्त सरा तानीओ | २ | ४४॥ | सत्याहसुओ इक्खत्तणेण | ५ | १२२ | सदा विविहा भवंति लोए | ७ | ५०७॥ |
| सत्तसहस्ताणहइ० | ३ | ३१० | सत्येण सुतिस्खेणवि | ३ | १००॥ | सदे अतिच० | ७ | ११९७॥ |
| सत्तसु परिमियसत्ता | ३ | २१८५ | सदेवांगव्वमणुत्त० | ७ | ४८॥ | सदे रुदे य गंवे य | ७ | ५१९॥ |
| सत्तस्त जप्पभागे | ६ | ५२५ | सदरसत्त्वगंगा | ५ | १६४ | सदे विरचो० | ७ | १२०२॥ |
| सत्ताहवले पुब्बसंगई | ४ | २३९५ | सदस्स सोयं गहणं | ७ | ११९१॥ | सदेसु अ रुवेसु अ | ५ | २९७ |
| समुत्तरि सयाई | ३ | ४२५० | सदहण आणणा खलु | ३ | ७६३ | सदेसु जो गेहिमुवेइ | ७ | ११९२॥ |
| समू अ इइ के बुवे | ७ | ८६८॥ | सदंयथार उज्जोओ | ७ | १०७३॥ | सदं णगरि किंवा | ७ | २४७॥ |
| समेगद्धानत्त उ | ३ | १६९६ | सदाइप्पु संगं | ३ | १५२३ | सदाभंगोऽणुगादियसि | ४ | ११९५ |
| सत्तेया विट्ठीओ | ३ | ७८६ | सदाइप्पु साहू | ६ | २२४ | सदाइगमण वियड० | ७ | १०९ |
| सत्तेव सहस्साई | ७ | १४६१॥ | सदाद्विसयमिद्धो | ३ | ११७ | सदाद्वो आगतो परम० | ४ | ६२७ |

| | | | | | | | |
|-----------------------|------|--------------------|---|------|-----------------------|---|------|
| समासिद्धि पद्या | १२३ | समासवि संवत् पण्य | ७ | १३८२ | समणा मु एगे वदमाणा | ७ | २१४ |
| सन्निधियण वढारो | १४८१ | समकटागयो अडवी | ७ | ३४३ | समणुण्णेषु पवेसो | ४ | ४३४ |
| सन्निधियण वढारो | ६६६ | समकटागयो अडवी | ६ | २६९ | समणो चउक्खिक्खेव० | ७ | ३८८ |
| सन्निधि च न कुक्खिजा | १७५ | समणुण्णेषु पवेसिचं | ५ | १११ | समणेष ऋद्वय्या | ५ | २१५ |
| सपत्तिमणो घमो | १२५८ | समणपवेसि निसीहिज | ४ | ७४ | समणेषं सावण य | ३ | ३ |
| स पुणसत्ये सुविनीयसं० | ४७ | समणस व निक्खेवो | ५ | १५५ | समणो माहसि विवणे | ६ | ४४३ |
| स पुणमेवं ण लमेज्ज | १२३३ | समणं माहणं यावि | ५ | १६९ | समणो अहं संजड वंभयारी | ५ | ३६७ |
| सपं व वरवरसी | ७५५ | समणं वडिज मेहवी | ३ | १११८ | समणो उ वणिव्व भगं० | ३ | १५०२ |
| सपं सदणे जणगी | ११०२ | समणं समणिं सावा० | ४ | ४३३ | समणोऽसि संजओ असि | ७ | १४० |
| सत्तोऽवि अ कुड्डेणं | ४६९ | समणं संजयं दंतं | ४ | ८६५ | समभवंसि ठियणा | ३ | १६०० |
| सत्तोऽवि कुड्डवस० | ४७० | समणं संजयं दंतं | ४ | ११०५ | समणुमेऽवि अडभरो | ३ | २४०५ |
| सत्तावनिज्जिगार० | ८१ | समणं संजयं दंतं | ७ | ७५ | समयाए समणो होइ | ७ | १७८५ |
| सत्तावपवस्सणेणं | ५५ | समणणं सव्याणं | ४ | १७३ | समयावलिअमुहुचा | २ | १०३ |
| समए वाससाणं | ३१ | समणा विद्वद्विरया | ३ | ३५३ | समयावलिअमुहुचा | ३ | २००५ |

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|-----------------------|---|------|------------------------|---|------|
| समयावलिय सुदुत्ता | ३ | ६६३ | समादीद चउळं दुव | ७ | ३८४ | सम्भत्तणसदिया | ३ | ८६९ |
| समया सम्मत्त पसल | ३ | १०४५ | समिइजो जज्जइजं | ७ | १६ | सम्भत्त० दंसणसंजय | ३ | ८९७ |
| समया सनयूणसु | ७ | ६२५३ | समिईहिं मब्बं सुभाहि० | ७ | ३७५३ | सम्भत्तदेसविरया पडिवळा | ३ | ८५१ |
| समयो वेयालीयं | ३ | ४१२ | समिस्स पंडित्ठ तम्हा | ७ | १६१३ | सम्भत्तदेसविरया | ३ | ८५० |
| समरेसु आगारेसु | ७ | २६३ | समुआणं चरे भिक्खु | ५ | १८४३ | सम्भत्त० पलियस्स असंख० | ३ | ८५३ |
| समवाइ असमवाई | ३ | ७३८ | समुदण वायआलद्विजो | ३ | ८८९ | सम्भत्तमयभाओ | ७ | ५१२ |
| समवाओ गोद्वीणं | ३ | २०४ | समुइगंभीरसमा दुरासया | ७ | ३५७३ | सम्भत्तसुयं सआसु | ३ | ८२२ |
| समहिंदा कप्पसुरा | ३ | ११९४ | समुइयालिआळ | ७ | ४३० | सम्भत्तस्स० सेसाण | ३ | ८४९ |
| समं अद्धत्तमं पेय | २ | ५२३ | समुदेण पालिअंभि | ७ | ४२९ | सम्भत्तं अबरित्तस्स | ३ | ११७४ |
| समं च संययं धीहिं | ७ | ५१२३ | समुयाणं णंलेसिजा | ७ | १३६८ | सम्भदंसणवरवर० | १ | १२३ |
| समाइ पेहाइ परिवयंतो | ५ | ९ | समुवट्ठियं तहिं संव | ७ | ९५३३ | सम्भदंसणविट्ठो नाणेण | ३ | ९१० |
| समागया वइ हत्थ | ७ | ८५०३ | समुसरण भत्त उवाह | ३ | ३६२ | सम्भदंसणत्ता | ७ | १६३० |
| समानण्णाय संसारे | ७ | ९६३ | समोआयो खलु दुविहो | ७ | ७२ | सम्भदिट्ठि अमोहो सोही | ३ | ८६१ |
| समावयंता वयणाभि० | ५ | ४४६३ | समोसरणे केवइया | ३ | ५४३ | सम्भदिट्ठो च सुअंमि | ५ | २८२ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. पि. उ.

॥ ८२ ॥

सूत्रावतु-
क्रमः

॥ ८२ ॥

| | | | | | | | | |
|-----------------------|---|------|--------------------|---|------|-----------------------|---|------|
| सत्रातिदि पत्न्य | ५ | १२३ | समयवि संवत् पण्य | ७ | १३८३ | समण्य गु एते वदमणा | ७ | २१४ |
| सत्रिद्वियाण बहोरो | ३ | १४८१ | समभ्रयावो अहवी | ७ | ३४३ | समणुण्येसु पवेसो | ४ | ४३४ |
| सत्रिद्वियाण यदोरो | ४ | ६६६ | समणकदाकमं | ६ | २६९ | समणे चळविकस्वेव० | ७ | ३८८ |
| सत्रिदि च न कुव्विजा | ७ | १७५ | समणपुंरुणमिसिंतं | ५ | १११ | समणेण कदेवव्या | ५ | २१५ |
| सपडिमणो घमो | ३ | १२२८ | समणपवेसि निसीदिअं | ४ | ७७ | समणेणं सावण य | २ | ३ |
| स पुजसत्ये सुविनीयसं० | ७ | ४७ | समणसस ड निक्खेवो | ५ | १५५ | समणे साहगि किवणे | ६ | ४४३ |
| स पुथनेवे य उमेच्च | ७ | १२३ | समणं माएणं वावि | ५ | १६९ | समणो अहं संजठ वंमयारी | ७ | ३६७ |
| सत्तं च तरवरीसी | ३ | ७५५ | समणं वंमिच्च मेहवी | ३ | १११८ | समणो ड वणिव्व मगं० | ३ | १५०२ |
| सत्तं सयणे लण्णी | ३ | ११०२ | समणं समणिं सावरा० | ४ | ४३३ | समणोऽसि संवमो जसि | ७ | १४० |
| समोऽवि य कुळलेणं | ७ | ४६९ | समणं संजयं दंतं | ४ | ८६५ | समसमंमि डिपणा | ३ | १६०० |
| समोऽवि कुळयस० | ७ | ४७० | समणं संजयं दंतं | ४ | ११०५ | समभूमेऽवि अडमरो | ३ | २४०५ |
| समभावनिव्विगार० | २ | ८१ | समणं संजयं दंतं | ७ | ७५ | समयाए सगणो होइ | ७ | १७८ |
| समभावपक्खसाणेणं | ७ | ५५ | समणणं सजणणं | ४ | १७३ | समयावलिजुहुत्ता | २ | १०३ |
| समए वासताणं | ४ | ३१ | समणा तिदंहरिया | ३ | ३६३ | समयावलिजुहुत्ता | ३ | २००५ |

| | | | | | | | | |
|--------------------|---|------|-----------------------|---|-------|--------------------------|---|-------|
| समयावलिय मुहुता | ३ | ६६३ | समाहीइ चउकं दवं | ७ | ३८४ | सम्भत्तचरणसहिया | ३ | ८५९ |
| समया सम्भत्त पमाला | ३ | १०४६ | समिइओ जन्नइवं | ७ | १६ | सम्भत्त० दंसणसंजय | ३ | ८९७ |
| समया सब्बभूखु | ७ | ६२५५ | समिइहिं मब्बं सुमादि० | ७ | ३७५५ | सम्भत्तदेसविरया पडिवज्जा | ३ | ८५१ |
| समयो वेयालीयं | ३ | +१२ | समिक्ख पंढिइ वट्ठा | ७ | १६१५ | सम्भत्तदेसविरया | ३ | ८५० |
| समरेसु अणारेसु | ७ | २६५ | ससुआणं चरे मिवसु | ५ | १८४५ | सम्भत्त० पलियस्स असंख० | ३ | ८६६ |
| समयाइ असमयाइ | ३ | ७३८ | ससुट्ठाण कयणाद्धिओ | ३ | ८८९ | सम्भत्तमम्ममानो | ७ | ५१२ |
| समवाओ गोहीणं | ३ | २०+ | ससुइगंभीरसमा दुरासया | ७ | ३५७५ | सम्भत्तसुयं सन्वासु | ३ | ८२२ |
| समहिंसा कम्मसुरा | ३ | ११९+ | ससुइपालिआऊ | ७ | ४३० | सम्भत्तस० सेसाण | ३ | ८४९ |
| समं अद्धसमं चैय | २ | ५२५ | ससुरेण पालिअमि | ७ | ४२९ | सम्भत्तं अचरितस्स | ३ | ११७४ |
| समं च संययं धीहिं | ७ | ५१२५ | ससुयाणं उंढमोसिखा | ७ | १३६८५ | सम्भत्तदंसणवरवर० | १ | १२५ |
| समाइ पेइइ परिउयंतो | ५ | ९ | ससुबडियं तहिं संतं | ७ | ९५३५ | सम्भत्तदंसणदिट्ठो नाणेण | ३ | ९१० |
| समागया बहु तत्थ | ७ | ८५०५ | ससुसरण भत्त उगह | ३ | ३६२ | सम्भत्तदंसणरत्ता | ७ | १६३०५ |
| समावण्णाण संसारं | ७ | ९६५ | समोयाओ खलु दुविहो | ७ | ७२ | सम्भत्तिट्ठि जमोहो सोही | ३ | ८६१ |
| समावयंता वक्कणमि० | ५ | ४४६५ | समोसरणे केवइया | ३ | ५४३ | सम्भत्तिट्ठी उ सुअमि | ५ | २८२ |

ताम्रिदी श्रीते

ताम्रिदी मया जन्ते

ताम्रिदी मया धिरीया

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

ताम्रिदी जन्ते

१३३

४६५

४४०

८०७

८२४

४९०

११३३

१६९५

५०४

१८५

१३३३

४४०

१३८०

७५

सयमेव च लुप्त लो०

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

सयमेव च लुप्त

७

५

६

३

३

७

७

३

७

५

३

३

७

५

४

१३७

४६५

४१८

८७६

५४४

७३०

१३३३

५२

९०४

८५

१२७२

२८०

३३२

३६२

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

सवत्सवपण्युवाया

६

३

४

३

७

३

७

३

७

३

४

५

५

३

३२

१७८

६५

८३०

५८

१६९५

१२८४

८६०

१५८८

६७३

४७

२३०

२२२

१६३

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|---------------------------|---|-------|-------------------------|---|------|
| सन्धवहुअगणिजीवा | १ | ४९॥ | सत्त्वं जगं जइ तुहं | ७ | ४७९॥ | सन्वे एए दारा मरणविभचीइ | ७ | २३३ |
| सठवहुअगणिजीवा | ३ | ३१ | सत्त्वं तजो जाणइ पासई | ७ | १२६४॥ | सन्वे अउत्सागं | ३ | ७०६ |
| सव्यभवेसु असाया | ७ | ६७४॥ | सत्त्वंति भाणिऊणं | ३ | २१॥ | सन्वे जइक्केमेणं | ७ | ३४+ |
| सव्यभिचारं देतुं | ५ | ६८ | सत्त्वंति भाणिऊणं | ३ | ८०० | सन्वे जीवावि इच्छंति | ५ | २१९॥ |
| सव्यभूयपभूअस्त | ५ | ४०॥ | सत्त्वं पाणइवारं | ३ | १२८४ | सन्वेते विइया मत्तं | ७ | ५७४॥ |
| सव्यमिणं चइऊणं | ७ | ४०२ | सत्त्वंपि न चेतत्तं | ४ | ८३ | सन्वे वहुं छागादिण | ४ | ११८+ |
| सव्यमेअं वइत्तामि | ५ | ३२१॥ | सत्त्वं विटवियं गीयं | ७ | ४२१॥ | सन्वे भवत्यजीवा मरंति | ७ | २२८ |
| सव्यमेअमणाइलं | ५ | २६॥ | सत्त्वं सुविणं सफळं नराणं | ७ | ४१५॥ | सन्वे य माइणा जबा | ३ | ३५७ |
| सवलोए अरिहंतवेइयाणं | ३ | २८ | सव्याअंसि सोया | ३ | ५७९० | सन्वे वा हिंदता वसई | ४ | १८५ |
| सव्वविईसु अ इत्तला | ३ | १०९५ | सव्यागेअवि गईओ | ३ | ११७३ | सन्वेअवि अ अइयाए | ३ | ११२ |
| सव्वसुरा जइ हवं | ३ | ५६९ | सव्या ओसाहजुची | ७ | ४४ | सन्वेअवि एगदूवेण | ३ | २२७ |
| सत्तं असणं सत्तं | ३ | १६७३ | सव्यावि अ सा दुविहा | ५ | २८० | सन्वेअवि एगवण्णा | ३ | ३९१ |
| सत्तं गंयं कलहं च | ७ | २११॥ | सव्यासु चट्टमाणा मुणजो | ३ | १४० | सन्वेअवि गया सुक्खं | ३ | ३९० |
| सत्तं च देसविरातिं | ३ | ५६४ | सन्वुक्खं परमं गा | ५ | ३२०॥ | सन्वेअवि दब्बजोगा | ३ | ०३४ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. पि. उ.

॥ ८४ ॥

ब्राह्मण

क्रमः

॥ ८४ ॥

| | | | | | | | | |
|--------------------------|---|------|----------------------------|---|------|-------------------------|---|------|
| सर्वेऽपि पदमार्गैः | ४ | ६६१ | सर्वोऽपि आहरो | ३ | १६८५ | संख्य ग्रन्थस्य विविक्त | ६ | ५२० |
| सर्वेऽपि संयुक्ता | ३ | २१२ | सर्वोऽपि द्विजो | ७ | ७११ | संख्यं चैव अद्या | ३ | १६६१ |
| सर्वेऽपि चैव कर्मानं | ७ | १२८१ | सर्वस्वपात्रो मुहर्त | ७ | ५४० | संख्ये संदासं ख्यते | ४ | २०७ |
| सर्वेऽपि जिज्ञासं | ३ | ३३३ | सर्वस्वपात्रिण | ३ | ५२० | संख्यिकरणे कथा | ६ | ५१३ |
| सर्वेऽपि न्यायं | ३ | १०६६ | सर्विनिर्दिष्टं य विनिर्दि | ४ | ४८८ | संख्ये संदासं युवा | ५ | ३१४ |
| सर्वेऽपि न्यायं | २ | १४१ | सर्व मरुत्वा निगमो | ३ | ३४४ | संख्ये संदासं युवा | ७ | २३० |
| सर्वेऽपि न्यायं | ३ | १७१ | सर्व पात्रा द्विज | ६ | २१५ | संख्ये संदासं युवा | ७ | १३० |
| सर्वेऽपि न्यायं | ५ | १५२ | सर्व अण्णोणध | ४ | ८०० | संख्ये संदासं युवा | ७ | १३२ |
| सर्वेऽपि संयुक्त | ३ | ८२१ | सर्व कालायमी | ३ | १३२४ | संख्ये संदासं युवा | ३ | २५ |
| सर्वेऽपि निगो | ३ | ३३१ | सर्व पञ्चमार्गो मते ! | ७ | ५३ | संख्ये संदासं युवा | ३ | ५२० |
| सर्वेऽपि भूयस् इत्युक्ती | ७ | ७७१ | संकाशेऽपि द्विजो | ३ | १३२ | संख्ये संदासं युवा | ६ | २१५ |
| सर्वोऽपि न्यायं | ४ | २२७ | संकाशे पञ्चमार्गो | ६ | ५२१ | संख्ये संदासं युवा | ७ | १५० |
| सर्वोऽपि न्यायं | ४ | ३३३ | संकाशे स निगो | ४ | ६०२ | संख्ये संदासं युवा | ७ | १५२ |
| सर्वोऽपि न्यायं | ६ | ४४४ | संकाशे कर्म सिद्धं | ६ | २५६ | संख्ये संदासं युवा | ७ | १५१ |

| | | | | | | | | |
|---------------------|---|------|---------------------|---|------|---------------------|---|------|
| संलिङ्ग गयोदन्वे | ३ | ४२ | संगार दीय बसही | ४ | १७७ | संघायवेअतदुमय० | ३ | १५५+ |
| संलिङ्गमसंलिङ्गो | ३ | ६७ | संगारो नाम रसो | २ | ६६* | संघायवेगसमयं | ३ | १६३+ |
| संलिङ्गं च काले | १ | ५३* | संगारो रावणि | ४ | २२+ | संघुविहं सोडं | ६ | २०८ |
| संलिङ्गं च काले | ३ | ३६ | संगो एत मनुस्ताजं | ७ | ६४* | संघकुंयुदेहिअल्लया० | ४ | ३२४ |
| संलिङ्गा चररो | ३ | ८१९ | संघट्टत्ता कारणं | ५ | ४३३* | संघारणा चउदिसि | ४ | १८६+ |
| संलिङ्गजोयणा खलु | ३ | ५२ | संघयणरुवसंठाण | ३ | ५७१ | संघारिमा य चुली | ६ | ३०० |
| संलेवाविडियसो | ३ | ७२ | संघयणं संठाणं | ३ | १६० | संजओ अहमस्सीति | ७ | ५५७* |
| संसो तिगिसागुरुचंद० | ५ | २५७ | संघाहणजहणे | ४ | २१९+ | संजओ चइवं रजं | ७ | ५६६* |
| संममेरायसिओ | ३ | ११८९ | संघाहणयमिओ | ४ | २२३+ | संजओ नाम नामेणं | ७ | ५६९* |
| संगहकाओ जेगावि | ३ | १५३९ | संघाहणसंजोयो | ४ | २१७ | संजमअयविराहण | ४ | १२३ |
| संगहिअभिडिअस्यं | २ | १३७* | संघाडेगो ठवणाकुळेसु | ४ | १३७+ | संजमओ छफया | ४ | ६७+ |
| संगहिअभिडियस्यं | ३ | ७६६ | संघायणपरिसाहणडमयं | ७ | १९२ | संजमपाडववार | ३ | १४२० |
| संगाणं च परिणोपाय० | ३ | १३७५ | संघायणपरिसाहो | ३ | १६८+ | संजम०जंकिचि | ३ | ६८२ |
| संगाम अस्थि भेओ | ७ | ३५५ | संघायणा य परिसाह० | ७ | १९४ | संजमजोए अन्मुदियस | ३ | ६८१ |

संजमजोगसु सया
संजमजोगदिसत्रा
संजमजोगणं कंठगाण
संजमजोगपुत्रयस्त
संजमजोग देहो
संजमजोग लेहो
संजमजोग मंते !
संजमजोग अपाणं
संजमजोगिदुपुत्रय
संजमजोग गौर्द
संजमजोग देगा
संजमजोगहिं आ सा
संजमजोगिदुपुत्रय
संजमजोग देहो

११८२ संजमजोग भण्डे
२१७ संजमजोगमते
२१७ संजमजोगो
५ संजमजोगिदुपुत्रय
४ संजमजोग दसणं
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग निकलेवो
४ संजमजोग व भण्डे
४ संजमजोग दोसु सरो
४ संजमजोग भवे वसे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे

४ संजमजोग भण्डे
४ संजमजोगमते
४ संजमजोगो
४ संजमजोगिदुपुत्रय
४ संजमजोग दसणं
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग निकलेवो
४ संजमजोग व भण्डे
४ संजमजोग दोसु सरो
४ संजमजोग भवे वसे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे

४ संजमजोग भण्डे
४ संजमजोगमते
४ संजमजोगो
४ संजमजोगिदुपुत्रय
४ संजमजोग दसणं
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग निकलेवो
४ संजमजोग व भण्डे
४ संजमजोग दोसु सरो
४ संजमजोग भवे वसे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे

४ संजमजोग भण्डे
४ संजमजोगमते
४ संजमजोगो
४ संजमजोगिदुपुत्रय
४ संजमजोग दसणं
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग विपुत्रयस्त
४ संजमजोग निकलेवो
४ संजमजोग व भण्डे
४ संजमजोग दोसु सरो
४ संजमजोग भवे वसे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे
४ संजमजोग भवे वट्टे

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|---------------------|---|-----|-------------------------|---|-----|
| संतई परपडाईआ | ४ | १४७४५ | संतिमे य दुवे ठाणा | ७ | १२९ | संयत्तरचोला | ६ | ९+ |
| संतई पय तेडणाई | ७ | १३८५ | संतिमे सुहुमा पाणा | ५ | २३२ | संयत्तरपटो अहुाई० | ४ | ७२४ |
| संतई० सपज्जवसियावि | ७ | १४९४ | संतिमे सुहुमा पाणा | ५ | २७० | संदिट्टा संलिहिं | ४ | ५८६ |
| संतई० साइया०अयज्जव० | ७ | १५५६ | संतिस्स कुमारत्तं | ३ | २९२ | संदिट्टो संदिट्टस्स चेन | ३ | ७०० |
| संतपय०जाव अम्पयहुं | २ | १५ | संती कुंयू अ अरो | ३ | २२३ | संदिस्संतं जो सुणइ | ६ | २३६ |
| संतपय परुवणय० | २ | ८ | संती कुंयू अ अरो | ३ | ४१७ | संवीणमसंदणो संधि० | ७ | २०७ |
| संतपयपरुवणय०चेव | २ | १० | संते आडयकम्मे | ५ | ७+ | संनइपिह जेमेइ | ७ | ५४५ |
| संतपयपरुवणय०नत्थि | २ | ९ | संथरे सव्वमुंसंति | ६ | ४०० | संनिहिं च न कुविज्जा | ५ | ३५८ |
| संतपयपरुवणय०नत्थि | २ | ११ | संथारगभूमिसिगं | ४ | २०३ | संनिही सिहिमत्ते य | ५ | १९ |
| संतपयपरुवणया | ३ | १३ | संथारगहाए | ४ | २०४ | संपज्जलिया योय | ७ | ८८१ |
| संतपयपरुवणया इव० | ३ | ८९५ | संथारपाय दंडग | ४ | ३६५ | संपत्ते निक्खकालंमि | ५ | ६० |
| संतपयं पडिबन्ने | ३ | ८९६ | संथारपाय दंडग सोमिय | ६ | ४६ | संपयममुत्तारं | ५ | ४०+ |
| संता तिथयगुणा | ३ | ११४४ | संथारसिज्जान्मभत्त० | ५ | ४४३ | संपाइमवसपणा | ४ | ७१३ |
| संति एगेहि भिस्सव्हि | ७ | १४७ | संथारं फलंगं पीढं | ७ | ५३३ | संतातिमरथरेणूपमज्जण० | ४ | ७१३ |

| | | | | | | |
|-------------------|------|-------------------|---|-------|---------------|-------|
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ६३ | संयुक्तमपुन्यकोटी | २ | १११३ | संवत्सरावार य | १४९२३ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ४६ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | १५७०५ | संवत्सरावार य | २८८ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ६१ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | १७५ | संवत्सरावार य | १५१ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ६२ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | २३८ | संवत्सरावार य | १५५ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ७६८३ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ९४५५ | संवत्सरावार य | १९६ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ४४१ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ९४३३ | संवत्सरावार य | १५६२ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | २०९ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ९४१३ | संवत्सरावार य | ११७ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ४०५ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | १५५ | संवत्सरावार य | २४८५ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | १२७ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | १५५५ | संवत्सरावार य | ९६५ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ४७ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ५१०५ | संवत्सरावार य | २०९ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ८११ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ३४५ | संवत्सरावार य | १०५ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | १२७५ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ८१५ | संवत्सरावार य | ११५ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ८८५ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | ३१९ | संवत्सरावार य | १०४ |
| संयुक्तमपुन्यकोटी | ५३२५ | संयुक्तमपुन्यकोटी | ७ | २१६ | संवत्सरावार य | ४२० |

संवेगेन भते । जीवे किं

संवेगो भिन्वेओ

संसज्जधुवमेअं

संसज्जिम्मि देसे

संसज्जिनेहि वल्लं

संसद्वेण य हत्थेण

संसद्वेयहत्थो

संसत्तागइणी पुण

संसत्तमत्तणो भत्ता

संसत्तमत्तणो

संसत्तमत्तत्ता

संसत्तं तत्तो विअ

संसत्तेण य द्धवेण

संसत्तं खलु सो कुणइ

७

५

४

६

६

६

६

४

४

४

४

४

४

६

७

संसारिअ थावरो

संसारत्थाअंत्ता य थावरा

संसारत्था य सिद्धा य

संसारत्था य सिद्धा य

संसारपडिक्कमणं

संसारपारागमणे

संसारयावन्न परत्स जट्ठा

संसारसागराओ

संसारअडवीए भिच्छत्ता

संसारओ आलोयणा व

संसोषण संसमणं

संदिआ य पदं पेव

सा इह पुब्बाणुपुब्बी

३

७

७

७

३

७

७

३

३

५

६

२

७

सा व अविसेसियं

सावं पल्लवं आयरेण

साएए पुंढरीए

सागुरंत्तं जडित्ता णं

सागरा अडक्खीसं तु

सागरा अडवीसं तु

सागरा अडवीसं तु

सागरा इक्खीसं तु

सागरा इक्खीसं तु

सागराणि य सत्तेव

सागरा सत्तवीसं तु

सागरा साहिआ दुप्पि

सागरा साहिआ सत्त

सागरोवसमेगं तु

४४३

१४४१*

१४२१*

१६२०*

१२६५

४५६

११८*

९७

९०९

४३+

४५९

१३५*

३५+

२२१

१२८

१३८५

५८७*

१६१२*

१६०२*

१६११*

१६१४*

१६०४*

१५९६*

१६१०*

१५९५*

१५९७*

१५३३*

६

६

३

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

७

| | | | | | | | |
|------------------------|---|------|---------------------|---|------|-----------------------|------|
| सागारमण्यगारा | ३ | ६५ | सा नवदा दुह | ५ | २४३ | सामाद्यंमि उ कए | २०३ |
| सागारं संवरणं | ४ | ६८ | सा यवद्वया संती | ७ | ८१४ | सामाद्यंमंते ! | २२ |
| सागारिअ पुच्छ गमणं | ४ | १६७ | सा पुण जायमजाया | ४ | ६९६ | सामाद्य अणुक्रमओ | १२ |
| सागारिं मंत छंदण | ६ | ३१० | सा पुग सरणा जणणा | ३ | १६८२ | सामाद्ययय पढयं | १०९२ |
| सागारियाइइहणं | ३ | १४४५ | सापद्धारासहुवा | ५ | ५५५ | सामाद्ययज्जुसि पुच्छं | ८७ |
| सागारि यणिम सुणए | ४ | ४३७ | सामाविय तिज्जि विणा | ३ | १४३० | सामाद्ययाइयं | ९३ |
| सागेए पंदवोविसयस्स | ७ | ३३१ | सामिमाहा य निरमि० | ३ | १६५४ | सामाद्यं च सिविहं | ७९६ |
| सागेयन्मि भदावल | ३ | १३१४ | साण्णपुव्वगस्स उ | ५ | १५४ | सामाद्यं च पढयं | ११४९ |
| सा पंदवायवीषीण्णुहिंया | ३ | ८३६ | सामयणरायसुर | ६ | १२१ | सामाद्यंमि उ कए | ८०१ |
| साणं सूअं गावि | ५ | ७१३ | सामभण्णुचंतस्स | ५ | ३०३ | सामाद्यं समइयं | ८६४ |
| साया गोणा इयरे | ४ | ४२३ | सामं समं च संम्यं | ३ | १०४२ | सामादवाइया ना | २७१ |
| साणीपवारमिदिअं | ५ | ७४३ | सामाद्वयाइयं | ३ | ३७५ | सामाजियदेनिहं | ५०५ |
| सादी सपल्लवसिओ | ३ | ७३२ | सामादयं करेमी | ३ | १०५७ | सामायारिमीए | १४३ |
| साथारणं बहूणं | ६ | ५९४ | सामादअं नाम सावव० | ३ | ४६ | सामायारि पवस्सामि | १९२ |

सामागरी ओदे

सामिसं कुळं दिस्ता

सामी चारमडा वा

साय सयं गोसडबं

सायं संमत पुनं हासं

सारक्खिया गिलाणा

सारवणं सादइय

सारस्सयमाइबा

सारस्सयमाइबा

सारीर नाणसा चैव

सारीरमाज्जे दुक्खे

सारीरपि य दुविहं

सालंयणो पंडतो

सालीओअणहं

१२४- सालीचयगुल्लोत्त

४८६- सालीमाई अबडे फलाइ

३७१- सालुअं वा विपालिअं

१६२७- सावरा जइ वीसडमिगाह

१४४- सावगलजमहुआरि०

१३०- सावगभज्जा सचवइय

७४- सायज्ज०उवठतो जयमाणो

८६- सावज्जंगंधमुक्खा

२१४- सायज्जोणपरिवज्जण्डा

१११- सावज्जोणविरेइ

१४४- सावज्जोणविरेइ

११८- सावज्जमणयतणं

१९८- सावज्ज०सामाइआईए -

१८०- सावथीइ कुमारो भदो

१६१- सावथी तसभपुरं

१७७- सावथी जियसत्तू

१६६- सावथी सिरिभदा

८- सावय०गुमिअगहणा

१३४- सावय तेणा दुविहा

१४९- सावयथम्मस्स विहिं

४२८- सा सगडित्तिरी

२४२- सासणि विणयमोहाण

७९९- सां सया० जाणिआ

६- साहट्ट निक्खिसवित्ताणं

१२३- साहम्मडमिगहेणं नो पव०

७६४- साहम्मिअपुरिसासइ

१०६- सा हवइ सव्ययचा

७

३

७

३

४

४

३

५

७

१

५

६

४

३

११६

७८१

१११

४७९

१९४

१९२

१६६३

८९

४९२४

४५४

८९४

१४९

१७

१८८४

| | | | | | |
|--------------------------|------|-------------------------|------|------------------------|------|
| सादयो यो चिज्जं | १५४५ | साहु गोयस ! पन्ना ते | ८५९५ | साहूण नमोकारो एवं | १०१२ |
| साहंति अ विजयन्ता से | १३५५ | साहु० छिओ० अन्नोऽपि | ८८५५ | साहूण नमोकारो जीवं | १०१४ |
| साहारण भोत्तरणे | ५५४ | साहु० छिओ ने संसओ | ८६५५ | साहूण नमोकारो धन्नाण | १०१५ |
| साहारणपज्जत्तं | १२३ | साहु० वं ने षड्दु गोयसा | ८७१५ | साहू ख्हे गहा | ३४० |
| साहारणत्तरीरा उ | १४६९ | साहु० पन्ना० तं मे | ९०५५ | सिआ अ गोपरगालो | १४१५ |
| साहारणसयं पडुवओणे | ५७८ | साहु० पन्ना ते छिओ ने | ९१६५ | सिआ एगएओ लडुं | १९०५ |
| साहीनसम्भलो | ०३३ | साहु० संसओ इमो | ८९५५ | सिआ य मिस्सु इच्छिआ | १४६५ |
| सादी पुणेइहे वा | ६२३ | साहु० संसओ० भयं | ९१०५ | सिआ य समणट्ठाए | ९९५ |
| सादीयं सागरं इहं | १५९९ | साहु० संसओ मज्जं तं | ९००५ | सिआ० विविहं पणभोज्ञं | १९२५ |
| साहु० अन्नोऽपि० वं | ८८०५ | साहुत्स इरिसणे आण | ६०५५ | सिआ हु सीसेण निरिपि | ४०७५ |
| साहु० अन्नोऽपि संसओ | ८७०५ | साहुं निमिच्छिज्जं | १७५ | सिआ हु से पावय तो इहिआ | ४०५५ |
| साहुगएएणे | ७४ | साहुं संवासेइ व | २८९ | सिइजवणण पडिआण | ४७३ |
| साहुगणेषमव्वणं | २९७ | साहु अकम्पयन्ताड | ५५४ | सिउंमर जंधाए | १०८३ |
| साहु गोयस !० वं ने षड्दु | ८९०५ | साहूण नमुकारो सत्त्व० | १०१७ | सिओ असिओ साहारणो | ६५१ |

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|------|--------------------------|---|-------|---------------------------|---|------|
| सिवरामजसिखरागणं | ५ | ५७ | सिद्धायणं च जहा | ३ | १०२४ | सिद्धिगद्गुवगाणं | ५ | १ |
| सिक्ता दुविदा गाहा | ३ | १९३ | सिद्धस्तं सुहो रसी | ३ | ९८२ | सिद्धिवसादिगुवगा | ३ | १११ |
| सिक्ताबाय अ डिने अ | ७ | ४५४ | सिद्धं वीवत्स अस्थितं | ५ | २५४ | सिद्धी य देवलो गो सुहुलु० | ५ | २०६ |
| सिक्किलऊण मिक्करोसण० | ५ | ३०९३ | सिद्धाद् गुणजोमेसु | ७ | ११५४३ | सिद्धे दमंसिऊणं संसारया | ३ | १२८३ |
| सिग्गयदं आगमणं | ४ | १४४४ | सिद्धाण्डणं वभागे | ७ | १२९०३ | सिद्धे भो पयलो जमो | ३ | १३३ |
| सिज्जंसयं भक्ते | ३ | ३२७ | सिद्धाण नमुक्कारो एवं | ३ | ०९१ | सिक्किय पोळासाढे | ७ | १६९ |
| सिज्जा इढा पावरणं च अस्थि | ७ | ५२८३ | सिद्धाण नमुक्कारो घमाण | ३ | ००० | सिक्कियुत्तेण्डवि | ३ | १३९४ |
| सिज्जापरिपिं च | ५ | २१३ | सिद्धाण नमो क्किया | ७ | ६९९३ | सिक्किलोडे कलहो | ४ | ७६४ |
| सिक्कांतसुवयारं | ६ | ६६१ | सिद्धाण नमोक्कारो जीवं | ३ | ९८९ | सिक्कारसुवदया | ५ | २१४ |
| सिद्धति सगू पडिणीयनि० | ४ | ७८ | सिद्धाण० बिइवं होइ मंगलं | ३ | ००२ | सिक्की सिद्धी विसाणी | ३ | ८३३ |
| सिण्णो अडुया कळं | ५ | २७२४ | सिद्धाणनसिद्धाण | ७ | ५५८ | सिक्काडगविगवडक | ३ | २१८ |
| सिण्णं गुणसुहुणं | ५ | ३४९३ | सिद्धाणं० | ३ | ३० | सिक्काडव० | ३ | ८३४ |
| सिद्धविग बुद्धाणि अ | ३ | ९८७ | सिद्धाणं मुद्धाणं | ३ | १४३ | सिद्धागिरी भद्रगुते | ७ | ९७ |
| सिद्धत्थपुरे तेजेसि | ३ | ५११ | सिद्धाणं संयवं क्किया | ७ | १०३३३ | सीअलसिणाड भयं | ३ | १०५० |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|-------|-----------------------|---|------|-----------------------|---|-------|
| सुहं च लटुं सद्धं व | ७ | १०४५ | सुकोल वहामणे | ४ | २४ | सुजसा सुज्या अरा | ३ | ३८६ |
| सुकडंती सुपकंति | ७ | ३६५ | सुकोलपडिगहगे | ४ | ५७६ | सुहुवरं नासंती | ३ | ११२२ |
| सुकडिति सुपकिनि | ५ | ३१८५ | सुकोलसरिसपाए | ६ | ३९७ | सुहुत्तरमायासा ता | ३ | ४२५ |
| सुकयं आंणत्तिवि | ३ | १६२१ | सुगीवे दवरदे | ३ | ३८८ | सुहु वाइयं सुहु गाइयं | ३ | १३८७ |
| सुकुमांलकोमलतले | १ | ४२५ | सुगीवे नयरमि अ | ७ | ४०९ | सुहुवि सम्मदिही | ३ | ११७३ |
| सुकवशाणसुभाविय० | ३ | १८७ | सुगीवे नयर रम्मे | ५ | ६०१५ | सुभियाआवं साणस्स | ७ | ६५ |
| सुखं ज्ञाणं विपाइजा | ७ | १३७१५ | सुचिरं पि अचउमाणो | ३ | ११२५ | सुणेह मे पयामणा | ७ | १३५३५ |
| सुखं धरा य समणा | ३ | ३५७ | सुचिरं पि अचउमाणो | ४ | ७७२ | सुणेहि मे महारायं | ७ | ७१५५ |
| सुकाए लेसाए दो ततियं | ३ | १८९ | सुचिरं पि० नलयभो | ३ | ११२९ | सुणवरासइ दादि | ४ | ६१+ |
| सुकीमं वा सुविकीम | ५ | ३२२५ | सुचिरं पि वंऊइ | ७ | ४९४ | सुत्तयतदुभयविज | ३ | १३३३ |
| सुकैणउवि जं छिकं | ६ | ३७+ | सुचिरं पि वंऊइ | ३ | १४१० | सुत्तयउकरण नासो | ४ | २२२ |
| सुकैण सरत्तुणं | ६ | ५३३ | सुचिरं पि० वेरुलिओ | ४ | ७७३ | सुत्तयथीरिकरणं | ४ | ६१० |
| सुके सुकं पडियं | ६ | ३९८ | सुषाण मेहावि सुमासियं | ७ | ७४९५ | सुत्तयवालवुहु य | ३ | ११०९ |
| सुके सुकं पढो | ६ | ५६७ | सुषाण मेहावी सुमासि० | ५ | ४१५५ | सुत्तयं अकारिता | ४ | १४५ |

नं. अ. आ.

ओ.

द. सि. उ.

॥ ९० ॥

मुत्तयो रलु पढमो
मुत्तयो रलु पढमो
मुत्तस् अम्ममो
मुत्तं विती वढ वलियं
मुत्तं आती पढिबुद्धं
मुत्तपप्पा सिद्धी
मुत्तुबवी न नितीए
मुत्तसणा व पक्कणं
मुत्तियमणाइणिहं
मुत्तपर देवले वा
मुत्तं व असद कालो
मुत्तडे पुत्तुं डि
मुत्तगिहियोगी पुण
मुत्तं मुत्तमहीयं

३

३

६

३

७

५

३

७

३

४

३

७

६

७

५

३

९००

२४

५२५

४३०

१२००

२४५

३३९०

२१८०

१४५

५०४

३३५

३४९

३०९

९८

सुमहस्स कुमारत्तं

सुमहं रत्त निषमत्तेण

सुमंगला जसवर्द्ध

सुमिणमवहरमिगाह

सुमुलियनिशमिचं

सुय अमिलम नाय विही

सुययत्तं निक्खेवं

सुयअम्मवित्तमगो

सुयनामे अणुओगे

सुयपडिक्कणा संपद

सुयसम्मसत्तवं खलु

सुयस्स आणहण्यएणं

सुयं मे० इह खलु छजीव०

सुयं मे० इह खलु वानीसं०

३

३

३

३

३

६

७

३

५

३

३

७

५

५

२८१

२२८

३९८

४५८

४००

३१७

१२

१३०

३

८५२

८५५

३८

१

३

मुया मे णए णणा

सुराणसुहं समत्तं

सुराणसुहोचि हेरु

सुराणपुर सिद्धजसो

सुराही दोषंगट्टा छोवूण

सुरं वा मेरं वावि

सुराणे वीसुयवातो

सुराणरूपस्स यं पववा

सुराणिरजसस्सभावो

सुराणिर दुग्गिदियं

सुराणि व पुण्णत्तं

सुरांसिया अम्मगुणा इमे ते

सुरांसुवा पंचादिं सवरेदिं

सुराणे सुजगारे वा

१३९०

१८१

१४०

४५९

२९७५

१९५०

९३५

२७५०

१३४

११३४

३०

४७१०

४०००

५८०

| | | | | | | | | |
|------------------------|---|-------|-------------------------|---|------|--------------------------|---|-----|
| सुस्राणे सुनगरे या | ७ | १३५८३ | सुहोइओ तुगं पुगा ! | ७ | ६३४३ | से कि तं अचिसे दन्वसवे | २ | ४८ |
| सुस्रस्र पठिपुच्छद | १ | ८८३ | सुंदरजणसंसगी | ४ | ७८५ | से कि तं अठनामे | २ | १२८ |
| सुस्रस्र पठिपुच्छद | ३ | २२ | सुमगादुभगकप ओगा | ६ | ५०२ | से कि तं अणंतरसिद्धकेवल० | १ | २१ |
| सुहृद्वरसंजो | ५ | ६० | सुरे उगाए पमोबारसहिं | ३ | ५१ | से कि तं अणुगमे | १ | ११ |
| सुहमं अगिवेसाणं | १ | २३३ | सुरे सुंदसने कुंभे | १ | ३८२ | से कि तं अणुगमे | ३ | ८० |
| सुहृदाएगसस समगरस | ५ | ५७३ | सुरोदय पच्छिमाए | ३ | ५५५ | से कि तं अणुगमे | २ | ९५ |
| सुहं यफामो जीवामो | ७ | २४१३ | सुरोदयं गच्छमहं पमाए | ६ | २१३ | से कि तं अणुगमे | २ | १११ |
| सुहसाएणं भंटे । जीवे | ७ | ४३ | सुरोदयस भरिं | ६ | ७१५ | से कि तं अणुचरोववाइअ० | १ | १५१ |
| सुहना० इत्तो फाळविमाणं | ७ | १४१३३ | सेसं सुजायं सुविभससिं | ४ | २७१ | से कि तं अणेगदवियखंवे | २ | ५४ |
| सुहना० दो येव थाएणं | ५ | १०+ | सेएण कस्ससाहं | ७ | १३११ | से कि तं अत्याहिगारे | २ | ५३ |
| सुहमा य सबओगमि | ७ | १४५१३ | से कि तं अकसिणखंवे | ३ | ५२ | से कि तं अत्युगहे | २ | ४८ |
| सुहमा० ओगदेसे य थाएरा | ७ | १४८४३ | से कि तं अक्खरसुणं | २ | ३९ | से कि तं अपए चक्कमे | १ | ३० |
| सुहुमो अ होर फाळो | १ | ५५३ | से कि तं अचिचएद्वोवच्छो | १ | ६५ | से कि तं अपडिवाइओदिनाणं | २ | ६४ |
| सुहुमो य होर फाळो | ३ | ३७ | | २ | | | | १५ |

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|----|---------------------------|---|-----|----------------------------|----|-----|
| से किं वं अयाए | १ | ३३ | से किं वं ईहा | १ | ३२ | से किं वं कालपुष्पी | २ | ११२ |
| से किं वं अंगपविटं | १ | ४५ | से किं वं उच्चिष्णपुष्पी | २ | ११५ | से किं वं फालिओवसेणं | १ | ४० |
| से किं वं अंगमदसाओ | १ | ५३ | से किं वं चणहे | १ | २८ | से किं वं कालोवक्त्रो | २ | ६८ |
| से किं वं आगमओ इव्वसुअं | २ | ३३ | से किं वं उवक्त्रो | २ | ६० | से किं वं पुष्पावयणिअं | २० | २० |
| से किं वं आगमओ इव्ववस्सवं | २ | १३ | से किं वं उवणिहिआ काला० | २ | ११४ | से किं वं कुष्पावयणियं भा० | २ | २६ |
| से किं वं आगमओ भावसुअं | २ | ५५ | से किं वं उवणिहिआ होवा० | २ | १०३ | से किं वं केवलताणं | १ | १९ |
| से किं वं आगमओ भावसुअं | २ | ३९ | से किं वं उवणिहिआ इव्ववा० | २ | ९६ | से किं वं सओवसमिअं | १ | ८ |
| से किं वं आगमओ भावा० | २ | २३ | से किं वं उवसागदसाओ | १ | ५२ | से किं वं संवे | २ | ४४ |
| से किं वं आगमिअं ओहि० | २ | १० | से किं वं पणामो | २ | १२१ | से किं वं सेवसमो | २ | १३३ |
| से किं वं भागुपुन्नी | २ | ७१ | से किं वं ओवमिए | २ | १३८ | से किं वं सेत्तपलिओवमे | २ | १४० |
| से किं वं आमिणिओहि० | १ | २६ | से किं वं ओहिवाण० | १ | ६ | से किं वं सेत्तपुष्पी | २ | ९९ |
| से किं वं आशारे | १ | ४६ | से किं वं कसिपसंवे | २ | ५१ | से किं वं सेओवक्त्रो | २ | ६७ |
| से किं वं आरसपं | २ | ८ | से किं वं कालपमाणे | २ | ११४ | से किं वं गल्लपुष्पी | २ | ११६ |
| से किं वं इदिअवस्सं | १ | ४ | से किं वं कालपुष्पी | २ | १०४ | से किं वं गमिअं | १ | ४४ |

| | | | | | | | |
|--------------------------|-----|--------------------------|---|-----|-----------------------------|---|-----|
| से किं तं गुणपमाणे | १४४ | से किं तं णेग० भंगस० | २ | १०८ | से किं तं नवनामे | २ | १२८ |
| से किं तं चउणामे | १२४ | से किं तं णेग० भंगोव० | २ | १०९ | से किं तं नामसुअं | २ | ३० |
| से किं तं चउणए उवकमे | ६३ | से किं तं णेगम० अणोविमि० | २ | १०१ | से किं तं नामावस्सयं | २ | ९ |
| से किं तं छणामे | १२६ | से किं तं णेगम० अओ० का | २ | १०६ | से किं तं नायाधम्मकहाओ | १ | ५१ |
| से किं तं जाणयसीरुव्व० | ३५ | से किं तं तिनामे | २ | १२३ | से किं तं निक्खेवे | २ | १५० |
| से किं तं जाणय० उवउ० | १८ | से किं तं दुव्वखंवे | २ | ४६ | से किं तं नेगम० अट्टपय० | २ | ७४ |
| से किं तं जाणय० उव्वसुअं | ३७ | से किं तं दुव्वपमाणे | २ | १३२ | से किं तं नेगम० भंगसमु० | २ | ७६ |
| से किं तं जाणयसीरुव्वास० | १६ | से किं तं दुव्वसुअं | २ | ३२ | से किं तं नेगम० भंगोवदंस० | २ | ७८ |
| से किं तं ठवणावस्सयं | १० | से किं तं दुव्वावस्सयं | २ | १२ | से किं तं नेगमवद्दाराणंअणो० | २ | ७३ |
| से किं तं ठवणासुअं | ३१ | से किं तं दसनामे | २ | १३० | से किं तं नोआगमओ दुव्व० | २ | ३४ |
| से किं तं ठाणे | ४८ | से किं तं दिट्ठिवाए | १ | ५७ | से किं तं नोआगमओ दुव्वा० | २ | १५ |
| से किं तं णए | १५२ | से किं तं दुनामे | २ | १२२ | से किं तं नोआगमओ भावसं० | २ | ५६ |
| से किं तं णामे | १२० | से किं तं दुपए उवकमे | २ | ६२ | से किं तं नोआगमओ भावसु० | २ | ४० |
| से किं तं णेगम० अट्टपय० | १०७ | से किं तं नयणमाणे | २ | १४५ | से किं तं नोआगमओ भावा० | २ | २४ |

| | | | | | | | |
|---------------------------|---|-----|---------------------------|---|-----|-----------------------------|-----|
| से किं तं नोरिअरबबलं | १ | ५ | से किं तं भावतये | २ | ५४ | से किं तं ओगुत्तरिअं द्वा० | २१ |
| से किं तं पारया | १ | ३४ | से किं तं भावयमाने | २ | १४३ | से किं तं ओगुत्तरिअं भा० | २७ |
| से किं तं पणमनिहज्जे | २ | १३५ | से किं तं भावमुअं | ३ | ३८ | से किं तं वसुभाषणं | १२ |
| से किं तं पणनं | १ | ३ | से किं तं भावापुण्णी | २ | ११९ | से किं तं वसुव्या | १४७ |
| से किं तं पणिवारओदि० | १ | १४ | से किं तं भावावरसयं | २ | २२ | से किं तं वंजुगमहे | २९ |
| से किं तं पणहागएणाई | १ | ५५ | से किं तं भावोवकमे | २ | ६९ | से किं तं विभागनिष्फले | १३६ |
| से किं तं पमाने | २ | १३१ | से किं तं मणपञ्चनानं | ३ | १७ | से किं तं विवासुअं | ५६ |
| से किं तं परएरसिद्वैवे० | १ | २२ | से किं तं मिच्छासुअं | ३ | ४२ | से किं तं विवाहे | ५० |
| से किं तं परएरतानं | १ | २४ | से किं तं मीसए द्वावसवै | २ | ४९ | से किं तं सचित्ते द्वावसवै० | ४७ |
| से किं तं पंपनाने | २ | १२५ | से किं तं मीसए द्वावोवकमे | २ | ६६ | से किं तं सचित्ते द्वावो० | ६१ |
| से किं तं पुज्यापुण्णी | २ | ९७ | से किं तं ओइअं द्वा० | २ | १९ | से किं तं सत्तनये | १२७ |
| से किं तं मणपचअं | ३ | ७ | से किं तं ओइअं नोआ० | २ | ७१ | से किं तं सए | १३५ |
| से किं तं मयिअसरीर० | २ | ३६ | से किं तं ओइअं मणा० | २ | २५ | से किं तं सयए | ४९ |
| से किं तं मयिअसरीर० द्वा० | २ | १७ | से किं तं ओइअं नो | २ | ४२ | से किं तं समोआरे | ११० |

| | | | | | | | | |
|---------------------------|---|-----|------------------------------|---|------|-------------------------|---|------|
| से किं तं समोऽधरे | २ | १४९ | से किं तं सामायायीषाणु० | २ | ११८ | सेजा निरीहिधार | ५ | १६१* |
| से किं तं समोऽधरे | २ | ७९ | से किं तं सिद्धकेवलनाणं | १ | २० | सेणावद् पस्त्यारं | ३ | +६४ |
| से किं तं सम्मसुभं | १ | ४१ | से किं तं सुअनिस्सिजं | १ | २७ | सेणाहिबद् भोदय | १ | १४४२ |
| से किं तं संअट्टपपरह० | २ | ९१ | से किं तं सुतं १, २ चसव्विहं | २ | २९ | से तं अंगवविहं | १ | ५९ |
| से किं तं संअणो०काला० | २ | ११२ | से किं तं सुयनाणपरोक्खं | १ | ३८ | से तं केवलनाणं | १ | २३ |
| से किं तं संअणो०खित्ता | २ | १०२ | से किं तं हीयमाणं ओहि० | १ | १३ | से वारिसे दुक्खसहे | ५ | ३९८* |
| से किं तं संअणो०इळा | २ | ९० | से किं तं सूखगढे | १ | ४७ | से नूणं मए पुण्यं | ७ | ८८* |
| से किं तं संखपमाणे | २ | १४६ | से गामे वा नगरं वा | ५ | ६१* | से भिक्खु०एगसो वा | ५ | १२ |
| से किं तं संगहत्स अट्टपय० | २ | ११३ | से जुए धंभलोगाओ | ७ | ५७६* | से भिक्खु०कीढं वा पयंग० | ५ | १५ |
| से किं तं संगहत्स समो० | २ | ९४ | से जणमलाणं वा | ५ | ३६५* | से भिक्खु०दिआ वा० | ५ | ११ |
| से किं तं संठाणाणुपवी | २ | ११५ | सेज्जं ठाण च जट्ठा | ३ | ६९६ | से भिक्खु०संजयविरय० | ५ | १० |
| से किं तं संगियुयं | ३ | ४० | सेज्जं ठाणं च अहिं | ३ | ६९५ | से भिक्खु०मुषे वा जागरं | ५ | १३ |
| से किं तं संभंगोवदसणया | २ | ९३ | सेज्जं वं गणधरं | ५ | १४ | से भिक्खु०से वीएसु वा | ५ | १४ |
| से किं तं साइमं सपज्जव० | १ | ४३ | सेजावरेणुमासद | ४ | ८७+ | सेयपुरं रिट्ठुरं | ३ | ३२४ |

| | | | | | | |
|-------------------------|-------|------------------------|---|---------------------------|---|-------|
| सोचाणं फदसा भासा | ७३॥ | सोयस्त सद् गहणं | ७ | ११९०॥ सोलसविहभेणं | ७ | १२७७॥ |
| सोबा दद्रुणं वा वाडिअं | ५१+ | सोरिअ सुंवरदेवि व | ३ | १३११ सोलस सयाणि चउरत्त० | २ | १४२॥ |
| सो जिमदेहाइणं | २७+ | सोऽरिद्धनेमिनामो अ | ७ | ७८७॥ सोवक्कमो अ निरुक्कम० | ७ | २२६ |
| सो तस्य एव पविस्सिद्धो | ९५६॥ | सोरियपुरंमि तत्तासि | ७ | ४४६ सोवक्कले सिंघवे लोणे | ५ | २४॥ |
| सो तवो वुविहो वुपो | ११०४॥ | सोरियपुरंमि नये | ७ | ७८३॥ सोबागकुलसंभूओ | ७ | ३५९॥ |
| सो तस्स सव्वस्स दुहस्स | १२६५॥ | सोरियपुरंमि० समुदविजये | ७ | ७८५॥ सो बाणरज्जुवती | ३ | ८४७ |
| सो तिहू ओदे नामे | ४४+ | सोरियस्समुदविजए | ३ | १३९२ सो वानरज्जुवई | ३ | १४०३ |
| सो दाड तवोकम्मं | १६६३ | सो लद्धवोदिलामो | ७ | ४१६ सोऽवि अंवरभासिलो | ७ | १०५४॥ |
| सो इह तवोकम्मं | १६६५ | सोलस उगममरोसा | ६ | ६६९ सो विणएण हवागओ | ३ | ४२६ |
| सो दाणि सिं राय ! महणु० | ४२५॥ | सोलस उगममरोसे | ६ | ४०३ सो वीयरओ कयसत्त्व० | ७ | १२६३॥ |
| सो देवपरिगदिओ | ४६० | सोलस चैव सहस्ता | ३ | ४३३० सोवीररायवसभो | ७ | ५९४॥ |
| सो देवलोगसरित्ते | २३०॥ | सोलस दक्खा भागा | ७ | १५० सोबीया गोरसासव | ६ | ५४ |
| सो नाम महावीरो | ६५॥ | सोलस रायसहस्ता | ३ | ७१ सो समणो पब्बइओ | ७ | ४७२ |
| सो वित्तज्जापियरो | ६७६॥ | सोलस वासाणि दया | ३ | १२७४ सो समणो पब्बइओ | ७ | ४८२ |

सो गोपदे नभुजराससो

सो हमादे अमबो

सो हमाकपवसी देवो

सोही वनुमुपसस

सोही पत्रभावे

सोही पवराजसस

सो होए अमिगमकई

सो होए विद्वगही

हकारः

हमो न सजठे निस्सू

हकारे गभारे पिहारे

दढस मभमहसस

हताअप मीरिदिद

हतापापपलिदिठमं

हत्वसयमेग गंवा

हत्वसयमेग गंवा

हत्वसयं खलु देसो

हत्वसंखण्ड पायसजद

हत्वं पायं व कायं व

हत्वं मत्तं व सुवे

हत्वंमि मुहुत्तंको

हत्वंमि मुहुत्तंको

हत्वमपा हमे कामा

हत्वयामं पवरसस

हत्विगह्वमि गिग्वे

हत्विगह्वमि गिग्वे

हत्विपपत्रं अओम्या

हत्विपपुर्तिमि विता !

हर्षिदुमिबलबद्धे

हत्वी छविहीओ

हत्वी हत्वीणिआओ

हलुत्तलोएणं

हलुत्सेहो सीसपणामणं

हल्यो विता सावी

हल्योवपाय गंतुप

हवमाह्लो राया

हयं नामं किमाहोमं

हयाणीए रायाणीए

हरिलच्छेयण छप्पइय

हरिए वीए चळे बुजे

हरिए वीएसु वडा अणं

हरिएसनामगोमं

५७३

१६६

५०३

४५९

२६३+

८७५

३७७

३९५

१०१

५४९५

१३९

३८८

२०४+

३२०

| | | | | | | | |
|--------------------|------|--------------------------|---|------|---------------------|---|-----|
| हरियासा गोइसा | ३४१ | हिअमिअअकरसवाई | ५ | ३२४ | हिआलियचोरिजे | ३ | ७८८ |
| हरियासा चंडावा | ३२३ | हिदिमादिदिमा चेव | ७ | १५८५ | हिसे वाळे मुसावाई | ७ | १३६ |
| हरियाइअणंतरिया | ५५७ | हिमतेणसावयभया | ४ | १२ | हिसे वाळे मुसावाई | ७ | १८२ |
| हरियाळभेयसंकासा | १२९९ | हियण संकिणं | ५ | ५२७ | हीणा वा अहिया वा | २ | ९८ |
| हरियाळे हिगुलए | १४४७ | हियंमि समाहं | ५ | २७५ | हीलेज व हिसेअ व | ४ | ६८५ |
| हरिसइ सेयविणए | ५१६ | हियं विगयमया जुवा | ७ | २९ | हुआसणे जळंतमि | ७ | ६५७ |
| हटे हलेचि अमिचि | २९३ | हिवाहाया मियाहाय | ४ | ५७९ | हुज कटं सिलं वावि | ५ | १२४ |
| हवा व असबमोसा | २८३ | हिवाहाया मियाहाय | ६ | ६४८ | हुटे चरितमंदो | ४ | ३८२ |
| हयइ पवावइ वंभो | ४११ | हिरणं जायत्वं च | ७ | १३६५ | हुंति खंया कण्ठा | ५ | १९० |
| हवइ पुण सुचमी तं | ६२ | हिरणं सुवणं मणिमोचं | ७ | २७३ | हुंज्जमवो वंयो | ५ | ४६५ |
| हसिअ ललिअ वण्णहिअ | २६४ | हिरिणी सिगिणी सिस्सिणीली | ७ | १४७० | हुंज्जदाहरणासंभवे य | ३ | १४८ |
| हंदि धम्मवक्कामाणं | २१३ | हिगुलयधत्तसंकासा | ७ | १२९८ | हुंदावणि फोसलगा | ५ | ६१९ |
| हारियुत्तं साहं | २६ | हिस्सत्वं जुंजंतो | ४ | ७५७ | हुंदिहण चउत्वं | ७ | २९७ |
| हासं सिद्धं रइ दणं | ५१५ | हिंसाए पठिवक्खो | ५ | ४५ | हुं भो हलिसि अमिसि | ५ | २९६ |

| | | | | | | | | |
|----------------------|---|------|--------------------|---|------|----------------------|---|------|
| होरिण्य ऋतिसर | १ | ७०३ | होत्र सिआ उद्धरिजं | ४ | ५८८ | होही पत्तोसवणा | ३ | १६६२ |
| होरिण्य ऋतिसर | ३ | १४७ | होनायवितहकरणे | ६ | ४३९ | होही सगरो मयवं | ३ | ३७४ |
| होर पविस्ति निविस्ती | ३ | ७४६ | होमि नहो मयंवाणं | ७ | ७०९३ | होसि क्कमविमुद्धाओ | ३ | १६६ |
| होर पत्तयं मोररस्त | ३ | ७४१ | होसिस्ति यमुवेया | ३ | ३९५ | होसि पदुप्पत्रविणास० | ५ | ६९ |
| होर मयत्तो मयमंत० | ३ | १८४५ | होही जजिओ संभव | ३ | ३७० | होसि पुन अहियुरिसा | २ | ९७३ |
| होत्र न य होत्र छंभो | ४ | ५३७ | होही ते विणिवाओ | ३ | १२७३ | होसि बिले वो दोसा | ४ | १८३५ |
| | | | | | | होसि मुहासवसंवर० | ३ | १९३ |

॥ इति नन्यादिसूत्रसप्तकस्य गायत्र्यनुक्रमः ॥

आगमोदये परिशिष्टं तृतीयम् विभागः १

नन्दादिसप्तध्याः सत्रादीनां ग्रहत्यङ्कदत्ता ।

| सू० | ने० | प० | सू० | ने० | प० | सू० | ने० | प० | सू० | ने० | प० | सू० | ने० | प० | सू० | ने० | प० |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|
| १ | १७ | १५ | २१ | ३० | १७३ | ३९ | ४० | १८३ | ४९ | ५० | २३० | १ | १ | १५ | ५० | ५० | १३५ |
| १७ | १७ | १०१ | ३० | ३१ | १७४ | ४० | ४१ | १९१ | ५० | ५१ | २३१ | २ | २ | १७ | ५० | ५० | १३५ |
| १८ | १८ | १०७ | ३२ | ३२ | १७५ | ४२ | ४२ | १९४ | ५२ | ५२ | २३२ | ४७ | ४७ | ५७ | ५० | ५० | १३५ |
| १९ | १९ | १११ | ३३ | ३३ | १७६ | ४३ | ४३ | १९५ | ५३ | ५३ | २३३ | ४८ | ४८ | ५८ | ५० | ५० | १३५ |
| २० | २० | ११३ | ३४ | ३४ | १७७ | ४४ | ४४ | २०३ | ५४ | ५४ | २३४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५० | ५० | १३५ |
| २१ | २१ | १२० | ३५ | ३५ | १७७ | ४५ | ४५ | २०९ | ५५ | ५५ | २३५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५० | ५० | १३५ |
| २२ | २२ | १२५ | ३६ | ३६ | १७८ | ४६ | ४६ | २१३ | ५६ | ५६ | २३६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५० | ५० | १३५ |
| २३ | २३ | १२५ | ३७ | ३७ | १८३ | ४७ | ४७ | २१३ | ५७ | ५७ | २३७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५० | ५० | १३५ |
| २४ | २४ | १६८ | ३८ | ३८ | १८७ | ४८ | ४८ | २२८ | ५८ | ५८ | २३८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५० | ५० | १३५ |
| २५ | २५ | १६९ | ३९ | ३९ | १८७ | ४९ | ४९ | २२९ | ५९ | ५९ | २३९ | ६० | ६० | ६० | ५० | ५० | १३५ |

इति नन्दीसंज्ञाः ।

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|-----|-----|----|----------------------|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५१ | ६० | १३९ | ७३ | ७४ | १८४ | ८८ | " | १०९ | १०८ | " | १२३ | १२२ | १०८ |
| ५१ | ६१ | १४४ | ७३ | ७५ | १८५ | ८९ | " | ११० | १०९ | " | १२३ | १२२ | १०८ |
| ६० | ६२ | " | ७४ | ७६ | १८६ | ९० | " | १११ | ११० | " | १२४ | १२३ | १०९ |
| ६१ | ६३ | " | ७५ | ७७ | अनुयोगदारमन्त्राङ्कः | | | ११२ | १११ | १० | १२५ | १२४ | ११० |
| ६२ | ६४ | १४५ | ७६ | ७८ | १ | १ | १ | ११३ | ११२ | ९८ | १२६ | १२५ | ११३ |
| ६३ | ६५ | " | ७७ | ७९ | ७० | ७० | ५१ | ११४ | ११३ | " | १२७ | १२६ | ११४ |
| ६४ | ६६ | १५१ | ७८ | ८० | ७२ | ७२ | " | ११५ | ११४ | ९९ | १२८ | १२७ | ११५ |
| ६५ | ६७ | " | १ | ८१ | ७२ | ७२ | ५३ | ११६ | ११५ | १०० | १२९ | १२८ | ११६ |
| ६६ | ६८ | " | १७१ | ८२ | १०२ | १०२ | ८७ | ११७ | ११६ | १०१ | १३० | १२९ | ११७ |
| ६७ | ६९ | १४७ | ८३ | ८५ | १०४ | १०३ | ९२ | ११८ | ११७ | १०२ | १३१ | १३० | ११८ |
| ६८ | ७० | " | ८४ | ८६ | १०५ | १०४ | ९२ | ११९ | ११८ | १०३ | १३२ | १३१ | ११९ |
| ६९ | ७१ | १६५ | १ | ८५ | १०६ | १०५ | " | १२० | ११९ | १०४ | १३३ | १३२ | १२० |
| ७० | ७२ | " | १८२ | ८६ | १०७ | १०६ | " | १२१ | १२० | " | १३४ | १३३ | १२१ |
| ७१ | ७३ | १६५ | १८३ | ८७ | १०८ | १०७ | ९३ | १२२ | १२१ | १०५ | १३५ | १३४ | १२२ |

१३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३

१५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१

इत्युक्तं
अथानुयोगसंज्ञाः

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

| | | | | | | | | | | | | | |
|--------------------|-------|---------------------------|-------|-------|-------|--------|--------|------|------|------|------|------|-----|
| ४८ | ८३५ | १ | १४ | ७८९ | ९९९ | १००३ | " | १०११ | १०२३ | " | १०२५ | १०३७ | " |
| ४९ | ८३७ | २ | १५ | " | १-४टी | १००४.७ | " | १०१२ | १०२४ | ४५२ | १०२६ | १०३८ | " |
| ५० | ८३९ | ३ | १६ | " | १००० | १००८ | " | १०१३ | १०२५ | ४५४ | १०२७ | १०३९ | ४६७ |
| ५१ | ८४१ | ४ | १७ | " | १००१ | १००९ | " | १०१४ | १०२६ | " | १०२८ | १०४० | ४७२ |
| ५२ | ८४२ | ५ | १८ | " | १००२ | १०१० | " | १०१५ | १०२७ | ४५६ | १०२९ | १०४१ | " |
| ५३ | ८४३ | १ | १९ | ८३१ | १००३ | १०११ | ४५० | १०१६ | १०२८ | " | १०३० | १०४२ | ४७३ |
| ५४ | ८४४ | २. २० | " | " | १००४ | १०१२ | " | १०१७ | १०२९ | ४६२ | १०३१ | १०४३ | ४७३ |
| अथावच्छेदनाथाङ्काः | | ३. २१ | ८३१ | ८३१ | १००५ | १०१३ | " | १०१८ | १०३० | ४६३ | १०३२ | १०४४ | ४७४ |
| १ | ८ ७६३ | अथावश्यकानित्युत्पत्त्याः | | | | ४टी | १०१४.७ | " | १०१९ | १०३१ | ४६४ | १०३३ | " |
| २ | ९ ७६३ | १-९९५ | १-९९५ | १-४४८ | १००६ | १०१८ | " | १०२० | १०३२ | " | १०३४ | १०४५ | " |
| १ | ७८८ | १-४टी | ९९६.९ | ४४८ | १००७ | १०१९ | " | १०२१ | १०३३ | " | १०३५ | १०४७ | ४७५ |
| २ | " | ९९६ | १००० | ४४९ | १००८ | १०२० | ४५१ | १०२२ | १०३४ | ४६५ | १०३६ | १०४८ | ४७६ |
| ३ | " | ९९७ | १००१ | " | १००९ | १०२१ | " | १०२३ | १०३५ | " | १०३७ | १०४९ | " |
| ४ | ९३ | ९९८ | १००२ | " | १०१० | १०२२ | ४५१ | १०२४ | १०३६ | ४६६ | १०३८ | १०५० | ४७८ |

२ अनु.

शुद्धिः

४.६.८.

१०,१२.

आव.शुद्धिः

| | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|---------|-------------------|------|------|------|------|---------|------|-------|---------|------|-----|
| १०३१. | १०५१. | " | १०५४ | १०६५ | " | १०६७ | १०७८ | " | १०८१ | १०९२ | ५०२१०९५ | ११०६ | " |
| १०४०. | १०५२. | " | १०५५ | १०६६ | ५१०१ | १०६८ | १०७९ | " | १०८२ | १०९३ | ५०३१०९६ | ११०७ | ५०९ |
| १०४१. | १०५३. | ५७९ | ॥ भागो द्वितीयः ॥ | १०६९ | १०६९ | १०६९ | १०८० | " | १०८३ | १०९४ | " | ११०८ | ५०९ |
| १०४२. | १०५४. | " | १०६६ | १०६७ | ५१११ | १०७० | १०८१ | ४१११ | १०८४ | १०९५ | " | ११०९ | " |
| १०४३. | १०५५. | " | १०६७ | १०६८ | ५११४ | १०७१ | १०८२ | " | १०८५ | १०९६ | ५०४१०९९ | १११० | " |
| १०४४. | १०५६. | ५८११०५८ | १०६९ | १०६९ | ५११६ | १०७२ | १०८३ | " | १०८६ | १०९७ | " | ११११ | " |
| १०४५. | १०५७. | ५८३१०५९ | १०७० | १०७० | ५११७ | १०७३ | १०८४ | " | १०८७ | १०९८ | ५०५११०३ | १११२ | ५१० |
| १०४६. | १०५८. | ५८४१०६० | १०७१ | १०७१ | ५११८ | १०७४ | १०८५ | " | १०८८ | १०९९ | " | १११३ | " |
| १०४७. | १०५९. | " | १०६१ | १०७२ | " | १०७५ | १०८६ | " | १०८९ | ११००. | " | १११४ | ५११ |
| १०४८. | १०६०. | ५८६१०६१ | १०७२ | १०७२ | " | १०७६ | १०८७ | ५०० | ११०१ | ११०१ | ५०६११०३ | १११५ | " |
| १०४९. | १०६१. | " | १०६३ | १०७४ | " | १०७७ | १०८८ | " | ११०२ | ११०३ | " | १११६ | ५१२ |
| १०५०. | १०६२. | ५८७१०६२ | १०७५ | १०७५ | " | १०७८ | १०८९ | " | ११०३ | ११०४ | ५०८११०५ | १११७ | ५१६ |
| १०५१. | १०६३. | ५८८१०६३ | १०७६ | १०७६ | ५११८ | १०७९ | १०९० | " | ११०४ | ११०५ | " | १११८ | " |
| १०५२. | १०६४. | ५८९१०६४ | १०७७ | १०७७ | " | १०८० | १०९१ | " | ११०५ | ११०६ | " | १११९ | " |
| १०५३. | १०६५. | ५९०१०६५ | १०७८ | १०७८ | " | १०८१ | १०९२ | ५०२१०९४ | ११०६ | ११०७ | " | ११२० | " |

| | | | | | | | | | | | |
|------|------|---------|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|
| ११०८ | ११२० | ५१९११२२ | ११३४ | ११४८ | ५२६ | ११५० | ११६२ | " | ११६४ | ११७६ | " |
| ११०९ | ११२१ | " | ५२३ | ११४९ | " | ११५१ | ११६३ | ५३० | ११६५ | ११७७ | " |
| १११० | ११२२ | " | " | ११५० | ५२६ | ११५२ | ११६४ | " | ११६६ | ११७८ | " |
| ११११ | ११२३ | " | " | ११५१ | ५२७ | ११५३ | ११६५ | " | ११६७ | ११७९ | " |
| १११२ | ११२४ | ५२० | " | ११५२ | " | ११५४ | ११६६ | " | ११६८ | ११८० | ५३४ |
| १११३ | ११२५ | ५२१ | ५२४ | ११५३ | " | ११५५ | ११६७ | " | ११६९ | ११८१ | " |
| १११४ | ११२६ | " | " | ११५४ | " | ११५६ | ११६८ | ५३१ | ११७० | ११८२ | " |
| १११५ | ११२७ | " | " | ११५५ | " | ११५७ | ११६९ | " | ११७१ | ११८३ | " |
| १११६ | ११२८ | " | " | ११५६ | " | ११५८ | ११७० | " | ११७२ | ११८४ | " |
| १११७ | ११२९ | ५२१ | ५२५ | ११५७ | " | ११५९ | ११७१ | ५३२ | ११७३ | ११८५ | ५३५ |
| १११८ | ११३० | ५२२ | " | ११५८ | " | ११६० | ११७२ | " | ११७४ | ११८६ | " |
| १११९ | ११३१ | " | " | ११५९ | " | ११६१ | ११७३ | " | ११७५ | ११८७ | " |
| ११२० | ११३२ | " | " | ११६० | " | ११६२ | ११७४ | " | ११७६ | ११८८ | " |
| ११२१ | ११३३ | " | " | ११६१ | " | ११६३ | ११७५ | " | ११७७ | ११८९ | ५३६ |

| | | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|-----|------|------|-----|--------|------|-----|
| ११७८ | ११९० | ११९२ | १२०४ | १२०६ | १२१८ | " | १२२० | १२३२ | " | १२३४ | १२४६ | " |
| ११७९ | ११९१ | ११९३ | १२०५ | १२०७ | १२१९ | " | १२२१ | १२३३ | ५४९ | १२३५ | १२४७ | " |
| ११८० | ११९२ | ११९४ | १२०६ | १२०८ | १२२० | ५४४ | १२२२ | १२३४ | " | १२३६ | १२४८ | " |
| ११८१ | ११९३ | ११९५ | १२०७ | १२०९ | १२२१ | " | १२२३ | १२३५ | ५४९ | १२३७ | १२४९ | ५५३ |
| ११८२ | ११९४ | ११९६ | १२०८ | १२१० | १२२२ | " | १२२४ | १२३६ | " | १२३८ | १२५० | " |
| ११८३ | ११९५ | ११९७ | १२०९ | १२११ | १२२३ | " | १२२५ | १२३७ | " | १२३९ | १२५१ | " |
| ११८४ | ११९६ | ११९८ | १२१० | १२१२ | १२२४ | " | १२२६ | १२३८ | ५५० | १२४० | १२५२ | " |
| ११८५ | ११९७ | ११९९ | १२११ | १२१३ | १२२५ | " | १२२७ | १२३९ | " | १२४१ | १२५३ | " |
| ११८६ | ११९८ | १२०० | १२१२ | १२१४ | १२२६ | ५४५ | १२२८ | १२४० | " | १२४२ | १२५४ | ५५४ |
| ११८७ | ११९९ | १२०१ | १२१३ | १२१५ | १२२७ | " | १२२९ | १२४१ | " | १(६१०) | १२५५ | ५५६ |
| ११८८ | १२०० | १२०२ | १२१४ | १२१६ | १२२८ | " | १२३० | १२४२ | " | १(६१०) | १२५६ | ५५७ |
| ११८९ | १२०१ | १२०३ | १२१५ | १२१७ | १२२९ | ५४६ | १२३१ | १२४३ | ५५१ | १२४३ | १२५७ | ५६२ |
| ११९० | १२०२ | १२०४ | १२१६ | १२१८ | १२३० | ५४८ | १२३२ | १२४४ | " | १२४५ | १२५८ | ५६३ |
| ११९१ | १२०३ | १२०५ | १२१७ | १२१९ | १२३१ | " | १२३३ | १२४५ | ५५२ | १२४६ | १२५९ | " |

| | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|----|------|----|------|------|------|-----|
| १२४६ | १२६० | १२६० | १२७४ | १२७४ | ३ | १२८८ | १७ | १३०२ | ३१ | १३१६ | ११ |
| १२४७ | १२६१ | १२६१ | १२७५ | १२७५ | ४ | १२८९ | १८ | १३०३ | ३२ | १३१७ | ११ |
| १२४८ | १२६२ | १२६२ | १२७६ | १२७६ | ५ | १२९० | १९ | १३०४ | १२७२ | १३१८ | ११ |
| १२४९ | १२६३ | १२६३ | १२७७ | १२७७ | ६ | १२९१ | २० | १३०५ | १२७३ | १३१९ | ६३९ |
| १२५० | १२६४ | १२६४ | १२७८ | १२७८ | ७ | १२९२ | २१ | १३०६ | ३३ | १३२० | ६३० |
| १२५१ | १२६५ | १२६५ | १२७९ | १२७९ | ८ | १२९३ | २२ | १३०७ | ३४ | १३२१ | ११ |
| १२५२ | १२६६ | १२६६ | १२८० | १२८० | ९ | १२९४ | २३ | १३०८ | ३५ | १३२२ | ११ |
| १२५३ | १२६७ | १२६७ | १२८१ | १२८१ | १० | १२९५ | २४ | १३०९ | ३६ | १३२३ | ६३१ |
| १२५४ | १२६८ | १२६८ | १२८२ | १२८२ | ११ | १२९६ | २५ | १३१० | ३७ | १३२४ | ६३३ |
| १२५५ | १२६९ | १२६९ | १२८३ | १२८३ | १२ | १२९७ | २६ | १३११ | ३८ | १३२५ | ११ |
| १२५६ | १२७० | १२७० | १२८४ | १२८४ | १३ | १२९८ | २७ | १३१२ | ३९ | १३२६ | ११ |
| १२५७ | १२७१ | १२७१ | १२८५ | १२८५ | १४ | १२९९ | २८ | १३१३ | ४० | १३२७ | ११ |
| १२५८ | १२७२ | १२७२ | १२८६ | १२८६ | १५ | १३०० | २९ | १३१४ | ४१ | १३२८ | ६३४ |
| १२५९ | १२७३ | १२७३ | १२८७ | १२८७ | १६ | १३०१ | ३० | १३१५ | ४२ | १३२९ | ११ |

[illegible]

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|-----|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|
| १४४३ | १५४० | ७६७ | १४५७ | ७७२ | १४७१ | १५६८ | ७७३ | १४८५ | १५८२ | ७७६ | १४९९ | १५९६ | ७८१ |
| १४४४ | १५४१ | " | १४५८ | " | १४७२ | १५६९ | " | १४८६ | १५८३ | " | १५०० | १५९७ | " |
| १४४५ | १५४२ | " | १४५९ | " | १४७३ | १५७० | " | १४८७ | १५८४ | " | १५०१ | १५९८ | " |
| १४४६ | १५४३ | " | १४६० | " | १४७४ | १५७१ | " | १४८८ | १५८५ | " | १५०२ | १५९९ | ७८२ |
| १४४७ | १५४४ | ७७० | १४६१ | " | १४७५ | १५७२ | " | १४८९ | १५८६ | " | १५०३ | १६०० | " |
| १४४८ | १५४५ | " | १४६२ | " | १४७६ | १५७३ | " | १४९० | १५८७ | " | १५०४ | १६०१ | " |
| १४४९ | १५४६ | " | १४६३ | " | १४७७ | १५७४ | " | १४९१ | १५८८ | " | १५०५ | १६०२ | " |
| १४५० | १५४७ | " | १४६४ | " | १४७८ | १५७५ | " | १४९२ | १५८९ | " | १५०६ | १६०३ | " |
| १४५१ | १५४८ | ७७१ | १४६५ | " | १४७९ | १५७६ | ७७६ | १४९३ | १५९० | " | १५०७ | १६०४ | " |
| १४५२ | १५४९ | " | १४६६ | " | १४८० | १५७७ | " | १४९४ | १५९१ | " | १५०८ | १६०५ | " |
| १४५३ | १५५० | " | १४६७ | " | १४८१ | १५७८ | " | १४९५ | १५९२ | " | १५०९ | १६०६ | " |
| १४५४ | १५५१ | " | १४६८ | " | १४८२ | १५७९ | " | १४९६ | १५९३ | " | १५१० | १६०७ | ७८३ |
| १४५५ | १५५२ | " | १४६९ | " | १४८३ | १५८० | " | १४९७ | १५९४ | ७८० | १५११ | १६०८ | " |
| १४५६ | १५५३ | ७७२ | १४७० | " | १४८४ | १५८१ | " | १४९८ | १५९५ | " | १५१२ | १६०९ | " |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|
| १५१३ | १६१० | ७८३ | १५२७ | १६२४ | ७९१ | १५४१ | १६३८ | ७९७ | १५५५ | १६५२ | ८०३ | १५७० | १६६६ | ८०९ |
| १५१४ | १६११ | ७८४ | १५२८ | १६२५ | ७९२ | १५४२ | १६३९ | ७९८ | १५५६ | १६५३ | ८०४ | १५७१ | १६६७ | ८१० |
| १५१५ | १६१२ | ७८५ | १५२९ | १६२६ | ७९३ | १५४३ | १६४० | ७९९ | १५५७ | १६५४ | ८०५ | १५७२ | १६६८ | ८११ |
| १५१६ | १६१३ | ७८६ | १५३० | १६२७ | ७९४ | १५४४ | १६४१ | ८०० | १५५८ | १६५५ | ८०६ | १५७३ | १६६९ | ८१२ |
| १५१७ | १६१४ | ७८७ | १५३१ | १६२८ | ७९५ | १५४५ | १६४२ | ८०१ | १५५९ | १६५६ | ८०७ | १५७४ | १६७० | ८१३ |
| १५१८ | १६१५ | ७८८ | १५३२ | १६२९ | ७९६ | १५४६ | १६४३ | ८०२ | १५६० | १६५७ | ८०८ | १५७५ | १६७१ | ८१४ |
| १५१९ | १६१६ | ७८९ | १५३३ | १६३० | ७९७ | १५४७ | १६४४ | ८०३ | १५६१ | १६५८ | ८०९ | १५७६ | १६७२ | ८१५ |
| १५२० | १६१७ | ७९० | १५३४ | १६३१ | ७९८ | १५४८ | १६४५ | ८०४ | १५६२ | १६५९ | ८१० | १५७७ | १६७३ | ८१६ |
| १५२१ | १६१८ | ७९१ | १५३५ | १६३२ | ७९९ | १५४९ | १६४६ | ८०५ | १५६३ | १६६० | ८११ | १५७८ | १६७४ | ८१७ |
| १५२२ | १६१९ | ७९२ | १५३६ | १६३३ | ८०० | १५५० | १६४७ | ८०६ | १५६४ | १६६१ | ८१२ | १५७९ | १६७५ | ८१८ |
| १५२३ | १६२० | ७९३ | १५३७ | १६३४ | ८०१ | १५५१ | १६४८ | ८०७ | १५६५ | १६६२ | ८१३ | १५८० | १६७६ | ८१९ |
| १५२४ | १६२१ | ७९४ | १५३८ | १६३५ | ८०२ | १५५२ | १६४९ | ८०८ | १५६६ | १६६३ | ८१४ | १५८१ | १६७७ | ८२० |
| १५२५ | १६२२ | ७९५ | १५३९ | १६३६ | ८०३ | १५५३ | १६५० | ८०९ | १५६७ | १६६४ | ८१५ | १५८२ | १६७८ | ८२१ |
| १५२६ | १६२३ | ७९६ | १५४० | १६३७ | ८०४ | १५५४ | १६५१ | ८१० | १५६८ | १६६५ | ८१६ | १५८३ | १६७९ | ८२२ |
| १५२७ | १६२४ | ७९७ | १५४१ | १६३८ | ८०५ | १५५५ | १६५२ | ८११ | १५६९ | १६६६ | ८१७ | १५८४ | १६८० | ८२३ |
| १५२८ | १६२५ | ७९८ | १५४२ | १६३९ | ८०६ | १५५६ | १६५३ | ८१२ | १५७० | १६६७ | ८१८ | १५८५ | १६८१ | ८२४ |
| १५२९ | १६२६ | ७९९ | १५४३ | १६४० | ८०७ | १५५७ | १६५४ | ८१३ | १५७१ | १६६८ | ८१९ | १५८६ | १६८२ | ८२५ |
| १५३० | १६२७ | ८०० | १५४४ | १६४१ | ८०८ | १५५८ | १६५५ | ८१४ | १५७२ | १६६९ | ८२० | १५८७ | १६८३ | ८२६ |
| १५३१ | १६२८ | ८०१ | १५४५ | १६४२ | ८०९ | १५५९ | १६५६ | ८१५ | १५७३ | १६७० | ८२१ | १५८८ | १६८४ | ८२७ |
| १५३२ | १६२९ | ८०२ | १५४६ | १६४३ | ८१० | १५६० | १६५७ | ८१६ | १५७४ | १६७१ | ८२२ | १५८९ | १६८५ | ८२८ |
| १५३३ | १६३० | ८०३ | १५४७ | १६४४ | ८११ | १५६१ | १६५८ | ८१७ | १५७५ | १६७२ | ८२३ | १५९० | १६८६ | ८२९ |
| १५३४ | १६३१ | ८०४ | १५४८ | १६४५ | ८१२ | | | | | | | | | |

पृष्ठ-

शुद्धिः

॥ १०३ ॥

३ अनु.

शुद्धिः

४.६.८.

१०.१२

आम.शुद्धिः

॥ १०३ ॥

| | | | | | | | | | | | | |
|------|------|-----|------|------|-----|------|------|-----|---------------------|-----|-----|-----|
| १५८५ | १६८० | ८४६ | १५९८ | १६९४ | ८५२ | १६९२ | १७०८ | ८५९ | ॥ आवासकमूलभाष्य- | १९४ | १९६ | ४९३ |
| १५८५ | १६८१ | " | १५९९ | १६९५ | " | १६९३ | १७०९ | ८६० | भाष्यवृत्तशुद्धिः ॥ | १९५ | १९७ | ४९४ |
| १५८६ | १६८२ | ८४७ | १६०० | १६९६ | " | १६९४ | १७१० | " | १-१८५ १-१८५ १-४१३ | १९६ | १९८ | ४९५ |
| १५८७ | १६८३ | ८५० | १६०१ | १६९७ | " | १६९५ | १७११ | " | १८५ १८६ ४७६ | १९७ | १९९ | " |
| १५८८ | १६८४ | " | १६०२ | १६९८ | ८५१ | १६९६ | १७१२ | " | १८६ १८७ ४७७ | १९८ | २०० | " |
| १५८९ | १६८५ | " | १६०३ | १६९९ | " | १६९७ | १७१३ | ८६१ | १८७ १८८ " | १९९ | २०१ | " |
| १५९० | १६८६ | " | १६०४ | १७०० | ८५२ | १६९८ | १७१४ | ८६२ | १८८ १८९ " | २०० | २०२ | " |
| १५९१ | १६८७ | ८५१ | १६०५ | १७०१ | " | १६९९ | १७१५ | " | १८९ १९० ४७९ | २०१ | २०३ | ४९६ |
| १५९२ | १६८८ | " | १६०६ | १७०२ | ८५३ | १६९० | १७१६ | " | १९० १९१ ४८० | २०२ | २०४ | " |
| १५९३ | १६८९ | " | १६०७ | १७०३ | " | १६९१ | १७१७ | ८६४ | १९१ १९२ ४८१ | २०३ | २०५ | " |
| १५९४ | १६९० | " | १६०८ | १७०४ | " | १६९२ | १७१८ | " | १९२ १९३ ४८२ | २०४ | २०६ | ५२४ |
| १५९५ | १६९१ | " | १६०९ | १७०५ | " | १६९३ | १७१९ | ८६५ | १९३ १९४ ४८३ | २०५ | २०७ | ६२२ |
| १५९६ | १६९२ | " | १६१० | १७०६ | ८५८ | १६९४ | १७२० | " | १९४ १९५ ४८४ | २०६ | २०८ | ६३७ |
| १५९७ | १६९३ | ८५२ | १६११ | १७०७ | ८५९ | १६९५ | १७२१ | " | १९५ १९६ ४८५ | २०७ | २०९ | ७१६ |

॥ इत्यासकमिषुक्-

रंशुद्धिः ॥

| | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|---------------------|-----|----|-----|
| २०६ | २१० | ७१६ | २२० | २२४ | ७४२ | २३४ | २३८ | ७१५ | २४८ | २५२ | ८४७ | १ | ६४८ |
| २०७ | २११ | ७१९ | २२१ | २२५ | " | २३५ | २३९ | ७१७ | २४९ | २५३ | ८४८ | १ | ६५० |
| २०८ | २१२ | " | २२२ | २२६ | ७४३ | २३६ | २४० | " | २५० | २५४ | " | १ | " |
| २०९ | २१३ | " | २२३ | २२७ | ७४४ | २३७ | २४१ | ८०१ | २५१ | २५५ | " | ३ | " |
| २१० | २१४ | " | २२४ | २२८ | ७५४ | २३८ | २४२ | ८०३ | २५२ | २५६ | " | १० | " |
| २११ | २१५ | ७२० | २२५ | २२९ | ७५५ | २३९ | २४३ | " | २५३ | २५७ | " | ११ | " |
| २१२ | २१६ | " | २२६ | २३० | " | २४० | २४४ | " | २५४ | इत्याव० मू० भा० भा० | १ | १२ | ६५१ |
| २१३ | २१७ | ७३० | २२७ | २३१ | " | २४१ | २४५ | " | २५५ | आवश्यकसंग्रहणि० | २ | १३ | " |
| २१४ | २१८ | " | २२८ | २३२ | ७६६ | २४२ | २४६ | " | २५६ | बृद्धाङ्कयुधिः | १ | १४ | ६५२ |
| २१५ | २१९ | " | २२९ | २३३ | " | २४३ | २४७ | " | २५७ | १ | १ | १५ | ६५३ |
| २१६ | २२० | ७३३ | २३० | २३४ | " | २४४ | २४८ | ८४७ | २ | २ | " | १६ | " |
| २१७ | २२१ | ७३४ | २३१ | २३५ | ७६७ | २४५ | २४९ | " | २ | ३ | " | १७ | " |
| २१८ | २२२ | ७४१ | २३२ | २३६ | ७९४ | २४६ | २५० | " | १ | ४ | " | १८ | " |
| २१९ | २२३ | " | २३३ | २३७ | " | २४७ | २५१ | " | १ | ५ | ६४७ | १९ | " |

न्यायक-

शुद्धिः

॥ १०३ ॥

२ अनु.

शुद्धिः

४.६.८.

१०.१३

आव.शुद्धिः

॥ १०३ ॥

| | | | | | | | | | | | | |
|------|------|-----|------|------|-----|-------------|------------------------|-----|-------------------|-----|-----|-----|
| १५८४ | १६८० | ८४६ | १५९८ | १६९४ | ८५२ | १६९२ | १७०८ | ८५९ | ॥ आवस्यकमूलभाष- | १९४ | १९६ | ४९३ |
| १५८५ | १६८१ | " | १५९९ | १६९५ | " | १६९३ | १७०९ | ८६० | आवस्यकमूलभाष- | १९५ | १९७ | ४९४ |
| १५८६ | १६८२ | ८४७ | १६०० | १६९६ | " | १६९४ | १७१० | " | १-१८५ १-१८५ १-४१३ | १९६ | १९८ | ४९५ |
| १५८७ | १६८३ | ८५० | १६०१ | १६९७ | " | १६९५ | १७११ | " | १८५ १८६ ४७६ | १९७ | १९९ | " |
| १५८८ | १६८४ | " | १६०२ | १६९८ | ८५४ | १६९६ | १७१२ | " | १८६ १८७ ४७७ | १९८ | २०० | " |
| १५८९ | १६८५ | " | १६०३ | १६९९ | " | १६९७ | १७१३ | ८६१ | १८७ १८८ | १९९ | २०१ | " |
| १५९० | १६८६ | " | १६०४ | १७०० | ८५५ | १६९८ | १७१४ | ८६२ | १८८ १८९ | २०० | २०२ | " |
| १५९१ | १६८७ | ८५१ | १६०५ | १७०१ | " | १६९९ | १७१५ | " | १८९ १९० ४७९ | २०१ | २०३ | ४९६ |
| १५९२ | १६८८ | " | १६०६ | १७०२ | ८५७ | १६२० | १७१६ | " | १९० १९१ ४८० | २०२ | २०४ | " |
| १५९३ | १६८९ | " | १६०७ | १७०३ | " | १६२१ | १७१७ | ८६३ | १९१ १९२ | २०३ | २०५ | " |
| १५९४ | १६९० | " | १६०८ | १७०४ | " | १६२२ | १७१८ | " | १९२ १९३ | २०४ | २०६ | ५२४ |
| १५९५ | १६९१ | " | १६०९ | १७०५ | " | १६२३ | १७१९ | ८६४ | १९३ १९४ | २०५ | २०७ | ६२२ |
| १५९६ | १६९२ | " | १६१० | १७०६ | ८५८ | " | ॥ स्वावस्यकनिर्मुक्ति- | | | | २०८ | ६३७ |
| १५९७ | १६९३ | ८५२ | १६११ | १७०७ | ८५९ | रंशुद्धिः ॥ | | | | २०६ | २०९ | ७९६ |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|--------|-----|--------|-----|--------|----------------------|-----|---|----|-----|
| २०६ | २१० | ७१६२२० | २२४ | ७४२२३४ | २३८ | ७१५२४८ | २५२ | ८४७ | १ | ६ | ६४८ |
| २०७ | २११ | ७१९२२१ | २२५ | " २३५ | २३९ | ७१७२४९ | २५३ | ८४८ | १ | ७ | ६५० |
| २०८ | २१२ | " २२२ | २२६ | ७४३२३६ | २४० | " २५० | २५४ | " | १ | ८ | " |
| २०९ | २१३ | " २२३ | २२७ | ७४४२३७ | २४१ | ८०१२५१ | २५५ | " | २ | ९ | " |
| २१० | २१४ | " २२४ | २२८ | ७४५२३८ | २४२ | ८०३२५२ | २५६ | " | १ | १० | " |
| २११ | २१५ | ७२०२२५ | २२९ | ७४६२३९ | २४३ | " २५३ | २५७ | " | २ | ११ | " |
| २१२ | २१६ | " २२६ | २३० | " २४० | २४४ | " २५४ | इत्यादि० सू० भा० मा० | १२ | १ | १२ | ६५१ |
| २१३ | २१७ | ७३०२२७ | २३१ | " २४१ | २४५ | " | आवश्यकसंग्रहि० | १३ | २ | १३ | " |
| २१४ | २१८ | " २२८ | २३२ | ७६६२४२ | २४६ | " | दृढाङ्कयुद्धिः | १४ | १ | १४ | ६५२ |
| २१५ | २१९ | " २२९ | २३३ | " २४३ | २४७ | " २५६ | १ | १५ | १ | १५ | ६५३ |
| २१६ | २२० | ७३३२३० | २३४ | " २४४ | २४८ | ८४७ | २ | १६ | १ | १६ | " |
| २१७ | २२१ | ७३४२३१ | २३५ | ७६७२४५ | २४९ | " | ३ | १७ | २ | १७ | " |
| २१८ | २२२ | ७४१२३२ | २३६ | ७६८२४६ | २५० | " | ४ | १८ | १ | १८ | " |
| २१९ | २२३ | " २३३ | २३७ | " २४७ | २५१ | " | ५ | १९ | २ | १९ | " |

| | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|---|---------------|--------------------|-------|----|-----|----|----|-----|-----|----|----|
| १४४ | १९ | १ | ६६१ | ६२ | ६६०१२ | ४८ | ६५६ | ३ | ४४ | १४४ | १४४ | २० | २ |
| ३४१ | २० | ० | " | ६३ | १३ | ४२ | ६५७ | १ | ३५ | २ | ६५५ | २१ | २ |
| ५१७ | २१ | १ | " | ६४ | १४ | ५० | ६५८ | २ | ३६ | १ | " | २२ | १ |
| ५३१ | २२ | १ | " | ६५ | १५ | ५१ | " | १ | ३७ | १ | " | २३ | १ |
| " | २३ | २ | ६६३ | ६६ | " | ५२ | " | २ | ३८ | २ | " | २४ | २ |
| " | २४ | ३ | " | ६७ | " | ५३ | " | ३ | ३९ | ३ | " | २५ | ३ |
| ६३० | २५ | १ | ७२५ | ६८ | " | ५४ | " | ४ | ४० | ४ | " | २६ | ४ |
| ६४२ | २६ | १ | " | ६९ | २ | ५५ | " | ५ | ४१ | ५ | " | २७ | ५ |
| ७५० | २७ | १ | " | ७० | " | ५६ | " | ६ | ४२ | ६ | " | २८ | ६ |
| " | २८ | २ | ७२७ | ७१ | ३१ | ५७ | ६६० | ७ | ४३ | ७ | " | २९ | ७ |
| ७६५ | २९ | १ | " | ॥ इति संग्रहणः ॥ | | | | ८ | ४४ | ८ | " | ३० | ८ |
| ७६६ | ३० | १ | " | आव० ग्रन्थिसमायाहः | | | | ९ | ४५ | ९ | " | ३१ | ९ |
| ७७१ | ३१ | १ | ११५ | १ | " | ४६ | " | १० | ४६ | १० | " | ३२ | १० |
| ७८ | ३२ | १ | १-१७२-१८१-१८४ | १ | " | ४७ | " | ११ | ४७ | ११ | " | ३३ | ११ |

२ अमु.
मुद्रिः
४.६.८.
१०.१२.
आय.मुद्रिः

॥ १०५ ॥

| | | | | | | | | | | |
|----|----|-------|----|----|-------|----|----|-------|----|-----|
| १० | २६ | ११६ | १० | ५४ | १५८ | ९ | ६८ | १६५२३ | ८२ | १६८ |
| ११ | २७ | ११८ | ११ | ५५ | १५७२४ | १० | ६९ | २४ | ८३ | " |
| १२ | २८ | " | १२ | ५६ | " | ११ | ७० | " | ८४ | " |
| १३ | २९ | " | १३ | ५७ | " | १२ | ७१ | " | ८५ | " |
| १४ | ३० | " | १४ | ५८ | १५७२५ | १३ | ७२ | " | ८६ | १६८ |
| १५ | ३१ | " | १५ | ५९ | १५८२६ | १४ | ७३ | " | ८७ | " |
| १६ | ३२ | १५६१५ | १६ | ६० | " | १५ | ७४ | " | ८८ | " |
| १७ | ३३ | " | १७ | ६१ | " | १६ | ७५ | " | ८९ | १६९ |
| १८ | ३४ | " | १८ | ६२ | " | १७ | ७६ | १६६३१ | ९० | " |
| १९ | ३५ | " | १९ | ६३ | " | १८ | ७७ | १६६३२ | ९१ | " |
| २० | ३६ | " | २० | ६४ | " | १९ | ७८ | १६७३३ | ९२ | " |
| २१ | ३७ | " | २१ | ६५ | " | २० | ७९ | " | ९३ | " |
| २२ | ३८ | " | २२ | ६६ | " | २१ | ८० | २४ | ९४ | १७० |
| २३ | ३९ | " | २३ | ६७ | " | २२ | ८१ | " | ९५ | " |
| २४ | ४० | " | २४ | ६८ | " | २३ | ८२ | २६ | ९६ | " |

मु :

॥ १०५ ॥

၃၅ ၃၆ ၃၇ ၃၈ ၃၉ ၄၀ ၄၁ ၄၂ ၄၃ ၄၄ ၄၅ ၄၆ ၄၇ ၄၈ ၄၉ ၅၀ ၅၁ ၅၂ ၅၃ ၅၄ ၅၅

၇၄၀ ၇၄၁ ၇၄၂ ၇၄၃ ၇၄၄ ၇၄၅ ၇၄၆ ၇၄၇ ၇၄၈ ၇၄၉ ၇၅၀ ၇၅၁ ၇၅၂ ၇၅၃ ၇၅၄ ၇၅၅ ၇၅၆ ၇၅၇ ၇၅၈ ၇၅၉ ၇၆၀

၇၆၁ ၇၆၂ ၇၆၃ ၇၆၄ ၇၆၅ ၇၆၆ ၇၆၇ ၇၆၈ ၇၆၉ ၇၇၀ ၇၇၁ ၇၇၂ ၇၇၃ ၇၇၄ ၇၇၅ ၇၇၆ ၇၇၇ ၇၇၈ ၇၇၉ ၇၈၀ ၇၈၁

၇၈၂ ၇၈၃ ၇၈၄ ၇၈၅ ၇၈၆ ၇၈၇ ၇၈၈ ၇၈၉ ၇၉၀ ၇၉၁ ၇၉၂ ၇၉၃ ၇၉၄ ၇၉၅ ၇၉၆ ၇၉၇ ၇၉၈ ၇၉၉ ၈၀၀ ၈၀၁

၈၀၂ ၈၀၃ ၈၀၄ ၈၀၅ ၈၀၆ ၈၀၇ ၈၀၈ ၈၀၉ ၈၁၀ ၈၁၁ ၈၁၂ ၈၁၃ ၈၁၄ ၈၁၅ ၈၁၆ ၈၁၇ ၈၁၈ ၈၁၉ ၈၂၀ ၈၂၁

၈၂၂ ၈၂၃ ၈၂၄ ၈၂၅ ၈၂၆ ၈၂၇ ၈၂၈ ၈၂၉ ၈၃၀ ၈၃၁ ၈၃၂ ၈၃၃ ၈၃၄ ၈၃၅ ၈၃၆ ၈၃၇ ၈၃၈ ၈၃၉ ၈၄၀ ၈၄၁

၈၄၂ ၈၄၃ ၈၄၄ ၈၄၅ ၈၄၆ ၈၄၇ ၈၄၈ ၈၄၉ ၈၅၀ ၈၅၁ ၈၅၂ ၈၅၃ ၈၅၄ ၈၅၅ ၈၅၆ ၈၅၇ ၈၅၈ ၈၅၉ ၈၆၀ ၈၆၁

၈၆၂ ၈၆၃ ၈၆၄ ၈၆၅ ၈၆၆ ၈၆၇ ၈၆၈ ၈၆၉ ၈၇၀ ၈၇၁ ၈၇၂ ၈၇၃ ၈၇၄ ၈၇၅ ၈၇၆ ၈၇၇ ၈၇၈ ၈၇၉ ၈၈၀ ၈၈၁

၈၈၂ ၈၈၃ ၈၈၄ ၈၈၅ ၈၈၆ ၈၈၇ ၈၈၈ ၈၈၉ ၈၉၀ ၈၉၁ ၈၉၂ ၈၉၃ ၈၉၄ ၈၉၅ ၈၉၆ ၈၉၇ ၈၉၈ ၈၉၉ ၉၀၀ ၉၀၁

၉၀၂ ၉၀၃ ၉၀၄ ၉၀၅ ၉၀၆ ၉၀၇ ၉၀၈ ၉၀၉ ၉၁၀ ၉၁၁ ၉၁၂ ၉၁၃ ၉၁၄ ၉၁၅ ၉၁၆ ၉၁၇ ၉၁၈ ၉၁၉ ၉၂၀ ၉၂၁

၉၂၂ ၉၂၃ ၉၂၄ ၉၂၅ ၉၂၆ ၉၂၇ ၉၂၈ ၉၂၉ ၉၃၀ ၉၃၁ ၉၃၂ ၉၃၃ ၉၃၄ ၉၃၅ ၉၃၆ ၉၃၇ ၉၃၈ ၉၃၉ ၉၄၀ ၉၄၁

| | | | | | | | | | | |
|----|-----|-------|-----|-------|-----|-------|-----|-------|-----|-----|
| ८ | १६७ | १८३२२ | १८१ | १८५३६ | १९५ | १८८५० | २०९ | १९०१४ | २२३ | १९७ |
| ९ | १६८ | २३ | १८२ | ३७ | १९६ | " | २१० | १९११५ | २२४ | १९८ |
| १० | १६९ | ३४ | १८३ | " | १९७ | १८८ | २११ | " | २२५ | " |
| ११ | १७० | ३५ | १८४ | १८६३९ | १९८ | " | २१२ | " | २२६ | " |
| १२ | १७१ | ३६ | १८५ | " | १९९ | " | २१३ | " | २२७ | " |
| १३ | १७२ | ३७ | १८६ | " | २०० | " | २१४ | " | २२८ | " |
| १४ | १७३ | ३८ | १८७ | " | २०१ | १८९ | २१५ | १९५२० | २२९ | " |
| १५ | १७४ | ३९ | १८८ | " | २०२ | " | २१६ | " | २३० | " |
| १६ | १७५ | ४० | १८९ | " | २०३ | " | २१७ | १९६२२ | २३१ | १९९ |
| १७ | १७६ | ४१ | १९० | १८७४५ | २०४ | " | २१८ | " | २३२ | " |
| १८ | १७७ | ४२ | १९१ | " | २०५ | " | २१९ | " | २३३ | " |
| १९ | १७८ | ४३ | १९२ | " | २०६ | " | २२० | १९७२५ | २३४ | " |
| २० | १७९ | ४४ | १९३ | " | २०७ | " | २२१ | " | २३५ | २०० |
| २१ | १८० | ४५ | १९४ | " | २०८ | " | २२२ | " | २३६ | " |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----|------|-----|-------|-----|-----|----|-----|-------|-----|-----|
| ੨੮ | ੨੩੭ | ੨੦੪੨ | ੨੫੩ | ੨੦੨੫੬ | ੨੬੫ | ੨੦੪ | ੨ | ੨੭੪ | ੨੧੩੧੬ | ੨੯੩ | ੨੨੫ |
| ੨੯ | ੨੩੮ | ੨੦੪੩ | ੨੫੪ | ੨੦੨੫੭ | ੨੬੬ | ੨੦੫ | ੩ | ੨੮੦ | ੨੧੩੧੭ | ੨੯੪ | ੨੨੬ |
| ੩੦ | ੨੩੯ | ੨੦੪੪ | ੨੫੫ | ੨੦੨੫੮ | ੨੬੭ | ੨੦੬ | ੪ | ੨੮੧ | ੨੧੩੧੮ | ੨੯੫ | ੨੨੭ |
| ੩੧ | ੨੪੦ | ੨੦੪੫ | ੨੫੬ | ੨੦੨੫੯ | ੨੬੮ | ੨੦੭ | ੫ | ੨੮੨ | ੨੧੩੧੯ | ੨੯੬ | ੨੨੮ |
| ੩੨ | ੨੪੧ | ੨੦੪੬ | ੨੫੭ | ੨੦੨੬੦ | ੨੬੯ | ੨੦੮ | ੬ | ੨੮੩ | ੨੧੩੨੦ | ੨੯੭ | ੨੨੯ |
| ੩੩ | ੨੪੨ | ੨੦੪੭ | ੨੫੮ | ੨੦੨੬੧ | ੨੭੦ | ੨੦੯ | ੭ | ੨੮੪ | ੨੧੩੨੧ | ੨੯੮ | ੨੩੦ |
| ੩੪ | ੨੪੩ | ੨੦੪੮ | ੨੫੯ | ੨੦੨੬੨ | ੨੭੧ | ੨੧੦ | ੮ | ੨੮੫ | ੨੧੩੨੨ | ੨੯੯ | ੨੩੧ |
| ੩੫ | ੨੪੪ | ੨੦੪੯ | ੨੬੦ | ੨੦੨੬੩ | ੨੭੨ | ੨੧੧ | ੯ | ੨੮੬ | ੨੧੩੨੩ | ੩੦੦ | ੨੩੨ |
| ੩੬ | ੨੪੫ | ੨੦੫੦ | ੨੬੧ | ੨੦੨੬੪ | ੨੭੩ | ੨੧੨ | ੧੦ | ੨੮੭ | ੨੧੩੨੪ | ੩੦੧ | ੨੩੩ |
| ੩੭ | ੨੪੬ | ੨੦੫੧ | ੨੬੨ | ੨੦੨੬੫ | ੨੭੪ | ੨੧੩ | ੧੧ | ੨੮੮ | ੨੧੩੨੫ | ੩੦੨ | ੨੩੪ |
| ੩੮ | ੨੪੭ | ੨੦੫੨ | ੨੬੩ | ੨੦੨੬੬ | ੨੭੫ | ੨੧੪ | ੧੨ | ੨੮੯ | ੨੧੩੨੬ | ੩੦੩ | ੨੩੫ |
| ੩੯ | ੨੪੮ | ੨੦੫੩ | ੨੬੪ | ੨੦੨੬੭ | ੨੭੬ | ੨੧੫ | ੧੩ | ੨੯੦ | ੨੧੩੨੭ | ੩੦੪ | ੨੩੬ |
| ੪੦ | ੨੪੯ | ੨੦੫੪ | ੨੬੫ | ੨੦੨੬੮ | ੨੭੭ | ੨੧੬ | ੧੪ | ੨੯੧ | ੨੧੩੨੮ | ੩੦੫ | ੨੩੭ |
| ੪੧ | ੨੫੦ | ੨੦੫੫ | ੨੬੬ | ੨੦੨੬੯ | ੨੭੮ | ੨੧੭ | ੧੫ | ੨੯੨ | ੨੧੩੨੯ | ੩੦੬ | ੨੩੮ |

२ अनु.
शुद्धि:
४,६,८,
१०,१२,
आप्त,शुद्धि:

11209

[illegible]

नन्दाद्यङ्-

गुडि

|| 6103 ||

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|------|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|-----|
| ५३ | ३७७ | २३३५ | ३९१ | ३९१ | ७ | ५०५ | २४२ | ४ | ५१९ | २४२ | ४ | ५१९ | ४३३ | २५० |
| ५४ | ३७८ | २३३५ | ३९२ | ३९२ | ८ | ५०६ | २४३ | ५ | ५२० | २४३ | ५ | ५२० | ४३४ | २५० |
| ५५ | ३७९ | २३३५ | ३९३ | ३९३ | ९ | ५०७ | २४४ | ६ | ५२१ | २४४ | ६ | ५२१ | ४३५ | २५१ |
| ५६ | ३८० | २३३५ | ३९४ | ३९४ | १० | ५०८ | २४५ | ७ | ५२२ | २४५ | ७ | ५२२ | ४३६ | २५२ |
| ५७ | ३८१ | २३३५ | ३९५ | ३९५ | ११ | ५०९ | २४६ | ८ | ५२३ | २४६ | ८ | ५२३ | ४३७ | २५३ |
| ५८ | ३८२ | २३३५ | ३९६ | ३९६ | १२ | ५१० | २४७ | ९ | ५२४ | २४७ | ९ | ५२४ | ४३८ | २५४ |
| ५९ | ३८३ | २३३५ | ३९७ | ३९७ | १३ | ५११ | २४८ | १० | ५२५ | २४८ | १० | ५२५ | ४३९ | २५५ |
| ६० | ३८४ | २३३५ | ३९८ | ३९८ | १४ | ५१२ | २४९ | ११ | ५२६ | २४९ | ११ | ५२६ | ४४० | २५६ |
| ६१ | ३८५ | २३३५ | ३९९ | ३९९ | १५ | ५१३ | २५० | १२ | ५२७ | २५० | १२ | ५२७ | ४४१ | २५७ |
| ६२ | ३८६ | २३३५ | ४०० | ४०० | १६ | ५१४ | २५१ | १३ | ५२८ | २५१ | १३ | ५२८ | ४४२ | २५८ |
| ६३ | ३८७ | २३३५ | ४०१ | ४०१ | १७ | ५१५ | २५२ | १४ | ५२९ | २५२ | १४ | ५२९ | ४४३ | २५९ |
| ६४ | ३८८ | २३३५ | ४०२ | ४०२ | १८ | ५१६ | २५३ | १५ | ५३० | २५३ | १५ | ५३० | ४४४ | २६० |
| ६५ | ३८९ | २३३५ | ४०३ | ४०३ | १९ | ५१७ | २५४ | १६ | ५३१ | २५४ | १६ | ५३१ | ४४५ | २६१ |
| ६६ | ३९० | २३३५ | ४०४ | ४०४ | २० | ५१८ | २५५ | १७ | ५३२ | २५५ | १७ | ५३२ | ४४६ | २६२ |

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|----|-----|-------|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|
| ९ | ४४७ | २५३ | १ | ४६१ | २६४१५ | ४७५ | २६७ | ८ | ४८९ | २७४ | ४ | ५०३ | २७८ |
| १० | ४४८ | " | २ | ४६२ | " | ४७६ | २६८ | ९ | ४९० | २७५ | ५ | ५०४ | २८० |
| ११ | ४४९ | " | ३ | ४६३ | " | ४७७ | " | १० | ४९१ | " | ६ | ५०५ | " |
| १२ | ४५० | २५४ | ४ | ४६४ | " | ४७८ | " | ११ | ४९२ | " | ७ | ५०६ | " |
| १३ | ४५१ | " | ५ | ४६५ | २६५१९ | ४७९ | " | १२ | ४९३ | " | ८ | ५०७ | " |
| १४ | ४५२ | " | ६ | ४६६ | २६६२० | ४८० | " | १३ | ४९४ | २७६ | ९ | ५०८ | " |
| १५ | ४५३ | " | ७ | ४६७ | " | ४८१ | " | १४ | ४९५ | " | १० | ५०९ | २८२ |
| १ | ४५४ | २५५ | ८ | ४६८ | २६६ | ४८२ | २७४ | १५ | ४९६ | २७७ | ११ | ५१० | " |
| २ | ४५५ | २५६ | ९ | ४६९ | " | ४८३ | " | १६ | ४९७ | " | १२ | ५११ | " |
| ३ | ४५६ | " | १० | ४७० | " | ४८४ | " | १७ | ४९८ | " | १३ | ५१२ | " |
| ४ | ४५७ | २५७ | ११ | ४७१ | " | ४८५ | " | १८ | ४९९ | " | १४ | ५१३ | " |
| ५ | ४५८ | २५८ | १२ | ४७२ | २६७ | ४८६ | " | १९ | ५०० | २७८ | १५ | ५१४ | " |
| ६ | ४५९ | " | १३ | ४७३ | " | ४८७ | " | २० | ५०१ | " | १६ | ५१५ | " |
| ७ | ४६० | " | १४ | ४७४ | " | ४८८ | " | २१ | ५०२ | " | १७ | ५१६ | " |

इति दश. गाथा०

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ੨੨੩ | ੨੨੪ | ੧੨੩ | ੨੩੭ | ੨੩੯ | ੧੬੧ | ੨੪੧ | ੨੪੩ | ੧੭੩ | ੨੬੪ | ੨੬੭ | ੧੭੪ | ੨੮੧ | ੨੮੨ | ੨੯੦ |
| ੨੨੪ | ੨੨੬ | ੧੨੪ | ੨੩੮ | ੨੪੦ | " | ੨੪੨ | ੨੪੪ | ੧੭੪ | ੨੬੬ | ੨੬੮ | " | ੨੮੨ | ੨੮੩ | ੨੯੧ |
| ੨੨੫ | ੨੨੭ | ੧੨੫ | ੨੩੯ | ੨੪੧ | ੧੨੫ | ੨੪੩ | ੨੪੫ | ੧੭੫ | ੨੬੭ | ੨੬੯ | " | ੨੮੩ | ੨੮੪ | ੨੯੨ |
| ੨੨੬ | ੨੨੮ | ੧੨੬ | ੨੪੦ | ੨੪੨ | " | ੨੪੪ | ੨੪੬ | ੧੭੬ | ੨੬੮ | ੨੭੦ | " | ੨੮੪ | ੨੮੫ | ੨੯੩ |
| ੨੨੭ | ੨੨੯ | ੧੨੭ | ੨੪੧ | ੨੪੩ | " | ੨੪੫ | ੨੪੭ | ੧੭੭ | ੨੬੯ | ੨੭੧ | " | ੨੮੫ | ੨੮੬ | ੨੯੪ |
| ੨੨੮ | ੨੩੦ | ੧੨੮ | ੨੪੨ | ੨੪੪ | " | ੨੪੬ | ੨੪੮ | ੧੭੮ | ੨੭੦ | ੨੭੨ | " | ੨੮੬ | ੨੮੭ | ੨੯੫ |
| ੨੨੯ | ੨੩੧ | ੧੨੯ | ੨੪੩ | ੨੪੫ | " | ੨੪੭ | ੨੪੯ | ੧੭੯ | ੨੭੧ | ੨੭੩ | " | ੨੮੭ | ੨੮੮ | ੨੯੬ |
| ੨੩੦ | ੨੩੨ | ੧੩੦ | ੨੪੪ | ੨੪੬ | " | ੨੪੮ | ੨੫੦ | ੧੮੦ | ੨੭੨ | ੨੭੪ | " | ੨੮੮ | ੨੮੯ | ੨੯੭ |
| ੨੩੧ | ੨੩੩ | ੧੩੧ | ੨੪੫ | ੨੪੭ | ੧੭੧ | ੨੪੯ | ੨੫੧ | ੧੮੧ | ੨੭੩ | ੨੭੫ | " | ੨੮੯ | ੨੯੦ | ੨੯੮ |
| ੨੩੨ | ੨੩੪ | ੧੩੨ | ੨੪੬ | ੨੪੮ | ੧੭੨ | ੨੫੦ | ੨੫੨ | ੧੮੨ | ੨੭੪ | ੨੭੬ | " | ੨੯੦ | ੨੯੧ | ੨੯੯ |
| ੨੩੩ | ੨੩੫ | ੧੩੩ | ੨੪੭ | ੨੪੯ | " | ੨੫੧ | ੨੫੩ | ੧੮੩ | ੨੭੫ | ੨੭੭ | " | ੨੯੧ | ੨੯੨ | ੨੯੦ |
| ੨੩੪ | ੨੩੬ | ੧੩੪ | ੨੪੮ | ੨੫੦ | ੧੭੩ | ੨੫੨ | ੨੫੪ | ੧੮੪ | ੨੭੬ | ੨੭੮ | " | ੨੯੨ | ੨੯੩ | ੨੯੧ |
| ੨੩੫ | ੨੩੭ | ੧੩੫ | ੨੪੯ | ੨੫੧ | " | ੨੫੩ | ੨੫੫ | ੧੮੫ | ੨੭੭ | ੨੭੯ | " | ੨੯੩ | ੨੯੪ | ੨੯੨ |
| ੨੩੬ | ੨੩੮ | ੧੩੬ | ੨੫੦ | ੨੫੨ | ੧੭੪ | ੨੫੪ | ੨੫੬ | ੧੮੬ | ੨੭੮ | ੨੮੦ | " | ੨੯੪ | ੨੯੫ | ੨੯੩ |
| ੨੩੭ | ੨੩੯ | ੧੩੭ | ੨੫੧ | ੨੫੩ | " | ੨੫੫ | ੨੫੭ | ੧੮੭ | ੨੭੯ | ੨੮੧ | " | ੨੯੫ | ੨੯੬ | ੨੯੪ |
| ੨੩੮ | ੨੪੦ | ੧੩੮ | ੨੫੨ | ੨੫੪ | " | ੨੫੬ | ੨੫੮ | ੧੮੮ | ੨੮੦ | ੨੮੨ | " | ੨੯੬ | ੨੯੭ | ੨੯੫ |
| ੨੩੯ | ੨੪੧ | ੧੩੯ | ੨੫੩ | ੨੫੫ | ੧੭੫ | ੨੫੭ | ੨੫੯ | ੧੮੯ | ੨੮੧ | ੨੮੩ | " | ੨੯੭ | ੨੯੮ | ੨੯੬ |
| ੨੪੦ | ੨੪੨ | ੧੪੦ | ੨੫੪ | ੨੫੬ | ੧੭੬ | ੨੫੮ | ੨੬੦ | ੧੯੦ | ੨੮੨ | ੨੮੪ | " | ੨੯੮ | ੨੯੯ | ੨੯੭ |
| ੨੪੧ | ੨੪੩ | ੧੪੧ | ੨੫੫ | ੨੫੭ | ੧੭੭ | ੨੫੯ | ੨੬੧ | ੧੯੧ | ੨੮੩ | ੨੮੫ | " | ੨੯੯ | ੩੦੦ | ੨੯੮ |
| ੨੪੨ | ੨੪੪ | ੧੪੨ | ੨੫੬ | ੨੫੮ | ੧੭੮ | ੨੬੦ | ੨੬੨ | ੧੯੨ | ੨੮੪ | ੨੮੬ | " | ੩੦੦ | ੩੦੧ | ੨੯੯ |
| ੨੪੩ | ੨੪੫ | ੧੪੩ | ੨੫੭ | ੨੫੯ | " | ੨੬੧ | ੨੬੩ | ੧੯੩ | ੨੮੫ | ੨੮੭ | " | ੩੦੧ | ੩੦੨ | ੩੦੦ |
| ੨੪੪ | ੨੪੬ | ੧੪੪ | ੨੫੮ | ੨੬੦ | ੧੭੯ | ੨੬੨ | ੨੬੪ | ੧੯੪ | ੨੮੬ | ੨੮੮ | " | ੩੦੨ | ੩੦੩ | ੩੦੧ |
| ੨੪੫ | ੨੪੭ | ੧੪੫ | ੨੫੯ | ੨੬੧ | " | ੨੬੩ | ੨੬੫ | ੧੯੫ | ੨੮੭ | ੨੮੯ | " | ੩੦੩ | ੩੦੪ | ੩੦੨ |
| ੨੪੬ | ੨੪੮ | ੧੪੬ | ੨੬੦ | ੨੬੨ | ੧੮੦ | ੨੬੪ | ੨੬੬ | ੧੯੬ | ੨੮੮ | ੨੯੦ | " | ੩੦੪ | ੩੦੫ | ੩੦੩ |
| ੨੪੭ | ੨੪੯ | ੧੪੭ | ੨੬੧ | ੨੬੩ | ੧੮੧ | ੨੬੫ | ੨੬੭ | ੧੯੭ | ੨੮੯ | ੨੯੧ | " | ੩੦੫ | ੩੦੬ | ੩੦੪ |
| ੨੪੮ | ੨੫੦ | ੧੪ | | | | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | |
|-----|-----|--------|-----|--------|-----|--------|-----|--------|-----|-----|
| २९३ | २९५ | २९४३०८ | ३१० | २२७३२२ | ३२७ | २४०३३६ | ३३८ | ३६०३५० | ३५२ | २६३ |
| २९४ | २९६ | २२५३०९ | ३११ | २२९३२३ | ३२५ | २४१३३७ | ३३९ | ३५१ | ३५३ | " |
| २९५ | २९७ | " | ३१२ | २४०३२४ | ३२६ | " | ३४० | " | ३५४ | " |
| २९६ | २९८ | " | ३१३ | " | ३२७ | " | ३४१ | २६१३५३ | ३५५ | " |
| २९७ | २९९ | " | ३१४ | " | ३२८ | " | ३४२ | " | ३५६ | " |
| २९८ | ३०० | " | ३१५ | " | ३२९ | २४२३४१ | ३४३ | " | ३५७ | २६४ |
| २९९ | ३०१ | " | ३१६ | " | ३३० | २४९३४२ | ३४४ | " | ३५८ | " |
| ३०० | ३०२ | " | ३१७ | " | ३३१ | " | ३४५ | " | ३५९ | " |
| ३०१ | ३०३ | २२६ | ३१८ | " | ३३२ | " | ३४६ | " | ३६० | " |
| ३०२ | ३०४ | " | ३१९ | " | ३३३ | " | ३४७ | २६२३५९ | ३६१ | २६९ |
| ३०३ | ३०५ | " | ३२० | " | ३३४ | " | ३४८ | " | ३६२ | " |
| ३०४ | ३०६ | " | ३२१ | " | ३३५ | " | ३४९ | " | ३६३ | २७० |
| ३०५ | ३०७ | " | ३२२ | " | ३३६ | " | ३५० | " | ३६४ | " |
| ३०६ | ३०८ | " | ३२३ | " | ३३७ | २६०३४८ | ३५१ | " | ३६५ | " |
| ३०७ | ३०९ | २२७३२१ | ३२४ | " | ३३८ | " | ३५२ | " | ३६६ | " |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|--------------------|----|----|-----|-----|----|----|----|-----|
| ३६४ | २६६ | २७० | अथ पिण्डनि० भाष्य० | ३४ | २५ | ८९ | १२ | १ | ० | १४ | ५७३ |
| ३६५ | ३६७ | " | १-६ १-६ ४-६ ३५ | ३५ | २६ | ९२ | १२ | १ | १ | १५ | " |
| ३६६ | ३६८ | २७१ | ७ ७ ३६ | ३६ | २७ | " | " | १ | २ | १६ | " |
| ३६७ | ३६९ | " | ८-११ ८-११ १४ ३७ | ३७ | २८ | ११७ | ११७ | २ | ३ | १७ | ५७४ |
| ३६८ | ३७० | २८० | १२-१५ १२-१५ १८ ३८ | ३८ | २९ | " | " | ३ | ४ | १८ | " |
| ३६९ | ३७१ | " | १६ १६ ३८ ३९ | ३९ | ३० | " | " | ४ | ५ | १९ | " |
| ३७० | ३७२ | २८४ | २६ १७ ४० | ४० | ३१ | १२६ | १२६ | ५ | ६ | २० | " |
| ३७१ | ३७३ | " | २६ १७ ४० | ४० | ३१ | " | " | ६ | ७ | २१ | " |
| ३७२ | ३७४ | २८८ | ३७ १८ ४१ | ४१ | ३२ | " | " | ७ | ८ | २२ | " |
| ३७३ | ३७५ | २९० | ३९ २० ४२ | ४२ | ३३ | १२८ | १२८ | ८ | ९ | २३ | " |
| ३७४ | ३७६ | २९० | ३९ २० ४२ | ४२ | ३४ | " | " | ९ | १० | २४ | " |
| ३७५ | ३७७ | २९१ | ३९ २० ४२ | ४२ | ३५ | १४२ | १४२ | १० | ११ | २५ | " |
| ३७६ | ३७८ | २९२ | ३९ २० ४२ | ४२ | ३६ | १४२ | १४२ | ११ | १२ | २६ | " |
| ३७७ | ३७९ | २९३ | ३९ २० ४२ | ४२ | ३७ | " | " | १२ | १३ | २७ | " |

द० नि० पक्षिमाहवा

दश० मा०

१-४

५

६-६३ १२१-२७८ ३३

६ पिण्ड०
७ उत्तरा०
बृहदङ्क०

12211

| | | | | | | | | | | |
|----|----|-------|----|-------|----|-------|----|-------|---------------------------|-----|
| १४ | २८ | ५७५२८ | ४२ | ५७५४२ | ५६ | ५७५५६ | ७७ | ५७५७७ | ८४ | ५७७ |
| १५ | २९ | " | ४३ | " | ५७ | " | ७८ | " | ८५ | " |
| १६ | ३० | " | ४४ | " | ५८ | " | ७९ | " | ८६ | " |
| १७ | ३१ | " | ४५ | " | ५९ | " | ८० | " | ८७ | " |
| १८ | ३२ | " | ४६ | " | ६० | " | ८१ | ५७७ | ८८ | ५९८ |
| १९ | ३३ | " | ४७ | " | ६१ | " | ८२ | " | अथ उत्तरं सूत्रगाथासूत्रा | |
| २० | ३४ | ५७५३४ | ४८ | " | ६२ | " | ८३ | " | १ | ९८ |
| २१ | ३५ | " | ४९ | " | ६३ | " | ८४ | " | २-३ | ४४ |
| २२ | ३६ | " | ५० | " | ६४ | " | ८५ | " | ४-५ | ४५ |
| २३ | ३७ | " | ५१ | " | ६५ | " | ८६ | " | ६-८ | ४६ |
| २४ | ३८ | " | ५२ | ५७५५२ | ६६ | " | ८७ | " | ९-१० | ४७ |
| २५ | ३९ | " | ५३ | " | ६७ | " | ८८ | " | ११-१२ ११-१२ | ४८ |
| २६ | ४० | " | ५४ | " | ६८ | " | ८९ | " | १३ | ४९ |
| २७ | ४१ | " | ५५ | " | ६९ | " | ९० | " | १४ | ५० |

नन्दापिङ्गु

ॐ

11 29 11

| | | | | | | | | | | | |
|-----|--------|-------|-----|----|------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| 255 | 45 | 3 | 155 | 25 | 8800 | 70 | 0555 | 23 | 8545 | 38-48 | 48 |
| 272 | 85-55 | 05-55 | " | 55 | 5835 | 80-30 | 55-75 | 53 | 5585 | 88-28 | 88-28 |
| 275 | 255-05 | 75-35 | 725 | 05 | 28 | " | 40 | 03 | 2555 | 58 | 58 |
| 375 | 505-00 | 45-55 | " | 57 | 5880 | 80 | 35 | 54 | 5555 | 05-75 | 05-75 |
| 475 | 505-80 | 25-05 | 525 | 77 | 0855 | 50 | 4255 | 74 | 0555 | 05-55 | 05-55 |
| " | 505 | 5 | " | 07 | 5555 | 50 | 5505 | 04 | 5505 | 45-55 | 45-55 |
| 875 | 505 | 7 | 855 | 57 | 7505 | 80-00 | 55-55 | 54 | 55 | 55 | 55 |
| " | 505 | 0 | 555 | 47 | 8550 | 55 | 5577 | 44 | 54 | 05-75 | 05-75 |
| 575 | 005-55 | 5-4 | 555 | 87 | 5570 | 75 | 0577 | 50 | 84 | 05-55 | 05-55 |
| 575 | 75-05 | 8-5 | 555 | 57 | 45 | " | 55 | 54 | 54 | 45-55 | 45-55 |
| " | 55 | 2 | 555 | 27 | 8580 | 55 | 7557 | 24 | 84 | 55-05 | 55-05 |
| 675 | 45 | 5 | 055 | 57 | 5580 | 45 | 0587 | 55 | 55 | 55-05 | 55-05 |
| 085 | 85 | 38 | 555 | 07 | 5550 | 85 | 5557 | 55 | 05-55 | 55-55 | 55 |
| 255 | 55 | 4 | 855 | 50 | 5555 | 55 | 4555 | 78-08 | 78-08 | 85 | 85 |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|----------|---------|-----|-------|---------|-----|-------|---------|-----|----|-----|-----|
| २ | ११६ | २०६ | ५ | १३२ | २४३ | १ | १६० | २६२ | ४-७ | १८१-१८४ | २७४ | ३ | २१० | २९० |
| ३ | ११७ | २०७ | ६ | १३३ | " | २-४ | १६१-१६३ | २६४ | ८-९ | १८५-१८६ | २७५ | ४ | २११ | " |
| ४ | ११८ | २०८ | ७ | १३४ | २४४ | ५ | १६४ | २६५ | १० | १८७ | २७६ | ५ | २१२ | २९१ |
| ५ | ११९ | २०९ | ८ | १३५ | " | ६ | १६५ | २६६ | ११ | १८८ | २७६ | ६ | २१३ | २९२ |
| ६ | १२० | २१० | ९-१० | १३६-१३७ | २४५ | ७ | १६६ | " | १२-१३ | १८९-१९० | २७७ | ७ | " | " |
| ७ | १२१ | २११ | ११-१२ | १३८-१३९ | २४६ | ८ | १६७ | " | १४-१५ | १९१-१९२ | २७८ | ८ | २१४ | " |
| ८ | १२२ | २१३ | १३-१५ | १४०-१४२ | २४७ | ९ | १६८ | २६६ | १६ | १९३ | २७९ | ९ | २१५ | " |
| ९ | १२३ | २१४ | १६-१८ | १४३-१४४ | २४८ | १०-१२ | १६९-१७१ | २६७ | १७-१८ | १९४-१९५ | २८० | १० | २१६ | २९३ |
| १० | १२४ | " | १९-२० | १४६-१४७ | २४९ | १२-१५ | १७२-१७४ | २६८ | १९-२० | १९६-१९७ | २८१ | ११ | २१७ | " |
| ११ | १२५ | २१६ | २१-२२ | १४८-१४९ | २५० | १६-१७ | १७५-१७६ | २६९ | २१-२२ | १९८-१९९ | २८२ | १२ | २१८ | २९४ |
| १२ | १२६ | " | २३-२४ | १५०-१५१ | २५१ | १९ | १७७ | २७० | २३-२४ | २००-२०१ | २८३ | १३ | " | " |
| १३ | १२७ | २१७ | २५-२८ | १५२-१५५ | २५२ | १ | १७८ | २७१ | २५-२७ | २०३-२०४ | २८४ | १४ | २१५ | २९५ |
| १४ | १२८ | २१८ | २४-२९-३० | १५६-१५७ | २५३ | २ | १७९ | २७२ | २८-३० | २०६-२०७ | २८५ | १५ | " | " |
| | | | | | | | | | १ | २०८ | २८६ | १५ | २०८ | २०८ |

१७ १८ १९ २० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

२२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८

२१७११२ " " २१८१५ ३०६१६ ३०६१७ " " ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२

२३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२

३१०३६ " " " " " " ३११३७ ३११३८ " " ३१२३९ " " ३१३

२५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६

३१४१० " " ३१४१३ " " " " " " ३१४१६ ३१४१९ " " ३१४२३

२६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८०

३१४१४ ३१४१५ " " " " ३१४१८ " " " " " " ३१४२१ " " " "

२८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४

३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२१५

२१६

२१७

२१८

२१९

२२०

२२१

२२२

२२३

२२४

२२५

२२६

२२७

२२८

२२९

२३०

२३१

२३२

२३३

२३४

२३५

२३६

२३७

२३८

२३९

२४०

२४१

२४२

२४३

२४४

२४५

२४६

२४७

२४८

२४९

२५०

२५१

२५२

२५३

२५४

२५५

२५६

२५७

२५८

२५९

२६०

२६१

२६२

२६३

२६४

२६५

२६६

२६७

२६८

२६९

२७०

२७१

२७२

२७३

२७४

२७५

२७६

२७७

२७८

२७९

२८०

२८१

२८२

२८३

२८४

२८५

२८६

२८७

२८८

२८९

२९०

२९१

२९२

२९३

२९४

२९५

२९६

२९७

२९८

२९९

३००

३०१

३०२

३०३

३०४

३०५

३०६

३०७

३०८

३०९

३१०

३११

३१२

३१३

३१४

३१५

३१६

३१७

३१८

३१९

३२०

३२१

३२२

३२३

३२४

३२५

३२६

३२७

३२८

३२९

३३०

३३१

३३२

३३३

३३४

३३५

३३६

३३७

३३८

३३९

३४०

३४१

३४२

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

[illegible]

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----|--------|-----|-------|----|-----|-------|-----|-------|-----|-----|
| २९ | ५७६ | ४४५४४३ | ५९० | ४४७ | ४ | ६०४ | ४५३१८ | ६१८ | ४५४३२ | ६३२ | ४५५ |
| ३० | ५७७ | ४४६४४ | ५९१ | " | ५ | ६०५ | " | ६१९ | " | ६३३ | " |
| ३१ | ५७८ | " | ५९२ | " | ६ | ६०६ | " | ६२० | " | ६३४ | " |
| ३२ | ५७९ | ४४६४४५ | ५९३ | " | ७ | ६०७ | " | ६२१ | " | ६३५ | " |
| ३३ | ५८० | ४४७४४ | ५९४ | ४४८ | ८ | ६०८ | " | ६२२ | " | ६३६ | " |
| ३४ | ५८१ | " | ५९५ | " | ९ | ६०९ | ४५२२३ | ६२३ | " | ६३७ | " |
| ३५ | ५८२ | " | ५९६ | " | १० | ६१० | ४५३२४ | ६२४ | ४५५३८ | ६३८ | " |
| ३६ | ५८३ | " | ५९७ | " | ११ | ६११ | " | ६२५ | " | ६३९ | " |
| ३७ | ५८४ | " | ५९८ | ४४९१२ | १२ | ६१२ | " | ६२६ | " | ६४० | " |
| ३८ | ५८५ | " | ५९९ | " | १३ | ६१३ | " | ६२७ | " | ६४१ | " |
| ३९ | ५८६ | " | ६०० | " | १४ | ६१४ | ४५४३८ | ६२८ | " | ६४२ | " |
| ४० | ५८७ | " | ६०१ | ४५११५ | १५ | ६१५ | " | ६२९ | " | ६४३ | " |
| ४१ | ५८८ | " | ६०२ | " | १६ | ६१६ | " | ६३० | " | ६४४ | " |
| ४२ | ५८९ | " | ६०३ | " | १७ | ६१७ | " | ६३१ | " | ६४५ | " |

[illegible]

ग्याविहू-
गुहः

॥ ११६ ॥

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

७१६

७१७

७१८

७१९

७२०

७२१

७२२

७२३

७२४

७२५

७२६

७२७

७२८

७२९

१७४३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

७३०

७३१

७३२

७३३

७३४

७३५

७३६

७३७

७३८

७३९

७४०

७४१

७४२

७४३

७४४

१७४३६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

७४४

७४५

७४६

७४७

७४८

७४९

७५०

७५१

७५२

७५३

७५४

७५५

७५६

७५७

७५८

१७७६०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

७५८

७५९

७६०

७६१

७६२

७६३

७६४

७६५

७६६

७६७

७६८

७६९

७७०

७७१

१८११८

१८११९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

७७२

७७३

७७४

७७५

७७६

७७७

७७८

७७९

७८०

७८१

७८२

७८३

७८४

७८५

१८४

१८५

१८५

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

७७७०

७७७१

७७७२

॥ ११६ ॥

[illegible]

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

८५७

८५८

८५९

८६०

८६१

८६२

८६३

८६४

८६५

८६६

८६७

८६८

८६९

८७०

५०२४१

५०२४२

५०२४३

"

"

"

"

"

५०४४१

५०४४२

"

"

"

५०५५३

८७२

८७३

८७४

८७५

८७६

८७७

८७८

८७९

८८०

८८१

८८२

८८३

८८४

५०५५५

"

"

"

"

"

"

५०५६२

५०५६३

"

"

"

"

८८६

८८७

८८८

८८९

८९०

८९१

८९२

८९३

८९४

८९५

८९६

८९७

८९८

५०६६८

"

"

"

"

"

५०८७२

"

"

"

"

"

"

९००

९०१

९०२

९०३

९०४

९०५

९०६

९०७

९०८

९०९

९१०

९११

९१२

५०९८२

"

"

"

"

५१०८७

"

"

"

"

"

"

"

९१४

९१५

९१६

९१७

९१८

९१९

९२०

९२१

९२२

९२३

९२४

९२५

५१०

"

५११

"

"

५१२

"

५१३

"

"

५१५

"

७८७१०

७८७११

७८७१२

७८७१३

७८७१४

७८७१५

७८७१६

७८७१७

७८७१८

७८७१९

७८७२०

७८७२१

७८७२२

७८७२३

॥ ११७ ॥

୮ ୯ ୧୦ ୧୧ ୧୨ ୧୩ ୧୪ ୧୫ ୧୬ ୧୭ ୧୮ ୧୯ ୨୦ ୨୧ ୨୨ ୨୩

୨୮୮ ୨୮୯ ୨୯୦ ୨୯୧ ୨୯୨ ୨୯୩ ୨୯୪ ୨୯୫ ୨୯୬ ୨୯୭ ୨୯୮ ୨୯୯ ୩୦୦ ୩୦୧ ୩୦୨ ୩୦୩

୨୪୪ ୨୪୫ ୨୪୬ ୨୪୭ ୨୪୮ ୨୪୯ ୨୫୦ ୨୫୧ ୨୫୨ ୨୫୩ ୨୫୪ ୨୫୫ ୨୫୬ ୨୫୭ ୨୫୮ ୨୫୯

୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧୦୧୧ ୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧

୨୫୮ ୨୫୯ ୨୬୦ ୨୬୧ ୨୬୨ ୨୬୩ ୨୬୪ ୨୬୫ ୨୬୬ ୨୬୭ ୨୬୮ ୨୬୯ ୨୭୦ ୨୭୧ ୨୭୨ ୨୭୩

୫୧୧୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧

୨୭୮ ୨୭୯ ୨୮୦ ୨୮୧ ୨୮୨ ୨୮୩ ୨୮୪ ୨୮୫ ୨୮୬ ୨୮୭ ୨୮୮ ୨୮୯ ୨୯୦ ୨୯୧ ୨୯୨ ୨୯୩

୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧

୨୯୮ ୨୯୯ ୩୦୦ ୩୦୧ ୩୦୨ ୩୦୩ ୩୦୪ ୩୦୫ ୩୦୬ ୩୦୭ ୩୦୮ ୩୦୯ ୩୧୦ ୩୧୧ ୩୧୨ ୩୧୩

୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୧୧ ୫୧୧୧୧

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

१०००

१००१

१००२

१००३

१००४

१००५

१००६

१००७

१००८

१००९

१०१०

१०११

१०१२

१०१३

५३६३३

३४

५३६३५

३६

५३७३७

३८

५३७३९

३९

५३८४१

४०

५३८४३

४१

५३९४५

४२

५३९४७

४३

१०१४

१०१५

१०१६

१०१७

१०१८

१०१९

१०२०

१०२१

१०२२

१०२३

१०२४

१०२५

१०२६

१०२७

५३९३७

३८

५३९३९

३९

५३९४१

४०

५३९४३

४१

५३९४५

४२

५३९४७

४३

५३९४९

४४

५३९५१

४५

१०२८

१०२९

१०३०

१०३१

१०३२

१०३३

१०३४

१०३५

१०३६

१०३७

१०३८

१०३९

१०४०

१०४१

१०४२

१०४३

५४०५१

५४०५२

५४०५३

५४०५४

५४०५५

५४०५६

५४०५७

५४०५८

५४०५९

५४०६०

५४०६१

५४०६२

५४०६३

५४०६४

५४०६५

५४०६६

१०४४

१०४५

१०४६

१०४७

१०४८

१०४९

१०५०

१०५१

१०५२

१०५३

१०५४

१०५५

१०५६

१०५७

१०५८

१०५९

५४११३

५४११४

५४११५

५४११६

५४११७

५४११८

५४११९

५४१२०

५४१२१

५४१२२

५४१२३

५४१२४

५४१२५

५४१२६

५४१२७

५४१२८

५४१२९

१०६६

१०६७

१०६८

१०६९

१०७०

१०७१

१०७२

१०७३

१०७४

१०७५

१०७६

१०७७

१०७८

१०७९

५५२

५५३

५५४

५५५

५५६

५५७

५५८

५५९

५६०

५६१

५६२

५६३

५६४

५६५

५६६

५६७

५६८

[illegible]

६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८

११४० ११४१ ११४२ ११४३ ११४४ ११४५ ११४६ १२४७ ११४८ ११४९ ११५० ११५१ ११५२

६११२० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ६१११९ ॥ ॥ ॥ ६१२ ॥ ॥ ॥ १० ॥

११५३ ११५५ ११५६ ११५७ ११५८ ११५९ ११६० ११६१ ११६२ ११६३ ११६४ ११६५ ११६६

६१२१३ ६१०१४ ६२११५ ॥ १६ ६२२१७ ॥ १८ ६२३१९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ६२४२३ ६२५२४ ॥ २५ ॥

११६८ ११६९ ११७० ११७१ ११७२ ११७३ ११७४ ११७५ ११७६ ११७७ ११७८ ११७९ ११८०

६२५२७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६२८३५ ६२९३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

११८२ ११८३ ११८४ ११८५ ११८६ ११८७ ११८८ ११८९ ११९० ११९१ ११९२ ११९३ ११९४

६२९४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ६२९४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ६२९५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

११९६ ११९७ ११९८ ११९९ १२०० १२०१ १२०२ १२०३ १२०४ १२०५ १२०६ १२०७

६२९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|-------|-----|-------|------|-----|-----|------|-----|----|------|-----|----|------|-----|
| ५५ | १२१० | ६२९ | १ | १२४२ | ६३० | ११० | १२६५ | ६३९ | १२ | १२७८ | ६४२ | १ | १२९२ | ६५२ |
| ५६ | १२११ | " | २ | १२४३ | " | १११ | १२६६ | " | १३ | १२७९ | " | २ | १२९३ | " |
| ५७ | १२१२ | " | ३-८९ | १२४४ | " | १ | १२६७ | ६४० | १४ | १२८० | " | ३ | १२९४ | " |
| ५८ | १२१३ | " | १०-९९ | १२४५ | " | २ | १२६८ | ६४१ | १५ | १२८१ | " | ४ | १२९५ | " |
| ५९ | १२१४ | " | १०० | १२४६ | ६३४ | ३ | १२६९ | " | १६ | १२८२ | ६४५ | ५ | १२९६ | " |
| ६० | १२१५ | ६२९ | १०१ | १२४६ | ६३५ | ४ | १२७० | " | १७ | १२८३ | " | ६ | १२९७ | ५१ |
| ६१ | १२१६ | " | १०२ | १२४७ | " | ५ | १२७१ | " | १८ | १२८४ | ६४६ | ७ | १२९८ | " |
| ६२ | १२१७ | " | १०३ | १२४८ | " | ६ | १२७२ | ६४२ | १९ | १२८५ | ६४७ | ८ | १२९९ | " |
| ६३} | १२१८} | " | १०४ | १२४९ | ६३६ | ७ | १२७३ | " | २० | १२८६ | " | ९ | १३०० | " |
| ६४} | १२२८} | " | १०५ | १२६० | " | ७ | १२७३ | " | २१ | १२८७ | " | १० | १३०१ | ६५३ |
| १ | १२२९ | " | १०६ | १२६१ | ६३७ | ८ | १२७४ | " | २२ | १२८८ | ६४७ | ११ | १३०२ | " |
| २ | १२३० | " | १०७ | १२६२ | " | ९ | १२७५ | " | २३ | १२८९ | " | १२ | १३०३ | " |
| ३-७६} | १२३१} | ६३० | १०८ | १२६३ | ६३८ | १० | १२७६ | " | २४ | १२९० | ६४८ | १३ | १३०४ | " |
| ७७-८६} | १२४१} | " | १०९ | १२६४ | " | ११ | १२७७ | " | २५ | १२९१ | " | १४ | १३०५ | " |

१३०६

६५१२९

१३२०

६५५७३

१३३४

६५८५७

१३४८

६६११०

१३६२

६६४

१३०७

६५४३०

१३२१

७४७

१३३५

५८

१३४९

६६२११

१३६३

५

१३०८

३१

१३२२

७५

१३३६

५९

१३५०

७२

१३६४

११

१३०९

३२

१३२३

७६

१३३७

६०

१३५१

७३

१३६५

११

१३१०

३३

१३२४

७७

१३३८

६१

१३५२

७४

१३६६

११

१३११

३४

१३२५

७८

१३३९

६१

१३५३

७५

१३६७

११

१३१२

३५

१३२६

७९

१३४०

६५९

१३५४

७६

१३६८

११

१३१३

३६

१३२७

८०

१३४१

६५

१३५५

७७

१३६९

११

१३१४

३७

१३२८

८१

१३४२

६५

१३५६

७८

१३७०

११

१३१५

३८

१३२९

८२

१३४३

६५

१३५७

८०

१३७१

११

१३१६

३९

१३३०

८३

१३४४

६५

१३५८

८०

१३७२

११

१३१७

४०

१३३१

८४

१३४५

६५

१३५९

८१

१३७३

११

१३१८

४१

१३३२

८५

१३४६

६५

१३६०

८१

१३७४

११

१३१९

४२

१३३३

८६

१३४७

६५

१३६१

८२

१३७५

११

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | |
|----|------|--------|-----|------|------|-----|------|---------|------|------|------|-----|
| ७४ | १४४७ | ६८८ | ८८ | १४३१ | ६९११ | १०२ | १४७५ | ६९१११६ | १४८९ | ६९४१ | १४०३ | ६९५ |
| ७५ | १४४८ | " | ८९ | १४६२ | " | १०३ | १४७६ | " | १४९० | " | १४०४ | " |
| ७६ | १४४९ | " | ९० | १४६३ | " | १०४ | १४७७ | " | १४९१ | " | १४०५ | " |
| ७७ | १४५० | ६८९ | ९१ | १४६४ | " | १०५ | १४७८ | " | १४९२ | ६९४४ | १४०६ | " |
| ७८ | १४५१ | ६९० | ९२ | १४६५ | " | १०६ | १४७९ | ६९३१२० | १४९३ | " | १४०७ | " |
| ७९ | १४५२ | " | ९३ | १४६६ | " | १०७ | १४८० | " | १४९४ | " | १४०८ | " |
| ८० | १४५३ | " | ९४ | १४६७ | " | १०८ | १४८१ | " | १४९५ | " | १४०९ | " |
| ८१ | १४५४ | " | ९५ | १४६८ | " | १०९ | १४८२ | " | १४९६ | " | १४१० | " |
| ८२ | १४५५ | " | ९६ | १४६९ | " | ११० | १४८३ | " | १४९७ | " | १४११ | " |
| ८३ | १४५६ | " | ९७ | १४७० | " | १११ | १४८४ | " | १४९८ | " | १४१२ | " |
| ८४ | १४५७ | " | ९८ | १४७१ | " | ११२ | १४८५ | " | १४९९ | " | १४१३ | " |
| ८५ | १४५८ | " | ९९ | १४७२ | " | ११३ | १४८६ | " | १५०० | ६९४५ | १४१४ | " |
| ८६ | १४५९ | " | १०० | १४७३ | " | ११४ | १४८७ | ६९४४१२७ | १५०१ | " | १४१५ | " |
| ८७ | १४६० | ६९११०१ | १०१ | १४७४ | " | ११५ | १४८८ | " | १५०२ | " | १५१६ | " |

७ उत्तरा-
वृद्धवृद्ध-
सूचा.

[illegible]

शु :

॥ १२२ ॥

७ उत्तरा०
बृहद०
सूचा०

॥ १२२ ॥

| | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-----|------|-----|-----|------|-----|-----|------|-----|-------|----|
| २१५ | १५८८ | ७०३ | २२८ | १६०२ | ७०३ | २४२ | १६१६ | ७०४ | २५६ | १६१० | ७०७ | १ | ३ |
| २१५ | १५८९ | ७०३ | २२९ | १६०३ | " | २४३ | १६१७ | " | २५७ | १६११ | " | २ | ४ |
| २१६ | १५९० | " | २३० | १६०४ | " | २४४ | १६१८ | ७०५ | २५८ | १६१२ | ७०८ | ३ | ५ |
| २१७ | १५९१ | " | २३१ | १६०५ | " | २४५ | १६१९ | " | २५९ | १६१३ | " | ४ | " |
| २१८ | १५९२ | " | २३२ | १६०६ | " | २४६ | १६२० | " | २६० | १६१४ | ७०९ | ५ | ६ |
| २१९ | १५९३ | " | २३३ | १६०७ | " | २४७ | १६२१ | " | २६१ | १६१५ | " | ६-९ | ७ |
| २२० | १५९४ | " | २३४ | १६०८ | " | २४८ | १६२२ | " | २६२ | १६१६ | " | ६-९ | ८ |
| २२१ | १५९५ | " | २३५ | १६०९ | " | २४९ | १६२३ | " | २६३ | १६१७ | " | १०-१२ | ९ |
| २२२ | १५९६ | " | २३६ | १६१० | " | २५० | १६२४ | " | २६४ | १६१८ | " | १३-२५ | १० |
| २२३ | १५९७ | ७०३ | २३७ | १६११ | " | २५१ | १६२५ | " | २६५ | १६१८ | " | २६-२८ | ११ |
| २२४ | १५९८ | " | २३८ | १६१२ | " | २५२ | १६२६ | " | २६६ | १६१९ | ७०९ | २९ | १५ |
| २२५ | १५९९ | " | २३९ | १६१३ | " | २५३ | १६२७ | " | २६७ | १६२० | ७१२ | ३० | २१ |
| २२६ | १६०० | " | २४० | १६१४ | " | २५४ | १६२८ | " | २६८ | १६२१ | " | ३१ | २३ |
| २२७ | १६०१ | " | २४१ | १६१५ | " | २५५ | १६२९ | " | २६९ | १६२२ | " | ३२ | " |

इति श्रीमद्बृहदारण्यके
बृहती खण्डाष्टादशोऽध्यायः

[illegible]

[illegible]

| | | | | | | | | | |
|-------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| १) | २) | ३) | ४) | ५) | ६) | ७) | ८) | ९) | १०) |
| १८१ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
| ६६१११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
| ५७० | ५७१ | ५७२ | ५७३ | ५७४ | ५७५ | ५७६ | ५७७ | ५७८ | ५७९ |
| ५८० | ५८१ | ५८२ | ५८३ | ५८४ | ५८५ | ५८६ | ५८७ | ५८८ | ५८९ |
| ५९० | ५९१ | ५९२ | ५९३ | ५९४ | ५९५ | ५९६ | ५९७ | ५९८ | ५९९ |
| ६०० | ६०१ | ६०२ | ६०३ | ६०४ | ६०५ | ६०६ | ६०७ | ६०८ | ६०९ |
| ६१० | ६११ | ६१२ | ६१३ | ६१४ | ६१५ | ६१६ | ६१७ | ६१८ | ६१९ |
| ६२० | ६२१ | ६२२ | ६२३ | ६२४ | ६२५ | ६२६ | ६२७ | ६२८ | ६२९ |
| ६३० | ६३१ | ६३२ | ६३३ | ६३४ | ६३५ | ६३६ | ६३७ | ६३८ | ६३९ |
| ६४० | ६४१ | ६४२ | ६४३ | ६४४ | ६४५ | ६४६ | ६४७ | ६४८ | ६४९ |
| ६५० | ६५१ | ६५२ | ६५३ | ६५४ | ६५५ | ६५६ | ६५७ | ६५८ | ६५९ |
| ६६० | ६६१ | ६६२ | ६६३ | ६६४ | ६६५ | ६६६ | ६६७ | ६६८ | ६६९ |
| ६७० | ६७१ | ६७२ | ६७३ | ६७४ | ६७५ | ६७६ | ६७७ | ६७८ | ६७९ |
| ६८० | ६८१ | ६८२ | ६८३ | ६८४ | ६८५ | ६८६ | ६८७ | ६८८ | ६८९ |
| ६९० | ६९१ | ६९२ | ६९३ | ६९४ | ६९५ | ६९६ | ६९७ | ६९८ | ६९९ |
| ७०० | ७०१ | ७०२ | ७०३ | ७०४ | ७०५ | ७०६ | ७०७ | ७०८ | ७०९ |
| ७१० | ७११ | ७१२ | ७१३ | ७१४ | ७१५ | ७१६ | ७१७ | ७१८ | ७१९ |
| ७२० | ७२१ | ७२२ | ७२३ | ७२४ | ७२५ | ७२६ | ७२७ | ७२८ | ७२९ |
| ७३० | ७३१ | ७३२ | ७३३ | ७३४ | ७३५ | ७३६ | ७३७ | ७३८ | ७३९ |
| ७४० | ७४१ | ७४२ | ७४३ | ७४४ | ७४५ | ७४६ | ७४७ | ७४८ | ७४९ |
| ७५० | ७५१ | ७५२ | ७५३ | ७५४ | ७५५ | ७५६ | ७५७ | ७५८ | ७५९ |
| ७६० | ७६१ | ७६२ | ७६३ | ७६४ | ७६५ | ७६६ | ७६७ | ७६८ | ७६९ |
| ७७० | ७७१ | ७७२ | ७७३ | ७७४ | ७७५ | ७७६ | ७७७ | ७७८ | ७७९ |
| ७८० | ७८१ | ७८२ | ७८३ | ७८४ | ७८५ | ७८६ | ७८७ | ७८८ | ७८९ |
| ७९० | ७९१ | ७९२ | ७९३ | ७९४ | ७९५ | ७९६ | ७९७ | ७९८ | ७९९ |
| ८०० | ८०१ | ८०२ | ८०३ | ८०४ | ८०५ | ८०६ | ८०७ | ८०८ | ८०९ |
| ८१० | ८११ | ८१२ | ८१३ | ८१४ | ८१५ | ८१६ | ८१७ | ८१८ | ८१९ |
| ८२० | ८२१ | ८२२ | ८२३ | ८२४ | ८२५ | ८२६ | ८२७ | ८२८ | ८२९ |
| ८३० | ८३१ | ८३२ | ८३३ | ८३४ | ८३५ | ८३६ | ८३७ | ८३८ | ८३९ |
| ८४० | ८४१ | ८४२ | ८४३ | ८४४ | ८४५ | ८४६ | ८४७ | ८४८ | ८४९ |
| ८५० | ८५१ | ८५२ | ८५३ | ८५४ | ८५५ | ८५६ | ८५७ | ८५८ | ८५९ |
| ८६० | ८६१ | ८६२ | ८६३ | ८६४ | ८६५ | ८६६ | ८६७ | ८६८ | ८६९ |
| ८७० | ८७१ | ८७२ | ८७३ | ८७४ | ८७५ | ८७६ | ८७७ | ८७८ | ८७९ |
| ८८० | ८८१ | ८८२ | ८८३ | ८८४ | ८८५ | ८८६ | ८८७ | ८८८ | ८८९ |
| ८९० | ८९१ | ८९२ | ८९३ | ८९४ | ८९५ | ८९६ | ८९७ | ८९८ | ८९९ |
| ९०० | ९०१ | ९०२ | ९०३ | ९०४ | ९०५ | ९०६ | ९०७ | ९०८ | ९०९ |
| ९१० | ९११ | ९१२ | ९१३ | ९१४ | ९१५ | ९१६ | ९१७ | ९१८ | ९१९ |
| ९२० | ९२१ | ९२२ | ९२३ | ९२४ | ९२५ | ९२६ | ९२७ | ९२८ | ९२९ |
| ९३० | ९३१ | ९३२ | ९३३ | ९३४ | ९३५ | ९३६ | ९३७ | ९३८ | ९३९ |
| ९४० | ९४१ | ९४२ | ९४३ | ९४४ | ९४५ | ९४६ | ९४७ | ९४८ | ९४९ |
| ९५० | ९५१ | ९५२ | ९५३ | ९५४ | ९५५ | ९५६ | ९५७ | ९५८ | ९५९ |
| ९६० | ९६१ | ९६२ | ९६३ | ९६४ | ९६५ | ९६६ | ९६७ | ९६८ | ९६९ |
| ९७० | ९७१ | ९७२ | ९७३ | ९७४ | ९७५ | ९७६ | ९७७ | ९७८ | ९७९ |
| ९८० | ९८१ | ९८२ | ९८३ | ९८४ | ९८५ | ९८६ | ९८७ | ९८८ | ९८९ |
| ९९० | ९९१ | ९९२ | ९९३ | ९९४ | ९९५ | ९९६ | ९९७ | ९९८ | ९९९ |
| १००० | १००१ | १००२ | १००३ | १००४ | १००५ | १००६ | १००७ | १००८ | १००९ |

॥ इत्युत्तराध्यायने भाष्य-

भाषासूचा ॥

प्रसिद्धाभाषा ॥

॥ इति यथासंभवं नन्द्युयोगावस्यकौषीयिष्युक्तिदशवेकालिक्रिण्डनिर्युक्त्युत्तरा-
 द्यवसानां सप्तदशगयानिर्युक्तिभाष्यप्रसिद्धाभाषायां वृहती अङ्कसूचा ॥

नन्यादिसप्तसूत्र्या लघ्वी अङ्गशुद्धिः

| मुद्रिताः | हेयाः | पत्राः | मुद्रिताः | हेयाः | पत्राः | मुद्रिताः | हेयाः | पत्राः | मुद्रिताः | हेयाः | पत्राः |
|----------------------------|-------|--------|---------------------------|-----------------------|--------|--------------------------------|-------------------------------|--------|-----------|-------|--------|
| नन्दी० घनाङ्क० | | | अत ऊर्ध्वं यावदष्टमसप्तति | | | अत ऊर्ध्वं यावदेकोनचत्वारिं- | | | | | |
| १४-१६ १८-२० १०७-११३ | | | गाथाद्वयश्रुतिर्द्वेया | | | श्रुततमेकसत्राद्वाहानिर्द्वेया | | | | | |
| २१-२६ क २१-२६ १३०-४४ | | | | ८० | १८४ | | १३८ | १८३ | | | |
| त २६-२७ २७-२८ १६८ | | | | ८१ | १८७ | | १४२-४८१३९-४५१९१-२२७ | | | | |
| अत ऊर्ध्वमासमोरेकसत्राङ्क- | | | | ८२-८४ | २३७ | | | | | | |
| श्रुतिर्द्वेया ॥ | | | | ८५ | २४६ | | १५० | १४६ | २४१ | | |
| ५८ ५९ २४९ | | | | ८६-९० | २४९ | | ॥ तत ऊर्ध्वमासमोरेकसत्राङ्क- | | | | |
| ॥ अप नन्दी० घ० गाथाङ्कः | | | | इति नन्दी | | | चतुष्टयहानिर्द्वेया ॥ इत्यनु० | | | | |
| त ५७-५८ ५८-५९ १०८-१०९ | | | | अथ अनु० सत्राङ्कः | | | | | | | |
| क ५९ ६० १३९ | | | | क ७२ ७३ | ५१ | | अथ अनु० घ० गाथाङ्कः | | | | |
| त ५९-६० ६१-६२ १४४ | | | | ख ७२-१०२ ७२-१०२ ७१-८७ | | | | | | | |

| सूरिकाण्डः | पैसाङ्कः | पन्नाङ्कः/सूरिकाण्डः | शेषाङ्कः | पन्नाङ्कः | सूरिकाण्डः | शेषाङ्कः | पन्नाङ्कः/सूरिकाण्डः | शेषाङ्कः | पन्नाङ्कः/सूरिकाण्डः | शेषाङ्कः |
|------------|----------|----------------------|----------|-----------|------------|----------|----------------------|----------|----------------------|----------|
| १ | १५ | ९३ | ८८ | " | १ | १०३ | १७५ | १ | १ | २३२ |
| २ | १६ | १०२ | ८९-९० | " | १-३ | १०४-१०६ | १७९ | १-३ | १२०-१२२ | " |
| ३ | १७ | १०५ | ९१ | १४७ | १ | १०७ | १८१ | १ | १२३ | २४८ |
| १-६ | १८-२३ | १११-११२ | ९२ | १४८ | १ | १०८ | " | १ | १२४ | २५१ |
| १ | २४ | १२० | ९३ | १५४ | १ | १०९ | १८३ | १ | १२५ | २५२ |
| १-१२ | २५-५६ | १२७-१३१ | ९४ | " | १ | ११० | " | १-६ | १२६-१३१ | २५५-२५६ |
| १-६ | ५७-६२ | १३३-१३४ | ९५ | १५६ | १ | १११ | १८८ | १ | १३२ | २५८ |
| १-२० | ६३-८२ | १३५-१४० | ९६ | १५७ | २ | ११२ | " | २ | १३३ | " |
| १ | ८३ | १४२ | ९७ | " | १ | ११३ | १९३ | १ | १३४ | २६१ |
| २ | ८४ | " | ९८ | " | १ | ११४ | २१२ | १-६ | १३५-१४० | २६४-२६७ |
| १ | ८५ | १४५ | ९९ | १६० | १ | ११५ | " | १ | १४१ | २६८ |
| १ | ८६ | " | १०० | १६१ | २ | ११६ | " | २ | १४२ | २६८ |
| २ | ८७ | " | १०१ | १६८ | १ | ११७ | २१५ | " | | |
| | | | १०२ | " | १ | ११८ | " | | | |

इति अनु० सू० गाथाङ्कः

आमशके प्राणि ५४ ॥

य० गा०-

१-२ ८-९ ७८३
 १-४ १०-१३ ७८८
 १-५ १४-१८ ७८९
 १-३ १९-२१ ८३१

॥ आप० निर्युक्तिः ॥

१९५ १९५ ४४८

{ ९९६ }
 { ९९७ }
 { ९९८ }
 { ९९९ }

९९६- { १०००- }
 ९९९ { १००३ }

{ १००४ }
 { १००५ }
 { १००६ }

४

१००७
 १००८- ४५०
 १००९- ४५०
 १०१३
 { १०१४ }
 { १०१५ }
 { १०१६ }
 { १०१७ }

४

१००६ १०१८ ४५०
 ॥ अत ऊर्ध्वं त्रिचत्वारिंशदधि-
 कमेकसहस्रं यावद् द्वादशद्वाद-
 शद्वाद्भिर्निर्युक्तौ द्वेया
 १०१५ १०५६ ४८३

॥ अत ऊर्ध्वं यावद् द्वयधिक-
 मेकादशशतमेकादशकादशद्वाद्भि-
 र्द्विर्निर्युक्तौ द्वेया

११०२ रा १११४ ५११
 ॥ अत ऊर्ध्वं यावद् द्विचत्वारिं-
 शदधिकं द्वादशशतं द्वादश-
 द्वादशद्वाद्भिर्निर्युक्तौ द्वेया

१ १२५५ ५५७
 १ १२५६ ५५७

१२४३ १२५७ ५६२
 अत ऊर्ध्वं यानदेकसप्तत्यधिकं-
 द्वादशशतं चतुर्दशचतुर्दशद्वाद्भि-
 र्द्विर्निर्युक्तौ द्वेया

१-३२ { १२८६- } ६१९-
 १२३७ } ६२९

१२७२ १३१८ ६२९
 १२७३ १३१९ ॥
 ३३१ { १३२०- } ६३०-
 ८३ { १३७० } ६४४ }

१२७४ १३७१ ६४४
 अत ऊर्ध्वं यावदेकपञ्चदश-
 पञ्चदशशतं (१५६१) सप्तत्रिं-
 त्यङ्कः (९७) द्वादिर्निर्युक्तौ द्वेया

१५६३ १६५९ ८४०
 ॥ अत ऊर्ध्वमासमासेः पदान-
 त्यङ्कः (९६) द्वादिर्निर्युक्तौ द्वेया

१६६३ १७१९ ८६४
 इति निर्युक्तिः ॥
 - आप० भाष्ये
 १८५० रा १८६ ४७६

| | | | | | | | | |
|----------------------------|--------|------|-------|-----|-----|-------|-----|----------------------------|
| १८६-८९ १८७-९० | १७७०-१ | २ | ७ | ६५० | २ | १५ | ६५७ | १८६-८९ १८७-९० |
| १०४४ | १९१ | २ | ८ | " | ३ | ३६ | ६५८ | १०४४ |
| १९०- | १९२- | २ | ९ | " | १ | १७ | ६५९ | १९०- |
| २०६ | २०८ | २ | १० | " | १-५ | २८-४२ | ६६० | २०६ |
| २०५ | २०९ | २ | ११ | " | २ | ४३ | ६६१ | २०५ |
| अत ऊर्ध्वमासमाप्तैरेकाङ्क- | | २ | १२ | " | २ | ४४ | ६६२ | अत ऊर्ध्वमासमाप्तैरेकाङ्क- |
| वृद्धिर्मास्ये ऋष्या ॥ | | २ | १३ | " | २ | ४५ | ६६३ | वृद्धिर्मास्ये ऋष्या ॥ |
| ॥ अप सप्तमहणिः ॥ | | २ | १४ | " | २-३ | ४६-४८ | ६६४ | ॥ अप सप्तमहणिः ॥ |
| १ | १ | २ | १५ | " | २-३ | ४७-५० | ६६५ | १ |
| १ | २ | २ | १६ | " | २-३ | ५१-६५ | ६६६ | १ |
| १ | ३ | २ | १७ | " | ३ | ६६ | ६६७ | १ |
| १ | ४ | २-३ | १८-२० | " | ३ | ६७ | ६६८ | १-३ |
| १ | ४ | १-१० | २१-३० | " | ३ | ६८ | ६६९ | १-१० |
| १ | ५ | १-३ | ३१-३३ | " | २ | ६९ | ६७० | १-३ |
| १ | ६ | १ | ३४ | " | ३ | ७० | ६७१ | १ |

| | | | | |
|-----|---|----|-----|-----|
| ६५७ | १ | ७१ | ७२७ | ६५७ |
| ६५८ | १ | ७२ | ७२८ | ६५८ |
| " | | | | " |
| " | | | | " |
| ६६० | १ | ७३ | ७३० | ६६० |
| " | | | | " |
| " | | | | " |
| " | | | | " |
| ६६२ | १ | ७४ | ७४२ | ६६२ |
| ६६३ | २ | ७५ | ७५३ | ६६३ |
| " | | | | " |
| " | | | | " |
| ६६४ | १ | ७६ | ७६४ | ६६४ |
| ६६५ | २ | ७७ | ७७५ | ६६५ |
| " | | | | " |
| ७२५ | १ | ७८ | ७८५ | ७२५ |
| " | | | | " |
| " | | | | " |

दश० सूत्रगाथा

१-११ ६-१६ ८५-१६
१-१५ १७-३१ ११६-११८
१-२८ ३२-५१ १५६-१५९
१-१०० ६०-१५१ १६३-१८०
१-५० १६०-२०१ १८२-१९०
१-६८ २१० २७७ १९१-२०६
१-५७ २७८-३३४ २१३-२३३
१-६४ ३३५-३९८ २२७-२३८
१-१७ ३९९-४१५ २४२-२४५
१-२३ ४१६-४३८ २४७-२५१
१-१५ ४३९-४५३ २५२-२५४
१-७ ४५४ ४६० २५५-२५८
१-२१ ४६१-४८१ २६४-२६८
१-१८ ४८२-४९९ २७४-२७७
१-१६ ५००-५१५ २७८-२८२

दश० साव्यभाषा ५-१२०

८४ छा ८५ ५६
८५ ८६ ३
८६-१४९ ८७-१५० ५६-७९
१४९ १५१ ८०
१५० १५२ ८२

॥ अत ऊर्ध्वमासमासोरङ्कद्वय-
वृद्धिर्निष्क्रियायासु द्वेया ॥

पिण्ड०
मान्वा०
१५ १८
२५ ३८
॥ अत ऊर्ध्वमासमासोरङ्कनवक-
हानिर्माषे द्वेया ॥

उत्तरा० सूत्र०

१ १ ७९
१ २ ४२२
१-१० ३-१२ ४२३-२७
१ १३ ५७१
० १४ ५७३
१ १५ ५७३

॥ अत ऊर्ध्वमासमासोः पञ्चद-

श्राङ्क वृद्धिः द्वये द्वेया ॥

स० गा०
१ ४९ ८३
॥ अत ऊर्ध्वं पट्वत्वारिंशत्
शावदष्टचत्वारिंशदङ्कवृद्धिः
सूत्रगाथासु द्वेया ॥

१-२० ९५-११४ १८१-१८८
१-१३ ११५-१२७ १९१-२२७
१-३२ १२८-१५९ २४१-२५४
१-१९ १६०-१७७ २६२-२७०
१-३० १७८-२०७ २७२-२८५
१-२० २०८-२२७ २८९-२९८
१-८ २२८-२३५ ३०६-३०८
१० क २३६ ३०९
१० ख २३७ ३
११-६२ २३८-२८९ ३१०-३२०
१-३७ २९०-३२६ ३३३-३४१
१-३२ ३२७-३५८ ३४४-३५३
१-४० ३५९-४०५ ३५७-३७३
१-३५ ४०६-४४० ३७६-३९३
१-४८ ४४१-४८८ ३९६-४०९

ने. अ. जा.

जो.

द. सि. ज.

॥ १२८ ॥

| | | | | | | | | | | |
|-------|---------|---------|------|---------|---------|-------|-----------|------|---------|--------|
| ५०-५४ | ४८९-४९३ | ४९१ | १-२७ | १२१-१२७ | ५१४-५२० | १०-११ | १२४७-१२५४ | २६६ | १६४० | ७१२ |
| १-१६४ | ४९४-५०१ | ४९४-४९९ | १-२१ | १२१-१२७ | ५१४-५२० | १०० | १२५५ | ६३४ | | |
| १-१७५ | ५१०-५२६ | ५२०-५३० | २-१ | १२१-१२७ | ५२० | १०१- | १२५६- | ६३५- | | |
| १-२१ | ५२७-५४७ | ५३२-५३६ | २-२ | १२१-१२७ | ५३२-५३६ | १११- | १२६६- | ६३९ | | |
| १-५३ | ५४८-६०० | ५३८-५४९ | १-५ | १२१-१२७ | ५३८-५४९ | १-२६ | १२६७- | ६४०- | ३-१६ | २५७ |
| १-९८ | ६०१-६९८ | ५५१-५६६ | १-९ | १२१-१२७ | ५५१-५६६ | १-२६ | १२९१- | ६४८ | १७-३० | २५९ |
| १-६० | ६९९-७५८ | ५७१-५८१ | १-६ | १२१-१२७ | ५७१-५८१ | १-६१ | १२९२- | ६४८- | ३१-४५ | ६६९ |
| १-१० | ७५९-७६८ | ५८२ | १ | १२१-१२७ | ५८२ | १-६१ | १३५२- | ६६२ | | |
| १५-२७ | ७६९-७८१ | ५८५ | १ | १२१-१२७ | ५८५ | १-२२ | १३५३- | ६६३- | | |
| २४ | ७८२ | ५८७ | २ | १२१-१२७ | ५८७ | १-२२ | १३७३- | ६६४ | | |
| १-४९ | ७८३-८३१ | ५८९-५९७ | १-४ | १२१-१२७ | ५८९-५९७ | १-५९ | १३७४- | ६६९- | १२०-३ | १२७- |
| १-६८ | ८३२-८९४ | ५९८ | १ | १२१-१२७ | ५९८ | १-५९ | १४३२- | ६८३ | १५९ | १४५ |
| १५८ | ९०० | ५०९ | १ | १२१-१२७ | ५९९ | ० | १४३३- | ६८४ | १६०-३- | १५१- |
| ६९- | ९०१- | ५०९- | १ | १२१-१२७ | ५९९ | ६० | १४३४- | ६८५ | ३२७ | ३५४ |
| ८८ | ९२० | ५१२ | १ | १२१-१२७ | ५९९ | ११- | १४३५- | ६८६ | ३८२-३५३ | ३७४-८२ |

॥ १२८ ॥

अथ अर्धमासमाहोः (१२७४)
अथ अर्धमासमाहोः (१२७४)
अथ अर्धमासमाहोः (१२७४)

लघ्वी
अंकशुद्धिः

इति उत्तरां. सू० गा०
अथोत्तरां. भाष्यं ॥

इति उत्तरां भाष्यगाथा०
अथ उत्तरां नि० गा०

॥ अत ऊर्ध्वमासमासे-

रङ्गप्रवृद्धिर्निधुक्ति-

गायासु ज्ञेया ॥

॥ इत्युत्तरा० ॥

| | | | | | | | | | |
|------|----|------|------|-------|------|------|------|------|------|
| ३५५ | रा | ३५४ | ३५२ | ३८७- | ३८६- | ३३१- | ४०८- | ४१०- | ४५२- |
| ३५६- | क | ३५५- | ३५२- | ४०१ क | ४०० | ४४० | ४२५ | ४२७ | ४६७ |
| ३७१ | क | ३७८ | ४१३ | ४०१ ख | ४०१ | ४४१ | ४२२ | ४२८ | ४७१ |
| ३७९ | ख | ३७९ | ४२० | ४०२- | ४०२- | ४४२- | ४२३- | ४२९- | ४८२- |
| ३८०- | | ३८०- | ४२०- | ४०८ | ४०८ | ४५० | ४३९ | ४४५ | ४८८ |
| ३८५ | | ३८५ | ४२२ | ४०७ | ४०९ | ४५२ | ४४३ | ४४६ | ४९६ |

[illegible]

| | | | | | | | | | |
|-----------------------------|------|-----|--------------|------------------------------|-------------------|------|------|---------------------|--------------------|
| ध्यानावकम् | १०५ | ५११ | अनायतनवर्जनं | ७८५ | २३४ | नम्) | २७७५ | २७० | २०६ |
| पारिष्ठापनिकानि० | १३७० | २०६ | ६४४ | प्रतिषेवणाद्वारम् | ७८९ | २६४ | ७ | वाक्यशुद्धयव्ययनम् | ३३४५ २९४ २२३ |
| संग्रहणी | ७१ | ७२७ | ७२७ | आलोचनाद्वारं | ७९२ | २२५ | ८ | आचारप्रणियध्वयनम् | ३९८५ ३१० २३८ |
| योगसंग्रहनिर्णयः | १४१७ | २१६ | ७२४ | विस्तृष्टिद्वारम् | ८१३ | २२७ | ९ | विनयाध्ययनम् | |
| अस्वाध्यायनियुक्तिः | १५१४ | २३१ | ७५९ | ५ द्वायैकालिकं | | | | | |
| ५ कायोत्सर्गाध्ययनम् | | | | १ हुमयुषिकाव्ययनम् | ५५१५३ | ८२ | | १ प्रथम चदेशकः | ४१५५ ३२९ २४५ |
| सू. ३५ नि. १६५१ मा. २४१ | ८०० | | | २ क्षामण्यपूर्विकाव्ययनम् | १६५१७९ | ९९ | | २ द्वितीय चदेशकः | ४३८५ २५१ |
| ६ प्रत्याख्यानाध्ययनम् | | | | ३ क्षुद्रिकाचारकथा | ३१५२१७ | ११८ | | ३ तृतीय चदेशकः | ४५३५ २५४ |
| सू. ५४१२१५ नि. १७१९ मा. २५७ | | | | ४ यद्वर्जनिष्काव्ययनम् | सू. १५१५९५ नि. | | | ४ चतुर्थ चदेशकः | सू. २०॥४६०५ २५८ |
| ८६६ प. | | | | | | | | १० सनिष्कव्ययनम् | ४८१५ ३६० २६८ |
| ४ ओषनियुक्तिः | | | | ५ सिण्डैपञ्चाध्ययनम् | २३५ मा. ६० प. १६० | | | ११ रतिवाक्यचूडा | सू. २१४९९५ ३६९ २७७ |
| प्रतिषेवणादीनि द्वाराणि | ३३० | १९१ | १२७ | १ प्रथम चदेशः | १५९५ २३६ ६१ १८० | | | १२ विविक्तचर्याचूडा | ५१५५ ३७३ ६३ २८४ |
| सिण्डद्वारं | ६६६ | ३१२ | २०७ | २ द्वितीय चदेशः | २०९५ २४६ ६२ १९० | | | | |
| उपनिहितपुणं | ७६३ | ३२२ | २२२ | ६ महाचारकथा (धर्मोपकामाध्यय- | | | | | |

६ पिंडनियुक्तिः

१ सिण्डविरूपणम् ७२ १५ २८
 वि. मा. प.

२ अमरदोषाः

३ असादनदोषाः

४ एवमदोषाः

५ प्रातिपददोषाः

७ अयोचरायनानि

१ ४८० विमयायनम्

२ ९४० परीपदायनम्

३ ११४० चतुर्दशायनम्

४ १२७० अस्तरुवायनम्

५ १५९० अस्तरुवायनम्

६ १७७० अस्तरुवायनम्

७ २०७० अस्तरुवायनम्

८ २२७० अस्तरुवायनम्

९ २४७० अस्तरुवायनम्

१० २६७० अस्तरुवायनम्

११ २८७० अस्तरुवायनम्

१२ ३०७० अस्तरुवायनम्

३० ११९९

३१ १२००

३२ १२०१

३३ १२०२

३४ १२०३

३५ १२०४

३६ १२०५

३७ १२०६

३८ १२०७

३९ १२०८

४० १२०९

४१ १२१०

४२ १२११

४३ १२१२

४४ १२१३

४५ १२१४

४६ १२१५

३०९ ३४१

३१० ३४२

३११ ३४३

३१२ ३४४

३१३ ३४५

३१४ ३४६

३१५ ३४७

३१६ ३४८

३१७ ३४९

३१८ ३५०

३१९ ३५१

३२० ३५२

३२१ ३५३

३२२ ३५४

३२३ ३५५

३२४ ३५६

३२५ ३५७

३२६ ३५८

३२७ ३५९

३२८ ३६०

३२९ ३६१

३३० ३६२

३३१ ३६३

३३२ ३६४

३३३ ३६५

३३४ ३६६

३३५ ३६७

३३६ ३६८

३३७ ३६९

३३८ ३७०

३३९ ३७१

३४० ३७२

३४१ ३७३

३४२ ३७४

३४३ ३७५

३४४ ३७६

३४५ ३७७

३४६ ३७८

३४७ ३७९

३४८ ३८०

३४९ ३८१

३५० ३८२

३५१ ३८३

३५२ ३८४

३५३ ३८५

३५४ ३८६

३५५ ३८७

३५६ ३८८

३५७ ३८९

३५८ ३९०

३५९ ३९१

३६० ३९२

३६१ ३९३

३६२ ३९४

३६३ ३९५

३६४ ३९६

३६५ ३९७

३६६ ३९८

३६७ ३९९

३६८ ४००

३६९ ४०१

३७० ४०२

३७१ ४०३

३७२ ४०४

३७३ ४०५

३७४ ४०६

३७५ ४०७

अथि उवाचभयनानि-

॥ १३० ॥

नन्यादिसप्तसूत्र्या वृहद्विषयानुक्रमः ।

नन्दीप्रवृद्धविषयानुक्रमः ।

॥ तीर्थकराणधरादावलिका ॥

| | | |
|--|----|----|
| गाणदि | पय | १ |
| (१-२) लिततद्धवनस्तुतिः | | |
| १॥ भगवत्पंचस्तुतिः (जीव- सिद्धिः, शान्प्रमाण्य, सत्ता- नुनात्तनिएसः, भवविमोच- नलम्बनम्) | (२ | १५ |
| २॥ वद्धमानस्तानिननरकारः (वेदापौरुषेयवनिरासः) | | १५ |
| ३॥ श्रीमहावीरस्यातिदयद्वारेण स्तुतिः । (सर्वसवाद्, रगादेस्तन्त- क्षयः, नैतल्यनिएसः, सा- | | २३ |

ब्रह्मयुक्तिनिएसः, भेदाभेद-
सिद्धिः)

४-१७॥ ओसहस्र नगर-बन्ध-रय-

पद्म-चन्द्र-सूर्य-समुद्र-नैरुभि-

रूपमा

१८-१९॥ तीर्थकपवलिका

२०-२१॥ गणधरावलिका

२२॥ शासनस्तुतिः

२३-४२॥ सवित्रावलिका

४३॥ कृतकुतनमस्तारः ज्ञानपर्यन्त-

प्ररूपणां प्रतिजानीते

४४॥ शैलधनकुटादिभिर्गोम्यायो-

न्यपर्यन्त । (दृष्टान्ताः)

५४

४५-४७॥ विशाविहृविंदग्यपर्यन्तः ६३-६४

सु.१ ज्ञानभेदाः (५) (भेदपञ्च-

कतल्लमसिद्धिः)

२ प्रमाणद्वैविध्यम् (मतिमुदयोः

पारोक्ष्यं)

३ इन्द्रियनोद्दिन्द्रियप्रत्यक्षे

४ इन्द्रियप्रत्यक्षाणि (५)

५ नोद्दिन्द्रियप्रत्यक्षाणि (३)

६ अवधिभेदो

भवप्रत्ययो द्वौ

७ क्षायोपशान्तौ द्वौ (क्षयोप-

ज्ञानसिद्धिः)

८ शुष्णवतोऽत्रधिभेदपट्टम्

८१

| | | | | | | | |
|-----------|---|----|----------------------------------|-----|------------------------------------|-----|-----------|
| १० | अनुगानुकेऽनुगतमध्याहो (३) (निरतानियतावधौ) ८१ | १९ | केवलकाने तयोस्त्वयोसि केवलम् १२ | ३ | सप्तिका खण्डे, तद्दृष्टा- | १७४ | वृद्धविष- |
| ११ | अननुगानुम् ८९ | २० | हिमेतदित्येकेष्वनम् । (स- | | स्याम् (२६) | | यानुकम्, |
| १२॥४८-५५॥ | अननुगानुवधि, जप- | २१ | स्वामिभिः (८) क्षेत्रका- | ११३ | ६९-६८ बैतयिका लक्षणं तद्दृष्टा- | १५९ | |
| | न्योक्तौ, क्षेत्रकालप्रतिपत्त्या, | २२ | जानीनां (१५) प्ररूपणा | ११३ | स्याम् (१५) | | |
| | कालौ; सूत्रमा च ९० | २३ | अनन्तरसिद्धिभेदाः (१५) | १३० | ६९-७० कर्मलाया लक्षणं तद्दृष्टा- | १६४ | |
| | १३-१५-सोयमानप्रतिपाद- | २४ | (त्वयं दुष्टप्रलेपदुष्टविशेषः, | १३३ | स्याम् (१२) | | |
| | प्रतिपादवध्याः ९७ | २५ | कीदृशसिद्धिः) | १३३ | ७१-७४ पारिणामिका लक्षणं तद्दृ- | | |
| १६ | द्रव्यक्षेत्रकालमात्रैरविकानम् ९७ | २६ | द्रव्यापेक्ष (द्रव्यवितोक्तो- | १३३ | स्याम् (३१) | १६५ | |
| ५६-५८॥ | मन्त्रप्रत्युपगमद्वयक्षेत्र- | २७ | पयोगर्था) | १३३ | सुतानिहितभेदाः (४) | १६८ | |
| | कालवाद्याभ्यन्तरवधिसङ्ग्रहः ९८ | २८ | ३३॥६०॥क्षेत्रैकदशो द्रव्यद्रव्या | १३३ | अथप्रदेशो | १६८ | |
| १७ | मन्तःपर्यवसानम् (अन्तरक्षो- | २९ | मतिद्रव्ययोर्मिसता | १३३ | व्यञ्जनानाम्भेदाः (४) (न- | | |
| | पाः, पर्याप्तया, घनता) १०० | ३० | मतिद्रव्यवोरस्ययसितले | १३३ | आत्मनसोऽप्यकारिता, कुतः | १६९ | |
| १८ | मन्तःपर्यवसाने तद्देवतयोग्या- | ३१ | मतिमानेऽनुवर्तिनितभेदा औ- | १३३ | प्राप्यकारिता, सन्त्यद्रव्यता) १६९ | | |
| ५८॥ | धिकाः । (शुक्लप्रवरो) १०८ | ३२ | ६१-६५ सप्तिकायाः (४) औ- | ३३ | वर्णपमता । (६) | १७३ | |
| | | | | ३३ | अथप्रदेशेकार्यिकानि (५) | १७४ | |

| | | | | | |
|-------|--|------------|---|-----|---|
| ३२ | ईशभेदास्तोत्रार्थिकानि च (५) १७५ | ४२ | मित्र्याश्रुतं, (सन्त्यगिष्याश्रुतं हेतुमात्रे द्रव्यायैः) (४) पर्य- यासरमक्षरानन्तभागा, काल- चक्रस्वरूपं च) | १९४ | ५॥८२-८४*दृष्टिवादः सप्रभेदाः परि० २३५ ७-८६ सूत्र २२-८८ पूर्वगत १४. २० चू. ४, २ व. १४ चू. १२, ३ व. ८, चू. ८, ४ व. १८ चू. १०, ५ व. १२, ६-२, ७-१६, ८-३०, ९-२०, १०-१५, ११-१२, १२-१३, १३-३०, १४- |
| ३४ | यद्विद्या भारणा तदेकार्थिका- नि च (६) | १७६ ४३ | साधवसानेतरमुताधिकारः गमिकेसरौ, आबरयकोत्सा- | १९५ | २५, अनुयोग २ शूलिका ४ भेदाः । (सिद्धपञ्चाधिका) |
| ३५ | अवग्रहदेः कालः | १७७ ४४ | लिकच्चालिकप्रकीर्णकभेदाः | २०२ | |
| ३६ | व्यञ्जनावग्रहे प्रतिषेधकम- | | लक्षदृष्टान्तौ | २०९ | ५८ हावशास्त्रीविराचनाऽऽपयना- ८५ * कलं निलगविषयश्च २४७ |
| ३७ | द्रव्यादेराभिनिधेयधिकभेदाः, ७५-८० कालः, सप्तत्वादि, मिश्रण- | १७८ ४५-५६ | आचारपक्ष १ सूत्रकुटाक्ष २- (३६३ पास्त्याधिकारः)- स्यानाक्ष ३ समवायाक्ष ४- न्याख्याप्रवृत्ति ५ शालाधर्म- ६ उपासकस्तदा ७ ज्यो- कुटाक्षान्ता ८ ज्योत्तरोपपत्तिक- ९ प्रक्षव्याकरण १० विपा- कमुता ११ नामधिकापाः | २१४ | |
| ३८ | व्यादि, तदेकार्थिकानि च मुक्तज्ञानभेदाः | १८४ १८७ | | | ५९ सप्तदशगाया (धृतभेदाः) (१४) ८६-९० बुद्धिगुणा (८) ज्युयोगाः * (७) (३) (अनुज्ञाननिन्द्यो- गतनिन्दश्च) २४९ |
| ३९॥८१ | अक्षरानक्षरश्रुते | १८७ | | | |
| ४० | सम्यक्संस्मिद्युते (फालिक- | १८७ | | | |
| ४१ | हेतुदृष्टिवादसञ्ज्ञाः) | १८९ | | | |
| ४२ | सम्यक्श्रुतम् | १९२ | | | |

इति नन्दीविषयाः

अनुयोगे वृद्धविषयानुक्रमः ॥

| | | | |
|----|-----|-----|-----|
| १ | १ | १३ | १५ |
| २ | १४ | १४ | १५ |
| ३ | १५ | १५ | १५ |
| ४ | १६ | १६ | १६ |
| ५ | १७ | १७ | १७ |
| ६ | १८ | १८ | १८ |
| ७ | १९ | १९ | १९ |
| ८ | २० | २० | २० |
| ९ | २१ | २१ | २१ |
| १० | २२ | २२ | २२ |
| ११ | २३ | २३ | २३ |
| १२ | २४ | २४ | २४ |
| १३ | २५ | २५ | २५ |
| १४ | २६ | २६ | २६ |
| १५ | २७ | २७ | २७ |
| १६ | २८ | २८ | २८ |
| १७ | २९ | २९ | २९ |
| १८ | ३० | ३० | ३० |
| १९ | ३१ | ३१ | ३१ |
| २० | ३२ | ३२ | ३२ |
| २१ | ३३ | ३३ | ३३ |
| २२ | ३४ | ३४ | ३४ |
| २३ | ३५ | ३५ | ३५ |
| २४ | ३६ | ३६ | ३६ |
| २५ | ३७ | ३७ | ३७ |
| २६ | ३८ | ३८ | ३८ |
| २७ | ३९ | ३९ | ३९ |
| २८ | ४० | ४० | ४० |
| २९ | ४१ | ४१ | ४१ |
| ३० | ४२ | ४२ | ४२ |
| ३१ | ४३ | ४३ | ४३ |
| ३२ | ४४ | ४४ | ४४ |
| ३३ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ३४ | ४६ | ४६ | ४६ |
| ३५ | ४७ | ४७ | ४७ |
| ३६ | ४८ | ४८ | ४८ |
| ३७ | ४९ | ४९ | ४९ |
| ३८ | ५० | ५० | ५० |
| ३९ | ५१ | ५१ | ५१ |
| ४० | ५२ | ५२ | ५२ |
| ४१ | ५३ | ५३ | ५३ |
| ४२ | ५४ | ५४ | ५४ |
| ४३ | ५५ | ५५ | ५५ |
| ४४ | ५६ | ५६ | ५६ |
| ४५ | ५७ | ५७ | ५७ |
| ४६ | ५८ | ५८ | ५८ |
| ४७ | ५९ | ५९ | ५९ |
| ४८ | ६० | ६० | ६० |
| ४९ | ६१ | ६१ | ६१ |
| ५० | ६२ | ६२ | ६२ |
| ५१ | ६३ | ६३ | ६३ |
| ५२ | ६४ | ६४ | ६४ |
| ५३ | ६५ | ६५ | ६५ |
| ५४ | ६६ | ६६ | ६६ |
| ५५ | ६७ | ६७ | ६७ |
| ५६ | ६८ | ६८ | ६८ |
| ५७ | ६९ | ६९ | ६९ |
| ५८ | ७० | ७० | ७० |
| ५९ | ७१ | ७१ | ७१ |
| ६० | ७२ | ७२ | ७२ |
| ६१ | ७३ | ७३ | ७३ |
| ६२ | ७४ | ७४ | ७४ |
| ६३ | ७५ | ७५ | ७५ |
| ६४ | ७६ | ७६ | ७६ |
| ६५ | ७७ | ७७ | ७७ |
| ६६ | ७८ | ७८ | ७८ |
| ६७ | ७९ | ७९ | ७९ |
| ६८ | ८० | ८० | ८० |
| ६९ | ८१ | ८१ | ८१ |
| ७० | ८२ | ८२ | ८२ |
| ७१ | ८३ | ८३ | ८३ |
| ७२ | ८४ | ८४ | ८४ |
| ७३ | ८५ | ८५ | ८५ |
| ७४ | ८६ | ८६ | ८६ |
| ७५ | ८७ | ८७ | ८७ |
| ७६ | ८८ | ८८ | ८८ |
| ७७ | ८९ | ८९ | ८९ |
| ७८ | ९० | ९० | ९० |
| ७९ | ९१ | ९१ | ९१ |
| ८० | ९२ | ९२ | ९२ |
| ८१ | ९३ | ९३ | ९३ |
| ८२ | ९४ | ९४ | ९४ |
| ८३ | ९५ | ९५ | ९५ |
| ८४ | ९६ | ९६ | ९६ |
| ८५ | ९७ | ९७ | ९७ |
| ८६ | ९८ | ९८ | ९८ |
| ८७ | ९९ | ९९ | ९९ |
| ८८ | १०० | १०० | १०० |

| | | | |
|-------|--|---|---|
| २० | चरकचरिकादीनामिन्द्रादेकपलेषमादि कुप्रावचनिके २५ | २८-३३ अहनिष्ठान्त्योरपरपर्यक्तव्यता ३१ | ४४-४५ स्कन्धनिक्षेपाः (४) नामस्थापना- प्रतिदेशश्च ३९ |
| २१ | पट्कायनितुक्वादेरावश्यकं लोकोत्तरिकं (अर्त्तविप्रदृष्टान्तः) २६ | नाशुतं, आगमनोआगमद्रव्यद्युतभेदौ, हृदीरिद्रव्यद्युतं भव्यहरीरिद्रव्यद्युतं च ३१-३३ | ४६ द्रव्ये आगमनोआगमौ व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिमाः ३९ |
| २२ | आगमनोआगमाभ्यां भावावश्यकम् (भावलक्षणम्) २८ | ३७ यत्रकादि अंशत्रादि च नोआगमे व्यतिरिक्तं द्रव्यद्युतं ३४ | ४७-४९ सचित्ताचित्तमिद्रस्कन्धनिरूपणम् ४० |
| २३ | आगमनो भावावश्यकं २८ | ३७ व्यतिरिक्तं द्रव्यद्युतं ३४ | ५०-५३ अथवा कुराकुराद्वैकानेकद्रव्यस्कन्धाः तत्स्वरूपं च ४१ |
| २४ | नोआगमनो भावे लौकिकादि त्रिधा | ३८ आगमनोआगमाभ्यां भावद्युतम् ३५ | ५४-५७ भावे आगमनोआगमौ, आगमे द्रव्यपुक्तं, नोआगमे आग्रह्यकश्रुत- स्वरूपः ४२ |
| २५ | लौकिके भारतपरामाणवाचना | ३९ आगमभावद्युतं ३६ | ५७-६५ स्कन्धैकार्थिकानि ४३ |
| २६ | चरकचरिकादेः इत्याश्रत्यादि कुप्रावचनिके २६ | ४० नोआगमभावद्युतभेदो भारतपरामाणमीमासुरककोटि- त्वादौ लौकिके ३६ | ५८ आवश्यके पट् अर्थार्थिकाराः ४३ |
| २७-२८ | अगमनीनां तद्विचित्रित्वेन लोको- त्तरिकं तावदन्तैकार्थिकानि (८) | ४१ आचार्यमादि लोकोत्तरे ३७ | ६३ पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येकाध्ययन- स्वरूपान्तिमा ल १३३ |

| | | | | |
|----|---|---|-------|---|
| ५९ | अध्ययनानामनि अनुयोगनानामनि च अथ उपक्रमपरिचाराः | प्रशस्ताप्रशङ्गौ, अप्रशस्ते प्राहण्य- दीनां, प्रशस्ते शुर्वादीनां (प्राहण्यी- गनिश्चाकालम्भाः) ४९ | ७६ | शृङ्गिष्वसिमाङ्गकीर्त्तनानि ५६ |
| ६० | लौकिकोपक्रमाः (६) इत्येव्यतिरिक्ते सचिवाचिचिन्माः ४५ | ७७ | ७७ | भङ्गकीर्त्तनप्रयोजनम् ५७ |
| ६१ | सचिचे द्विपरपुष्पशपेपु परिक- र्मेणि गाने च ४६ | ७८ | ७८ | भङ्गनर्जनम् (२६) ५८ |
| ६२ | नटादिनागयान्तनां द्विपरः अपरादीनां चतुल्लवः | ७९ | ७९ | आनुपूर्वोद्भवसमवतारः ५९ |
| ६३ | आप्रादीनामपदः रङ्गयादीनामपिचः | ८० | ८० | अनुगमे सत्सद्वस्वरूपमाद्याः (९) ५९ |
| ६४ | स्वातन्त्र्यादियुक्तायादेर्मिश्रः ४७ | ८१ | ८१-८९ | सत्सद्वस्वरूप्या, द्रव्यमाणां क्षेत्रं सर्गेना कालः अंतरं भालो भावः द्रव्यप्रदेशोभयार्थैस्त्वबहुत्वम् ६९ संप्रदानौपनिधिक्या अपेक्षमहन्- ग्यायाः (९) |
| ६५ | इतलुलिखाभिः क्षेत्रसोपक्रमः, नाटि- कारिभिः कालस्य ४८ | ९० | ९० | अपेक्षमहन्ग्यायाः (९) |
| ६६ | माये व्यागमनोभ्रमणौ, नोअगमे | ९१ | ९१ | अपेक्षमहन्ग्यायाः (९) |
| ६७ | | ९२ | ९२ | तत्त्वयोजनं भङ्गकीर्त्तनं कृतप्रयोजनं च भङ्गनर्जनं समवतारस्य ७१ सत्सद्वस्वरूप्यादीनि कष्टौ ७२ |

| | | | |
|----|---|--|---|
| १६ | औपनिषिद्धां प्रथम् ७३ | अथोलोके रत्नप्रमादाः (८) तिर्यग्लोके | ११७-११८, ११६४ स्थानानुपूर्वा, सामान्यार्थो- |
| १७ | पूर्वानुपूर्वाप्रगतानुपूर्व्याः ७४ | जम्बूद्वीपाद्याः | नुपूर्वा इत्यादिभिर्यथाः (१०) १०२ |
| १८ | (११४२३४५) गुप्तद्वीपक्रये | १२-१४४ ऊर्ध्वलोके सौपर्णाद्याः (१५) १२ | ११९ भावानुपूर्व्या औदविकाद्याः (६) १०४ |
| १९ | पूर्वानुपूर्व्याः ७५ | १०४-१११ आलानुपूर्व्या, नैगमव्यवहारयो- | १२० एकादिद्वयान्तनामोपदेशः |
| २० | क्षेत्रानुपूर्वाभेदो नैगमव्यवहारयोः | रत्नौपनिषिद्धी, अयंपदरूपणवाद्याः, | ॥ १० नामाधिकारः ॥ |
| २१ | संप्रत्यक्ष ७६ | अयंपदरूपणता भद्ररीचनं मद्रद- | १२१, १७४ एकनाम १०५ |
| २२ | १०१, १०२ नैगमव्यवहारयोः लोपनिषिद्धा- | शनं समवतारोलुगमः (अयंपदर- | १२२ एकादेशरत्नाम्री जीवाजीयनाम्री |
| २३ | तयंपदरूपणवाद्याः (५) अयंपदरूपण- | रूपणवाद्याः १) ९७ | सामान्यविशेषनाम्री (समेदनारु- |
| २४ | मद्रदशनं समवतारः, अनुगमे स- | ११२-११३ सद्गद्गोपनिषिद्धी अयंपदर- | तिर्यङ्मनुष्येयाः) १०९ |
| २५ | तथाद्याः (९) ८५ | रूपणवाद्याः (५) | १२३ द्रव्य (६) गुण (२६) पर्यायना- |
| २६ | १०२-११४ संप्रदेशानौपनिषिद्धीक्षेत्रानुपू- | ११४ औपनिषिद्धी आलानुपूर्व्या समवादिः | १८-२३३ मानि, लिङ्गभेदेन वा जत्या- |
| २७ | व्यायंपदरूपणवाद्याः (५) ८७ | सर्वोद्यान्तः ९९ | अथोद्वेचिधानि |
| २८ | औपनिषिद्धीक्षेत्रानुपूर्व्याः (३) | ११५ अक्षरितानुपूर्व्या पृथग्मात्राः (२४) १०० | १२४ आगमलक्षेपप्रकृतिविकारिश्चतुर्नाम ११२ |

१२५ नागिन्दोरादिडाडावदिदोषमर्गि-

दिप्रोषः पञ्चमसि ११३

१२६ एणाग्नि औदयिकः

२४६ जीवा (३४) जीवो (५२०) इव-
भिन्ना, औपशमिक इवमभि-

पस्य (११) क्षापिकः क्षयनि-

पस्य (४६) क्षयोपस्यः (४)

धयोपरातनिपस्य (५१) पारिणा-

सिक्तः साय (जीरोमुयदीप्यमा-

रन्तः) नादिरो (धर्मोत्तिगणारि-

१०) साग्निकाविकः (१०-१-६३)

१२७

१२७, २५-५६६ मरुताभिने वदन्त्याः का-

रन्तश्चनप्रामाण्डुप्रस्थानयोनिस्तम-

योच्छासाकारुणप्रत्यभिभिभिः १३२

१२८, ५७-६२६ अष्टवयनि विमरुतः

(निर्देशाद्याः) १३३

१२९, ६३-८२६ नवनामनि वीरवा रसाः

सस्तरुपट्टान्ताः १३९

१३०, ८३-९२६ दशनाम गौणागौणादन-

पद्मप्रतिपश्रपदप्रधानताड्याविसिद्धा-

नन्नामापयवसंयोग (४) प्रमानैः

(४) (सावनाप्रमाणे नयन

देवतावापण्डमणजीविकाहेराभिग्रा-

यिक्तानि (७) भानप्रमाणे सामासि-

कृतद्वितज(७) कर्मनित्यश्लोकसंयो-

गसंवीपसंयुवैधयोपस्यैः) पातुनै-

रुपानि १५०

१३१ प्रमाणमेदाः (४) १५३

१३२, ९३-९४६ द्रव्यप्रमाणे प्रदेशनियमवि-

भागनिष्पन्ने नानोन्यानाध्वानगनि-

मप्रविमायनि, धान्यागने अस्त्यादि,

रसमाने चतुःपट्टिकादि, उत्तानेऽध-

कर्पादि, अवयवने हस्तादि, गणिम

एककादि, प्रविमाने गुंजादि, १५५

१३३, ९५-१०२६ क्षेत्रप्रमाणे प्रदेशनिष्पत्ताः

विभागनिष्पन्ने जम्बुल (३ दृषिपन-

प्रदर) विगत्यापडोफ्रान्त्, नैध्वि-

कपरसापवादि, २४ एण्डेज्याहना

भेदाः, प्रमाणादृष्टं १७३

१३४-१३६, १०३६ फाल्गुनप्रमाणे, प्रदेश-

निष्पन्नः, विभागानिरुद्धे समयादि

पुट्टपरावर्तानां १७५

१३७, १०४-१०६* समयप्ररूपणा, आव-

लिकादि पदयोपमानं १८३

१३८, १०७-११०* बहुपरादाक्षेपस्यसा-

गरोपमानि ।

१३९, १११-११२* दण्डकेषु स्थितिः १८४

१४०, ११३* सूस्मेतरक्षेत्रपस्यसागरो-

पमाः १९२

१४१ पट्टद्रव्याणि १९३

१४२ गरीरेभेदा वदमुष्काभ्यां दण्डकेषु २०९

१४३ भावप्रमाणानि (३) गुणनयसंख्याः ११०

१४४, ११४-११६* गुणा जीवा (८) ऽजीव-

योः, अजीवे वर्ण (५) गंध (२) रस-

(५) स्पर्श (८) संस्थानानि (५) जीवे

ज्ञाने मलक्षादि (४) प्रत्यक्षे इन्द्रिय-

(५) नोदन्त्रिये (३) अनुमाने पूर्ववत्

क्षतवर्णादिना शेषवत् (कार्यकारण-

गुणवयवात्म्यैः) दृष्टसाधर्म्यवत् (सा-

मान्यविशेषाभ्यां) (अतीताऽभ्याव-

र्तमानाः) औपन्ये साधर्म्यवैषम्ये

आगदे लौकिकलोकोत्तरो सूत्रार्थो-

भये, वर्तने (४) चारित्रे (५) २२१

१४५ नयप्रमाणे प्रत्यक्षप्रसक्तिप्रदेशदृष्टा-

न्याः २२७

१४६, ११९-१२२* संख्यायां नामसाधना-

द्रव्यौ (एकमविकादि) पस्यपरिमाण-

जाणणा (कालिकृशुभादि) (सद्-

सदादिना) गणनाभावाः, जघन्य-

मध्यमोच्छ्रानि संस्थातानि, परित्यु-

च्छसंस्थासंख्येषु जघन्याद्याः, परि-

चतुष्कनन्तानन्तकेषु जघन्याद्याः २४१

१४७ वक्तव्यताः (३) २४३

१४८, १२३* अर्थाधिकाराः २४५

१४९, १२४* समवतारे नामाद्याः (६) २४७

॥ अथ निक्षेपाधिकारः ॥

१५०, १२५-१३१* निक्षेपे ओघनामसूत्रा-

लपकाः, ओघे अव्यपनाक्षीणाय-

क्षणाभिधेयाः, नाग्नि सामायिक-

निक्षेपः, वरगाद्युपमाः (१२) २५७

॥ अनुगमाधिकारः ॥

१५१-१३२-१३३* अनुगमे सूत्रानुगमनिर्मु-

क्त्यनुगमौ, अन्ये निक्षेपेषोपवात-

(२७) सूत्रप्रयोगः (संहितादि) २६१

॥ नयधिकारः ॥

१५२-१३६-१४३* नये नैगमाद्याः, ज्ञान-

क्रिये च । २६७

इति श्रीअनुयोगद्वाराणि

• आवश्यकवृद्धविषयानुक्रमः ।

- १ नतवीर्यवदेवतगुणसमुत्पिष्टिर्नि प्रति-
जानीते । (१) सहस्रपञ्चमुपहास
कृतिः (२) १
॥ अथ ज्ञानपञ्चरूपा नन्दी ॥
(प्रयोजनादिवर्चो, अङ्गकवसिद्धिः,
नामादिलक्षणानि, ज्ञानक्षेपयोरेक्यम्)
ज्ञानपञ्चकोटेशः (मतिशुक्तयोर्नि-
शेषः) ७ आवात्
अवमर्देहापायधारणाः ९
अवमर्दादेः स्वरूपम् १०
अवमर्दादेः जालमानम् ११
इन्द्रियाणां शास्त्राप्रतिपक्षता (न्य-

- ६ तमनतोरग्राव्यकारिता) १२
केवलमिभवासितकन्दलवणम् १७
७ भाषाद्वयग्रहणनिसर्गो
८-९ त्रिविधरीरे भाषा, चतुर्विधा सा १६
१०-११ भाषायाः शेषवृत्तिसमयाः १७
१२ भवेन्नविकानि (९) १८
१३-१६ सत्यप्ररूपादीनि (९) गत्यादिपु
(२०) (ज्ञाने व्यवहारनिम्नवौ)
मतिज्ञानस्योपसंहरः, हुतस्य प्र-
तिज्ञा २२
१७ आवदस्यसंयोगं हुतमकुविरिति २३
- १८ अतुचतुर्दशभेदकयनप्रतिज्ञा २४
१९-२० श्रुतभेदकयनं, वृद्धसितापनस्य-
हुतम् २५
२१-२२ ज्ञानमभरणशुद्धादिद्विगुणाष्ट-
कम् २६
२३ ज्ञानविधिः सूक्तानिकः (७) २६
२४ व्याख्यानविधिः सन्नार्थविकः (३) २६
२५-२६ अवधिरसंख्यभेदो भवगुणप्रत्ययौ
ततश्चतुर्दश भेदाः अद्विगुणाष्ट २७
२७-२८ अक्षयो क्षेत्रादि (१४) प्रतिपत्तयः २८
२९ अवधिविधेयाः (७) २९

३० जपन्यायचिक्षेत्रम्

३१ सारक्षेत्रचिक्षेत्रम् ३०

३२-३५ सवधेः क्षेत्रफलप्रतिपत्तयः । (म-
ध्यमः) ३१

३६-३७ द्रव्याविद्युद्विप्रतिपत्तयः । (आत्मात्म-
ता च ३३)

३८ जलधेः प्रारम्भसमाप्तिद्वयम्

३९-४० औदारिकारिदांताः (१९)

४१ गुरुत्वधुशुलुपुत्रधुनि ३६

४२-४३ द्रव्यक्षेत्रफलप्रतिपत्तयोऽप्येव

४४-४५ परमाण्वेन्द्रव्यक्षेत्रफलभाषाः ३८

४६-४७ तारकविश्वोरवधिः

४८-४९ देवानामवधिः ३९

५३ जलन्योऽष्टौ प्रतिपालप्रतिनौ च ४१

५४-५५ विद्युत्काशा अवधेरामायाः

५६- देवनारक्योलुगामी, शेषो-

क्षिप्ता ४२

५७-५८ क्षेत्रद्रव्यपर्यायकाले त्रयसिद्धात्साम-

राज्यंमुहूर्तसमाष्टसमयपर्यट्टिसामराणि

५९ द्रव्यादिषु दृढिहानी ४३

६०-६१ स्पर्शकाः, अनुगमि (३) प्रतिपाला-

दयः (३) -

६२-६३ काले सस्यादप्रतिपातौ गान्तरे सम-

वेन ४४

६४ असंख्येयाश्चत्वारश्च पर्यायाः पराप-

रावधयोः ४५

६५ चतुस्तरे विभक्ताः

६६ याशाभ्यन्तरावधिमन्तः

६७ सन्मद्याऽऽसंवदाववधी ४६

६८ गलायतिदेशः त्रिद्विधनप्रतिष्ठा च

६९-७० क्षामर्षौक्याद्याः (१६) लम्पयः ४७

७१-७५ धातुदेवचक्रितीर्थैकरवलाणि ४८

७६ चारित्र्यवतां नरक्षेत्रविषयं मनाः-

यौगम् ४९

७७ फेबलक्षानस्वरूपम्

७८ प्रज्ञापनीयवेक्षणा, चाण्योगश्च सा ५०

७९ स्थान्यानुयोगित्वाच्छ्रुतेनाभिभारः

॥ इति ज्ञानपञ्चकरूपा नन्दी ॥

॥ अथ उपक्रममादि ॥

८०-८३ आवश्यकनिर्देशाः अभीतासंक्षिप्त-

द्वान्तः, आवश्यकनिर्देशाः १०, अ-

र्थधिकारः, सभेवा उपक्रम (आद्य-

- प्यादिदृष्टान्ताः) निक्षेपतुलगाः, उ-
पोद्पातनिर्युक्तौ मङ्गलं प्रतिष्ठा च
(विर्यहरूपम्) ५९
८४-८६ आदयत्नादि (१०) आत्मनिर्युक्ति-
प्रतिष्ठा ६१
८७ सामाधिकनिर्युक्तिप्रतिष्ठा (द्रव्यपर-
न्तरदृष्टान्ताः) ६२
८८ निर्युक्तिपररूपम् ६७
८९-९२ गणपरकृता सूत्ररचना तद्व्योचनं च
९३ ध्रुवसात वत्सारथ्य, तत्सारो निर्वो-
जम् ६९
९४-९६ आसयमिनः ध्रुवान्मोक्षः, वायुहीन-
वोधवत् ।
९७ अचरणो गृहति ७०

- ९८-९९ अन्यस्य दीपकोटिवद्वचरणस्य तुषा-
श्रुत, चक्षुष्यतो दीपवत्सचरणस्य
सकलम्
१०० चन्द्रनगर्दभद्वचरणो ज्ञानी
१०१-१०२ एकेकेन विना हृते त्रे पद्वन्व-
ज्जल, सव्योनेन फलम् ७१
१०३ मोक्षे ज्ञानवशः सव्यवज्यापाराः ७२
१०४ श्रुतं क्षयोपपत्तेः, ध्येये कैवल्यसा-
नम् ७३
१०५-१०६ कोटाकोट्यन्वराभ्यन्तरालाः
१०७ सामाधिकलाभे परम्यादिदृष्टान्ताः
(९) ७५
१०८-१११ प्रथमादिक्रियायां हृदये सम्प-
त्स्वान्तरालमालम् । ७७

- ११२-११३ संवत्खनोद्देश्येऽतिवाराः, श्रेणेषु
छेदः, द्वादशक्रयादिवक्षारिन् ७८
११४-११५ चारित्र्यभेदाः (५) (कल्याः १०,
परिहारविशुद्धितयः) १९
११६ उपक्रमभेदिनिः ८१
११७-१२० सूक्ष्मसंपरायस्वरूपं, कपायम-
द्विगा, कृष्णसिंह साः, वेद्यविधासि-
त्ता ८३
१२१-१२६ क्षुण्णभेदिनिः, मध्यक्षेयाः द्विच-
रसे निद्रायाः (२७), वरसे ज्ञाना-
वरणायाः ८३
१२७ कैवलिनः सर्वदर्शिता ८५
१२८ प्रवचनोत्पत्तिः, तदेकार्थिकतद्विभागौ,
ज्ञानवज्याख्यामविश्वतुल्योपा द्वापानि
(७) ८६

१२९ प्रवचन (५) सूत्रा (५) त्रयोमै (५)-
कार्तिकानि ।

१३२ अनुयोगनिक्षेपाः (६) ८७

१३३-१३४ वरसकगवाद्या दृष्टान्ताः (५)

भावे क्षयकमार्योद्याः (७) ८८

१३५ भाष्यविभाषकन्यासिकरेषु काष्ठक-

मार्थपन्नाः (६) ९६

१३६ व्याख्यातविधौ गोचरान्दकन्याद्याः

सप्रतिपक्षाः (७) दृष्टान्ताः ।

१३७ शिष्यदेशगुणाः १००

१३८-१३९ शिष्यपरीक्षायां शैलधनमुद्रादयः

(१४) १००

इत्युपक्रमादि

॥ अथोपेक्षद्वेषतनिर्युक्तिः ॥

१४०-१४१ वदेशनिर्देशादीनि (२६) उपो-

द्वेषतनिर्युक्तिद्वाराणि) १०४

१४२-१४३ वदेशनिर्देशनिक्षेपाः (८) तद्धि-

क्षेपश्च १०६

१४४ निर्देशनिर्देशकाम्यां निर्देशे नयवि-

चाराः १०६

१४५ निर्गमनिक्षेपाः (६) १०७

॥ अथ वीरजिनादियुक्तव्यता ॥

१४६ अटवीभ्रष्टसाधुमार्गदर्शने सम्य-

क्त्वम् १०८

१-२४ वदेव १०९

१४७-१४८ साध्यनुक्रमया सम्यक्त्वं, देवत्वं,

भारते मरीचिः १०९

१४९ कुलकरवंशेश्वराकुलशुद्धिकाराः

१५०-१५१ पत्योपमाप्रमाणे वक्षिणमध्य-

भारते कुलकराः (७) १०९

१५२ पूर्वभवजन्मानामप्रमाणादीनि (१२)

द्वाराणि । ११०

१५३-१५४ अपरविदेशेषु वयस्यौ, भारते

हृद्धी मनुष्यश्च, नाम नीतिश्च

१५५-१६८ कुलकराणां नामप्रमाणसंहतव-

र्षकीसंस्थानोक्तत्ववर्णापुःक्यायुःकुल-

करत्वफालदेवत्ववत्सहीहस्त्युपपावनी-

तयः १११

१६९-३४ मानवकारणकनीतिः, आहार नय-

मस्य, भारतस्य परिभाषणाद्या (४)

नीतिः । ११४

१७० 'अपभ्रंशकव्यवासूचा ११४

१७१-१७२ पनसार्थहः, अटवीवासः,

पूतदानं च । अणमपूर्वगवाः(प्र.)

उत्तरकुट्टः, सौम्यो, विदेहेषु देवेषु

राजपुत्रादिवयसः ११४

१७३-१७४ कुट्टिसत्युचिक्त्वा ११७

१७५-१७६ वेवेलोकः, पुण्डरीकिण्यां वज्रसे-

नपुत्रो वज्रनाभो बाहुषुपाहुपीठमहा-

सीताश्र, चतुर्दशपूर्विगा, तीर्थंकरत्वं,

द्वयो वैयादृत्वादि, अगोस्त्रि ११८

१७९-१८१ अर्द्धवारिस्तनकानि(२०) ११९

१८१-१८४ आपान्नयोः सर्वाणि, मध्यमा-

नामनियतानि, अरुलान्या वेवनम्,

अर्वाङ्क दृतीये नरत्वादौ वन्यः

१८५ सार्धो, आपाद्वयदुल्लवतुर्ध्या च्यव-

न्म् १२०

१८६ कम्पनामृद्धादीनि(८)द्वाराणि १२१

१८७ चैत्रकुण्डल्यां जन्म, तन्महश्च ।

१८८ विष्णुमरीकृतम् १२३

१८९ वंशसापना, अमृत्युमाहात्म्य-

निर्वा १२५

१९० द्रुमयक्षकृत्वादिस्वाकृत्वाः

१९१-१९२ नन्दासुमङ्गलपुत्रस्य पृथिवी १२६

१९३ जातिसरक्षिणोऽधिककान्दिवुद्धिः

१९४ अक्राडस्युः, कन्याग्रहणं च

१९५ विवाहः १२७

१९६-१९७ पटुर्पल्लवेषु भरताविजया

१९७-१९८ एकोनपञ्चासदुगलजन्म,

नीलसिक्कमः, दृषयाच्या, नाभेरुद्धा

२१४-२१५ लोकान्दिकनामानि देवोर्ध्वनं च

१९९-२०० रावामिषेकः, विभीतानिने-

सञ्च १२८

२०१-२०२ अथादि (३)उमादि(४)सङ्ग्रहः

२०३-२०६ आहारादीनि (४०)द्वाराणि १२८

४-९ सराः कन्दाशादिराः, क्षत्रिया इत्या-

न्यसोजितः, जिनोपं पर्णसीमनादि

१०-११ अप्रेरुत्तचिः पाकारम्माश्च १३१

२०७ विल्लसवत् १३२

१२-३० कर्मादीनि (४०) द्वाराणि १३२

२०८-२११ जितसंयोगादि (२१) द्वा-

राणि १३४

२१२-२१३ जीतेन बोधिताः, सांस्तारिकं,

लागः, परिचाराः, स्वधिः १३५

२१४-२१५ लोकान्दिकनामानि देवोर्ध्वनं च

॥ १३७ ॥

२१६-२२० अर्वाङ्गं संवत्सरात्कोट्यधिकं वर-

वरिकापूर्वं दानं, संवत्सरदानद्रव्यसंख्या

२२१-२२३ जिनानामसिष्येकस्त्रीराज्यवि-

चारः । १३६

२२४-२३२ वीक्षणपरिवारो वय उपधितपः-

स्थानकाद्याः

२३३-२३७ विषयसेवाविहारपरीषद्दीवातु-

पलम्भधुतोपलम्भभ्रतसंयमाः १३७

२३८-३०५ छयस्याकृततपोज्ञानोत्पादवल्ली-

व्रतपःपरिवारतीर्थगणपथदेदानाप-

र्वायकुमारत्वाद्विश्रामपञ्चद्वाराणि १३८

३०६-३१३ निर्वाणतपःस्थानपरिवाराः (प्रथ-

मातुवोगात्) प्रकृतं च १४२

३१४-३१६ चैत्रकुण्ड्याष्टम्यां सुदर्शनवा चतुः-

सहस्रायुतस्य प्रव्रज्या विहारश्च

३१७-३२२ खाहारालायाचापसाः, नमिनि-

नम्योर्विद्याघटनं, कन्यादिभिर्निम-

क्षणं, संवत्सरेणेशुरसमिक्षा पञ्च दि-

व्यानि श्रेयांसात्पारणं, तक्षशिल-

गमनम् १४३

३२३-३३४ त्रिनपारणस्थानदातृदृष्टिदातृग-

तयः १४६

३३५-३४१ धर्मचक्रमनार्थविहारः पुरिसवाले

केवलं पञ्च महाश्रवणि, ज्ञानमहिमा

च । १४८

३४२-३४७ ज्ञानचक्रोत्थावो, वातपूजा, यत-

देवीनिर्गमः, पुत्रादेर्मरीचेच्य दीक्षा

३४८-३४९ पटलण्डविजयाः, सुन्दरीप्र-

व्रज्या, आरुदीक्षा च १५२

३२-३७४ युद्धपञ्चकं बाहुबलिनो दीक्षा

प्रगिन्यामसः, केवलं, भरतमोगाः,

मरीचेर्वी क्षाध्ययने ५५२

३५०-३६१ सद्देगाः, परित्राज्यं, उपदेशः,

क्षिप्यार्पणं च । १५४

३६२-३६५ समवसरणं, ब्राह्मणानुद्वितर्द्धम-

रताधिपता च दण्डवीर्यं यावत्, कालेन

मिथ्यात्वं, पष्ठे, मात्सुयोगः १५७

३६६ ब्राह्मणदानं घेवकृति (९) द्वाराणि १५८

३६७-३६८ चक्रिपृच्छा, चक्रमादीनां (१०),

जिनपृच्छा ।

३८४-३६९ तीर्थद्वयाः (२३) च क्रियां

प्रभो नामानि च. १५९

नन्वादिह
द्विपयानु-
क्रमे.

॥ १३८ ॥

३९-४३४ यमुवलेदेवानां स्वरूपमाश्रयः
३७६-३९० वीर्यकराणां वर्णप्रमाणानुपुर-

जननीजनकमतयः १६०

३९१-४०१ चक्रवर्तिनां वर्णप्रमाणानुपुर-

मातापितृगतयः १६१

४०२-४१५ यामुवलेदेवानां वर्णप्रमाणगोत्रा-

नुपुरमाहासिपुत्र्योष्यगतिनिवा-

नानि १६२

(१-१७) जिनान्तराणि म. १६४

४१६-४२० जिनान्तरे चक्रवर्तिवासु-

देवाः १६५

४२१ चक्रिवासुदेवान्यपि १६६

४४४ भरतनिप्रभ्राः १६७

४२२-४३२ मरीचेनिर्दिष्टाः पद्मीयं, वन्दनं

प्रशंसा, मदश्च १६७

४३३-४३४ अष्टादे गगनं, दशसाहस्रवा

मोक्षः १६८

४३५ निर्वाणं, पिता, तत्प्रीति, स्तूपाः,

व्यापकाः, आदिवागवः १६९

४४४ स्तूपाश्चैतन्म

४३६ आदर्शगृहं, मुद्रिकापत्राः, ज्ञानं श्रीक्षा

य भरतस्य

४३७-४३९ मरीचेर्देवचनं, वरकळं, ब्रह्मदेव-

लोकः फणिलः, (पट्टित्वं) १७०

४४०-४५० क्षौदिकः, पुण्यमित्रः, सौयम्ये,

अग्निमित्रः, ईशाने, अग्निमूर्तिः,

सन्तुगारे, भारद्वाजः, माहेन्द्रे,

सावरः, ब्रह्मलोके, विश्वभूतिः,

निदानं महाशुके, त्रिष्टुभः सप्तम्याः

- प्रियमित्रः महाशुके नन्दनः, पुष्पो-

त्तरे (अन्तराऽन्तरय संसारश्च) १७१

४५१-४५६ विहाविस्मानकादीनि १७७

४५७ देवानन्दकुशावतारः १७८

४५८ स्वप्नापहराभिप्रहादीनि द्वाराणि

४६-१११४ ऋतुकान्तौ स्वप्नाः, संहारवि-

चारः, चक्रपादय उत्तमकुले नैगमेयि-

कान्तं, विशालाकुक्षौ संक्रमः, स्वप्ना-

पक्षरः, स्वप्रदर्शनं, सतमेऽभिप्रहः,

साधिकनरमास्यां चैत्रशुक्लमयोदयां

जन्म, आभरणादियुष्टिः, इन्द्रागमः,

देवयुष्टिः, देवागमः, मन्दरेऽग्नियेकः,

वनन्वर्षणं, शौमादि, रत्नानयनं,

युद्धिः, वर्णनं, जातिस्मरणं, शक्र-

॥ १३८ ॥

आवश्यक-

वृ० विप-

यादुक्रमः

प्रशांसा देवागमः विन्दुसक्रीडा,
छेरराटोपनयनं पृच्छा ऐन्द्रव्या-
करणं, विवाहः, भोगाः सन्तानं,
दीक्षा १८३

४५१-४६० सांवसरिकृद्नादि, छोब्रन्दि-
फयोधादि, दीक्षारिणमे निरन्तरं
देवसंचारः, चन्द्रप्रभा क्षिपिका तत्र-
माणवर्णनं, अलङ्कारः, पद्यमञ्जं, ले-
खाद्युद्धिः, इन्द्रचामरदीपनं,
शिविभोरगतनं, पुष्पवृष्टिः, गगन-
तलशोभा, वाजिनालि क्षातलण्डवना-
गमः लोचः, केशानां क्षीरोदधिनयनं,
दूष्णीकता, प्रतं, मनःपर्यायः, सुह-
सांवसेये क्षर्माग्रामगमनं १८३

४६१-४६४ इन्द्रागमः, पारंगं, अभिप्रधाः

(५) शृङ्गाभिः, वेदनाः, ख्याः,

अच्छन्दकम् १८८

११२-११४x शूलपाण्युपसर्गः १९४

(१ प्र.) निमित्ते, अच्छन्दकेयः ।

४६५-४६६ अङ्गुलीचउदधौर्थादि, छन्दके

वर्णं च ।

४६७-४७१ चण्डकौशिकः, उत्तरवाचाळयां

पारणं नैषकराजवनन्दनं कन्दलशम्भ-

लभक्तिर्मङ्गायाम् । १९७

४७२-५३८ सामुद्रिकः पुद्गो, गोशालः, वि-

जवानन्दसुनन्दैः पारणानि, कोशाले

गोशालप्रव्रज्या, सुवर्णखले निरसि-

ग्रहः, नन्दोपनन्दौ, दहः, चम्पायां

चतुर्मासः, कालके सिंहः, पत्रालके

स्कन्धः, कुमारयां मुनिचन्द्रः,

सोमालयन्तीभ्यां मोचनं, शृङ्गचम्पा,

ऊवङ्गले द्रिदसविराः, गोशालपत्रे

मांसं, अक्षिविक्रिया मुलनासः,

मण्डपश्चालनं, कालहस्त्युपसर्गः,

पूर्णकलये शकागमः, भद्रिकायां

चातुर्मासी, अच्छायैभक्तं, नन्दि-

पेणाचार्यः, विजयाग्रगस्मे, गोशाल-

वाहनं, वैशाल्यां शकागमः, वि-

भेलकमहिता, वापस्त्युपसर्गः, झालि-

शीर्षे लोकावधिः, भद्रिकाचतुर्मासी,

गोशालागमः, आलमिकाचतुर्मासः,

कुण्डाके सर्वदे च गोशालचेश, कट-

पूवना, उत्तरलः, वगुरपूजा, दन्तुर

इसन्, वज्रादे गोशालग्र्यः, रा-
जपदे चतुर्गोसी, लाटावधशुद्धमूषो-
र्विहारः, कपोराग्रश्च, सितस्तन्यः,
गोस्वदे वेश्यायनः, शीतलेश्यामो-
पते, पैताल्यो मङ्गपूजा, चित्रपूजा,
वागिगये क्षालनकृपिता ज्ञानोत्तरिभिः,
क्षारमयं चतुर्गोसी भद्राग्राः प्रतिमाः
शुक्लिगण्डे दिव्यानि, पेठाले एक-
रात्रिणी, दक्षप्रसंसा, सङ्ग्रहकागमः,
विनाचिरुपसर्गाः, चौरकाणाश्च चलि-
विदपिनापोन्मत्तत्पानि, दाम्बहृतो
पायादिपूजा, कम्पारेणः समकृत्यो
रज्जुमोक्षः, कौशिकशृङ्खलो मोक्षः, मज्ज-
माये पाणं, मन्दरे निर्वासनं, हरीहरि-
सरस्वन्प्रतिमागहिमा, चन्द्रमूर्त्यक-

सारः, शम्भेशान्तनकपरणभूतानन्दः,
पेशाल्यां चतुर्गोसी, कमरोत्पादाः,
सन्नरुमारगमः, नन्दीमाहिषा गो-
पकिया, माषाभिप्रदः, सततुमा-
रगाहेन्द्रागमः, शक्तिशिरश्छेदः, च-
न्पाचतुर्गोसी, यक्षसेवा स्वातिदत्त-
प्रसाः, नाट्यदानोत्पत्तिप्रयत्ने,
चमरागमः, कैवर्त्यं वरः संख्या २२८
॥ इति वीरिनिनादिवक्तव्यता ॥

॥ अथ समवसरणवक्तव्यता ॥

५३९-५४२ महेस्ते द्वितीयं समवसरणं, सो-
मिजयथाः देवमाहिषा ।

११५४५४३ ज्ञानोत्पादमाहिषा समवसरणे

विधिः, सामाधिकविधानरूपप्रभो-
त्तरशोचपरिणामयुत्तिदानदेवभाल्या-
नयानि २३०
५४४-५९०, ११६४-११९४ अष्टसप्तद्वे म-
हर्षिकागमे चा ममवसरणरत्ना,
प्राकारादिविधिः, आयान्ठपौरुष्यो-
द्देशना, क्षलनवर्कं, प्रतिमाः, आग्नेय्यां
गर्भ्या, रूपाविशयः, पर्यदां निवेदाः,
द्वितीये तिर्यङ्कः, तृतीये यानानि,
सामाधिकरूपा, तद्विधिश्च, द्वादश-
योक्त्रन्या आगमः, गणधरादिको
रूपक्रमः, प्रसक्तसंज्ञनवादिः, अनु-
भोदना, युगपदुत्तराणि, स्वक्षणीः प-
रिणामाः, कीर्तीनाली, चक्रयोदेः प्री-

विद्वानं भगवति फलं, यत्किञ्चिदुल-
च्छेदयत्तत्तद्वैश्यागविधिः, गणि-
वेक्षणार्थं गुणा विधिः, वक्ष्यामि च ।

२३९

॥ इति समस्तसर्गः ॥

॥ अथ गणधरवक्तव्यता ॥

५९९-६४१ देवयोगः, गणधरा (११)ऽऽत्मः,

जीव-कर्म-वर्जित भूत-वार्ता-गन्ध-
देव-नारक-मुण्ड परलोक-निर्वाणसं-
शयाः, परिश्रमः, असर्पः, वैदपदार्थः,
दीक्षा २५४

६४२-६५९ गणीनां प्राप्ततश्चमताभितो-

ग्रागरच्छेदश्चैकैकलिपर्यायायुरागम-
मोक्षनिर्वाणतपसि २५४

॥ इति गणधराः ॥

॥ दशधासामाचारी ॥

६६०-६६५ कालभिक्षाः (११)द्रव्ये स्थितिः

(४) अद्यायं समयाद्याः, यथायुक्ते
मिर्वर्तितानुभवः, उपक्रमे त्रिविधा

सामाचारी ओषाद्या (३) २५७

६६६-६६७ इच्छामिष्यावुद्देशः २५८

६६८ अभ्यर्चनायां कारणज्ञाते चेच्छा-

कारः २५९

६६९-६७६ अतिगूढतत्त्ववीर्येऽस्ते न्या-

पृष्टे, विमाने तत्त्ववृत्ति, ज्ञानवैया-

वृत्त्याविकारणान्तरे इच्छाकारः ।

६७७-६७९ अथवद्विनीते आश्रमलभि-

योगौ । २६०

६८० प्रार्थनायां प्राश्नयानरौ, स्वयंकरे

वर्णिजौ २६२

६८१ असंपादनेऽपीच्छाकारे लाभः २६३

६८२-६८७ वितथे मिथ्या, अकरणं, मू-

योऽकारः, करणे माया, मिथ्यादु-

च्छताद्वयार्थः ।

६८८-६९० तयाकारस्त योग्यो विषयः, इ-

च्छादेः फलं च २६४

६९१-६९४ आवदियकीनैपिद्विषयोभेदे प्रभः,

अर्थक्यं, गुप्तसैर्योद्विमतः गमने

आवदियकी । २६५

६९५-६९७, १२०-१२३४ श्रव्यादौ नैपे-

धिर्ज्ञे निपिद्व्यतमवान् । आपृच्छा

द्याः (४) २६७

६९८-७२३ ज्ञानदर्शनचारित्र्योपसम्पदः

त्रिप्रतिद्विभेदाः, संदिष्टादिचतुर्भेदाः,

पतनात्तन्नाथरणसत्पं, प्रमाव-
ननिश्यागीभिः, मणविपिच-
रत्तं, पित्तवत्स द्योतीरे वन्दन-
सिद्धि, हस्तिरि वैकाट्ये, वि-
शुद्धाविशुद्धतपस्यसंज्ञ, गणपुच्छा-
समाप्ती स्मरणा विसर्गो वा, अन्त-
मद्वेषा, वषट्पद्मः फलं च २७०
॥ इति सामाचारिरक्तव्यता ॥

॥ अथोपक्रममिदं ॥

७२४-७२६ अतुल्यकथा (७) सहस्रानां,
दण्डकथा देवता २७२
७२४-७२५ प्रसन्नाग्रसदसकालो, विव-
सरात्री प्रसन्नकालो, वर्मकालः,
भापसिद्धिः (४), प्रसन्नकालेन प्र-

वसपौतृत्वाप्रतिष्ठा, भावे मगवत्या-
विक्रमगिह्याचोपश्रमिभ्याम् २७४
७२६ पुरुषमिष्टेयाः (८) २७७
७२७-७२८ क्षारणमिष्टेयाः (४) वन्द्यद्वये
निमित्तनिमित्तित्तौ समवाय्यसपवा-
विना, फर्मादि (६) द्वये, मायेष्टान-
नमानादि, प्रकृते प्राकृत्ययमदु-
ध्यमवपद्विजितनाम, गणितो ज्ञाना-
द्यम्यावाधानम् २७७

७४१-७५० मल्लविकेयाः (४) द्वये तस-
माणादि, भावेष्टव्यादिः । २८०
७५१-७५३ लक्ष्मणमिष्टेयाः (१२), भावे
मद्वानादि (४) २८२
७५४-७६१ नवसप्तर्षं, वक्ष्यणभेदाः, विभिः
भोग्येष्टयाप्रतिष्ठा २८२

७६२-७६४ आर्यवज्रात्परातोऽसमवताः, व-
अस्तुभिः (वयसिभ्यम्) २८५
७६५-७७२ द्विगुह्यवनिमशगा, वारकृतं
देवमदः, वक्षिस्वर्गप्रतिभोद्यते, आ-
काशगामिनी, वद्विपया, परातर्पणं,
आदेशरीतसत्त्वम् । २९०

७७३-७७६ प्रवस्वरक्त आर्यरथिनाः, मा-
त्रावाचायादि (आर्यरथित्वादि-
भ्यम्) २९६

१२४४ अतुल्योपलुक्त सूत्राणि ३०९
७७७ महात्मस्येष्टाः कालिके । ३०९

॥ अथ निबन्धवक्तव्यता ॥

७७८-७८३ निबन्धवक्तव्यता, वद्विपुष्टप्राम-
अन्ताः ३१२

१२५-१४४ निहृयापिनाः सविनेः, स-

पूर्वोत्तरपथः ३२४

७८४-७८८ निहृवदक्षुपतंदाः, प्रलेफदो-

पात्तरसंघं घ, तत्रिमिताभादिमहण-

भजना, न थोटिके ३२५

॥ इति निहृवयक्तव्यता ॥

७८९ नैगमसंग्रहव्यवहाराक्षिपिं, सन्दा-

प्राग संयमं मन्वते । ३२६

७९० आत्मा सामायिकम्

१४९४ नयविचारः ३२७

७९१ प्रवविषयः सयजीवादिः

७९२-७९५ ब्रव्याधिकपयाधिक्योर्द्व्य-

गुणसामायिकत्वे वादः ३२७

७९६, १५०४ सम्बन्धमुत (३) पारित्राणि

(२) सामायिकम् ३२९

७९७-८०३ सामायिकत्वरूपं, यदुशो देश-

सामायिकम् ३२९

८०४-८०६ क्षेत्रविद्याविमन्वसंयुक्त्या-

सदृष्टाद्वारयामसुप्तजन्मस्थितिवेद-

सम्भाकपायाधुनानयोगोपयोगशरी-

रसंस्थानसंहननमानलेक्ष्यपरिणाम-

वेदनासमुद्रयावत्कर्मविवेकनोद्वेष्टना-

भयालुद्वारयनासन्स्थानचक्रमणैः

सामायिकविचार ३३०

८०७-८०८ सम्बन्धवस्तुतयोस्त्रिषु, विरति-

नरे मिश्रं तिर्यङ्वापि, प्रतिपन्नाख्याणां

त्रिषु, चरणस्य द्वयोः, भजनोद्धे-

लेके ३३१

८०९-८११ द्विभिधेषाः (१८) द्विषु प्रतिप-

द्यमानः, प्रतिपन्नोऽन्यतरस्याम् ।

८१२-८२९ सम्बन्धवस्तुतये षट्सप्त प्रतं नरे

सिधं तिर्यङ्गु भवपञ्चवारि संयुक्त्या-

सकौ च, दृष्टो नयौ, आहारकः

पर्याप्तकथं, सम्बन्धवस्तुतनाहारका-

पर्याप्तकवपि प्रतिपन्नौ, ज्ञायरोऽन्य-

वरा, जण्डवोतज्योत्तिकं जरायो

चतुर्लं, मध्यमस्थितौ लभयं, आयुष

चतुष्टायामपि, वेदत्रयसम्भाचतुः

लक्योः प्रतिपत्तिः, अप्रथमे कपाये

संख्यायुद्धाधारीतरः सम्बन्धवस्तुतये,

चतुर्लानी त्रियोगी रूपयोगाद्विक

बौद्धिकं चत्वारि वैकिपं द्वे, सर्व-

संस्थानसंहननसम्यग्माने चत्वारि,

षट्सु देश्यासु द्वे त्रिषु चारित्रं, पूर्व-

प्रतिपन्नोऽन्यतरस्यां, वर्द्धमानानस्थितौ

द्विविधवेदनाऽसमवृद्धा, निर्वृष्ट-
युद्धा निश्रवणं पलायि ३४०
८३० समवृत्तादिविषयः
८३१-८३५ मानुष्यायश्चेन्नदिदुर्लभत्वे चो-
ल्लभादिदृष्टान्ताः, युगदृष्टान्तो ना-
पामिः ३४१
८३६-८४४ धर्मकरणे इत्येताः, आलस्यत्वा-
(१३) मुक्तिविषयः, क्षान्तावराणादि-
षट्, श्रवणान्तादि, दृष्टान्तौ कर्मक्षये
द्युमयोने च मोक्षिः ३४५
८४५-८४८ अनुकम्पाऽक्रमनिर्जरादेर्वैदमि-
ण्यदीनां (११) सम्यक्त्वलाभः
(वैयथानरवेच) अस्युत्थानविन-
यादय ३४७
८४९-८६० साम्यत्वस्थितिः, प्रतिपन्नप्रतिप-

अप्रतिपत्तिशानामसम्बहुलं तत्संख्या,
कन्तस्यविग्रहविग्रहौ भवाकर्षीं क्षेत्र-
सर्तना तत्सर्तना ३६१
८६१-८६५ सम्यक्त्व(७) द्रुत(७) देव(६)
सर्व(८) विरतिनिरुक्तयः, दमद-
न्यायाः (८) दृष्टान्ताः ३६३
१५१+ दमदन्तद्वयम् ३६५
८६६-९८ मुनित्वस्वरूपम्
८६९-७० मेवार्थमुक्तिः ३६९
८७१ कालिदाचार्यमुक्तिः ३७०
८७२-७५ चिदातीतप्रस्तुतिः ३७१
८७६-८७९ लक्ष्यलोकसङ्केपः, धर्मस्वरिना-
वृष्ट्याम्, इत्युक्तः शरीरायां, प्रत्या-
ख्याते तेनतिः ३७२
॥ ह्युपोद्घातनिर्मुक्तिः ॥

॥ अथ सूत्रस्वरूपम् ॥

८८०-८८६ सूत्रस्वरूपं, दोषाः (३२) गुणाः
(८-६) ३७४

॥ इति सूत्रस्वरूपम् ॥

॥ अथ नमस्काराव्याख्या ॥

८८७ नमस्कारे इत्यन्तिनिक्षेपपदपदार्थरू-
पणावस्त्वस्येपमसिद्धिरुक्तमप्रयोजनक-
लानि (११) ३७७

८८८-८९० आदिनामेऽनुगन्ताः, दोषाणां

समुत्थाववाचनाच्छिष्यत उत्तराः,
नृजावन्तो, दोषा लक्ष्ये भवन्ते,
निहन्तारि द्रव्ये (द्रव्यकट्टान्तः)
नैषास्तिज्ञात् द्रव्यभावसङ्कोचः ३७७
८९१-९०२ किं कल्य केन क्रियाविर् कतिवि-

धमिति पदपदा, सत्यदायैर्गति-
न्द्रियादिषु नवपदा, आरोग्यम-
ज्जापट्टदापनानिर्वापनाभिः पञ्च-
विधा प्ररुपणा ३७९
१०३ मार्गाद्या तमस्कारदेतवः ३८३
१०४-२६ मदासायपदाइवादि, दृष्टान्ताः
सविज्ञेयाः, रागद्वेषकृपायेन्द्रियाणि
(सदृष्टान्ताणि) कथयनिक्षेपाः (८)
(वर्णयमार्गणा च) परीपहोपसर्गाः
(श्लोका दृष्टान्ताणि च) अर्हच्छब्द-
निराकिः, तद्वनस्कारफलम् । ४०६
१२७-३० कर्मदिल्यादिभिः (११) सिद्ध-
निक्षेपाः, कर्मसिद्ध्यर्थेभेदः, सह-
गिरिसिद्धः, कोकासो बर्द्धकिञ्च दृष्टा-
न्तौ ४०८

१३१-१३३ विद्यामन्त्रयोर्विज्ञेयः, आर्यस-
मुत्तममार्गपददृष्टान्तौ ४११
१३४-१३६ योगे अर्यसमिवः, आगने
गौतमः, अर्ये सम्मणाः, यात्रायां
ब्रुविताः ४१२
१३७-१५१ बुद्धिसिद्धलक्षणम्, औत्सर्जि-
क्यादिभेदाः, लक्षणाणि दृष्टान्ताश्च,
भरतशिलापण्यवृक्षायाः (१६) भ-
रतशिलानेपायाः (२६) निमित्तार्थ-
ज्ञासाधाः (१४) सुवर्णकारकर्मका-
णाः (१२) अभयाद्याः (२२) दृ-
ष्टान्ताः ४३७
१५२ तपःसिद्धे दृष्टप्रहारी ४३८
१५३-१५९ सिद्धस्य निरुक्तिः, समुद्रपातः,

शैलेक्षी, अलामुक्तादिवद्वतिः, अ-
लोके स्खलनेत्यादि ४३८
१६०-१९२ सिद्धशिलावर्णनं, सिद्धावगाह-
नादेशप्रदेशस्पर्शलक्षणमुख (मञ्जु-
दृष्टान्तः) प्रकार्यैक (८) तमस्कार-
कृतानि ४४२
१९३-१९९ आचार्यनिक्षेपाः (४) ४४८
१०००-१००७ तपःव्यायनिक्षेपाः (४) अ-
क्षरायांदि ४४९
१००८-१०१७ साधोनिक्षेपाः, स्वर-
पादि ४४९
१०१८-१०२१ पञ्चविधत्वे क्रमे च शब्दा-
समाधानम् ४५०
१०२२-१०२४ प्रयोजनफले, कर्मक्षयादि,

न्यादि-
सप्तके
आशये

॥ १४२ ॥

अर्थशान्ति (८) (विप्लवादि-
पद्याः ५) ४५१

॥ इति नमस्तान्यास्या ॥

१०३५०-२६ गन्धतुल्योपेक्षुपात्रं क्षात्रा

पञ्चाङ्गं पठित्वा सूत्रान्यः ४५४

॥ अथ सामयिकन्यास्या ॥

१ सू० सामयिकसूत्रम् ।

१०३५०-२८ सूत्रस्यै करणमप्यवसायि-

कस्यैवमेवोपपत्त्यास्तानपान्त्र्यवि-

नित्तिपानं निरूप्यम् ४५६

१५२-१४४४ करणनिक्षेपाः (६), सम्बन्धयो

कटकस्यादि, नोतन्मयां घमादेः

करणादि, अथान्यापि पात्रुपात्रा-

दुशी संपातनेदोमपदि विषसाकरणे

अजीवययोगे वर्णानि जीवस्य ग्ले
अपीत्यधम्मद्वेषाहति, चत्तरे के-

अरत्त्यादि, सङ्घातश्रोतमयानि

विद्यारेण, पदादिषु सामान्येन ४६२

१०३११-१०३८ क्षेत्रकालकरणे, जीवमय-

करणे द्युते कदापद्वनिशीपानिशीये

(अनारोहाः, द्वेषयताः) नोद्युते गुणे

तपःसंस्मौ, योजनार्थां मनोवाक्याः

(४-४-७) अधिकास्तत्र ४६२

१०३११ द्युवास्तवं केन केन कदा नयः कति-

विषं कथं द्वापानि ४६७

१७५-१७७४ कृताकृतादिद्वारविवेचनम् ।

१७८-१८२४ आलोचनाविनयक्षेत्रविषाळ-

क्षेत्रगुणान्वित्याहारः । ४६९

१८३४ दरेक्षवाचना (समुद्देशा) जुह्वा । ४७१

१०४०-४१ देवविधाविमुद्यो कदाकाल-

माः ४७२

१८४०-१८५४ मयसर्वो ।

१०४२-४४ साम्न एकार्थिफानि (सामसमस्त-

न्यमिकाः) निक्षेपाद्य प्रलेक्य,

द्रव्ये शर्कपातुलयोगविवय, भावे

दुःसाकरणं साध्यस्थं ज्ञानादि

वत्प्रोक्तं च ४७४

१०४५ सामयिकैकार्थिफानि ४७४

१०४६-४८ कर्त्तव्येऽह्ना, कर्म सामयिकं,

करणमात्रम्

१०४९ सर्वनिक्षेपाः (७) ४७६

१८६-१८९४ द्रव्ये सर्वां सर्वद्रव्यदेशैर्मन्त्राः,
सर्वयथानिरूपणं, भावसर्वं च ४७६

सामयि-
काधिकारा

॥ १४२

१०५०-५१ श्रोत्रादयो वर्ध, समयवत्तादिः

शशो योगः ४७८

१०५२-५३ प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६), द्रव्ये-

निष्ठतादि, क्षेत्रे निर्विण्यादि, भावे

सुते पूर्वापूर्वे नोसुते मूढोचरे ।

१०५४-१०५५, ११०५ यावज्जीवायः जीव-

निक्षेपाः, ओषे भापुः, भवे नार-

कापापुः, भोगे वधयादि, अधि-

काख्य ४८०

१०५६ सूत्रसर्गो सप्तत्वारिंशं दावं भद्रा-

नाम् ४८१

१०५७ करणप्रत्याख्यानप्रतिक्रमणानां वर्त-

मानवादि ४८३

१०५८ त्रिविधेनेत्यस्य विवरणं, विकृतरूप-

भावना ४८४

१०५९-१०६३ द्रव्यप्रतिक्रमणे चेष्टरूः,

भावे युगावती, द्रव्यनिन्द्यायां चि-

प्रकृत्युता, द्रव्यगर्हायां प्राद्वणः,

द्रव्यव्युत्सर्गो प्रसन्नचन्द्रः, अनुसम-

समाप्तिः ४८४

१०६४-१०६६ शानक्रियानर्थो, चपसंसारः,

धरणगुणस्थितस्य साधुता ४९०

॥ इति सामाविकव्याख्या ॥ भाग २ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिलवः ॥

१०६७, १११-११२४ चतुर्विंशतिलवे बहु-

विंशतोः (६) स्तवस्य च (४)

निक्षेपाः, द्रव्यस्तवे पुष्पादि, भावे

स्तुतिः ४९१

११३-११५४ भावस्तवाद्रव्यस्तवो बहुगुणो

न, समयवतः पुष्पाद्यानां न ४९२

११६४ आदस्य द्रव्यस्तवः संसारभवतु-

करणः ४९३

१४ अर्हत्कीर्तनप्रतिष्ठा ।

१०६८ लोकनिक्षेपाः (८) ४९४

११७-२०५४ द्रव्ये जीवाजीवो हृत्पलपिणो

सप्रदेशाप्रदेशौ नित्यानित्यौ, गति-

सिद्धमव्ययमव्याः पुद्गलनागतातीत-

धर्माद्याः स्थितिचतुष्टये, क्षेत्रे कर्त्तृवा-

चक्षिर्गण्यलोकः, फले समयवलि-

काद्याः, औदयिकाद्या वस्तुद्वारादि-

मांश्च भावे, वर्णाधिगुरुलघुतीव्रदुः-

खपरिणामाः पथे ४९५

१०६९ लोकैकार्थिकानि (४) ४९६ ,

१०७०-१०७३ द्रव्येद्रोदोऽप्यादि, भावे १०९१-११०२ जिनानां सामान्यविशेष-
ज्ञानं, लोकालोक्योर्जिना भावोद्गो-
तहराः ४९६
१०७४-१०७५ द्रव्यधर्मं यस्यादि कुलिक्रयं,
भावे द्रुतपरणम् ४९७
१०७६-१०८० तीर्थेतिशेषाः (४), द्रव्ये द्वाद्दे-
परमादियुतं, भावे क्रोधाद्यष्टविध-
धर्मच्येति धर्मादियुतम् ४९८
१०८१-१०८६ फरतिशेषाः (६), द्रव्ये गोम-
ह्रियादेः (१८), भावे अश्वत्थः कल-
दादिकरा, शब्देऽपहिलादि ४९९
१०८७-१०९० जितदार्ढस्ये, दर्शनादि, देह-
नारीर्जाः, अपिद्वन्मज्जिनाः,
स्यमित्यं च ५००

२-४५ चतुर्विंशतिमूलिः ५०१

नामहेतवः ५०२
५-६५ जिनप्रसादश्रयणा, आरोग्यव्योधि-
समाधिपार्यणा च ५०७
११०३ नसिफीलैर्वादिशानि (४-४) ५०८
११०४ सिध्यात्वाज्ञानात्रततोभ्यो मुञ्जा
वसनाः ५०८
११०५-१११२ श्रयणत्वा अनित्यत्वा,
भक्तश्रव्यवद्धारणा, वपदेसदासे,
भक्त्या कर्मसुखः, एत आरोग्यादि-
लभः, निर्मोक्षिदोऽप्यपतिः, पैलादेः
संशयः श्रेयः ।
५५ सिद्धिश्रयणा ५१०
१११३ हेतवेन लोकालोकप्रकाशः ५१०

॥ इति चतुर्विंशतित्वः ॥

॥ अथ वन्दनाध्ययनम् ॥

१११४-१५ वन्दनैकादिशानि (४) कसेला-
धीनि (९) द्वाराणि च ५११

१११६ वन्दनचित्तादिषु श्रौतलुल्लकादि-
दृष्टान्ताः ५१२

१११७-११ वन्दनीयावन्दनीये मालादृष्टान्तः,
ज्ञानावितीर्थाध्याधिकार सूचा ५१६

(१ घ.) पार्यसादिशेषाः ५१७
११२०-२३ पार्यसादेवन्दने दोषाः, तस्य च

तुलंभा बोधिः चारित्र्यनाशः, वस्य-
माद्य-शकुनीपारा-वैद्वर्यदृष्टान्ताः
(वसस्तस्यदोषाः) ५१९

२०६४१२३४५१ लिङ्गानामाणवचनो, अ-
पूर्वदृष्टे लिङ्गावशेषे च पर्यायादिमति

सिधिः, प्रतिपत्तिर्न, हयदण्डपुं-
भेत्ता ५२२

११५२-६४ भानतीर्थपादः, आलयादिना
मुविहितवान्, प्रत्येकपुढालम्बनानां
पात्रिनादाः, वृन्नाग्वेशका आद्र-
द्व्याः ५२७

११६५-८२ (१-३३) दशनतीर्थवादः पारि-
प्राज्येयो दशनं, अविस्मयनिष्कादयो
नरकातिहाः, पारिपुष्टिः, उद्यमे

गुणाः ५३०

११८३-८६ सालवनसेवा, भग्नानां तदेव

प्रभागम् ५३४

११८७-९९ नित्यमासे पैलभक्ष्यायांलाभे
विहितप्रतिष्ठये च सङ्गमाचार्याः

वज्रसामिनि उदावनर्षयः साळम्ब-
नानि, तानादिनिराकरणम् ५३५
१२००-२ मन्दस्य सर्वोऽपि लोक आलम्बनम्,
सौमल्य सचारित्राः ५३८

१२०३-६ ये आसनयशोषाविनलद्वन्द्वे
दोषाः, ये यशःकारिणस्तद्वन्द्वे
गुणाः ५३९

१२०७ आचार्यादेः (स्वरूपं) कृतिकर्ण ५४०

१२०८-११ जमात्रादिसाधुर्वन्दकः, धव्या-
क्षिमादौ उपमान्वादीन् वन्देव

१२१२-१३ प्रतिक्रमणादौ (८) मुषाधुवाणि
वन्दनानि ५४१

१२१४-१८ पञ्चविंशतिरावश्यकानि उत्तम-
तम् ५४२

१२१९-२६ वन्दनदोषाः (३२) ५४३

१२२७-२९ वन्दनफलं (वितयादितोऽक्रि-
यान्तं) विनयभेदवा च ५४५

२ सू. वन्दनसूत्रम् । ५४६

१२३०-३३ इच्छादीनि (६), इच्छाऽनुशा-
ऽवप्रहणां निक्षेपाः (६-६-६) ५४८

१२३४-३५ अनुशास्य प्रवेशाः, चिरम्पशः,
यात्रायापणे क्षामणा ५४९

१२३६-३७ आचार्येयचतानि, वन्दनप्रती-

च्छाविधिश्च

१२३८-४२ क्रियानैक्यपरिहारः द्वितीयव-
न्दनसङ्ख्यापरिहारः, वन्दनफलं च ५५०

॥ इति वन्दनाध्ययनम् ॥

न्यादि-
सक्तं
आरम्भं

॥ १४४ ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणाध्ययनम् ॥

१२४३-४४ प्रतिशमनप्रतिशमकप्रतिशमन्-

न्यानि, धारं द्विकालिकं, द्वितीये

प्रशस्त्रयोगवान् ५५१

१२४५-५४ कृतिशमनैकादिकानि (८)प्रति-

क्रमण प्रतिपरण-परिहरण-आत्मा-

नित्य-निन्दा-गर्ह-शुद्धीनां निक्षेपाः,

अप्रादिनिक्षेपः (६) अप्यादिदृष्टा-

न्ताः (८) ५५७

१२५५ अपिक्रमासे चूडोपाक्रमः

१२५६ सायं सापनीयं समरे वा सर्वेभ्यम्

१२५७-६० आलोचने आराधना, भाषा-

न्तयोः सदा चारिणं च द्वे, माध्यम-

नामासने चारिणं चैकम् ५६३

१२६१-६३ वैवसिकप्राक्तिके, हारणोक्त-

धिके, साक्षिचचारुगोसिक्त्यावत्स-

रिक्तोत्तमायांनि, महद्भवानि अक्षप-

रिक्षा च यावत्प्रतिके, सद्यराहावित्त-

स्य ५६३

१२६४-८४ मिथ्यात्वासंयमकपादयोगेभ्यः

संसारदा भावप्रतिक्रमणं, मन्वर्वदत्त-

रष्टान्ते क्षोधादा सायाः, विषोषा-

रणे अन्ताराहारीविद्याप्रयोगः ५६४

३ सू. चत्वारि मंगलं सूत्रं

४ सू. चत्वारि द्योतुतना सूत्रं

५ सू. चत्वारिसखं सूत्रं

६ सू. इच्छानि पटिकमिठं, जो मे वेव ०

५६९

१२८५ प्रतिमिद्वरणादियुप्रतिक्रमणम् ५७३

७ सू. इच्छानि पटिकमिठं, हरिया ० ।

८ सू. इच्छानि पटिकमिठं फाम ० । ४७४

९ सू. पटिकमामि गोय ० । ५७५

१० सू. पटिकमामि चाव ० (अतिक्रमादि)

५७६

११ सू. पटिकमामि एय ० । (दण्डगुमिपूदा-

हरणानि) ५७७

१२ सू. पटि ० वीदि सधेदि । (गौरवे मङ्गा-

पायेः, क्षानदिप्रत्यनीकता, सम्भा-

देतवः, विक्खाः (१६) ५७९

॥ अथ ध्यानशतकम् ॥

मङ्गलं प्रसिद्धा च (योगीश्वरः) ५८२

१२ ध्यानचित्तोर्ध्वमे, भावनानुप्रेक्षा-

चिन्ताचिन्तानि ५८३

प्रतिक्रमण

ध्यानश-

तकं च-

॥ १४४

३-४ ध्यानाभिधिः, चिन्ताध्यानान्वरे,

ध्यानसन्तानः ।

॥ ५ ध्यानभेदास्तत्तं च ५८४

॥ ६-१८ आर्चध्यानभेदाः, सप्ताष्टर्द्धनं, न

मुनेः शतालम्प्यन्तः, संसारपीडा
तस्य, हेदयानिमित्तानि स्थापितम् ।

॥ १९-२७ रौद्रस्य भेदाः, रागिनो, हेदवा

लिङ्गानि च ५८८

॥ २८-६४ धर्मभान्तस्य भावनादेशकालासंगल-

नस्य मन्त्रादयः ध्यानतुष्टेः शेषा-
लिङ्गकृतानि, ज्ञानदर्शनचार्दितमैरा-

ग्यभावनोः, ज्ञानशालासन्तानि, वाच-
नार्थान्यालम्प्यन्तानि, आत्माया विज्ञेय-

स्वस्य, प्रममन्ताः, गहने श्रद्धास्थितिः,

रागादिदोषध्यानं, कर्मप्रदेशादिध्यानं,

उद्यमसन्तानादि लोकादित्यादि जीव-

लक्ष्यादि संसारसमुद्रप्रतपोवध्यानं,

क्षीणोपशान्ता धर्मस्य स्वामिनः, पूर्व-

धरकेयलिनः शुद्धस्य, ध्यानोपर-

मेऽनित्यवागाः, हेदयाः पीवाद्याः,

श्रद्धादि लिङ्गम् । ६०२

॥ ६५-९२ शुद्धस्य ज्ञानशालासन्तानि, विपभा-

रतोयापनयनम् योगरोधः, नानानय-

पूर्वगतेन ध्यानं, केयलिनोऽन्यौ भेदौ,

आश्रवद्वाराद्यनुश्रवः, शुद्धा हेदया,

अववादीनि लिङ्गानि । ६०९

॥ ९३-१०५ धर्मशुद्धिफलानि, उपसंहारश्च । ६०९

॥ इति ध्यानशुचकम् ॥

पण्डि० पंचदिं निरियादिं (२५

भेदाः) ६११

पण्डि० पंचदिं काम० । (इयसिनि-

लादिषु दृष्टान्ताः) ६१५

॥ अथ पारिष्ठापनानिर्णयुक्तिः ॥

१२८६-८९ प्रतिष्ठा एकेन्द्रिये तत्तावतात-

भेदौ आभोगानाभोगात्मपर्याद-

णानि । ६१९

२०७४ तत्तावत्साकारदौ, अवज्ञावत्स्य कर्ष-

रादौ । ६२२

१२९०-९२ नोपेकेन्द्रियमत्सेषु सज्जातात-

त्वाते ६२३

१२९३-१३१५ सचित्तसंयतमनुष्यपञ्चेन्द्रि-

यस्याधियादौ कारणेऽनाभोगेन

वा दीर्घितस्य ऋतिपट्टकप्रियत्वा, व्य-
वहारः, गुणयुक्त्युपान्यापनं, व्यु-
त्पत्तिर्न, लङ् समारोणे च विधिः ॥ ६२८
१३१६-५२ अचित्तसंयते गीतायान् परित्या-
गमे प्रतिशेखनदीनि द्वाराणि (१६),
महात्सण्डिलप्रत्युपेक्षा (१ प्र.) निष्-
तप्तलवचः अनन्तकफाद्यवोर्गच्छणं, अ-
विषादः, अविद्याने विधिः, गुणल-
क्षविधिः, आचमनं, तस्यथाऽनिव-
र्त्तनं, तस्मा दप्या, फलरक्तकारकत्वं,
अग्निमात्रं शीर्षं, सिद्धं, कल्पाने
सागः,

२०८ प्रवेशे योग्यद्विः, नाममहने विधिः, ५१
अप्रदक्षिणत्वं फलोत्सर्गे विधिः क्षणपा-

ऽस्त्राभ्यासौ, शङ्खनाः, गतिः, अक्षिते-
ऽपवादः । ६३७
१३५३-७० अखयते धौले, अन्विषवनीप-
कादौ, नोमनुखवचिचिचि जल-
रादौ, नोत्रसे आक्षरादौ, आचार-
भाषो त्रिःस्थानं श्रापणं, आचार्योप-
वेडजातं, नोलाहरोपकरणे, वस्त्रे
रेखा यात्रे चीकरं (१५.) मूलोक्त-
शुद्धौ एकं द्वे त्रीणि, उच्चार्यो छया-
विग्रहं, अनुकूलैर्मन्त्रो वागम् । ६३९
॥ इति पारिप्राग्निकानिर्बुक्तिः ॥

१५ षडि० छहिं जीव०

छेदनामु जन्मसूत्रक्यामपतकट-
शान्तौ, मयानि यदम् । ६४४

५२ नव ब्रह्मगुप्तयः ।

५३ दक्षया यवियर्माः ।

५४ (११) आबळप्रतिमाः ।

५५ (१२) साधुप्रतिमाः ।

५६ (१३) क्रियास्थानानि ।

१६ चोदसहि भूमगोमेहि । ६४९

५७ (१४) मूलप्रमाणाः ।

५८-९ (१४) गुणस्थानानि ।

५९-११ (१५) परमाचार्यमिकाः ।

५१२-१३ (१६) समयादीन्व्यप्यनानि ।

५१४ चरदसविवः सेयमः ।

५१५ (१८) अत्रहाणि ।

५१६-१७ (१९) ज्ञानाध्ययनानि ।

५१८-२० (२०) असमाधिस्थानानि ।

१७ पृथ्वीपाद सवेदि । ६५५

× १-३० पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-३३ स पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-३५ (२२) पृथ्वीपादः ।

× १-३६ (२३) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-३७ (२४) पृथ्वीपादः ।

× १-३८ (२५) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-३९ (२६) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४० (२७) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४१ (२८) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४२ (२९) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४३ (३०) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४४ (३१) पृथ्वीपादः सवेदि ।

× १-४५ (३२) पृथ्वीपादः सवेदि ।

॥ अथ योगसद्व्याख्या ॥

१३७६-७५ आलोचनापरिष्कारादयो योग-

संग्रहः (३२) ६६३

१३७६ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६४

१३७७ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६५

१३७८ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६६

१३७९ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६७

१३८० आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६८

१३८१ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६६९

१३८२ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७०

१३८३ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७१

१३८४ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७२

१३८५ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७३

१३८६ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७४

१३८७ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७५

आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७६

आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७७

१३८८ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७८

१३८९ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६७९

१३९० आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८०

१३९१ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८१

१३९२ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८२

१३९३ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८३

१३९४ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८४

१३९५ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८५

१३९६ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८६

१३९७ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८७

१३९८ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८८

१३९९ आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६८९

१४०० आलोचनापरिष्कारः दृष्टान्तः ६९०

१३९९-१४०० सर्वे वास्त्रकर्षिः । ७०९
१४०१ द्रव्यप्रणिर्था युगुलः, मावप्रणिर्था
भन्वमित्रकुण्डलो । ७१२
१४०२-३ सुविधौ वैतरणिः । ७१३
१४०४ संवरे तन्द्रीः ।
१४०५ आगवोयोपसंहारे जिनदेवः । ७१४
१४०६ विरक्तवै देवजसुता ।
१४०७-८ मूलगुणप्रत्यक्षाने मनुजयः,
उत्तपुण्यप्रत्यक्षाने प्रमोपघर्मे
यतामौ । ७१५
२०९-२१६x न्युत्तमौ प्रत्येभ्युदाः (४),
दृष्टमेन्द्रमजकठयचूतपृष्ठसरूपम् ।
७१६
१४०९-१० मनुवन्त्येर्मुण्येष्वाः । ७२१

१४११-१२ अप्रमादे मायसुन्दरी, 'प्ले
वसंतमासे' गीतिम् ।
१४१३ द्यालवे विजयः । ७२१
१४१४ घ्याने पुण्यमूर्तिः । ७२२
१४१५ मायान्तिके घर्मदक्षिः ७२३
१४१६ ओदत्यागे जिनदेवः ।
१४१७ प्रायश्चित्ते घनगुणः, कायपतायां
मन्देयी । ७२४
॥ इति योगसङ्ग्रहः ॥
१८ तेत्तीसाए आसाम्मादि । ७२५
x६८-७१ प्रत्यक्षप्रमादावताः, अर्द्धमाया-
वतादिकाः सूत्रेष्वा या ७२७
१९ अर्द्धमायावताः (१९) ७२८
२१७-२१९x सप्तद्विषोदधिः, नृजयतिक्रवः

प्रकृतिपुरुषरूपो वा लोक इत्यस्य
रुण्डनम् । ७३०
२० व्याविद्यादिकाः (१४) सुवासा-
वताः । ७३१

॥ अथ असाध्यायनिर्णयः ॥

१४१८-२३ असाध्यायनियुक्तिप्रतिष्ठा संय-
मयावोपयतिक्रियादिव्यपुद्गद्भा-
रीरेः परसमुत्पत्त्यं पञ्चया । (स्लेष्ट-
यजट्टान्तः सोपनयः) ३१७
१४२४-२६ महेकभिक्षवर्पसचित्रजाति
द्रव्यक्षेत्रफलभावैः साग्यानि, सो-
पनयपञ्चपुद्गपीट्टान्तः ७३२
२२०-२२१x महिकादित्यरूपम् । ७३३
१४२७ संयमोपयान्तिके यवता । ७३४

१४२८-३० चानुमानादिपर्वोऽपरां, पौ-
 धारिरत्नं, त्यागविष्टे येथीक्य-
 गेतिगो गगनाय ।

१४३१-४० गन्धर्वनगरादि मारिचं,
 प्रदने आनीनाथीनोति, महामहाः
 (४), अलङ्कारायाये दोषाः ७३५
 १४४१-४५ शनिष्ठारिपुद्गे भवते मृतके
 निर्मणे य निधिः । ७३८

१४४६-५०, २२२५ गलसलरपरां शोभि-
 नारी विधिः, अन्तर्द्विर्धातपरां-
 गंराभाये य विधिः । ७४१

१४५१, २२३-२२५५ अण्डभेदे विधिः,
 लरागायिप्रमाणं, जरायोः पो-
 रुणीयं, कथिरत्नोऽपरायायः ।

१५००-१४ अहमसमुत्पेऽलगायाये प्रण-
 विधिः, अमण्या इतरसिन् सप्त
 यन्माः, अलगायाये दुतामत्तयादि,
 उपसंहारश्च । (पतुस्त्रिशतः दाते
 यावरस्यानानि) ७५७

॥ इति अलगायायनिर्युक्तिः ॥

२१ जितनमःकारः । ७६०

२२ प्रवचवर्णनम् ।

२३ अद्यानादिसरूपं, असंयमादिसागः ।

७६१

२४ अस्तप्रतिक्रमणम् । ७६२

२५ मुनिवन्दनम् (१८०० शीलाङ्गानि)

८-९५ सर्वजीवक्षामपानि ७६३

॥ इति प्रतिक्रमणाव्ययनम् । भाग ३ ॥

७५४

॥ अथ कायोत्सर्गोद्यमम् ॥

१५१५ भावप्रवर्धनः (१०)

१५१६-२४ तदुद्धागानुक्रमदृष्टान्तः सो-

पतयः । ७६४

१५२५ कायोत्सर्गे निक्षेपकारिद्वलीनि

(११) द्वापानि । ७६६

२३२-२३५५ तदुद्धागानुक्रमदृष्टान्तः प निक्षेपाः

(१२-६)

(१२) १५२६-४३ गतिपायस्त्रैजसक्रमेण,

निकायपायो जीवमिकायाः, द्रव्यका-

यचर्चा, पर्यायभयः समूहः, याद-

कयः पयोवी, कार्यकार्षिकानि

(१३)

१५४४-४९ उत्तमोप निक्षेपाः (६)

(१४) एकार्षिकानि (११) च, मित्रानर्थयो

चेष्टा, उपसर्गोद्यमयः । ७७१

१५५०-५५ सांस्कारिकोद्यमयः, -चोद्धृ-

ष्टमवद्व । ७७१

१५५६-५८ तदुद्धागानुक्रमदृष्टान्तः (१) ७७२

१५५९-७५ कायोत्सर्गगुणाः, ध्यानदृष्ट-

काले, ध्यानस्थानं, न केवलं मतः-

परिणामो ध्यानं, भक्तिरुद्धते निवि-

ष्यन्तम् । ७७३

१५७६-९३ तदुद्धागानुक्रमदृष्टान्तः (१) स्वरूपं,

ध्यानचित्तयोर्भेदः । ७७६

२६ इच्छामि ठादं फलसम्पन्नं । ७७८

२७ तस्य उत्पत्तिररंभः ० अन्ततः ७७९

(१-२४) १५९४ एकमनसोद्विचापानं

तदाः शुद्धिद्वय । ७८०

१५९५ दिवसाधिचाराः ।

१५९६-९७ मृगयवृत्तिरहितोद्विचारचिन्तनं

ध्यानं च । ७८१

१५९८-१६०१ दैवसिक्कदौ गमनयं, तच्छब्दा-

समाधाने ।

१६०२-३ सिष्यादुक्तवाक्ष्यार्थः ।

१६०४-६ उत्तरप्रायश्चित्तादिव्याख्या ७८२

१६०७-१३ उच्छ्वासयनिर्भयं, वातनिस्-

र्गदौ यतना, क्षम्यवाद्याकाराः । ७८३

१६१४-२० ससूयं भूमिं प्रेक्ष्य फाले कायो-

त्सर्गः, गुरोर्द्विगुणं दैवसिक्कं, प्रति-

कल्पविधिः । ७८४

२८ सन्तोषेण धरिद्वितं ७८६

२९, १०-१३ पुस्तकवरदीवने ७८८

३०, १४-१८४ सिलानं युदानं । ७८९

१६२१ वर्तमानस्तुतिप्रथम् । ७९०

१६२२-२४ देवसिद्धात्रिकयोः कायोत्सर्ग-

कृतयः, पण्मासीतपश्चित्तम् । ७९१

१६२५ क्षामणेपु गुरुगव्यानि ।

३१ क्षामणासूत्रम् । ७९२

३२-३५ पाक्षिकक्षामणासूत्रानि । ७९३

२३६-२३७४ पातुर्मासिकादौ देवताकायो-

त्सर्गादि । ७९४

१६२६-२९ देवसिकादिक्वायोत्सर्गमानम् ।

७९५

१६३०-३५, २३८४ गमनागमनादौ भुक्तादौ

विहारं वदेशदौ च कायोत्सर्गः

(प्र.१-१.) दुःस्त्रे नावुचारादौ च कायो-

त्सर्गः । ७९७

१६३६ पादसमा सञ्चयायाः । ७९७

१६३७-४०, २३९-२४० (१ प्र.) निर्मोय-

मुत्सर्गः ।

१६४१-४४ कायोत्सर्गे विधिः, दोषाश्च

(१९) ७९८

१६४५-४७ यासीचन्दकल्पस्योपसर्गसर्वस्य

शुद्धः, शुभद्राद्या दृष्टान्ताः (४)

फलं च । ७९९

२४१४ ऋक्चयत्कर्मनाशः । ८०१

१६४८-५१ क्षयोत्सर्गे भावना ।

॥ इति कायोत्सर्गोध्ययनम् ॥

॥ अथ प्रत्याख्यानाध्ययनम् ॥

१६५२ प्रत्याख्यानप्रत्याख्यातप्रत्याख्येयानि

पश्चत् कथनविधिः फलं च प्रा

रणि ८०३

२४२-२४७४ (१ प्र.) प्रत्याख्याननिर्देशाः

(६) द्रव्ये राजसुतादृष्टान्तः, भावे

नोद्यते मूले सर्वदेशे इत्वरथाव-

त्कार्यिके, मूलगुणाः (५) ८०५

१६५३-५८ श्रावकभेदाः (३२) (१४७

मङ्गाः) ८०७

(१.१-४ प्र.) श्मश्रुतभङ्गाः । (१६८०८) ८०७

३६ सम्यक्त्वालापकः सातिचारः ।

(अमियोगेषु कार्मिकचक्रणध्या-

वक-भिक्षुपासकसौराष्ट्रदृष्टान्ताः) अ-

तिचारेषु पेयाश्चापहृतनृपचौरदुर्ग-

न्यिकादृष्टान्ताः) (३६३ पाल-

ण्डितः) ८११

| | | | | | |
|----|--|-----------|---|---------------|---|
| ३७ | सूत्राणांतिपाठप्रमाणानं अत्राणं साविचारम् । (कोट्टगप्रस्तापदिकुशेय- दधाना, प्रवविधिम्) ८१८ | ४४ | कर्मद्विगति । ८२९ | १६७० | साकारप्रताख्यानं । ८४३ |
| ३८ | साविचार द्वितीयम्, (कोट्टगप्रस्ताप- रावन्तिरिग्राहदधान्याः) ८२० | ४५ | जन्यदण्डः साविचार । ८३० | १६७१ | निराकारम् । ८४४ |
| ३९ | द्वितीयं साविचारम् । (गोटीप्रा- वरुः) ८२३ | ४६, १९-२१ | समायिसे स्वरूपं शिक्षादि मे- दः सर्वेश्वरमन्मसविचारस्य । ८३१ | १६७२ | दत्तादिभिः कुतपरिमाणम् । |
| ४० | चतुर्थं साविचारम् । (मात्रादिग- मने दधान्याः, फलकुलपुनःफळ) ८२३ | ४७ | दिग्गंतं साविचारम् । ८३४ | १६७३ | निरवशेषम् । |
| ४१ | पञ्चमं साविचारम् । (लोम- नन्दिः) ८२५ | ४८ | पौषपोषवासः साविचारः । ८३५ | १६७४-७५ | अकुट्टमुखादि संकेतं पौ- षा- यद्व्याख्याख्यानं च । ८४५ |
| ४२ | दिग्गंतं साविचारम् । ८२७ | ४९ | अविधिसविभागः । ८३७ | १६७५-८१ | एकविधमेकविधेनैतानि ८४६ |
| ४३ | वपुषोपादिसंमाणं साविचारम् । ८२८ | ५० | अपुनर्वाचीना कालः, सम्यक्त्वमेदाः, प्रतिमायाः, संलेखनाऽविचाराः ८३८ | १६८२, २४८-२४९ | अष्टकुलानां एतेनं दानं च, शुद्धिपदप्रतिष्ठा, अद्वान्नानविन- यादुभाषणानुशाकनाभावाः । ८४७ |
| | | १६५९-६१ | वपुषणे अनागतविद्यान्वावि- (१०) प्रत्याख्यानमेदाः । ८४० | २५०-२५७ | अद्वानादिसंख्यम् । |
| | | १६६२-६३ | अनागतं पुरुषादित्यः । ८४१ | ५१ | नमस्कारसहितम् ८४९ |
| | | १६६४-६९ | अतिशक्तं कोटिसहितं निय- मितं (अवप्रसङ्गन्ते) ८४२ | १६८३-८४ | आहारभेदव्युत्पत्ति । ८५० |
| | | | | १६८५-८७ | सुखेव यद्वायं भेदाः । |

१६८८ सन्वाङ्मात्रः प्रमाणम् । ८५१

१६८९ स्युष्टगतिव्योभिततीरिक्कीपिचारः

अपदानार्थः । ८५१

१६९०-१२ आधवदारपिथानादि मोक्षा-

न्वं फलम् ।

१६९१-९७ प्रत्याख्याने आकाराः । ८५२

वैरुपीप्रत्याख्यानम् ।

५१ दृक्काशनप्रत्याख्यानम् । (विष्णुवै

अभिप्रवे च भेदाः) ८५३

१६९८ विष्णुवै अष्टनवाक्रास्मानम् । ८५४

५४ निर्विहितप्रत्याख्यानम् ।

१६९९-१७०१ आचामान्त्रभेदाः कुड्ड-

पञ्चक च ।

१७०२-३ विकृतिरुनिर्विकृतिकविचारः ।

८५७

१७०६ पारिष्ठापनिकविचारः । ८५८

१७०७-८ पारिष्ठापनिकाविधिः । ८५९

१७०९-१२ श्वेतयोधनुर्भङ्गी, प्रत्याख्या-

प्रत्याख्यायकस्वरूपम् । ८६०

१७१३ द्रव्येऽशनावि भावेऽज्ञानादि प्रत्या-

ख्येयम् । ८६१

१७१४ त्पक्षितविनीतव्याधिसोपुष्पाः

वर्षः । ८६२

१७१५ आसायाऽऽशमासो दृष्टान्वाहितो

वाक्यः ।

१७१६ प्रत्याख्यानस्य फले धर्मिलक्षणभक्तौ

दृष्टान्तौ ।

१७१७ प्रत्याख्यानान्मोक्षः । ८६४

१७१८-१७१९ ज्ञानक्रियानये स्थितपक्षद्वय,

चरणगुणस्थितः सायुदिति । ८६४

॥ इति प्रत्याख्यानारण्यनम् ॥

॥ इत्यावश्यकं बृहद्विषयानुक्रमः ॥

॥ ओषनियुकिवृक्षविषयानुक्रमः ॥

- १-२ सामाचार्युपक्रमेणाऽऽवर्यके सम्ब-
न्ययोल्लास्य उपोद्घातः ॥ १
अहंदादिनसाकारः, धरणानुयोग-
वृक्षभारादिनियुक्तिप्रसिद्धा । २
ओषैकाधिकानि (४), नियुक्ति-
धार्यः । ५
२-४ धरणसप्ततिः । ६
३-४ धरणसप्ततिः ।
४-४ अन्यानुयोगसत्त्वाशङ्कानी । ७
५-४ धरणधर्मगणितद्वयेषु यथाक्रमं
महद्विफला । ८
६-७-४ देवपत्नी चरणार्थमाचरणं महत् ।

- ८-१०-४ वृक्षजनकत्वबलोल्लासकरट्टानन्दः । ९
११-१२-४ अल्पाक्षरसहाय्यचतुर्थी, ओष-
भातदृष्टिवृक्षार्थसहितदृष्टान्ताः । १०
१३-१४-४ प्रथमातिभवमभक्तदृष्टान्तोच-
नियुक्तिः । ११
॥ अथ प्रतिलेखना ॥
३ प्रतिलेखनार्थिणोपपत्तिप्रमाणानुवतन-
वर्जनप्रतिलेखाऽऽलोचनाविदुषो
द्वाराणि (७) । ११
४ प्रतिलेखनैकाधिकानि (१०) । १२
५ प्रतिलेखनप्रतिलेखनप्रतिलेखि-

- न्यानि कुम्भयत् । १३
एकोऽनेके, निष्कारणिका इतरे च,
क्षारणिकैकत्वकथनम् ।
अत्रिवदुन्निधादीनि (१०) कार-
णानि । १३
१५-१६-४ अविसर्वाद्यैर्वाग् द्वादशवर्षानां नि-
र्गमः । १४
१७-१८-४ अग्निदकारिणीस्वरूपं तत्र वर्णयो-
नि च ।
१९-२०-४ म्लाने उद्धर्तनादिविधिः, अभि-
प्रवृद्धिः, संमोचने निक्षेपः, वृन्द-
वाते गिरिता, एकीभवने आलोच-

नादि, सोममुख्यादावनन्तरविशेष-
स्थानादि । १५

२३-२७+ अथमे गोदृष्टान्तो भेदे निर्विषय-
भक्तियोगोपकरणजीवहरेषु, अन्त्य-
योगभेदः, अस्मिरादिशङ्कया राजद्वेषः,

मालवक्षोभः, वादेन राजद्वेषः । १८

२८+ नियोगपाप सूर्यार्थपृच्छायै प्रतिच-
रितुं वा भेदः । २०

३१-३०+ स्मिदिते मन्दगतिः औपधायः शैक्षो
वा देवतादेशश्चेति भेदकारणानि ।

३१-३२+ चरगायां संदेशः, अभिमद्विज्ञा-
भावे गगामन्त्रणं, पृच्छाविधिः,
कृतिकर्म । २१

१-१३ पौरुषीकरणकरणे, द्विरपृच्छायां

दोषाः, आगरणविधिः, प्रमातं या-
वत्ससदायः, प्रमासन्नोपयोगः, हि-
मत्तेनादिभयं, लेहपयोवर्जनं, स्ना-
पनादुलाङ्घिका, अपरिणते गन्तु-
तम् । २२

अस्यण्डिलसंक्रमणविधिः । (चल-

व्याक्षिप्तानुपयुक्तभङ्गाः (८) २३

पृच्छा(३)यवन(३-३-३-३-३)यो-

विधिः । २४

१६-२२ पुरुषस्त्रीनपुंसकानि स्वविरमव्यव-

दणाः, स्वान्यवार्मिकौ, आत्मलवीवाः

उत्सर्गोपवादौ, पार्थस्वितोऽनुज्ञायाः,

पृच्छायां पुरुषादिसंयोगाः । २९

२३-२४ पृथिवीकाये सञ्चितादि (३) कृ-

ष्यादि (५) शुष्काद्रैगमनविधिः,

३३+ मधुसित्यपिण्डकचिक्विष्यस्वरूपम् ।
२५-२६ व्याख्यादिस्तेनादिप्रत्ययाः, आका-
न्तानाकान्त्वसप्रत्ययायेतरे विधिः । ३०
२७-२८॥ पादलेखनिकास्वरूपम् ।

२९-३४ अन्तरिक्षाण्काये विधिः, भौमेऽने-
काङ्गादि (५) पदभङ्गाः (६४), सङ्के-
वके चलादि (३) भङ्गाः (८), पापाण-
मधुसित्यवातुकाकदम्भेर्देवैर्जलम् ।

३४+ संवट्टलेपोपरिभेदास्तीरे उत्सर्गश्च । ३२

३५-३९ संपद्यद्विजलौत्तरणविधिः ।

४०-४३ तेजोवायुवतस्यतिप्रसङ्गराणि । ३३

४४-४६ परस्परसंयोगे यतना । ३५

४७-६१ संयमादात्मनो रक्षा, न लोकेन

न्यादि-
सप्तके
४ ओपनि
धुक्तौ।

॥ १५० ॥

समान्या, मरमोक्षयोस्तुत्या हेतवः,
यवायवयोर्निर्वाण्यत्र, दलिकं प्राय
विधिनियेयो, अतिचारुद्वारेक-
हेतुवा, न परश्रवयो वन्या, शुद्धार्थ
यवता, हिंसापरिणामो न शुद्धिद्विज्ञः,
त्यागपरिणामस्य मुक्तिः ३८
ग्लानमन्दिताद्योर्निर्भवसतिस्थितिद्व्या-
राणि प्रवेष्टे ।

६३

प्रवेष्टे पेष्टिहृत्परिग्रह्याः, सा-
म्भोगिकासाम्भोगिकैश्चनेकसाधर्मि-
पादिषु इत्यादिपठना । ३९
प्रदृतिः दर्शनं सहृदिश्राद्धा द्दलोके,
ग्लानचैलवादिभ्रमानीकाः परलोके ।

६४

६५-६७ स्वप्नेण पृच्छा ।

६८-७२ चैतसाधुग्लानवैदाव्यवत्विधिः । ४०
७३-७६ एवाकिंत्वाने विधिः । ४२
७७-८१ संयत्तीविधिः ।

८२-८४ आचरन्मिषक्वे ग्लानयोगस्य ग्ल-
णाग्लने, पाश्चात्यादीनां चतनया । ४४

३५-४१- ग्लानप्रतिजामरकादिपह्णाग्लने
विधिः, शयुक्तेन पञ्चानां, देवकुलि-
कानां त्रारष्टन्म, अविस्मरेतिहवानां
करणम् । ४६

४२-४६- निनावायोऽऽश्वयोः शवस्यं, ओ-
निकृदिहृदद्वान्यौ । ४७

४७-४९- प्रयगादिकार्यं वहिर्गमनं यावद्
ग्लानवैद्यादृत्यं वतावदयज्वा । ४७

८५-९३ प्रजिक्रामयसंस्तुतिदानभाद्रभद्र-
विषयः

५०-६४- व्रजभ्राजयोः क्षीरपहेण विधातः,
संसत्वां स्त्रीस्यशंप्रभूतमक्षणादि,

दानश्राद्धे घृतपुण्यादि, भद्रे लघु-
कादि, महानिनादे स्निग्धादिदोषाः,

पारिहृदिहृत्क्षीरादिना परिवर्जितादिना
व्यापातो ग्लानतथादि च, तक्षीर-
योर्मिहृणं, दूरोत्थितस्तुल्लासदौ प्रवेशः,

ऊरौदीर्घा मिश्रा, विधिनाऽऽपृच्छ्य
दोषवर्जनेन प्रवेद्या, उद्गमादिरूपणा,

वहिःस्थाने दोषाः, प्रवेष्टे विधिः,
दोषशुद्धिः, बालकभावे विधिः,

शून्यपृहे विधिः, सागारिके विधिः,
निश्रमणा वैद्यकोपः, स्पष्टिग्लान्यभा-

मयोर्भेद्या, न क्षिणव्युत्पातिक्रमः । ५४

मार्गे ग्लाने
ग्रामप्रवेष्टे
च विधिः

॥ १५० ॥

१६-११६, ६५-६६+ साधर्मिके शास्त्रावत-

दृष्टादृष्टदुष्टादुष्टतद्वशात्साधर्मिकविधिः,
साधूनां वाङ्मयवत्प्रत्युपेक्षणा,
संयमसद्भिर्भद्रकृद्भ्येषु वसतिः,
अमनोहे निषेध मित्रा वसतिः,
मनोहापरीरुक्तेऽप्राक्षिक्तस्याप्याग-
तसंयतीवर्जिते पार्श्वेऽथादिवसतो
स्नानविधिः, अशिवादौ स्नाने सिद्धिः,
पर्याप्तु गमने दोषाः, स्नाने इण्डक-
वार्यसामाचार्यौ, दृक्काले उपसं-
हारः । ६०

११७-१२३, ६७- सागरमीनवत्स्यजिवाः,
चक्रस्तूपार्थमनुपदिष्टाग्नीवार्याः,
गीतार्थतन्निश्चाविहारौ, अन्यस्य वि-
राचना ६०

१२४-१४३, ६८-७२ यत्तमानविहदवधाप-
नादिण्डकाः, प्रत्येकदुष्टाया निर्गवाः,
आचार्योद्या गच्छे, सिद्धविहारभ्या-
मवधावन्ता, गच्छताविहरणविधिः,
क्षेत्राप्रत्युपेक्षणेऽप्यप्रच्छने क्षेत्रे मागे
च दोषाः, शिष्यप्रतीच्छकतकज-
युद्धपृच्छविधिः, बाल्यद्वग्नीवार्य-
योगिष्टुभमेपणे दोषाः, फाले
विधिः । ६६

१४४-१७५, ७३-७८ यत्तमाने वचात्सून्यादि-
प्रत्युपेक्षणे, सूत्रार्थोत्तरणं, क्षेत्रनिमा-
गादिविधिः, गुर्वावर्य शिष्यादि, स्न-
ण्डिद्वदिप्रत्युपेक्षणा, शब्दावतनुद्धा,
दुष्टभक्तनवा वसतिः, द्रव्या-

वदुक्षापना, साधुमानकालाकृपणं,
संकीर्णं प्राणुर्णके आगते विधिः,
अन्यपथे चागमनं, गुणोलाचनं,
कृपणविधिः, मतप्रहणं, आचार्य-
प्रागण्यं, दुष्टादवन्मथवलाः सा-
वधः, तरुणाश्चतुर्थे, सविराधा अनु-
युक्ते, पञ्चकैवलं, शब्दावतराऽऽपृच्छा,
अपृच्छायां नियमकथने च दोषाः,
ज्ञापनविधिः, ७३

१७६-२१०, ७९-९४ यत्तमाने, प्रशस्त-
विद्यादौ सत्याहे प्राणं धृष्टभवेणं,
शकुनाः, शब्दावतराऽपने, इष्टकर-
णवहनविधिः, अक्षावयवादि-
करणं, पञ्चानुक्तेन सहेतुः, स्वपना-

वन्नियुक्तः पूर्वनियुक्तो वा पृच्छयः,
विस्मृतौ कविष्वुच्चारद्रवादिनिर्गतः
द्रव्यात्तरादिना वा सदिशेत्, दूरोत्थ-
वादिदोषपरिहारः, सिक्ताः प्रान्तप्रारं-
मुक्तवै, विरै प्रतिचरणं, एकः पथा
द्रव्युन्मार्गो, शब्दं कुर्वन्वाश्रितं कृत्वा,
वार्तालिङ्गे बोलः, एवमुद्गमपरि-
हारः, पुरुषादपेक्षयाचार्थैवावृत्त्ये
विशेषः, प्रथमालिङ्गा भक्तपानप्रह-
विधिः, प्रथमालिङ्गविधिः, पुनर-
क्षिण्ढनमपि । १०५

२५७-२६३ संसर्गं केवलिनः, संसर्गसंस-
क्तयोश्छद्मसातं, समुद्रातोऽपि भा-
वप्रतिलेखना, आरक्षकदृष्टान्तेन

द्रव्याभ्युपेक्षायां दण्डः, किं कथ-
मित्यादि भावप्रत्युपेक्षणा । १०६
२६४-२८१, १५१-१७३४ अत्युपेक्षणीये
त्रियासानं, कथावादि कृत्वा कायो-
त्सर्गः, न सूरिपाश्चात्तमृष्टादौ भात-
विदोपात्त, संज्ञासादि प्रमृश्य निप-
दन्, विनाऽवादि न दिवाशयनं, नि-
रीक्ष्य प्रमृश्य चोपकरणादनं, मुह-
यसिकादिप्रतिलेखनाविधिः, यत्सो-
च्चांदि जनस्तिवादि, जनाभवादि,
कृत्तरिकविपर्ययोसम्भवाः, अरुणोदया-
वनादेक्षाः, पुरुषोपध्यायविपर्ययोसः,
कथादौ पट्कायविराधना, अन्यो-
ऽन्यावाधयाऽपगतो योगः, मुक्ता-

ज्ञानन्ता अतः, अप्रतिलेखनायां न
सर्वाऽऽराधना, जितेन्द्रियो गुप्तलपो-
नियमसंयमवानाराधकः, जितेन्द्रि-
यत्वादीनां विवरणं, प्रेक्षोत्प्रेक्षापरि-
घापनसंयमाः, स्थापयः । ११४
२८२-२९६, १७४-१७७+ निश्चयव्यवहा-
राभ्यां पौरुषी, तद्वृद्धिदानी, अय-
मरागाः, प्रतिलेखनाशालः, पात्र-
प्रत्युपेक्षणविधिः, मूयकोत्केरादि-
विधिः, पात्रस्थापना, दर्पोत्सवः,
कस्तुरवैऽवन्धने दोषाः । ११९
२९७-३०९ आपातसंलोकसम्भवाः, स्वपक्ष-
परपक्षसंयतसंयतीसंविधासंविम-
भनोद्गमनोद्गतत्वादिकान्यपक्षिक-

पणं, कृत्वाणकप्रायश्चित्तं, कर्मि-
काये दृष्टापाकादौ निश्चयेन, धर्मा-
रादौ व्यवहारेण सचिच्च; युक्तु-
रादौ मिश्रः, सोदृतव्यधनाद्यचिच्चेन
प्रयोजनं, वायुकाये पनवातादौ निश्च-
येन, प्राच्यादौ व्यवहारेण सचिच्च;
आक्रान्तादिनोऽचिच्च; अचित्तस्य
सचिच्चीमयने क्षेत्रकालमानं, अचि-
त्तेन ग्लानादौः प्रयोजनम्, वनस्प-
त्रिकायेऽनन्वधावो मिश्रयेन, शेषो
व्यवहारेण, प्रच्छन्नफलादिर्मिश्रः,
संस्काररूपात्रायचिच्चेन प्रयोजनं, अ-
क्षयद्वाद्वि-वरेहिकादि-मक्षिकापुरीषा-
दिना विकलेन्द्रियप्रयोजनं, चर्मो-

स्थ्यादिना तिरश्चि, प्रयाजनादिना
मनुज्ये, क्षपकादिकालादिना देवे
प्रयोजनम् । १३५

३७२-४१०, १९२-२११+ लेपे नवानवसं-
योगः, नार्वाकालिको लेपः, लेपे
आत्मादिविषयना, न यवनानां,
अलेपे ताः, लवणे पाने रोहृदौ
संयमस्य, पात्रदेसनादौऽपि विष्टः,
भत्वा लेपः, हस्ते शोषः, शल्यवतर-
लेपः, प्रमुष्टञ्ज, लेपप्राणं, षट्काय-
यवनेति पूर्वपक्षः, सर्वेषां परिहारः,
जीर्णानां दग्धयित्वा लेपः, पूर्वोद्दि-
कृतेच्छाकां ग्रहणविधिः, न श-
य्यावरणिष्ठः, न नृपतेः पृच्छा,

हरितप्रतिष्ठितादौ न ग्रहणं, वस्त-
श्चादौ न, आग्न्यालोचनं, लेपविधिः-
वैद्यावृत्त्यविधिः, लिप्ते वापनधान,
नादिविधिः, अकार्ये लेपादित्यागः,
शिश्निस्रीम्नयोः स्नापनकालः, अमी-
स्ममुपयोगः, लेपसङ्ख्या, लेपव-
न्यप्रकाराः, विण्मृष्टार्थिकानि (१२),
भावेऽप्रशस्ते द्विविधादि, प्रशस्ते
त्रिविधः । १४७

४११-४५८, २१२+२३९+ यपणानिक्षेपाः
(४) गवेपणायामं प्रमाणकालाय-
द्वयसंघाटकोपरकरणमात्रकक्रायास्त-
र्गयस्ययोगाः सप्तत्रिपक्षाः, कालवारे,
काले प्रथमपरीकृत्यद्वात प्राग् भ-

इन्द्रादिरिषोणा, निरिन्द्रो इन्द्रमायाः,
आराररररुणो नृपरा, ऐष्ट-
माति, एकादिः क्षीपद्रवकीष्ट-
विषादिभिर्द्रव्यमादोषा, गर्दिक-
वधिरादीः वैश्विदिरश्मरान्तादि, अ-
पवर्ग आचारमात्रं मायकं च
हरिरा तत्तत्, आरारररि (४),
आचारार्थार्थार्थो विद्या, गल्लो-
हदिरिन्द्रो पुनर्गर्भं, गर्दिको
अमरत्व, दिक्पञ्चमुग, कर्मादि-
योरे राजा, मरुत्तमोदिरपारा,
नामरुत्तमे रोषा, रात्रिपारा-
मर्त्त, अशोक्तान्त्रात्रोन्नाथ-
र्त्त, तन्त्रो गृहीष्टो, परस्मिन्
पुंस्त्वपरा, ऐष्टो वायव्याने-

नारि, मुनीन्द्राद्वे गमनं, अवसथे
पोषा, ग्वाप्तलसङ्कुटोः पुष्ठा,
बाह्वादिषा ऐर्त्तनेन्पारिषोणा,
अग्निद्रविकानि, लासत्तकुटव-
अरेष्टा, जुगुप्तिगल्लिकर्त्तौ दुर्लभा
योधिः, अमागतवसाग्निमरुत्तानेपु
अग्निद्रुया, अरुपमानयोश्चान्दवः
तंगारि, एतान्त्रोपनयोऽज्ञो वि-
नमराग्र, गच्छेद्वि पापेक्षता,
इन्द्रमापनेने कनकद्रुत्तमर्त्त-
रुत्तमो, यारे च पञ्चविषयमा-
दिनो । १५०

४९९-५०९, २४०-२५१ + इन्द्रमर्त्तनेने
पानसुष्टुत्तमः, आमारैर्त्तने

आत्मप्रवचनसंयोगोपगतनिश्चारा,
गवादिभिरामि, दृष्टिप्रादिसंपट-
नादिभिः संवदे, उच्चरत्तनारिभिः
प्रपचने, शब्दरुद्राप्रमुखादिरुपव-
कमसश्चित्तचित्तपद्माविष्टरुद्रो-
पुर्विर्गीयाउपसमाकण्डुपन्नीरिप-
न्नीमर्त्तवन्दीकृष्टगन्धीरिष्टवन्तो-
म्यो न माता, मर्त्तने रोषाग्र, अ-
रुष्टे यद्रिष्टा, ऐष्टुचिद्रुद्राविधिग्र,
दारुत्तल गमने निधिः, नीपद्मा-
पुष्पमर्त्त, स्वविरा अरुद्राष्टुत्तलो-
गेन गृहन्ती, त्रययोगिधिः, आग-
मनविधिः, दारुपद्मात्रोपने येनि-
गुणपानोपसुष्टुत्तमः, अग्नि-

ग्यादिपानवर्जनं, पतिवपिण्डनिरूपणं,
अन्यथा विरापना, गुरुद्रव्यपियान-
वतुर्भेदी, महात्मात्यादिनाऽप्यहणं,
प्रीतमहेसन्तवर्षास्त्रांपुंतुसंफुलवणम-
व्यस्यविराणादुकाद्रादौ शोषभागाः,
प्रशस्तप्रसस्तभावोभ्रादुजायाह-
ष्टान्तौ, लोकान्तरे वर्णार्थमशक्तः,
आचार्यार्थं प्रशस्तः, समुदात-
शुद्धिः, मामकालमाजनपयांशौ निवृ-
त्तिः, भूमिप्रिक्षेपे चरमावगाहे
जपन्योक्तुमौ कालौ । १७४
५१०-५३९, २६२-२७४+ पादप्रमाजनं
नैवेदिकीत्रयं चाग्रमस्तारः, प्रमृष्य
यष्टिमाजनवस्त्रस्थापना, कथेतसर्गो-

विधिः, प्रतिसेवनाऽल्लोचनाविहृ-
नाचतुर्भेदी, व्याक्षिप्तपराद्गुलादे-
नल्लोचनं, नृलढलक्षणाविवर्जनं,
ओषालोचना, सप्रतिप्रदर्शीर्षप्रमाण-
ना भक्तदर्शनविधिः, दूरालोचनका-
योत्सर्गः, स्वाध्यायप्रस्थापना, मण्ड-
त्युपजीवीनरे, प्रायूर्णकादिनिमग्नं,
अग्रहणेऽपि निर्जेरा, एकस्य निन्द्या-
पूजयोः सर्वेषां ते, वैद्यादृश्यसाप्रति-
पातित्वं, भरतादिदृष्टान्तेन बहु-
लाभः । १८०

५४०-६२६, २७५-३०८+ द्रव्यमासेपणायां
मत्स्यदृष्टान्तः, मावेऽनुशस्त्रिः, आ-
गढयोगिनिर्गुदाऽऽरगाधिक्रायूर्णक-

शैश्वर्यसंप्रापयश्चित्तपालवृद्धकुशाद्याः
प्रयग्भोजिनः, द्रव्ये आलोको दी-
पादिः, मावे स्थानादिः (७), मण्ड-
लीनिकम्पणप्रवेशसागारिकस्थानानि
वर्जयित्वा, गुरोरीशानमेयकोणयोः
प्रकाशे प्रकाशमुलभाजने लुप्तुद्व-
पङ्कमात्रकवलेन गुरुदृष्टौ ज्ञानार्थं
मुक्ते, मण्डलीकारणानि, वसतिपा-
लकार्यं, अचछद्रवग्रहणं, गालनं,
आचार्यार्थं मुलाचमनाय, अच्छद्र-
वपात्रमानं, द्रवसत्त्वविधिः, प्रतीक्षा,
असहिष्णो विधिः, मण्डलीसविर-
स्वरूपं, पूर्वोक्तानि स्थानादीनि, रत्ना-
धिकः पूर्वमुलः, क्षपकादीनां सागा-

रिपुपक्षा, मनुष्यमहणभोजनविधिः,
यथाह्वानि पूर्व, श्रिमत्सपुराणि,
मदभयवच्छेद्यौ, सिंहलादिवं, य-
माहारवर्जनं, सुपुरादिवर्जनं, भो-
जने, सारासारा, घन्त्यनिर्देशे, सस-
रोपभोजनत्वाने, पात्रकन्नमगविधिः,
यूमाहारस्वरूपं, पात्राग्राभार्यमा-
हारः, द्विवाधाहारः भरोणिनाः,
धेनवदीन्याहारकारणानि, आवष्टा-
दीन्यन्ताहारकारणानि, आहारस्वाप-
पादवा, पात्रसंलेखनविधिः, द्युत-
भोजनविधिः, परीक्षाभनविधिः,
जावाजावे, पकान्ताभनपादौ पक-
पुष्टेन, लोभे पुष्टप्रेतेन, विद्याम-

धावभियोगे, आपकमेव परीक्षणं,
योगविद्यामेषु दृष्टान्ताः, आच-
र्यायमपिष्कमहणं, वरुणाचाचो

मण्डलीमोली, सूत्रार्थसिरीरुपादि,
द्रव्यवैपचार्ययोगं, मन्त्राचार्यं यहु-
मिर्वाचनं, भज्यावायां पुष्टत्रयं,
पुष्टभ्रमणकारणं, जन्तापादादिस-

मिष्टलचतुर्कं, अदकसा सस्मादौ,
तत्र न्यायश्च । १८९ इतिपिण्डः
६३७-६३३ परमपौरोष्यां स्वाध्यासः, भज-
मर्षार्थिनो गुलाबन्तश्चकारवर्ज-
नान्जानसौम्योपिप्रतिवेदनं, अम-

कर्मिन्त्रत्वा पटुः परस्व पटुभ्यान्-
कर्मि, पुनः स्वाध्यायादि । १९९
६३३-६३५ पञ्चादि (२४) काल (३)-
मूमिप्रतिवेदनम् ।
६३६-६३८ निर्व्यायाते सर्वे, आद्यादिक्या-
न्यायाते गुहं विना, सूत्रार्थस्मरणाय
फोपोस्त्वर्गकुर्वते, बालादिरुपविष्टः । २००
६३९-६६६ त्रिस्तुलनन्तरं कालग्रहणं, चतु-
शालायां कृमायां वा व्याचाराः, वृत्ती-
याय निवेदनं, कालग्रहणविधिः,
वद्ववाचाराः, गण्डकोपमाः, काल-
सन्ध्ययोः समता, कालमाहिगुणाः,
वाङ्मयां विधिः, स्वाध्याये मरुतदृष्टा-
न्ताः, स्वगणे प्रयाणां दाङ्किते घातः,
आदोपिके समकं स्वाध्यायः, धनरु-
धारकोल्हणं व्याचाराः, दृष्टमादीनां भ-
यनयामाः, प्रेतो वतुर्षु चतस्रो दिशः,

अष्टोऽपि वारुणे प्राभाषिकः, स्थिते-
नापि कालग्रहणं, कालग्रहणदिक्
जागरणायनविधेरतिदेशः । २०७

॥ इति कालग्रहणविधिः ॥
॥ अयोपधिविरूपणम् ॥

६६७ स्वप्नेकार्थिकानि (८) २०७

६६८ औषिकौषादिकौ, गणनातः प्रमाण-
तश्च । २०८

६६९-६७२ सविरुक्लिपिकानां चतुर्दश, नि-
नकलिपिकानां द्वादश, आर्याणां पञ्च-
विंशतिः, ऊर्ध्वनौषमहिकः ।

६७३ जितरुक्लिपिकानां जघन्यमध्यमोल्लुट-
रुपधिः ।

६७४ सविरुक्लिपिकानां मध्यमः । (जघ-
न्योरुल्लुट्यपि)

६७५-६७९, ६१३-६२०+ आर्यिकानां प-
ञ्चविंशतिरुपकरणानि, वत्सरूपं, व-
त्सुष्टः ८ मध्यमः १३ जघन्यः ४
जिनकल्पिनामेकं पात्रं, सविराणां
६८० मानकद्वितीयम् । २१०

६८१-६८४ पात्रकप्रमाणम् ।

६८५ वैवायुत्वकरस्य २१०

६८५ नन्दीभाजनं, तत्प्रयोजनं च ।

६८६-६९१ पात्रलक्षणपल्लवगानि । २११

६९२-६९३ पात्रप्रयोजनं पट्टावरश्चादि रत्ना-
मादि च ।

६९४-६९७ पात्रबन्धकस्यापनक्रमोच्छकप्रत्यु-
पेक्षणिकानां प्रमाणानि प्रयोजनं च ।

२१२

६९८-७०३ पटलानां स्वरूपं, कलविज्ञेयेण । ७२८

संख्या, प्रमाणं प्रयोजनं च । २१३
७०४-७०५ रजस्त्राणप्रमाणप्रयोजने ।

७०६-७०७ कल्पानां प्रमाणप्रयोजने । २१३

७०८-७११, ६२२+ रजोहरणस्य स्वरूपं

प्रमाणं किमप्यत्वं प्रयोजनं च । २१४

७१२-७१३ मुरवस्त्रिकायाः प्रमाणं प्रयोजनं
च । २१४

७१४-७२१ मानकस्य द्विधा प्रमाणं प्रयोजनं,

अनुज्ञाहेतुः, वनग्रहणे विधिः । २१६

७२२-७२३ चोलपट्टकस्य प्रमाणं प्रयोजनं च ।

७२४-७२५ संस्कारकोत्तरपट्टयोः प्रमाणं प्रयो-
जनं च । २१७

७२६ रजोहरणाभ्यन्तरनिषद्याप्रमाणम् ।

७२७ वर्षोत्सु वर्षोत्सवादिद्विगुणः ।

यथाकृते न सन्धनाच्छेदौ ।

॥ अथ दशवैकालिकदृष्टिपयानुक्रमः ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | महलोपोर्यातौ सिद्धनमस्कारेण मंगलं, नियुक्तिप्रतिष्ठा च । महलद्विकं मंगलनिर्देश्य १२ पुनरागतोऽनुयोगः ३ (४) अष्टयस्त्रे ४ निर्देश्यैत्र्या (४) दीनि (११) कृत्स्न निर्दिष्टानुयोगयोग्यता ६ दशकालपुनरुत्थाप्यन्तोर्देशनि- र्देशः ७ एकद्विनिर्देशः ७ दशकनिर्देशः (६) वात्याया दश दशाः ८ | ११-१२ कालनिर्देशः (९) विकाले निर्युद्धमिति दशकालिकम् ९ येन वं यदादीनि (५) द्वायाणि १० जितनतिमादर्शनदुष्टसर्व्यमवन्म- रकारः (सत्यंभवकथा) १२ ममवायोद्धुम् १५ १६-१८ आत्मकर्मसत्यप्रत्याख्यातप्रवादपूर्व- भ्यो यणितिकावज्ञादोद्वारः १३ १९-२३ दश अध्ययनानामानि तदर्थधिकाराः १५ २४ चूडाद्वयाधिकारः २५-२६ सिद्धार्थोपसंदाः प्रत्येककथनप्रतिष्ठा | च, प्रथमाध्ययने द्वारचतुर्गं, धर्म- प्रसंसादधिकारः २७-३३ ओषेऽध्ययनानि नामाद्याः भावे अध्ययनाक्षिणायकपणाद्वयाद्वया १६ ३४-३६ हुममुष्णयोर्निर्देशः (४) एकार्थि- कानि (६) च १७ हुममुष्णिकैकार्यिकानि (१४) १९ (रत्नवनिगृह्यान्तः) देवतमनीयधर्मस्वरूपं, वदेसावीनि, व्याख्यालक्षणं च २० पृच्छापृच्छयोः कथनम् २१ ३८ ३९-४३ धर्मनिर्देशः (४) द्रव्येऽस्तिकाग्र- |
|---|---|---|---|

| | | | | | | | | |
|--|--|---|----|----|----|----|----|----|
| ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ |
| चारपत्नीः, भारे पर्यवः, गन्धपशु- देशराज्यादि (९), कुटीरिका सा- वयः, लोकचरे (२) २३ द्रव्यमावमूलं ३४ जडिमात्राः (४) संपन्नदेहाः (१७) २५ गुणिव्यासिंसयन्नभेदाः (१७) २६ माहं हयः (६) २९ अभ्यन्तर हयः (६) ३२ नित्यपचने भोजनपेक्षया हेतुः पर्ये ३३ पंपदरावयवे मास्ये ३३ परिवर्तितोदाहरणयोश्चातुर्विध्यं, देतुश्च पशुर्वा ३३ एतन्नेत्यादिकानि (५) ३४ | ५३ परितोक्तस्थितयोः आहरणतदभेद- दोषोपन्यासाः ५४-५६ अणयोपायस्याप्यप्रत्युपपन्नविनाशः, द्रव्याभावे अक्षरौ क्षेत्रभावे दशाहं- धर्माः फले द्वेषपनाः भावे मण्डूकि- कक्षपकः ३९ ५७-५८ द्रव्याद्युपायानामुपयोगः क्रिया च ३९ ५९-६० द्रव्यानुयोगे जीवत्वं नित्यानित्यत्वे ४० ६१-६२ उपायप्रातुर्विध्यं (अभयोपचा दृढ- कुमारीक्या) ४२ ६३-६५ अमृतद्वयत्वात्मानः सुखादेर्माहता द- त्यकालमावसंक्रमौ ४३ ६६ तैर्वा परिणामसाधनं च ६७-६८ स्वापनाग्नेनि सृष्टिरूपद्वयं विद्यु- | ५३ शिवो वा दृष्टान्तः, द्रव्यानुयोगे सव्यभिचारं विरोधेणम् ४४ ५९-७२ प्रत्युत्पन्नविनाशे गान्धर्वोदाहरणं शि- व्यरागनिषेधः दूत्यन्नादिवचनानुक्ति- या, जीवसिद्धौ जीवामावचनं ४६ ७३-८० तैर्वाहणे अनुप्राप्तिः (३) सुम- द्रा गुणोत्पत्तिर्न, आत्मनः कर्तृत्वं, व्यपलम्भे (दृग्भावती) नास्तीति कुवि- ज्ञानं, पृच्छन्वा (कोलिकः), नि- अथां लौकमस्यामी (कुविज्ञानसत्ते- क्षवाशा च दानापकला) ५२ ८१-८२ तैर्वाहणे अथर्मयुक्ते (नलदाम) प्रतिजोमे (अभयगोविन्दवाचकौ) आत्मोपन्यासे (सिद्धिः) दुरुपनीति (मिश्रक) ५३ | | | | | | |

८४-८६ उरवागाहस्ये दग्धगुणि (अपूर्के-)

ग्रापकः) दग्धगुणगुणि अन्यस्ये

दग्धे प्रतिगिभे (अक्षपात्त्वे) देवो

यत्कृपः) ५७

८७-९१ देवो यापके (दग्धगुणगुणि) लापके

(लोचमप्य) व्यसके (दग्धगुणगुणि)

दग्धे (मोदकः) ६२

९०-९२ प्रतिग्रा देवगुणगुणि दग्धगुणगुणि

य पर्मे ६३

९३-९६ अत्रेय प्रतिग्रा देवगुणगुणि देवगुणगुणि

१-४+ दग्धगुणगुणि ६४

२६ अत्रेय गोपरी ६४

९७-९८ अत्रेय आह्वणगुणे, अनिवृत्तगुणि

६५

९९-१०० अत्रेयगुणगुणि गुणगुणगुणि, गुणगुणगुणि

मित्र्याः पञ्चाशत्, आदित्यान् दृष्टिः,

किं दुर्गिभ्यनिर्वातो? अत्रो य, न अत्र-

देवो दुर्गुणगुणगुणि, अत्रेयगुणगुणि दग्धः न,

कर्मणः, अत्रेयगुणगुणि अत्रेयगुणगुणि

मत्तो गुणगुणगुणि, न अत्रेयगुणगुणि पाकः, का-

न्यारादौ रात्रौ च पाकस्य, अत्रेयगुणगुणि

देवगुणगुणि, अत्रेयगुणगुणि पाकः प्रकृत्या, का-

अत्रेयगुणगुणि एवमा नवकोट्यादित्युदत्त

सिद्धिरुपसंहारस्य ६८

३६ अत्रेयगुणगुणि अत्रेयगुणगुणि

११८-१२३ अत्रेय विद्वज्जः कर्म, भावे

गुणसंभावन्तौ गुणसिद्ध्या लोको

विद्वज्जः, भावगत्वा अस्त्रिकायाः

वर्मगत्वा सर्वे (अनाकृताः) विद्व-

योगतिः (वक्त्रा) पञ्चनगतिः (सत्ता-

रिणः) संज्ञायां पट्टिणः ७१

४-५६१२४-१२५ एवमात्रिकं अदत्तादान-

त्वागच्छ, उपसंहारादुद्धिः अत्रेयगुणगुणि

यथाठवग्रहणं अनिश्रितादानं नाना-

विण्वाः सायवः ७२

१२६-१३७ असंयत्ताः अत्रेयगुणगुणि न, देवोप-

त्वात् ७४ हुमवत् नागराः, अत्रेय-

वत् युनयः, स्वभावसिद्धमन्वेप-

यन्ति, अत्रेयवत् अवधजीविनः,

ईर्योद्विपु यताः, उपनयनोपसंहार-

विद्वद्भिः, दयादिगुणैः साधित-

त्वात् धर्मे उत्कृष्टं मङ्गलं, तीर्थो-

नन्वादि-
अनु.आव.
ओष. दश.
विण्ट. उत्त.

॥ १५७ ॥

नन्दीया धनुदवतनाः, अङ्गणानिमो-
लितोऽङ्गणाः, योगेन्द्रवदमात्र सा-
धवाः साधकाः

१३८-१४९ दशावयवाः (प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा-
विदुःश्रावयः प्रतिष्ठा वदिवचविशालः
हेतुः वदिवचविशालः साध्यादिवि-
पर्ययः सन्निवेशः दृष्टान्तवत्सङ्गच्छ-
प्रतिषेधो निश्चयः) ८०

१५० अनक्रियानये ८०

१५१-१५३ नायनीत्यादृष्टया द्वयोः सिद्धा-
न्वयश्च, वपसंहारः ८२

॥ इति द्रुमपुष्टिकाध्य० १ ॥

॥ अथ धामपुष्टिपूर्विकाध्य० ॥

१५४ अमगनिक्षेपाः (४) पूर्वनिक्षेपाः
(१३) ८३

१५५-१५९-१ प्र. अमणत्सरुहं, सरविषा-
धुमनाः ८४

१६०-१६१ अमणैकाधिचानि (११) (२०)
पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८५

६६ अमममः संकल्पवद्धः

१६२-१६७ अमनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदय-
कटा, अप्रसवेच्छा, धर्मोत्क्रामक-
त्वात् क्रामत्वं, कामानां योगत्वं,
मावे इच्छामदौ ८६

१६८-१७९ पत्तिक्षेपाः (४) द्रव्ये आहु-
द्विकषाः (११) मावेऽपरावेतरे,
अन्ते मादन्तेमादन्ते, अन्ते
प्रयितप्रकीर्णके चतुर्लोकप्रकारे,
मावमयोगेयचौर्णसहस्रं, इन्द्रियादी-

न्यपरावे (सुहृदकटान्तः) शीलाह-
र्यार्थं वद्वर्जने, अष्टादश सदसशी-
लहानि ९१

७-९ अच्युत्या न सागिनः (सुच्युह-
टान्तः) साधीनत्यागे त्यागः (का-
प्रवृत्तकटान्तः) न सा मे नाहं वत्याः
(मित्रपटदासीजायाधिदृष्टान्तौ) ९५

१०-१२ अतापनाद्युपदेशः, वान्यापानं,
वान्तेच्छयां मरणं धेयाः ९६

१३-१६ रजीमत्युपदेशः, वपसंहारव (नु-
पूरणविहाव्यापनं) ९९

॥ इति धामपुष्टिपूर्विकाध्य० २ ॥

॥ अथ दुष्टिकाचारकथा ॥

१८०-१८९ सुहृदनिक्षेपाः (८) आचार-
निक्षेपाः, इव्याचारे नामनादीनि,

दशवे-
कालिने,
१-२-३
अध्यायने.

॥ १५७ ॥

भामापादे प्रानाधारस्य (मुद्रा-
धेनिक वयस्यानि-आर्योपाह-प्रका-
हमूपादि-विताड्यकपण्डल-आ-
क्षपकद्वि-प्रकाकद्विपितानाषिष्ट-
द्वान्ता) १०६

११०-११३ अपेक्षामर्षमितिप्रत्याः, विद्या-
शित्तोपायानिर्वैदस्यद्विद्वयस्यसाम-
द्विद्वयस्योपदानान्यद्वयः, (सार्ध-
द्विद्वयस्यविद्वान्ताः) १०९

११४ रूपयोपेयस्यविषयशिशिरस्य-
हानुमत्संवाः कामक्या

११५-२०७ आपारव्यवहारप्रसूतिटिप्पणा-
प्राथमिक्यः, वदसः, रूपरसमय-
निर्यासमन्वादा विशेषिष्यः, आ-

त्मपदार्थपरलोकाः खवेजिन्योः
वदसः, द्विपदलोकापविषाकाः
निर्वेदिन्याः, वदसः, संयोगनिर्वेदल-
रूपं, कृपापौर्वापर्यं च ११४
२०८-२१७ लोकवेदसमयैः मित्रा, स्त्रीम-

स्त्राजचौरादि (९) विख्याः, प्रज्ञा-
पकापेक्षयाऽक्याक्याविक्याः, क्त-
स्वरूपं, अमणस्याकृत्यकृत्ये,
क्याकरणचावरीयो ११५

१७-२६३ औद्विषादीन्यनाचीर्णोनि (१२)
११८

२७-३१३ आश्ववर्जनादि, आतापनादि, परी-
पसहादि, दुष्करक्यादि, कर्मध्या-
दियुताः सिद्धिगामिनः ११९

॥ इति शुद्धिकाचारकथा ३ ॥

॥ अथ पङ्क्तिनिराध्यायः ॥

५- वद्वीषनिजोदेराः, संकथः १२०
२१८-२२१ जीवानीवाधिमचाटिउपमं (५)-
यतनोपदेशधर्मकलाभि प्रसिद्धा, ए-

ककृतिस्तेपाः (७), वद्वीषनिस्तेपाः (६)
२२२-२२३ निक्षेपप्ररूपणा छद्मणास्तितान्य-

द्वामूर्तत्वनित्यत्वं कर्तृत्वदेहव्यापित-
गुणितोर्ध्वगतित्वनिर्मयत्वसाफल्यप-
रिसणैः जीवपरीक्षा १२१

जीवनिक्षेपाः (४) भावे ओषम-
वद्वीषः

६-८४ अनुपपत्त्यो द्रव्ये, आयुष्मान् ओषे,
चतुर्विधस्तद्वे १२२

९-१०-सूत्याः सर्वलोके, पर्योता अपर्योताश्च,
वाह्राः

नन्दादि-
श्रु. आ. व.
शेष. दश.
मिष्ट. उच.

॥ १५८ ॥

२२५-२२६, ११-२४-४

(५) आदानपरिभोगयोगोपयोगक-
धामतेइयाऽऽनयापप्रणेन्द्रियकन्यो-
द्यनिरञ्जचिचेदनासंज्ञानधाम-
शादुदाहृतमतिविवर्तः लक्ष्यम् १२६

२५-३८-२७ शरदादित्या, न दृत्य-
सिद्धिः, जीवामात्रे दानादानार्थद्वयं,
नित्यो जीवः, दृष्टदेहात्, अष्टेपा-
नेयः, संपुरीयः, आसीद् गतः,
त्रिविधः संसारः, आदिमयस्त्रिभु-
वाकापत्, क्षणादेः क्षानसिद्धदर्शनात्
आत्मरचनात् जीयसिद्धिः, अन्यत्वा-
मूर्तत्वनिदानानि १२८

२९-४४ नैन्द्रियपुण्ड्रिभ्रमन्ति, अमूर्त-
मिलत्वे १३०

४५-४७-४८-४९-५०-५१-५२-५३-५४-५५-५६-५७-५८-५९-६०-६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४-७५-७६-७७-७८-७९-८०-८१-८२-८३-८४-८५-८६-८७-८८-८९-९०-९१-९२-९३-९४-९५-९६-९७-९८-९९-१००-१०१-१०२-१०३-१०४-१०५-१०६-१०७-१०८-१०९-११०-१११-११२-११३-११४-११५-११६-११७-११८-११९-१२०-१२१-१२२-१२३-१२४-१२५-१२६-१२७-१२८-१२९-१३०-१३१-१३२-१३३-१३४-१३५-१३६-१३७-१३८-१३९-१४०-१४१-१४२-१४३-१४४-१४५-१४६-१४७-१४८-१४९-१५०-१५१-१५२-१५३-१५४-१५५-१५६-१५७-१५८-१५९-१६०-१६१-१६२-१६३-१६४-१६५-१६६-१६७-१६८-१६९-१७०-१७१-१७२-१७३-१७४-१७५-१७६-१७७-१७८-१७९-१८०-१८१-१८२-१८३-१८४-१८५-१८६-१८७-१८८-१८९-१९०-१९१-१९२-१९३-१९४-१९५-१९६-१९७-१९८-१९९-२००-२०१-२०२-२०३-२०४-२०५-२०६-२०७-२०८-२०९-२१०-२११-२१२-२१३-२१४-२१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३-२२४-२२५-२२६-२२७-२२८-२२९-२३०-२३१-२३२-२३३-२३४-२३५-२३६-२३७-२३८-२३९-२४०-२४१-२४२-२४३-२४४-२४५-२४६-२४७-२४८-२४९-२५०-२५१-२५२-२५३-२५४-२५५-२५६-२५७-२५८-२५९-२६०-२६१-२६२-२६३-२६४-२६५-२६६-२६७-२६८-२६९-२७०-२७१-२७२-२७३-२७४-२७५-२७६-२७७-२७८-२७९-२८०-२८१-२८२-२८३-२८४-२८५-२८६-२८७-२८८-२८९-२९०-२९१-२९२-२९३-२९४-२९५-२९६-२९७-२९८-२९९-३००-३०१-३०२-३०३-३०४-३०५-३०६-३०७-३०८-३०९-३१०-३११-३१२-३१३-३१४-३१५-३१६-३१७-३१८-३१९-३२०-३२१-३२२-३२३-३२४-३२५-३२६-३२७-३२८-३२९-३३०-३३१-३३२-३३३-३३४-३३५-३३६-३३७-३३८-३३९-३४०-३४१-३४२-३४३-३४४-३४५-३४६-३४७-३४८-३४९-३५०-३५१-३५२-३५३-३५४-३५५-३५६-३५७-३५८-३५९-३६०-३६१-३६२-३६३-३६४-३६५-३६६-३६७-३६८-३६९-३७०-३७१-३७२-३७३-३७४-३७५-३७६-३७७-३७८-३७९-३८०-३८१-३८२-३८३-३८४-३८५-३८६-३८७-३८८-३८९-३९०-३९१-३९२-३९३-३९४-३९५-३९६-३९७-३९८-३९९-४००-४०१-४०२-४०३-४०४-४०५-४०६-४०७-४०८-४०९-४१०-४११-४१२-४१३-४१४-४१५-४१६-४१७-४१८-४१९-४२०-४२१-४२२-४२३-४२४-४२५-४२६-४२७-४२८-४२९-४३०-४३१-४३२-४३३-४३४-४३५-४३६-४३७-४३८-४३९-४४०-४४१-४४२-४४३-४४४-४४५-४४६-४४७-४४८-४४९-४५०-४५१-४५२-४५३-४५४-४५५-४५६-४५७-४५८-४५९-४६०-४६१-४६२-४६३-४६४-४६५-४६६-४६७-४६८-४६९-४७०-४७१-४७२-४७३-४७४-४७५-४७६-४७७-४७८-४७९-४८०-४८१-४८२-४८३-४८४-४८५-४८६-४८७-४८८-४८९-४९०-४९१-४९२-४९३-४९४-४९५-४९६-४९७-४९८-४९९-५००-५०१-५०२-५०३-५०४-५०५-५०६-५०७-५०८-५०९-५१०-५११-५१२-५१३-५१४-५१५-५१६-५१७-५१८-५१९-५२०-५२१-५२२-५२३-५२४-५२५-५२६-५२७-५२८-५२९-५३०-५३१-५३२-५३३-५३४-५३५-५३६-५३७-५३८-५३९-५४०-५४१-५४२-५४३-५४४-५४५-५४६-५४७-५४८-५४९-५५०-५५१-५५२-५५३-५५४-५५५-५५६-५५७-५५८-५५९-५६०-५६१-५६२-५६३-५६४-५६५-५६६-५६७-५६८-५६९-५७०-५७१-५७२-५७३-५७४-५७५-५७६-५७७-५७८-५७९-५८०-५८१-५८२-५८३-५८४-५८५-५८६-५८७-५८८-५८९-५९०-५९१-५९२-५९३-५९४-५९५-५९६-५९७-५९८-५९९-६००-६०१-६०२-६०३-६०४-६०५-६०६-६०७-६०८-६०९-६१०-६११-६१२-६१३-६१४-६१५-६१६-६१७-६१८-६१९-६२०-६२१-६२२-६२३-६२४-६२५-६२६-६२७-६२८-६२९-६३०-६३१-६३२-६३३-६३४-६३५-६३६-६३७-६३८-६३९-६४०-६४१-६४२-६४३-६४४-६४५-६४६-६४७-६४८-६४९-६५०-६५१-६५२-६५३-६५४-६५५-६५६-६५७-६५८-६५९-६६०-६६१-६६२-६६३-६६४-६६५-६६६-६६७-६६८-६६९-६७०-६७१-६७२-६७३-६७४-६७५-६७६-६७७-६७८-६७९-६८०-६८१-६८२-६८३-६८४-६८५-६८६-६८७-६८८-६८९-६९०-६९१-६९२-६९३-६९४-६९५-६९६-६९७-६९८-६९९-७००-७०१-७०२-७०३-७०४-७०५-७०६-७०७-७०८-७०९-७१०-७११-७१२-७१३-७१४-७१५-७१६-७१७-७१८-७१९-७२०-७२१-७२२-७२३-७२४-७२५-७२६-७२७-७२८-७२९-७३०-७३१-७३२-७३३-७३४-७३५-७३६-७३७-७३८-७३९-७४०-७४१-७४२-७४३-७४४-७४५-७४६-७४७-७४८-७४९-७५०-७५१-७५२-७५३-७५४-७५५-७५६-७५७-७५८-७५९-७६०-७६१-७६२-७६३-७६४-७६५-७६६-७६७-७६८-७६९-७७०-७७१-७७२-७७३-७७४-७७५-७७६-७७७-७७८-७७९-७८०-७८१-७८२-७८३-७८४-७८५-७८६-७८७-७८८-७८९-७९०-७९१-७९२-७९३-७९४-७९५-७९६-७९७-७९८-७९९-८००-८०१-८०२-८०३-८०४-८०५-८०६-८०७-८०८-८०९-८१०-८११-८१२-८१३-८१४-८१५-८१६-८१७-८१८-८१९-८२०-८२१-८२२-८२३-८२४-८२५-८२६-८२७-८२८-८२९-८३०-८३१-८३२-८३३-८३४-८३५-८३६-८३७-८३८-८३९-८४०-८४१-८४२-८४३-८४४-८४५-८४६-८४७-८४८-८४९-८५०-८५१-८५२-८५३-८५४-८५५-८५६-८५७-८५८-८५९-८६०-८६१-८६२-८६३-८६४-८६५-८६६-८६७-८६८-८६९-८७०-८७१-८७२-८७३-८७४-८७५-८७६-८७७-८७८-८७९-८८०-८८१-८८२-८८३-८८४-८८५-८८६-८८७-८८८-८८९-८९०-८९१-८९२-८९३-८९४-८९५-८९६-८९७-८९८-८९९-९००-९०१-९०२-९०३-९०४-९०५-९०६-९०७-९०८-९०९-९१०-९११-९१२-९१३-९१४-९१५-९१६-९१७-९१८-९१९-९२०-९२१-९२२-९२३-९२४-९२५-९२६-९२७-९२८-९२९-९३०-९३१-९३२-९३३-९३४-९३५-९३६-९३७-९३८-९३९-९४०-९४१-९४२-९४३-९४४-९४५-९४६-९४७-९४८-९४९-९५०-९५१-९५२-९५३-९५४-९५५-९५६-९५७-९५८-९५९-९६०-९६१-९६२-९६३-९६४-९६५-९६६-९६७-९६८-९६९-९७०-९७१-९७२-९७३-९७४-९७५-९७६-९७७-९७८-९७९-९८०-९८१-९८२-९८३-९८४-९८५-९८६-९८७-९८८-९८९-९९०-९९१-९९२-९९३-९९४-९९५-९९६-९९७-९९८-९९९-१०००

२३४

गूळधमपत्रयोरेककृतं ता १४०
५८-६०+ विष्मन्नाविष्वले योव्यो, अन्य-
स्मापि न्युत्तमः मूलजीवकृतं प्रथमप-
त्रञ्ज्यादिबीजावं, अथयन्मार्गः ५७,
सूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मयादृष्टादृष्टसूक्ष्म-
वाद्यसादृश्यादयाः पुद्गलाः अणुस्त-
न्यायाः, धर्माद्या नोपुद्गलाः १४३
पदकाखण्डनिर्घृष्टः

प्रथमसहावते सूक्ष्माविषयत्वात्। (अप-
स्थापनार्थं पद्मादिदृष्टान्ताः, पठितार्थो)
सूक्ष्मवयवत्वात् वादरत्नसंज्ञावरो
च १४६

मुष्णशब्दत्वापो द्वितीये, सद्भावप्रतिदे-
घादिचतुर्थे च १४६

॥ १५८ ॥

अद्वयानन्दविरतिः पृथगे १४७

भैरुनविरतिः पृथगे १४८

परिमहविरतिः पृथगे १४९

रात्रिमोक्षविरतिः पृथगे, चतुर्दशी,

सुषुम्ने (४७) प्रज्ञाः, प्रतिपक्षि

१५१

दुष्टिवीकावधशानः

अनन्तावधशानः १५२

अमितावधशानः १५३

वायुकावधशानः १५४

वज्रकावधशानः १५५

प्रसक्तवधशानः

१५६ अथतानायाः फट्टं फलं, यत्नया

गमनादि, पापकर्मवन्धकस्वस्तिः १५७

१४९-५६६ ई.जी. जीवानीवत्सल संन्यासः, यथाः

भारतपर्वतः कमलाः सिद्धत्वं, सुगन्धे-

दुर्लभमुल्लसत्वे, भित्तपथादेः प्रभा-

द्वयसारवत्त्वं १५९

५७-५९६ ई.जी. आत्मन्याविराजन्तोपदेशः उप-

संशारय १६०

॥ इति पदजीचनिकाध्यायः ४ ॥

॥ अथ पिण्डपणाध्ययनम् ॥

६१-६२ ई.जी. उपक्रमः पिण्डे एष-

भायां च शिक्षेयाः, द्रव्ये गुणैरुत्तारि

भावे क्रोधाविकाः, यात्वर्थः पिण्ड-

शब्दार्थः, सचिदादीनां द्रव्यैषणा,

भावे प्रसक्ता ज्ञानादिना अप्रसक्ता

क्रोधादिना, भावसोपकारित्वं द्रव्यै-

पाण्डवाः, अचिदाद्याः, कोटिनवकं

पट्टसूत्रगणोक्तिः, श्रीरात्रिके विद्युदिः,

विद्युज्जनिद्युदिकोत्तरो, नवाष्टदशादि-

भेदाः १६३

६०-६१ ई.जी. शिक्षाकाले अव्याक्षिप्तं धरणम्

६२-६३ ई.जी. महीं पर्यन्तं दीप्तहरितादि अव-

पातविस्मयमादि संक्रमं अज्ञातादि दृ-

ष्टादि च धर्मेयम् १६४

६४-७० ई.जी. वेदयास्यसन्धे अनापत्तये अव-

रणम् १६५

७१-७७ ई.जी. श्याचतुष्टयं अनुसन्धादि स्थानं

दुर्गममनादिवर्जनं आलोकाद्यध्यानं

राजाविरहवर्जनं प्रतिक्रियादिनि-

वेधः कपाटावृद्धादनं १६७

नन्दादि-
अनु. आन.
जोष. दश.
गिण्ड. उत्त.
॥ १५९ ॥

७८॥ दचोमूयोरधारणं
७९-८०॥ नीचद्वारादिपुष्पाङ्गीणादिवर्जनम्,
पृष्ठकायदुर्लभतं, अस्मत्सकं लोकं,
अस्मिन्निवर्जनं, स्नातादिसंस्कारजनं,
दृक्प्रवृत्तिवर्जनं १६८
८६-८८॥ अकल्पं परिगृह्यते प्राणादिस-
मन्मदुत्पत्तये वर्जयेत् १६९
८९-९५॥ सचित्तं निश्चिन्तादिः, अवगाह, पु-
राकर्षण, लक्ष्मणादि, असंशयेन
वर्जयेत् १७०
९६-१०३॥ अनिष्टस्य, शुद्धिभ्याः कालभासे,
सन्त्यं दक्षता न प्राप्ता मिथ्या १७२
१०४-११३॥ दक्षरादिभिर्हितं, दामपुण्यव-
नीपकप्रमणार्थकमकल्पम् १७४

११४-१२३॥ औदृष्टिकादि (७) वर्जनं निः-
शङ्कितम्: पुण्यानुनिशं दृष्टेर्भोजि-
क्षितं नृवप्यभ्यादिना अकल्पम् १७५
१२४-१२८॥ संकमनिषण्णयासोद्वेग द-
र्शनं १७६
१२९-१३३॥ कंदादि, सऊर्ध्वोदि, सर-
कादि, वह्निसिद्धादि, बह्मिष्ठिकं च
वर्जयेत् १७७
१३४-१४०॥ चित्तोपशमजीवमासायनस्य-
स्यं गृहीयात्, विपरीतं परिग्रा-
येत् १७८
१४१-१४५॥ गोचरे भोजनविधिः १७८
१४६-१५१॥ अलोचनविधिः स्नायव्ययो वि-
श्रामाग निमज्जनं भोजनं च १८०

१५६-१५९॥ त्रिकादेरनिन्द्या मुखदायिनी
विनो दुर्लभो सुगतिर्वा च (परित्रा-
जकष्टहान्यः) १८२

॥ इति प्रथम उद्देशः ॥

१६०-१६२॥ सर्वभोजनं, अस्मत्सारे पुनर्वा-
वेपणं
१६३-१७२॥ काले निष्कृतादि, अकालचरणे
गर्ही, अलोचने न शोचः, सकाव्यंतु-
ल्लभं, कयात्यागः, अगोलायनवष्ट-
म्भनं, अगोलायनसिक्कमणम् १८४
१७३-१८३॥ उत्पत्ति संलुच्य संसर्गं दत्ते
त मुखोपायान्, अनिष्टं दाह्यहादि-
प्रवादादि-वक्तृभिर्कादि-कोलतन्तुलक-
सिक्कफलमन्त्रवदिवर्जनम् १८६

दशम-
कालिके,
४-५-६
अध्यायने

॥ १५९ ॥

१८४-१८५५ सप्तमपरोऽरीनः, अद्या-
नेऽश्रोपः १८६

१८६-१८९५ वन्दमानं न याचेत्, गलनलोः

साम्यं १८६

१९०-१९४५ अनिगूतं, समोदोऽन्यथा,
विरसानयने पूजायर्थं मायाशल्यादि

य १८७

१९५-२००५ सुरमेरकादिवोषाः १८८

२०१-२०४५ तपस्विनोऽप्रयत्न गुणाः

२०५-२०८५ तपोवयोत्पलेनदोषाः

२०९५ मिथैपणाशोपिच्छं १९०

॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥ ॥ इति पिण्डे-

पृष्ठा ५ ॥

॥ अथ महाचारकथा ॥

२४७ आचारनिषेधपात्रविदेशः १९१

२१०-२१४५ राजादिकृत्वः गणि प्रवि धर्म-
प्रभाः, साध्याचारयुवः दुश्चरं आचारं

कथयेत् १९२

२४८-२५० अगार्यतगारधर्मो, अनुप्रतादिकः

(१२) क्षान्त्यादिकृत्व (१०) १९२

२५१-२६० अर्थनिक्षेपाः (४) द्रव्ये (६)

व्यतिरिक्ते धान्यानि (२४) रत्नानि

(२४) त्यागः (३) द्विषः (२)

चतुष्पदः (१०) दुष्पभेदः (६४)

१९३

२६१-२६४ क्रमः सम्प्राप्तः दृष्टिसम्पादादिकः

(१४) असम्प्राप्तः कभिलापचिन्ता-

दिकः (१०) १९४

२६५-२६८ धर्मार्थकामाः लितप्रवनेऽविरो-
धिनः, स्वच्छाशयप्रयोगात्, धर्म-
फलमोक्षाभिभाषात् लितमते मोक्षः

१९५

२६५-२६६५२६९-२७० ससुद्धकृत्तानां

स्यानाति प्रवपद्भादीनि अष्टादश,

अन्यतरसेवको न श्रवणः १९६

२१७-२३४५ प्रवने सर्वजीवाहिंसा प्रियजी-

वितरयत्, अविश्वासमूर्तिभूया, त-

न्नात्मपरार्थं भूयात्, दन्तशोधनमा-

त्रमपि नावृत्तं गृहीयात्, घोरमयर्भ-

मूलं मैथुनं न सेवेत्, वीडाविससि-

धि न कुर्यात्, वखादि संयमार्थं, दे-

हेऽपि न ममता, एकभक्तं, रात्रौ सुहृग-

प्राणादर्शनं, उदकाद्रोदिवर्जनं २००

दि.
अनु. आ.
ओष. दग्.
पिण्ड. उच.
॥ १६० ॥

२१५-२५४५ तस्य वेदादिजानां च वधत्वात्
शुष्कीजवचनरसतीनां, टीक्ष्णान्द्रविक्-
नसनां, सकेयुतश्रुत्यात् वेजसा,
वाडयुवादिना वधादित्या वतस्य २०२
२५५-२५८५ अकृत्यसिद्धसत्त्वान्नप्रदा-
त्वात्, निदाकीर्तौ द्रुमिहादत्वात्
(द्रुमिकाकृतसत्त्वान्नकृत्यौ) २०२
२५९-२६१५ जीनोपकारभात् सत्त्वान्नपु-
रुषांसम्भवात् फांस्त्वारिषाननेषु न
भोगं २०३
२६२-२६४५ दुष्पथिष्ठेयत्वात् कायान्या-
तमोगः २०४
२६५-२६८५ आह रोगविशेषः पनीपकप्रति-
पादण् प्रविभोगेभ्यः अपृष्टादेर्ये-
द्विरदनं २६८

२६९-२७२५ शुषित्यादिषु श्राणसत्त्वात् ज्ञानं
कल्पादिकं वा कोऽपि आचरेत् २०६
२७३-२७५५ उपतर्गयुनस्य विभूषणवर्जनं
२७६-२७७५ कर्मव्ययानां कान्तरच्छं
॥ इति महाचरकवा ६ ॥
॥ अथ चावपयुद्धाध्ययनम् ॥
२७९-२८४ वाक्यविशेषाः (४) द्रव्ये भाषा-
द्रव्याणि, वचने चार्थिकानि (१२)
प्रश्ननिर्णयपथवेद्व्ये, सुवर्षादि-
त्रैधांसा, भाषयना सत्ता, विराधने
शृणु, सत्ता जनपदादिभेदेन दृश्या, २९१-२९४ दुर्भोषितेन विराधना, अकृषा-
क्रोषयानादिभिरसत्ता दृश्या, च-
त्पञ्चविगतादिभिर्मिश्रा दृश्या, तान्
सकृष्णानां मित्र

यमे द्वे पथौ, सम्पद्यतेः सत्ता,
अनुपयोगे मिध्यादयेश्चासत्ता, पराव-
र्तनादौ अवध्यादौ च असत्तामुषा,
सचरित्रस्य प्रथमा हतस्वेतता २११
२८५-२९० दुष्टनिर्देशाः (४) द्रव्ये तद्रूप-
वद्रव्यादेशप्रधानैः, आवेशोऽप्यनन्य-
त्वाभ्यां कर्णोक्तिः प्राधान्ये, भावे
तद्रूपादिषु प्रदेशप्रधानैः, मयाने
वर्तमानचारित्र्यतत्पत्ता दुष्टिः, संय-
मशुद्धिकारणं वाक्यशुद्धिः २९२
२९१-२९४ दुर्भोषितेन विराधना, अकृषा-
लस्य मौनेऽप्यनुमिः, कुशलस्य सदैव
शुक्तिः, कुश्या मेक्ष्य वाच्यं २९३

दशवै-
कालिके.
७-८

२८२-२८७॥ नेपथ्यस्त्रियं स्त्रीत्वेन आपणे
चेपायं तदाऽनृते किं न १, एष्यद्वादी

शङ्कयतां न ब्रूयात् २१५

२८८-२९७॥ परयादि कणादि होलादि

आर्यिकादि हलादि न ब्रूयात् २१६

२९८-३०२॥ पुंस्त्रीति स्थूलादि होलादि न

ब्रूयात्, परिवृद्धादि युवगवित्यादि

ब्रूयात् २१७

३०३-३१२॥ प्रासादादि-पीठादि-आसनादि-

योग्या इति न ब्रूयात्, जातिमान्त्व

इत्यादि ब्रूयात्, एककलेत्यादि न,

असंख्यता इत्यादि ब्रूयात् २१९

३१३-३२३॥ एक ओपधिः इत्यादि न ब्रूयात्

रुढा इत्यादि ब्रूयात्, संख्यत्वाद्वा

वाग्विधिः, नद्यादौ आहारादौ

उत्कृष्टमदार्पणवाद्वा सन्देहो

अस्पर्धवाद्वा च वाग्विधिः २२१

३२४-३३३॥ आस आयात इत्यादि नामय-

त्वाय लोपेत्, असार्धं सार्धं नालोपेत्,

ज्ञानावितुषं साधुमालोपेत्, युद्धे जया-

जयौ वातवृष्ट्यादि मेघादिकं देवादि-

त्वेन सावधानुमोदकत्वेन न ब्रूयात्,

अवधारणोपघातक्रोधादियुषं न ब्रू-

यात् २२३

३३२-३३४॥ अनुवीच्यमापायां प्रशंसा,

द्विगुलोलोमवादि तत्फलं च २२४

॥ इति वाक्यशुद्धाख्यपनम् ७ ॥

॥ अयाचारप्रणिथ्य ० ॥

२९५-३०० आचारेऽस्तिदेशः, द्रव्यभावाभ्यां

प्रणिधिः, द्रव्ये निधानादि, भावे इ-

न्द्रियनोद्भिन्नपयोः रागादित्यागाः

प्रशस्तः, अन्यथाऽप्रशस्तः, सुरागवत्

इन्द्रियाणि २२५

३०१-३१० क्रोधादिसौचे नोद्भिन्नप्रणिधिः,

कृपायासौचे गजज्ञानवत् इक्षुमुष्णवत्

निष्फलं आम्रण्यं, शुद्धेः प्रशस्ताप्रश-

स्तत्वं, सव्योः फलं, अनायसनानि

त्यक्त्वा संयमार्थं प्रणिधिः, प्रणिथ्य-

प्रणिथिफलं २२७

३३५-३४६॥ आचारप्रणिधिप्रतिज्ञा, पृच्छया-

द्वयो जीवाः तद्वधवर्जनं, तद्वधभे-

द्वनिपदानादिवर्जनं, शीतोदकं उदका-

द्रोद्भिसेवासंखलनादिवर्जनं, अस्या-

नन्यादि-

अनु. आन.

ओष. दश.

पिण्ड. उच.

॥ १६१ ॥

दिपट्वादिर्वर्जनं, व्यञ्जनवर्जनं दृष्टादि-

छेदादिवर्जनं शसर्दिशिवर्जनं २२९

३४७-३५०॥ अष्ट सूत्राणि

३५१-३६२॥ पात्रादिप्रविलेखना दशरा-

त्रिपितृपत्न्या परागारे स्नानमाषा-

यतगा, दद्यादेतान्स्वयेत्स्वं, गृहियो-

गासमाचारः, क्षमाश्रमनिर्देशः, अ-

ग्रासुकुशीठाशमोजनं, सन्निधिवर्जनं,

स्वदृष्टित्वादि, दशदेऽध्याः, स्वर्ग-

सहनं, दुरादिसहनं, रामावभोजनं

च २३२

३६३-३७४॥ अतिव्रतादि परिभववर्जनादि-

संवरणादि विवेचन्यात्तादि अमोघ-

वषणत्तादि भोगविवृत्यादि, जरादि-

२३८

पीडावशावे धर्मकृतिः कोषादेख्यते ३९५-३९८॥ निदम्नप्रश्नापालनं तप-

दोषाः पातोपायाः फलं च २३४

३७५-३८४॥ रक्षाधिकवित्यादि अत्यन्ति-

ब्रह्मादि भ्रमणधर्मयोगादि द्रुष्टुत-

मयुषासनादि शालीवृषत्वादौ पक्ष-

दिव्यनिपट्नं पुष्टमांसादिवर्जनं संप्री-

तिवर्जनं दद्यादित्यादिसं अनुपहासः

२३६

३८५-३९४॥ नक्षत्रावनादयानं उच्चारसूति-

युक्त्यायादि वारिकयावर्जनादि चि-

प्रसक्षिपः अप्यानं . अकृष्णलायाया

अपि वर्जनं विभूषादेर्विपट्नं अंगमा-

निर्पिष्ट्यपं विषयेष्वप्रेष अतृष्णात्वादि

२३८

॥ इत्याचारप्रणिध्यव्ययनम् ८ ॥

॥ अथ विनयसमाध्वयम् ० ॥

३९९-४०४ विवयसमाध्यानिर्देशाः (४-४)

द्रव्ये तिनिशसुषर्पादीनि, भावे लो-

कोपचारे अमृत्यानाश्चात्सनाति-

विदेवपूजाः (५) अपे काने भये च क-

भ्यासवृत्तिः छन्दोऽनुवर्तनावसरदान-

दानाभ्युत्थानाश्चात्सनादनादि, मोक्षे

(५), सर्वेने सद्भावश्रद्धानं क्षाने पट्न-

गुणनक्तानि चारित्रे कर्मापच्यः

तपसि स्वर्गमोक्षसाधनं, प्रतिरूपे

॥ १६१ ॥

दशवै-

कालिके.

८-९ अ.

कापे अभ्युत्थानाञ्जत्यासन्नदानामि-
प्रहृष्टकिर्मदुःखपादुगमसंसाधनानि
(८) वाचि द्वितमिवापकपादुवीच्य-
भाषा (४) मन्तसि कुशलकुसलो-
दीपनतोयौ २४१

३२५-३२८ परावृष्टिमये प्रविरूपे तीर्थ-
करसिद्धपुत्रगुणसहस्रक्रियापमंशान-
शान्याचारस्यविरोधाभ्यायगणिनाम-
नादावनामस्त्रिदुःखानकीर्तनैः (५२)
केनालिनामप्रविरूपः २४२
प्रव्यसनाधौ निफलादि, भावसमधौ
वर्धनशानचारित्तपसि

३९९-४०८ स्वप्नकोपमदमपदेभ्यो वि-
नयाशिक्षणं, मन्दशालाप्रभुत्व इति
गुणनिन्दया मिथ्यात्वं, आसाहिवा

गुरवः शिक्षीव नाम इव अनर्थाय
स्ववोधये च, पावकाद्याक्रमणादिवत्,
अशातना दुर्भोचा च, पूर्वजादि-
भेदादिवच्च, मोक्षाकांक्षीं गुरुप्रसावे-
त्सी २४५

४०९-४१५ लगतक्षानोऽध्याचार्यमुपति-
ष्ठेत्, धर्मपदशिक्षकं सत्कारयेत्,
लज्जादयादिशिक्षकं पूजयेत्, द्युत-
शीलयुतः सूरिः सूर्यवत् इन्द्रवत् च-
न्द्रवच्च धर्मकामिनां तोष्यः, आ-
चार्योपाकृत्य सिद्धिः । २४६

॥ इति प्रथम उद्देशः ॥

४१६-४१७ मूलात् रत्न्यादिवत् धर्मात्
छीर्तिशुवादि, २४६

४१८-४२४ अविनीतस्य काष्ठवत् बहन्,
शिक्षायां कोपतः भीतिपेक्षः, वि-
नीवाविभीतयोस्तथाविधद्वयगजवत्
नरनारीवत् देवेशगुरुवरत् सुख-
दुःखे २४८

४२५-४३८ आचार्यशुश्रूषया शिक्षादृष्टिः,
शिल्पप्रचर्यं गृहिणोऽपि वन्यवयादि,
गुरुपूजकाश्च, किं पुनः द्युतमद्दे,
नीचसूच्यागतिस्त्वानादि, अपराधभा-
मणां, दुर्वृत्तिर्गह्निगोयत् नोवृत्तार्थी,
कालादिकमवेक्ष्य कुर्यात्, विनया-
विनयफलं ज्ञात्वा शिक्षेत, न च-
ण्डादिकस्य मोक्षः, निर्देशवत्तादीनां
सिद्धिः २५१

॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥

नर्पादि-
अनु. आव.
ओ. द. ग.
मि. उ. ग.
॥ १६२ ॥

४१९-४५१* इति वं इति वं इति वं इति वं
पये, आपापर विनयः, गुर्वना-
नावनः पूया, रात्रिभारिपु स्त्रीना,
अशोचोद्गदि, अस्तेच्छादि, वाक्-
दकसदः, दुःखानि वेरायुषीनि,
धर्माय वचनाभिप्रायसङ्गं, अयं-
थापननोद्गदपारणीयं नः, लो-
नारिदिगः, समयादेयः, अद्वैतः,
पूरयत्वादि, पञ्चमगारि, गु-
प्रतिपल्लार नोद्यः २५५

॥ इति तृतीय उदर ॥

१६-४५४* विनयमुत्पन्नभावात्समाप्नु-
रेतः, विनयारिसिद्धिना आत्मा-
रामाः २५६

१७-४५५* शुभ्रपासिपतिः आराधना-
मुक्तः विनये २५६
१८-४५६* इति वं इति वं इति वं
इति २५७
१९-४५७* इति वं इति वं इति वं
इति २५८
२०-४५८-४६०* इति वं इति वं इति वं
इति २५९
२१-४६०* इति वं इति वं इति वं
इति २६०

॥ इति चतुर्थ उदरः ॥ ॥ इति विन-
याययनम् ९ ॥
अथ साभिप्रायः ॥

३६०-३६० सफरमिथेपाः (४) इत्ये ग्रं-

सामिदेशादिभावे, धातुसंज्ञा-
करीयो भिक्षुः अथयनगुनि-
युक्तः, मिथुनिथेपाः (४) निकृ-
कार्यकलिहानि, नागस्थितो भिक्षुः,
पचावपाः, मेदरुभेदनभेद्यनि,
अविरता याचना द्रव्यमिक्षाणाः,
सदारभ्यकाः इतिगोऽपि, मिथ्या-
ष्टिदिसकाप्रचारिपरिग्रहस्तचित्त-
पचदुरिष्टभोनिना, इरणयोगयो-
मात्मानिद्रिजिकमन्तः क्षीपरिग्रह-
गन्तः इत्ये सिद्धिः, भावे उपयुक्तो
ज्ञाता गुणसंघः, भेदा, ज्ञानी तपो
भेदनं कर्म भेत्तव्यं, मुक्तो भेदात्
भिक्षुः, यतनाद् यद्धिः संयतपणात्

॥ १६२ ॥

चरकः, भवं क्षिपत् क्षणकः, भवान्तः, ४११-४८१# समाहितचित्तः कयवशः अ-
भिक्षणात् मिथुः ऋणक्षणाद्वा, तप-
संभार्यां तपस्वी, निर्मथैकार्थिकानि
(२८) संयोगादीनि लिङ्गानि (१७)
अध्ययनगुणो मिथुः, नान्यः अगुण-
स्यात्, सुवर्णवत् न, विषयावनदायः
(८) सुवर्णगुणः, कपच्छेदादिशुद्धं
विषयात्तादिगुणवत् सुवर्णं, न शेषं, न
नामरूपाभ्यां मिथुः, युक्तिसुवर्णोऽपि
न सुवर्णता, अण्वयनोका मिथु-
गुणाः, वरादितो मिथुको न मिथुः
युचिसुवर्णवत्, वरिष्टकुतमोज्ञो षट्-
यायमर्दनः गृहकर्तो जलजीवपायी
कथं मिथुः?, अण्वयनोक्तगुणो
मिथुः २६४

प्रेहः अनिदानकुतूहलः परीपद्वादि-
भाक् सभोतः इत्यादिसंयतः अभा-
रप्रतः धुतार्थवित् अमूर्च्छः अहा-
वोढः ऋयविक्रयसन्निधिविरतः अ-
सन्नः रसायुद्धः ऋद्व्यादिनिरीहः प-
रिमवेत्कर्पूरहितः आर्यपदवेदी अ-
हासः मिथुः, मोक्षशाल २६९
॥ इति समिध्वधयनम् ॥

॥ अथ रतिवाक्यचूडा ॥

३६१-३६३ चूलिकानिसेषाः (४) द्रव्ये सचि-
सादिषु युक्तदृष्टादग्निसूरीनां,
क्षेत्रे लोकनिरुदमन्दचूडादयः,
काळे अधिकमासं वतसरो २७०

नन्दादि-
मनु.भाष.
ओप. दग.
पिण्ड. उच.
॥ ११३ ॥

३६४ रक्षिद्वये नोकमंगि स्रग्दन्त्यादि
भावे दत्तोदगः
३६५-३६७ रतिवाक्यान्वयः, अतुल्य सी-
पनरुष्टेनारिषत् कर्मरोगतुल्य घ-
मापर्मयो ह्यलली
२१ स्वाध्यायादौ रतिमोऽसंलगेऽक्षिम-
दस्य सिद्धिः, तदा घर्मापर्मयो ह्यस्य-
दिष्टरश्मिस्तान्मन्त्र, दुष्पमाणां दु-
ष्प्रीवित्ता इत्यतः क्रमात् मायास-
त्त्वा गलुषा न विर दुःसं अवमन-
नपुरस्कारः कान्ताङ्गनं अथो गतिः
गृहे दुर्लभो घर्मा वातकुसुदुल्लो
पपाय, घोरेषु सन्मन्त्रावेवतौ गृह-
वापपर्वोचो, साधारण भोगाः दृय-

बर्माणः अतिसं जीवितं बहुपापं,
नाभेदयित्वा मोक्षः (१८) २७४
४८२-४९९ पदयो गायः २९८
॥ इति रतिवाक्यचूडाख्य० ॥
॥ अथ विविक्चयोचूडा ॥
६३+ अधिप्रासिद्धेः २७८
५००-५०३ केनतिभाषिता धर्ममतिकारिका
चूडा, प्रतिश्रोतो यन्मन्त्रं प्रतिश्रोत
वपारः स्वर्गागुणनियताः २७९
५०४-५०८ अविशेषवतः सगुदानपयो
अगतोच्छं व प्रतिरिक्त्वाऽस्योप-
पत्तिः कष्टस्वर्गं आर्त्तार्थव्यासव-
र्गेन दृष्टान्नतः संसृष्टस्यः धम-
धर्मस्यानी निर्मलतः निर्विकृतिकः
कायेतिस्मर्त्तव्यं स्वाध्यायस्यः इत्या-

विवप्रतिज्ञाः निर्ममः न गृहीतव्यावृ-
त्त्यादिकाः असंस्मृताः २८०
३७०-३७१ संवत्सावगृहीतादिपर्वो ज-
निहेतादिसंख्या २८२
५०९-५१५ अस्तत्रैक विहारी अर्थाज्ञाया
चर्या कृताकृतारिचिन्तने ह्यस्तवष्टि-
वापेक्षी दुष्पयुक्तसंघः प्रविष्टुद्धजी-
वित्वं आत्मार्थाश्रयोः फलं २८४
॥ इति विविक्चयोचूडा ॥
३७२-३७३ एमासाऽपीत्र आरापक कार्य-
मतका, यशोमन्त्राद्यैः स्वापितमिदं,
नयाश्च २८६
इति दमार्थकालिकस्य सचूडा-
दयस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

दशद्वै-
कालिक-
बृहद्विषया-
नुक्रमः
॥ १६३ ॥

॥ पिण्डनिर्युक्तिवृहद्विषयानुक्रमः ॥

मन्त्राद्यम् । दशैकालिकपिण्डपण्य-
यननिर्युक्तिरेषा ।

॥ अथ पिण्डनिरूपणम् ॥

पिण्डोद्गमोत्सादपणासंयोजनाप्रमाण-
ङ्गरधूमकारणानि (८) पिण्डनिर्यु-
क्त्याम् १

पिण्डैकार्थिकाणि (१२) २

पिण्डनिर्युक्ताः (४-६) ३

कुलकचतुर्भागाभ्यामेतत् पट्टेचतुष्कम् ४

६, १-६+ गौणसमयोभयकृतानि नामानि,

भेदत्रयस्वरूपं सिद्धिः ४

७-७+ अक्षकामादौ । सद्भावासङ्का-
स्मान्ने ६

८-९ व्रज्ये सचिचः पिण्डः (९) निश्चय-
न्यवहारौ

१०-११ सचिचः दृष्टिर्यौ श्रयसिष्ठः ७

१२ क्षीरदुग्धादेरथाः पट्यादौ च मिश्रः,
आर्द्रं एकद्वित्रिषौरुपाः ८

१३-१५ शीतोष्णादिनाऽचित्ताः, त्वत्वास्तो-
तादौ स्वातादौ च प्रयोजनम् ८

१६-३४ अर्वाये निश्चयव्यवहारसचिचत्वा,

अर्वाक् त्रिदण्डेभ्यः पठितमाने चर्पे

अबहुप्रसने तन्दुलोदके मिश्रः, धना-

देशत्रिकं, तदुपगानि, शीतोष्णादिना-
ऽचित्ताः, परिपेकपानदत्तपक्षधाय-

तादि प्रयोजनं ऋतुवृद्धे दोषः, वर्षा-
स्वधावने दोषः, अर्वाङ्गं वर्षायाः

सर्वोपवेः क्षाञ्जनं, जपन्यताः पात्रनि-
र्योगस्य, आचार्योदीनां पुनः पुनः,

पात्रनिर्योगाद्या अविश्रम्याः, विश्रा-
मणाविधिः, नीत्रोदकग्रहणं, गुर्वनश-

न्यादिक्रमः, पूर्वं वयाकृतानि, ना-
च्छोदनादि, छायाऽवपयोः शो-

षणं, कृत्यायकं च १६

३५-३७ तेजसि निश्चयव्यवहारसचिचत्वा,

मुसुरादिमिश्रः, ओदनादिरचितः ।

नद्यादि-
अनु. आव.
ओष. दश.
पिण्ड. उत्त.
॥ १६४ ॥

३८-४२, १२-१५+ वायुस्थये पनवातादौ
निश्चयेन सचिदाः, प्राच्यादिर्व्यवह-
रेण, आरान्ताभ्यात्पीडनदेशानु-
सन्निधौदेवविताः, दद्यादिवारत्सा-
पितादित्वे क्षेत्रकालविचारः, मन्त्र-
नत्वेऽचिदेव प्रयोजनम् १८
४३-४६ वनसतिष्ठत्येऽनन्तकालो निश्चयेन,
देशो व्यवहारेण, मिश्राः प्रसृज्यो
लोहादिः, धृत्कृच्छानौ अचित्तः,
संस्कारादिना प्रयोजनम् १९
४७-४८॥ विष्णोर्निद्रये विष्णवं, अक्षानुबेदि-
दादिसंक्षिप्तपुष्पीमादिना प्रयोज-
नम् २०
४९-५२ अनुपयोगिनो गारजाः, चरमासि-

द्व्यादिना तिर्येचः, प्रजाजनादिना
मनुष्याः, क्षपादिफालज्ययोदिना
देवा व्ययोगिनः २१
५३-५४ पिण्डनवकसंयोगाः (५०२) विधिश्च
सौवीरकृत्तियु २२
५५-५८ क्षेत्रकालपिण्डौ, अनुत्तरेण शङ्खाः,
आवेयसिद्धिभ्यां प्ररूपणादनुत्तरेण च
समाधानम् २४
५९-७२ भावे प्रसूते संप्रसादित एकादि-
दशविधानाः, अग्रसत्तेऽसंभ्रमादि-
रेकादिर्नवान्तः, वयश्चेदुत्तप्रसूताः,
सुच्छिद्युः प्रसूतः, हानदंशनचरी-
त्राणां प्रयोयावत्तत्पिण्डः, अच्यव-
सायो वा पिण्डः, आहारादिः प्रसू-

पिण्डनि-
युक्तिवृह-
द्विपया-
नुरासः

सामिण्डसोमकरी, तेन द्रव्यभा-
वपिण्डाभ्यामधिकारः, निर्वाण-
कारणज्ञानादिकारणमाहारः, पदे
पदमवतः, अनुपद्वकसयात्कार्य,
आविष्कृत्यानादिमाक्षेदेतुः २८
॥ इति पिण्डनिरूपणम् ॥
॥ अथोद्गमदोषाः ॥

७३-७८ एषैर्धिकानि (४) एषानिर्दिष्टाः
(४) द्रव्ये सचिदादिः (द्विपदादि
३) भावे गवेषणैक्यादिः (३) क्रम-
सिद्धिश्च २०

७९-८४ गवेषयानिर्दिष्टाः (४) द्रव्ये कृत्त-
गजदशान्तौ, भावे कद्रुमोत्पदाने ३२
८५-९१ कद्रुमैरधिकानि (३) निर्दिष्टाः (४) ।

॥ १६४ ॥

द्रव्ये लडुकन्वोतिस्तृणादि, मावे

ज्ञानादि, लडुकप्रियकथानकं, लडुम-

शुद्धेद्यादिप्रशुद्धिलवो मोक्षश्च ३४

१२-१३ व्याधकर्मोदिका (१६) लडुमदोषाः

१४ व्याधकर्मिके नामादीनि (८) द्वा-

दणि ३६

१५-१२८, १६-२२-आधाकर्मिकैकाधिकानि

(८) द्रव्यायायां धनुषदीनां मलश्चादि,

भाषायायां यमायाय त्रिपातनं, द्रव्ये-

ऽधःकर्मणि जडादिव्यवहरणं, मावे

संयमस्यान्तादिषु, संयमश्रेणित्वरूपं,

आधाकर्ममाही अयोऽवतीर्य अयो-

भवायुःपनीकरणादि शुकते पतति

चाधोगोर्वा, द्रव्यात्मने निदाऽनिदा-

भ्यां हिंसा, काया द्रव्यात्मनि, वया-

चरणालम्बातः, निश्चयेन ज्ञानदर्शन-

वचोऽपि, द्रव्यात्मकर्मणि समतावि-

पयः, मावेऽशुभपरिणितिः, आधा-

कर्मपरिणतः परकर्म आत्मकर्मो-

शुकते, सक्रमशङ्का, कुटोपमया

समाधिः केषाञ्चित्, अयुमभावानु-

रूपां, ग्रहणात्मसङ्गः, प्रतिसेवादि-

भिरात्मकर्मता, क्रमेण तेषां गुरु-

लघुते, न परानीते दुष्टतेति प्रतिसे-

वना, सुलभ्योक्तौ प्रतिसेवना, यद्गो-

गिराशंसाऽनुभोदना, सेनराजपुत्र-

पट्टीवणिक्प्रशंसाकारिणः प्रतिसेवा-

दियु दृष्टान्ताः, तद्वदायकर्ममोनि-

नामपि ५०

१२९-१३६ एकाधिकचतुर्भेदोऽङ्गी, भङ्गययी-

योजना ५२

१३७-१५९ सायमिदंस्वायकर्म, नामस्याप-

नाद्रव्यश्रेणकालप्रवचनलिङ्गदर्शन-

(३) ज्ञान (५) चारित्रा (५-३) भि-

ग्रह (४) भावना (१२) मिः साध-

मिद्वत्स्वरूपं, प्रवचनादिषु चतुर्भे-

द्वयाश्च, तेषु कल्याकल्याता च ६२

१६०-१७६ अशनायायाकर्म, कृतनिष्ठचतु-

र्भेदोऽङ्गी, अशनायायाकर्मत्वे दृष्टान्तः,

पानरायस्यादानाभायाकर्मत्वा, प्राप्ति-

क्षीकरणं निष्ठिते, वपरठतं छते, न

छायावर्जनं न्याय्यम् ६७

१७७-१७८ स्वपरपक्षस्वरूपं, कल्याकल्याता

च ।

तन्वादि-

अनु. आ.

ओप. दृ.

पिण्ड. उप.

॥ १९५ ॥

१७९-१८२ धतिङमादाप्रत्ययः, नूपर-

णिवत्तद्विदष्टान्तेन धतिङमादिपु-

णुरिः, धतिङमादिरूपम् ६८

१८३-१८८ आयाकर्मण्ये आत्माजनवत्सामि-

ध्यात्वरिपयत्वा ७०

१८९-२०५ आयाकर्म वत्तद्विदष्टान्तलिङ्,

परिदात्त, वान्तादिकर्मण्यं, उप-

देशोदष्टान्तः, वन्त्यसमयेपूर्वाभी-

यारिवत्, अद्युसिष्टपुत्रवत्, अद्युवि-

भाजनस्यैव एष्टव्यद्राज्जनसिचयोः

परिहारः, अविधिसिंहारोऽपीतार्थ-

दष्टावः, विधिपरीहारो द्रव्यपुत्रोऽयं-

मावापेक्षणम् ७४

२०६-२१७ परिणत्ता वन्त्यावन्तौ, वेपथि-

उन्वङ्गप्रियवृद्धष्टान्तौ, उवाच-

दर्शितद्वान्ताथ, आयाकर्मणोनिनो

योवन्तमेव ७७

२१८-२४२ विभागोदृष्टिर्ले छटिष्टवकर्म-

२३५ पतुलकेन द्वावङ्ग भेदाः, ओषोदे-

क्षिप्तसंभवस्वरूपे, रेखादिना व-

क्षानं, गोपस्तदष्टान्तेन वपुष्युष्वा,

विभागोदृष्टिर्ले संभवः, अस्माद्यु-

देशादेवसमादेशभेदाः, वल्लरूपं,

द्रव्यक्षेत्रज्जाटमावैरिषिजाव्यिञ्जोदृष्टि-

कृत्यवाक्यसिद्धिः, संप्रदाने च,

उत्तरलिङ्गानोपायाः, कर्मोदृष्टिर्ले क-

त्याकृत्यविधिः ८९

मावपुत्रिरूपं, उद्गमोद्वेगमापाक-

मिकायाः, उपकरणे द्रव्यपाने च

वावरपूतिः, भक्त्यविरूपं, वुष्टु-

खादिपुत्रभेदिका, मित्रकृत्यं, ज-

ज्ञापयितुं सूक्ष्मपूतिः, आयाकर्मपा-

त्रसाकृदात्रये सूक्ष्मपूतिता, त्वक्-

प्रमाणं पूतिः, आयाकर्मण्ये त्रीन्

दिवसान् पूतिः, तत्परिज्ञानोपायाः ८८

२७१-२७६, २४५ वैषकविषयत् सूक्ष्मान्त-

रितमपि मिश्रमकृत्यं, यावदर्थिक-

पात्राणि वसाधुमिश्रस्वरूपं, कल्पत्रये

कृत्यत्वा ८९

२७७-२८४, २५५ स्नापनायो स्नानपर-

स्नाने, अतन्वरपरम्परे, प्रवृत्त्यात्-

रताः, विकारीवपणि द्रव्याणि ९१

पिण्डानि-

युक्तिवृद्ध-

द्विपया-

नुकामः-

॥ १९५ ॥

२८५-२९१, २६-२४५ वावरसूत्रप्राप्त-

विके मङ्गलपुण्यायाय, उत्कलं च
उत्पल्लवनाववल्कनाभ्यां १३

२९२-३०५ प्रादुर्करणसंभवे सिद्धिमुत्पद्य-
दन्तः, मङ्गलकरणे शुद्ध्यादेर्यहिरान्त-
यन्तं, प्रकाशकरणे रज्जादिना छि-
द्रादिना च, आत्मार्थीकृतं कल्पते,
निष्ठुखिकोटित्वम् । ९५

३०६-३१५ क्रीते आत्मपरद्रव्यमावकी-
रानि, सचितादि परद्रव्ये, आत्म-
द्रव्ये निर्मात्प्यादि, परमावे मङ्गल-
दन्तः, आत्मभावे धर्मकथावादस-
पगादि (९) ९४

३१६-३२२ आमित्ये लौकिके मग्निनीह-

ष्टासः, लोकोचरे यक्षादौ मलिन-
तादिदोषाः, अपवादश्च १००

३२३-३२८ परिवर्तिते लौकिकलोकोचरयो-
स्तादृश्यान्त्रव्ये, लौकिके शाल्योदन-
दृष्टान्तः, लोकोचरे कंताधिकव-
सादौ दोषाल्पपदादश्च १०२

३२९-३४६ जभ्याहृते आपीर्णानाचीर्णे मि-
शीयानिशीये स्वामपरास्ममे जलपथ-
स्यलपथौ, दोषाश्च, त्रिगृहद् वादक-
देवश्च परतः, परयामनिशीये घनावह-
दृष्टान्तः, हस्तसवादाचीर्णं, उत्कृष्टा-
दिभेदाः १०५

३४७-३५६ चन्द्रिजे सिद्धितकपाटौ प्राप्तुश्च-
प्राप्तुके, पटायदोषाः, दानादिदोषाः,
अक्षुचितकपाटे आचीर्णम् १०७

३५७-३६५ भालापहृते जपन्योच्छटे, मिष्टु-
दृष्टान्तः, दाहपतनादि, उत्कृष्टे का-
पितः, ऊर्ध्वोपक्षिर्गमेदाः, अपवा-
दश्च ११०

३६६-३७६ प्रमुखामितेनाऽऽरुचिभानि, प्रमौ-
गोपः, दोषा अपथादश्च ११३

३७७-३८७ सामान्यनिसृष्टे लोलुपमितुष्ट-
दृष्टान्तः, भोजनानिसृष्टे, छिन्ने कल्प्यं,
हस्तिनिसृष्टं दृष्टमप्यकल्प्यम् ११५

३८८-३९९ वायव्यैकल्यगृहसाधुमिश्रैरप्यव-
पूरकसिन्ध्या, मिश्राद्भेदः, कल्प्या-
कल्प्यविधिः ११६

३९२-४०३, २८-३०५ विशोष्यविशोधि-
कोट्यौ, द्रव्यक्षेत्रकालभाववैवेकः,

नन्यादि-
अनु. आव.
ओप. दश.
पिण्ड. उत्त.
॥ १६६ ॥

शुभ्रांश्चतुर्मेहैः कल्याणस्य-
विधिः, वद्रमकोश्यां षट्, शेषा नि-
शेषिः, नवाष्टादसादिकोऽष्टाः, शुष्ण-
द्रवा वद्रमशेषाः १२०
॥ इत्युद्रमदोषाः ॥
॥ अथोत्पादनादोषाः ॥
४०४-४०९ द्रव्योत्पादनायां सचिच्छादि,
धातोत्पादनायां धातव्यादयो दोषाः
(१६) १२१
४१०-४२७, ११-२२५ धीर्यजनमण्डन-
क्रौडनादुपातीत्यति करणकारणाभ्यां,
धानादिभ्यञ्ज्युत्पत्तिः, धात्रीदोषगुण-
दिनिरूपणं, इच्छादोषाश्च १२६
४२८-४३४ स्वामासपरममश्रुच्छादयो

दूरी, जेकोचरे एतदयो व, धन- ४८४-४९३ संस्कारसहस्रं सम्बन्धिवचनयोः
इच्छादोषाः १२७
४३५-४३६, ११-२४५ लभालभादि यद्विष-
निमित्तं, योगिनीछादोषाः १२८
४३७-४४२ जालिङ्गलज्जमोशिलाः सूचा-
सूचाभ्यामाजीवः १३०
४४३-४५५ अमणमाहनकुपणालिच्छिभिर्ब-
नीपकाः, विर्यन्यादया अमणभेदाः,
वनीपकत्वे दोषाः १३२
४५६-४६० त्रिविधात्रिक्रियास्वाद्योषाश्च
१३३
४६१-४८३ घृतपूर्णसिक्किमादिकसिद्धे-
शुद्धछादोषाः क्रोधादिषु, क्रोधादिका-
रणाणि च १३९
५१४-५१५ साधुसमुत्पा कस्यादनादोषाः,
एषाभ्यायं कालिङ्गभाषापरितो
साधोः, शेषा गृहस्थात् १३२
॥ इत्युत्पादनादोषाः ॥
॥ अथ एषणादोषाः ॥
५१६-५२० एषणानिर्दिष्टाः (४) इत्येवान्तर-

पिण्डनि-
पुक्तिवृह-
द्विषया-
नुकमाः

॥ १६६ ॥

यूथदृष्टान्तः, भावे दृष्टिवादि (१०)

१४७

५२१-५३० प्रहणभोगयोश्चतुर्भेदोः, छद्म-

(१६) त्रयिवादि(१)दु दृष्टा, उप-
योगाच्छुद्धिः, दृष्टोपयोग्यद्वैतं

केवल्यपि मुक्ते, अन्यथा दृष्टाग्राभा-
ष्यादि, परियासाद्बुद्धेः सद्वाच्यत्वादे

चानेपणीयम् १४८

५३१-५३९ त्रयिते सचित्ते शुधिन्यन्वनस्प-

तया, अचित्ते गदितेदे, इत्थमा-
त्रयोश्चतुर्भेदो, संज्ञात्मिककल्पम्

१५०

५४०-५५७ निश्चिते सचित्तिश्रयोरनन्तरप-

रम्परे, सचित्ते पोढा, सत्स्थानपर-

स्मानयोः, कल्याकल्याविधिः, सप्त-
विधो विध्यातायमिः, यतना प,

अनलुप्योदकमपट्टितकर्म प्राप्तं,

पार्थावलिप्तानलुप्यापरिशादायदृष्ट-

भङ्गाः, भङ्गान्यन्तरीतिः, अत्युप्यो

दोषाः, वातहरितयोरनन्तरपरम्पर-

भेदो १५४

५५८-५६२ सचित्ताचित्तिश्रेयु सिद्धितेषु च-

तुर्भेदः, चरमे भजना १५५

५६३-५७१ सचित्ताचित्तिश्रेयसंदरणेषु च-

तुर्भेदः, तत्क्षणं, अचित्ते आ-

चारसंज्ञियमाणयोः शुल्बद्वैतलोका-

द्वचतुर्भेदः, दम कल्याकल्यावि-

धिर्दोषाश्च १५७

५७२-६०४ बालदृष्टमत्तोन्मत्तादिवत्पारिदा-
द्विरदायकेषु केषुचिद्भजना तदोपाश्च

१६४

६०५-६०८ सचित्ताचित्तिश्रेयसिधौ निमित्तं चतु-

र्भेदः, संहतोन्मिश्रयोर्विशेषः, आ-

र्द्रशुक्लोकवद्वचतुर्भेदः, कल्या-

कल्याविधिश्च १६५

६०९-६१२ अपरिणते द्रव्ये पद कायाः,

भावे दातृदीनोः १६६

६१३-६२६ लिप्ते दध्यादिलिपोऽपि वज्रः,

विलयतपसा संयमाविदानेर्भोजनं,

यणमास्याचाष्टैर्भोजनं, महाप्राप्तादिवत्

अलेपेन यापना, तज्जदीनां, प्रहणं,

शीला आहारोपधिशय्याः, अलेपा-

नद्यादि-
अनु. आव.
ओय. दश.
पिण्ड, उच.
॥ १६७ ॥

रूपबहुलेषद्रव्यादि, संयुद्धस्थानाग्र-
सावनेष्वद्रव्यभेदाः १६९
६२७-६२८ छदिते द्यौतोष्णमिश्रचतुर्भेद्यय-
स्त्रोपाय, शीतोष्णच्छदिते पायसाह-
पदभापविराषनाः मयुषिन्दुष्टान्तः
१७०
॥ इत्येषादोषाः ॥
॥ अयं प्राप्तपणादोषाः ॥
६२९-६३५ प्राप्तपणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये-

वत्सद्यन्तः, भावे संयोगनाद्याः,
अयसिद्वये परित्यक्तस्तिवहणे, सा-
धोरात्मलुप्तासनम् १७२
६३६-६४१ द्रव्यसंयोजना बहिः, पात्रक-
व्यवनेष्वन्तः, रसवेदो दोषः, अय-
पादश्च १७३
६४२-६४३ पुरुषदेराहारप्रमाणं यात्रामात्रा-
हारश्च भुक्तिः
६४४-६४४ अतिवहुकमतिवहुतः प्रकामनि-
काभाभ्यां प्रमाणं, शीनादिभोक्षणे
गुणाः, द्विगमितस्वरूपं, क्वाढोपेष्ट-

शाऽऽहारमानम् १७५
६५५-६६० साङ्गारसधूमौ तरोपायश्च १७६
६६१-६७१ लुहेदनादीनि कारणानि, आत-
ङ्गादीनि न्यूनाहारकारणानि, उप-
संहारः, धर्मावयवकयोगानाहानिः
प्रयोजनं, सूत्रविधिना विरचयता नि-
र्जराख्या १७९
॥ इति प्राप्तपणादोषाः ॥
॥ इति पिण्डनिर्मुक्तिः ॥

पिण्डनि-
र्मुक्तिवृद्ध-
द्विपणा-
नुमिमाः

॥ १६७ ॥

॥ उत्तराध्ययने बृहद्विषयानुक्रमः ॥

| | | | | |
|--|-------|---|----|--|
| मद्रुढम् । तथोदयतः । फलयोगम्- ब्रह्मदि ३ | १२ | शुतधन्वनिक्षेपविदेशो, नामाधि- कारणां प्रतिष्ठा च ९ | ३० | संयोगे निक्षेपपट्टं द्रव्ये द्विपालम् । (नामादिव्याख्याविधिस्थापना) २३ |
| वृष्टानिक्षेपाः (१५), जपन्वादेः सोपगुप्तत्वे ५ | १३-२६ | अध्ययननामानि सर्वाध्ययना- धिकारः | ३१ | संयुक्तसंयोगोत्रैवियम् मूलाद्यैर्मुद्रादेः सचित्संयुक्तसं- योगः २४ |
| उपपाप्ययतये हेतुः ५ | २७ | निष्ठाद्यौपसंहारः, एकैकाध्ययनप्र- तिष्ठा च १० | ३२ | अण्वादेरचित्संयुक्तसंयोगः २५ |
| अज्ञातिप्रसक्तम् ५ | २८ | विनयश्रुतस्योपक्रमादिद्वारातिदेशः (अनुयोगद्वारवर्जने) १५ | ३४ | सौवर्कर्मनोर्निश्चलसंयुक्तसंयोगः परमाणुप्रदेशाभिप्रेतानभिप्रेतानिजा- पैरितरेतरसंयोगः |
| ५-११ अध्ययनादीनां निक्षेपपुच्छम्, नौजागभाषाम्यप्यनव्याख्या, दीप- यन्नायाक्षीयता, भाषायाः, सदे- कार्थिकानि च, यत्तस्य द्रव्यरूपणा, त्रिषा भावकृपणा ८ | २९ | विनयनिक्षेपातिदेशः द्रुतनिक्षेप- पुच्छे द्रव्यभावो च १८ | ३५ | संस्थानरुन्धन्यमेदेन परमाणुसंयोगः २६ |
| | १* | साधुविनयकथनप्रतिष्ठा (संहि- तादिव्याख्या) २१ | ३७ | स्कन्धभावे हेतुः २७ |

नग्यादि-
लुगु, आन,
ओप, ददु,
सिन्ट, उत्त,
॥ १६८ ॥

- ३८ संस्तभेदाः ३० :
३९-४१ संस्तभेदाः ३० :
४२ प्रदेशयोः ज्ञादिसादियेदो ३०
४३ जमिरेवतभित्तसयोगो
४४ गतोऽभिमेवा औपथादिसंयोगः ३१
४५ द्रव्यान्तरभित्तसयोगः ३२
४६-४७ द्रव्यादी. संकल्पसंयोगः ३३
४८-४९ मावेदनादेशसंपुक्तसयोगा, आ-
देशभाषसंपुक्तसयोगः ३४
५० आत्माविषयसंयोगः (४)
५१ (११) साक्षिपतिद्वोऽप्यनुदा.
५२ वासाविषयसंयोगः, (लेखन-
दिः) ३५
५३ (१५), लोदसामिपतिद्वो मिश्रः ।

- ५४ द्रव्यान्तरात्म्यादिसंयोगः ३६
५५ सादिविधायाः (६) संयोगः ३७
५६ नामदेवकालैर्योक्तसयोगः, वदुय-
वेत मिश्रः
५७ आचार्यसिध्यादीनामपि यद्यसं-
योगः ३८
५८ आचार्यसिधिरूपम् (संयोगः ३६)
५९ ज्ञानादिपूभवसंयोगः ४१
५० निर्दिष्टमात्रादेशवसंयोगा ४२
६१ कथावमतावतः सम्मन्धसं-
योगः ४३
६२ सम्मन्धसंयोगे संघातः, एतो मुक्तः
साधुः

- ६३ क्षेत्रादिसम्बन्धनसंयोगः
६४ विनीतलक्षणम् ४४
६५ अविनीतलक्षणम् ४५
६६ अविनीतकले द्युनोद्वान्तः
६७ जल दूरुद्वान्तवेन क्षीलद्वान्त-
दक्षीलक्षी ४६
६८ ज्ञावद्वान्ताय द्विर्द्विमे वितयक्रियो-
पदेशः ४६
६९ क्षीलज्यानिर्द्वान्तने वितयकले ।
७० वितयेकणाविधिः ४७
७१ क्षान्तिसेवाशालमहासकीहावजे-
मम्
७२ बाण्डालिकधहालावर्जनमध्ययन-
भ्याने च ४८

उत्तराद्य
यने दृढ-
द्विपया-
नुक्रमः

॥ १६८ ॥

| | | | | | |
|-----|-------------------------------------|-----|--|-----|---|
| ११* | चाण्डालिकसंभवे विधिः । | १८* | पार्श्वगुरुः पृष्ठबोऽनपदनमयुज्योरु, | २८* | शिक्षांप्रेरणयोः प्राह्वाप्राह्वयोर्युद्धिः । |
| १२* | शिक्षाया भूयोऽनिच्छा पापत्याग्यञ्च, | | झट्यायामप्रतिश्रवणं (शुश्रूषाविनये) | २९* | शिक्षायां मृदना द्वेषः |
| ६४ | गत्याकीर्णवत् ४८ | १९* | पर्यस्तिकापक्षरिण्डपादप्रसारवर्जनम् । | ३०* | अनुशासनासनः । ५९ |
| १३* | गत्याकीर्णपर्यायाः | ५५ | | ३१* | कालेन निर्गमप्रतिक्रमणसमाचारः |
| १३* | अनाश्रवायाश्चिचानुगायाञ्च गुर्वप्र- | २०* | आहूतो गुरुमुच्यते । | ३२* | स्वानेषणभक्षणविधिः । |
| | सादमसादकारिणः, (चण्डहस्तचार्य- | २१* | सकृत्सुनर्वा लपत्याचार्ये यत् प्रकृष्टशुयात् | ३३* | अन्यभिष्टु कानविक्रमणम् । ६० |
| | दृष्टान्तः) ५० | २२* | पृच्छाविधिश्च । ५६ | ३४* | षिण्डप्रहणविधिः । |
| १४* | गुरुचित्तप्रसादनविधिः (कुलपुन- | २३* | विनीते सूत्रार्योभयार्पणम् । | ३५* | प्राप्तयेणाविधिः ६१ |
| | भूतदृष्टान्तौ) ५२ | २४* | सुपावयारणीमायादिवर्जनम् । | ३६* | सुकुवसुपकादिवावर्जनम् । |
| १५* | आत्मदमनफलम् (चौरदृष्टान्तः) | २५* | सावदभिर्यकस्मर्मागवायवर्जनम् | ३७* | पण्डितनाल्योः शिक्षायां गुरोः |
| | ५३ | ५७ | | | स्थितिः ६२ |
| १६* | आत्मपरदमनयोर्होतवः (सेचनक- | २६* | समतगायदौ श्रिया सह स्थानालाप- | ३८* | खड्गकादिभिः शासने पापदृष्टिवा- |
| | दृष्टान्तः) ५४ | | वर्जनम् | | मतिः । |
| १७* | आबी रहो वा वाक्कर्मभ्यां प्रलनीक- | २७* | शीतपरशेण शिक्षायां लामवुद्धिः | ३९* | शिक्षायां साम्यसाधुमतिः । |
| | सात्यागः (प्रतिरूपे) | | प्रतिशुविध्य । ५८ | | |

४०॥ छात्रायात्मनोऽस्मिन्मुपपाततोऽ-

गवेदितवर्जनं च । (अनन्याचार्य-

दृष्टान्तः) ६३

४१॥ छात्रावैश्वरे शिष्यविधिः ६४

४२॥ धान्वाद्यापरित्यागरोऽग्राहः ।

४३॥ आचार्यमनोऽयत्तस्योपपातनम् ।

४४॥ नोदनादनयोपधेयमिष्टकृत्स्नापि ।

६५

४५॥ विनयात्प्राप्तानां कृतम् ।

४६॥ विनयमसत्तात्पर्यवत्कृतम् ।

४७॥ पूज्यप्राप्तसौहृदं कृतम् ६६

४८॥ विनीतस्यैक्षिण्युत्तमिकं कृतम् ६७

(नयमानक्रियाविशेषविचारः) ७१

॥ इति विनयाध्यायनम् ॥ १ ॥

अथ परीपहाध्ययनम् ॥ २ ॥

६५-६७ परीपद्विधेयाः (१) व्यतिरिक्ते कर्म-

नोक्तमैवेदौ, कर्मण्यनुदयश्च, नोक्त-

मैवि मेदत्रयं, भावे कर्मोदयः ७३

६८ परीपद्याप्यवने कुतः फलस्योदीनि

१३ द्वाराणि

६९ कर्मप्रवादसूत्रवाऽप्यवतल ।

७० ऋजुसूत्राद्याः त्रिषु, संयवे शब्दः

परीपद्वनानी ७४

७१ नैममे मत्ताष्टकं, सवदे जीवनीजीवो,

व्यवहारे नोजीवः, (ज्ञेयानां जीवः

परीपद्वः ७५

प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धविशिष्टा ।

परीपद्वभाष गुरुप्रकृतयः

७४-७८ मेदं परीपहाण्यां कर्मण्यवतारः ७६

गुणस्थाने परीपदावतारः ।

७९ प्रयागमप्रहणामोजने, ऋजुसूत्राणां

प्राप्तुर्हेऽव्याप्तना ७७

८० क्षापय देतुः, द्वयोर्वेदना, ऋजो-

जीवः, ज्ञेयानामात्मा परीपद्वः ।

८१ युगपत्परीपद्वसंख्या ७८

८२ वर्षाणि त्रयाणां, ऋजोरन्तर्मुद्वर्त, द्वा-

व्यस्य समवे परीपद्वः ।

८३ कृष्णया वेदनाः 'सप्तवर्षसतीम् ।

(सन्ततकुमारदृष्टान्तः)

८४ चतुर्णां लोकसंस्कारयोः, ज्ञेयानामा-

त्मनि परीपद्वः ७९

८५ तरेऽप्यष्ट्यातिरेकाः ।

१२६. वदेषदृष्टानिर्देशः सूरसर्पने परी-

पद्याः (२२) (यकृता, युक्तुलवास-
नोदयेयतासिद्धिः) ८३

४९९ परीपदकयनप्रतिष्ठा।

५०-५१९ हुयापरीपदः,

८७-८८ परीपद (२३) दृष्टान्तसूपा। ८४

८९ हस्तिभूतिद्वलकदृष्टान्तः (१) ८६

५२-५३९० पिपासापरीपदः, धनकर्म-

दृष्टान्तः (२) ८८

५४-५५९१ नीतिपरीपदः । वैभारगिरि-

समीपवर्तिभद्रबाहुशिष्यचतुष्कदृष्टा-

न्तः (३) ८९

५६-५७९२ उष्णपरीपदः । अर्द्धमकदृष्टा-

न्तः । (४) ९१

५८-५९९३ दंशमशकपरीपदः । सुम-

नोमदृष्टान्तः (५) ९२

६०-६१९४-९७ खवेळरपरीपदः ।

(दियम्बरनिराकरणं) सोमदेवदृष्टा-

न्तः । (६) ९८

६२-६३९८-९९ अरविपरीपदः, तत्सह-

नोषावध, दुबराजमिन्द्रपुरोहित-

दृष्टान्तः (७) १०३

६४-६५९१००-१०५ क्षीपरीपदः । पाट-

लिपुत्रे स्थूलभद्रदृष्टान्तः (८) १०७

६६-६७९१०६ चर्यापरीपदः । सङ्ग्रयशि-

ष्यदृष्टदृष्टान्तः (९) १०८

६८-६९९१०७ नैषेधिक्षीपरीपदः । कुत-

दृष्टदृष्टान्तः । (१०) ११०

७०-७१९१०८-१०९ शय्यापरीपदः । सो-

मदचसोमदेवदृष्टान्तः । (११) १११

७२-७३९११० आक्रोशपरीपदः । अर्जुन-

मालाकारदृष्टान्तः (१२) ११४

७४-७५९१११-११३ वधपरीपदः, स्कन्द-

कृतच्छिद्यदृष्टान्तः (१३) ११६

७६-७७९११३॥ याच्यापरीपदः । घलदेव-

दृष्टान्तः (१४) ११७

७८-७९९११४ अलामपरीपदः । दुंदुण-

दृष्टान्तः (१५) ११९

८०-८१९११५ रोगपरीपदः । कालवेसिक-

दृष्टान्तः (१६) १२१

८२-८३९११६ रुणसर्पपरीपदः । भद्रकु-

मारदृष्टान्तः (१७) १२२

न्यादि-
अनु. आन.
ओप. दश.
पिण्ड. उच्च.
॥ १७० ॥

८४-८५३११७ नलस्पीपहः । सुतन्मशा-
चरदृष्टांतः (१८) १२४
८६-८७३११८ सत्तरसरिपहः, पुरोहित-
पादपिठकआवकदृष्टान्तः (१९)
१२६
८८-८९३११९ प्रज्ञापीपहः । कालकाच-
यैदृष्टान्तः (शक्रागमः) (२०) १२८
९०-९१३१२०-१२१ अज्ञानपीपहः । अ-
शक्रपिठदृष्टान्तः (२१) खलूम-
द्रनिमित्तूचनदृष्टान्तः (२१) १३१
९२-९३३१२२-१४० दर्शनपीपहः ।
(आत्मसंयमादिसिद्धि) आर्वापाठ-
दृष्टान्तः (२२) यथाकान्त-

कुलालवाक्यम् । गङ्गाव्यूहपाट-
लजनवाक्ये । दृग्योतलवापसवा-
क्यं । गृहीतदृष्टदशमोत्तरवाक्यानि ।
चंडीसितसर्पमधिवृक्षखाण्डे सकुनि-
वाक्यम् । रोधे माग्नवाक्यम् । रात्रि
चौरे नागरकवाक्यम् । पत्तपिठे पुत्रे
मातृषाक्यानि । सपयाचितच्छय-
लोपदेशः । सामरण्यसंयत्तार्वापाठ-
वाक्यानि १४०
अध्ययनोपसंहार १४०
॥ इति षटीपहाव्ययनं ॥ २ ॥
॥ अथ चतुर्द्वीपाध्ययनम् ॥ ३ ॥
१४१ एककनिक्षेपाः (७) १४१
१४२ चतुष्कनिक्षेपाः (७)

१४३-१५५ अहनिक्षेपाः (४) गन्धोपधमद्या-
वोद्यशपीयुद्धाह्नानि द्रव्ये । वदयन-
मभि वासवदवाकृतं गन्धाह्नम् । क-
ण्डूतिमिरादावौषधाह्नम् । १४३
मद्यावोद्यशरीराह्नानि । यानावरणश-
खदाक्षिष्यनीत्याद्या युद्धाह्नम् । भावाह्नं
द्विद्या, मुद्राह्नं द्वादशाह्नी, मातृप-
श्रुतिमद्यावीर्याणि नोदुवाह्नं १४४
१५६-१५७ शरीरसंयमयोरेकाधिकानि ।
१५८ नरत्वादिसंयमान्वाः (१२) दुर्लभाः
१४५
१५९ मातृष्यदुर्लभत्वे चोद्धादिदृष्टान्ताः
(१०) १५०
१६०-१६१ आलस्यायाः (१२) विज्ञाः १५१

उचराध्य
यने षरी-
पहाव्य-
चतुरंगी-
याध्य-

॥ १७० ॥

१६२-१६३ मिथ्यात्वाद्ब्रह्म, गुरुनियोगा-
नाभोगाभ्यां वाऽतएवब्रह्मा १५२

१६४ निहृदयचक्षुर्वाप्रविष्टा १५२

१६५-१६६ निहृदवटीनामाद्याः पुरुषाः (७)
१५३

१६७ जमातेरपिद्वारः (१) १५७

१६८ ब्रह्मप्रदेशजीववदितित्यगुतापि-
द्वारः (२) १६०

१६९ सन्न्यक्तवाधापादशिष्याधिकारः (३)
१६२

१७० सानुच्छेदयथमित्राधिकारः (४) १६५

१७१ द्वित्रियाऽऽर्जगह्नाधिकारः (५) १६८

१७२-१७४ पशुद्वैतैराशिकाधिकारः (६)
परिगतकविद्याब्रह्मविपश्चविद्याश्च
१७२

१७५-१७७ अपद्विकृतोद्यामाहिलाधिकारः ।

(७) अवद्वत्ताप्रतिपादनम् । अपरिमा-
न्यप्रत्याख्यानम् (१२ संभोगाः) १७८

१७८-१-२-४ दिगन्तराधिकारः (८) विग-
न्तरयततररूपरामूले १८१

१५-१६४ चतुर्द्वीदुर्लभता । नानाकर्मजना-
नाजातिषु भगवान्स्वदुर्लभता १८२

१७४ देवनराकासुरेषु भ्रमाश्च

१८४ क्षत्रियचाण्डालादिविषु भ्रमणादपि

१९-१०४ कर्मणोऽनिर्वेदः संसारजन्मश्च ।

१८३

१०१ लघुकर्मणः शुद्धस्त नस्तम् १८४

१०२ तपःशान्त्यादिसादृशय दुर्वेदुर्लभता

१०३ अवशेषेऽपि ॥॥ दुर्लभा १८५

१०४४ बुद्धिब्रह्मयोर्वीर्यस्य दुर्लभता ।

१०५४ लम्बचतुरङ्गस्य कर्मनाशः ।

१०६४ तस्यैव शुद्धिर्धर्मो निर्वाणं च १८६

१०७४ ऐदिकामुष्मिकफलैर्न शिष्योपदेशः ।

१०८-१०९ गुरुयमावै श्रेष्ठैवत्वम् १८७

११०-११२ ध्युतस्य दशाङ्गे कुले मानुष्यं,
दशाह्वानि च १८८

११३-११४ पुनर्मानुष्ये भोगाः बोधिः
संयमः सिद्धिश्च १८९

॥ इति चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥

॥ अथासंस्कृताध्ययनम् ॥

१७९ प्रमादाग्रमादयोर्निक्षिपचतुर्दशं १९०

भयादि-
अनु. जान.
ओप. दश.
पिण्ड. उत्त.
॥ १७१ ॥

- १८०-१८१ मयादाः प्रयादाः, प्रयादाप्रमा-
शमिपानवेदुता । १९१
१९५ जीवितेऽसंख्येऽप्येव च काः प्रयादाः ?
(अदृष्टान्तः) १९३
१८२ संख्येयान्तराः सत्त्वम् १९४
१८३-२०५ करणलक्षणाः (६) । इत्ये कटा-
निकरणं सङ्काशये । नोसङ्काशं
प्रयोगविधसाभेदी । अनाविज्ञादी वि-
धसाशये । पाशुपं विधसाकरणम् ।
प्रयोगे जीवाजीवो, जीवे मूले शरी-
राशेषादिति कर्मादृष्ट्यादीन् द्वयो-
पपत्तिगुद्विषयोरे, संपादयरीसा-
दोमयानि । (अरीरेषु संपादयरीसि-
पाः) पदादेः सङ्घातनागुचरत्-
त्वात् । अजीवमयाने वर्णादि । क्षेत्र-

- साधित्वेनेतुकरणादि, काष्ठकरणा-
नि ओर्ध्वेनकादल, ध्रुवकरणचतुष्कम्
(सिधिरुणानोपायः) वर्णादि-
नेर्ध्वेजीवमावहरणे (५), जीव-
मावहरणे ध्रुवमोक्षे, मुले च दद्या-
द्वदे निशीयानिशीये । नोक्षेते गुणे
तपःसंयमो, योगा योजनयासम् ।
कर्मणापुण्याभिविचारः । २०७
१९६ रापधना नरकगामिनः (चौर-
दान्ता) २०७
१९७ सन्धिसुखद्विवचरेण पामिनो न
मोक्षः (चौरदान्तः) २०९
१९८ कर्मफलं मन्त्रनामन्युता (आमी-
रीवचरवनिष्टान्तः) २११

- १९९ प्रणष्टगुदादीपवज्रयादौर्ध्वा, वि-
चेनागणं च (पुरोहितपुनष्टान्तः)
२०६-२०७ द्रव्यमावदीपो, आभासप्रकाश-
भेदी क्रमात् लयनासान्दनौ सन्धि-
वासमिवौ च (आनुवाविष्टान्तः)

२१३

- १२० बुद्धजीव्यानुप्रसस भारुद्धदमस-
धवा (अगद्वत्तष्टान्तः) २१७
१२१ पारमानी शङ्कमानाः लाभजीवो मु-
च्येते (सिष्टकचौरष्टान्तः) २२२
१२२-१२३ छन्दोनिरोधेनाममत्तस्य मोक्षः
(अष्टष्टान्तः) अनभ्यसे विषादः २२४
१२४ अनांस्तत्त्वा लोके संयमेय समवा-
दियुक्तसामप्रवत्ता (आसर्गोष्टान्तः,
वणिगमद्विष्टान्तवच्च) २२६

उत्तराध्य-
यने चतुरं-
गीयाध्य,
असंस्तु-
ताभ्य,

॥ १७१ ॥

१२५-१२७॥ मोहयुगे तु रागद्वेषागः क-
पायलागश्च । मृत्युं यावत्समष्टेपातुग-
मवतुयुक्ता २२८

॥ इत्यसंस्कृतावपयनम् ॥ ४ ॥

भाग २ ॥ अयानाममरणावपयनम् ॥

२०८ कामनिक्षेपाः (४) मरणनिक्षेपाः (६)
अभिप्रेतकामैः प्रकृतम् २२९

२०९ ब्रह्मभयमरणे, भावे ओपभवत्क-
विभाति या २३०

२१०-२११ मरणे विप्रत्ययतुसागप्रदेशात्मा-
दीनि (८) द्वाराणि

२१२-२१३ आवीच्यादिका मरणभेदाः (१७)

२३१

२१४-२२४ तामविभागकचनग्रथिता, आवी-
चेलेक्षणं मेदयच्चकं च । अवस्था-
त्यन्तिवृत्तमरणानि । अन्तःशून्य-
मरणं, तत्कले च । द्रव्यबाल-
ष्ठितमिच्छद्यस्यकेरुतिवैदायसगुम्भ-
पृष्ठमरणानि । २३५

२२५ भक्तपरितोद्धिनीपादपोषागमनानि

२३७

२२६ अनुभावेपूषकमेतौ, आयुःप्रदेशाश्च ।

२२७-२३० एकसमयमरणसंख्या (५), म-
वर्षके एकैकमरणसंख्या २३९

२३१-२३२ अन्त्यादिषु मरणेष्वन्त्यो भागः,

आयमनुसमं, प्रथममरणयोन्यन्त-

रम्, आद्यमनादि २४०

२३३ उपसंहार औदयपरिहारश्च ।

२३४ भक्तपरिहादीनां (३) श्रेयसा २४१

२३५ मनुष्यसकाममरणाभ्यामधिकारः

१२८॥ वार्येणैवे प्रश्नः

१२९॥ सकामाक्रामरणे । २४२

१३०॥ गलनानामकाममसंहर, पण्डितानां

सकामं संकृत् ।

१३१-१४४॥ कामपृष्ठकूरकृतनालिकैहिक-

कामासिद्धिपिण्डितपरलोको लोक-

दर्शी वसत्यावरहितको (पशुपालह-

द्यन्तः) मायी मुरासांसोत्ती गृहो

द्विधामलसंचयी आवृद्धे मीतः कर्मा-

नुमेक्षी प्रागटनरक्तानुमेक्षी पश्चात्ता-

पवान् भगवत्कटवत् प्रतिपन्नाधर्म-

नन्यादि-
अनु. आन.
ओघ. दल.
पिण्ड. उत्त.
॥ १७२ ॥

नोची कलितितृत्वं इव संवत्सो- १५७६
उद्यममरणान् २४८
१४५६ संकाममरणस्वरूपम् २४९
१४६६ सर्वभित्त्वगणितु घट्टावाः
१४७६ भिक्षुगणितोर्विपमशीलवा २५०
१४८६ सीपनितादीनामप्रकृतत्वात्
१४९६ दुग्धीलसुतवयोर्गती (इमकट्टान्ताः)
२५१
१५०-१५१६ सामायिकपौषधक्रियागतो दे-
'कल्पम् २५२
१५२६ साधोर्गोक्षेदेकत्वे ।
१५३-१५४६ आवासानां देवानां च स्वरूपं
१५५६ संयमतोभ्यां शान्तानां गतिः २५३
१५६६ शिवत्वां मरणोपवासः

१५७६ स्वायम्भुवशान्तिगोपिनां प्रसन्नता २५४
१५८-१५९६ मरणे रोमहर्षताः, त्रया-
णामन्तवन्मरणं सुतेः २५४
॥ इत्यक्षममरयाध्ययनम् ॥ ५ ॥
॥ अथ शुद्धकर्मिर्न्यायाध्ययनम् ॥
२३६ मरुच्छन्दनियोगः (८) २५५
२३७-२४३ कर्मन्वयनियोगः (४) तोलाग-
मसः (३) भावे (५) (पुटाकादि-
स्वरूपम्)

३-३-०+ पुलाकादिसरूपम् । संप्रमपुत-
प्रतिसेवनीति द्वाराणि । कट्ट-
ट्टाया निर्मन्थाः, प्रये वास्याध-
न्तौ, (१०) (१४) कर्मन्वयन-
१५७६ नरकहेतुर्भवादिः, इवाशनम् २६६
१६८६ निष्क्रिया ज्ञानवातिनः
१६९६ वागीशोक्ते २६७
१७०६ मायाविषये पापकर्मणो न द्राणम् ।
१७१६ ऊपीरादौ सच्छिदुःखं २६८

ब्रह्मन्वयमेधाः, निर्मन्वयस्वरूपं च । २६२
१६०६ दुःखहेतुविद्यामन्तः संसारं छिद्य-
न्ते । (कुम्भप्राद्विगोषकट्टान्ताः)
१६१६ सत्त्वैरी मैत्रीवाद् भूयात् ।
१६२-१६३६ मात्रादीनामत्राद्वत्वाद्द्विप्रे-
हयोऽष्टेदः २६५
१६४६ गवादिस्वामितः कामरूपिवा ।
१६५-१६६६ सावरोदेदुःखामोक्षः, प्रिया-
गुणे न इत्याद्

१६७६ नरकहेतुर्भवादिः, इवाशनम् २६६
१६८६ निष्क्रिया ज्ञानवातिनः
१६९६ वागीशोक्ते २६७
१७०६ मायाविषये पापकर्मणो न द्राणम् ।
१७१६ ऊपीरादौ सच्छिदुःखं २६८

१७२४ संतारान्नं दद्यात्प्रमथः स्यात् ।

१७२५ मोक्षार्थं देहशुद्धिः ।

१७४४ कर्गद्विज्यागी नयाष्टदपिदशान-

मोक्षा २६९

१७५४ टेषसमिप्योस्ताः

१७६४ अनियतद्विपु सिग्नेषी २७०

१७७४ पैतालिकाव्यावत्यमध्ययनसः ।

॥ इति धुलुहनिर्गन्यायाध्ययनम् ॥६॥

॥ अथ औरात्रिकाध्ययनम् ॥

२४४४-२४६६ ऋतुनिर्देशः (४) द्रव्ये द्वी,

नोभागमे प्रिया । न्यतिरिक्ते एक-

मधिकवद्युष्मभिमुत्तमगोत्राः,

भाबोरभः वदुत्थितं चाध्ययनम् २७१

२४७७-२४८८ ऋतुआदिद्वान्तपचकम्पचा ।

२४८८ आरम्भरसगृहद्विर्ग्यविप्रहायैरुपमा

२७२

१७८४ आदेशाधर्मिकपोष्णम् (ऊरभ्र-

द्वान्तः) २७३

२४९९ आतुरदीर्घायुषो लक्षणम् ।

१७९९-१८०४ पुष्टे आदेशाकाङ्क्षा । आदेशा-

गमे वयः २७४

१८१४ आदेशार्थ्यव्रतवधर्मा निरयेयी ।

१८२-१८६४ हिंसाया नरकहेतवः । आस-

नादि घनं च रजोहेतु, तादात्मिकस्य

भरणे शोकः २७५

१८७४ हिंसकानां नरकगमिता २७६

१८८४ कश्चिन्मयात्राभ्यां सदस्यकार्योपणर-

अव्युत्तिः (द्रव्यकरणद्वान्तो)

२७७

१८९४ मनुष्यकामाद्युषो विवि सदस्यगुणा

१९०४ मनुष्यकामाः प्राक्तन्याप्रोपमाः

२७८

१९१-१९२४ वणिक्त्रयोपमा (वणिक्-

पुत्रत्रयद्वान्तः) २७९

१९३४ मानुष्यं देवत्वं नरकतिर्यक्त्वे मूलं

लाभो मूलच्छेदश्च (सत्त्वत्रय-

द्वान्तः)

१९४४ नरकतिर्यक्त्वे ओष्ठपशठवालसः ।

२८०

१९५४ चिरादुर्धमेनमत्वाऽस्य ।

१९६-१९७४ मानुष्ये मूलत्वम् । शिक्षा-

सुप्रता नरराक्षिः ।

१९८५ सविशेषाद्विज्ञा अदीना देव-

विज्ञा: २८२

१९९५ परजगदानं किं न ? २८३

२००५ इशानसमुद्रोदकप्रदेशदेवोः क्षमाः ।

२०१५ अहो आधुरि योगहेमं किं न वि-

न्यात् २८४

२०२५-२०४५ क्षमाऽनिरूप्यो मार्गभेदी ।

क्षमानिरूप्यो देवगतिः, ध्युतोऽसि

ऋद्धिपुलादिमान् २८५

२०५५-२०७५ बालधरयोः स्वरूपं तुलना

गवित्र

॥ इत्यौत्रिकाध्ययनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ कापिलियाध्ययनम् ॥

२५०-२५२ कपिलनिषेधाः (४) द्रव्ये

द्विषा, नोआगमे त्रिषा, व्यतिरिक्ते

एकमविद्यादि (३) भावकपिटादध्य-

वगोत्यानम् २८६

२५३-२५९ कमिच्छतिवम् (कपिलकथा)

२८९

२०८५ अद्यैव संसारे दुर्गतिरोपकं किं २९०

२०९५ अजेदल दोषदग्मुक्तिः

२१०५ प्राप्तमानस चौरमोघार्थमुपदेशः २९१

२११५ अन्यच्छ्रुत्यागी अठेषकः ।

२१२५ येनैव मक्षिकवद्भोगद्वयास्य दन्वः

२९२

२१३५ वणिजानपरतएवत्तायोः काम-

लाभः

२१४५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२९३

२१५५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२१६५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२१७५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२१८५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२१९५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२०५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२१५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२२५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२३५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२४५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२९५

२२५५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२६५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२७५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

२२८५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

विज्ञा: २९६

२२९५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

आत्मा २९७

२३०५ अर्द्धहिंसासाधवो नरकगामिनः ।

दिलोमनत् ।

२२५* खीपु न गृह्येत, प्रलोभ्य दासवस्त्री-
दन्ति ताः ।

२२६* खीलाणी धर्मस्यो भिक्षुः २९८

२२७* क्षुण्डान्ययनक्रियाकलम् ।

॥ इति कामिलियाध्ययनम् ॥ ८ ॥

॥ अथ नमिप्रव्याध्ययनम् ॥

२२८-२६३ नमिसिद्धेयाः (४) प्रव्या-

निक्षेपाः (४) ब्रह्मेज्यतीर्थिकी,

भादे आरम्भपरिमहत्यागः २९९

२६४-२७९ प्रलोकबुद्धास्तद्देशास्तद्विधि-

तवश्च । नमिवृत्तान्तसूचा । सम्-

समयं च्यवनं सिद्धिश्च प्रलोकबुद्धा-

नाम् । वृषभान्तलिङ्गराजबोधः ।

इन्दुर्येगोः पञ्चालराजस्यामित्यता-

विवाहः । बल्यशब्देभ्यो नमोः । चू-

साग्रान्धारस्य । त्यागिनः कः सञ्चयः ?

किं परकृत्यभूतिः ? किं गर्हो ? अहित-

वारणेऽप्युदेति । (प्रलोकबुद्ध(४)-

कथा) ३०६

२२८-२२९, नमैश्वर्यवनं जातिरमृतिः पुत्र-

भूमिपिच्य दीक्षा ।

२३०-२३१, सुफलोत्पत्त्ये ल्यागः, राष्ट्र-

लवरोपगमिजनत्यागश्च ३०७

२३२, श्रमजति नगर्वा कोलाहलः ।

२३३-२३४, माहन्तरूपेण शक्रागमनं, नग-

रीकोलाहलप्रासादग्रहदाहणशान्देह-

पृच्छा । ३०८

२३५-२३७, हेतुकारणचोदितनमिवाक्यं,

वाताद्वियमागमन्ये घने सागाकन्दैः

समाधानम् । ३०९

२३८-२३९, दहमानभान्दिनान्तःपुरोपेक्षा-

प्रश्नः । ३१०

२४०-२४१, अकिञ्चनत्वं नगरीदाहे न बाहः

२४२-२४३, अपुत्रकलन्व्यापारस्य न प्रिया-

प्रिये, एकत्वानुदर्शिनो भद्रं च

२४४-२४५, प्राकारगोपुरादिकरणानन्तरं

प्रजेतीन्द्रवाक्यम् ३११

२४६-२४९, श्रद्धातपःक्षान्त्यार्देनगर्भलम्पान-

कारादित्वं कृत्वा मुक्तिरिति नमिः ।

३१२

२५०-२५१, प्रासादादि कृत्या प्रजेतीन्द्रः ।

नन्वादि-
यत्तु, आप,
ओष, ददा,
पिण्ड, उच,
॥ १७४ ॥

२५२-२५३* साधवत्यानतिमिषा ।

२५४-२५५* सगर्ह्यं युत्वा व्रजेतीन्द्रः ।

३१३

२५६-२५७* सर्वकारिषु दण्डादण्डैः ।

२५८-२५९* अतन्नायिर्वचसोकारः (इन्द्रः)

२६०-२६३* दण्डसुतपादस्मजया, नि-

वात्मनः सुरानिन्द्रियज्याययम्

(नमिः) । ३१४

२६४-२६५* यदाद्विजमोजमानन्तः प्रज इन्द्रः ।

२६६-२६७* दण्डसुतोरातात् श्रेयः संवत्सः

(नमिः) ३१५

२६८-२६९* पौराप्रमे पौपयिको भवः (इन्द्रः)

२७०-२७१* कुर्वाप्रमेजी न धर्मादार्हः

नमिः । ३१६

२७२-२७३* दिरण्णि यदंश (इन्द्रः)

२७४-२७६* सुवर्णोविपर्वतः शुविन्वादि-

मिष्य नैकस सन्तोषः (नमिः) ३१७

२७७-२७८* दृष्टयोपलातोऽन्यमोयप्रार्थ-

ना (इन्द्रः) ।

२७९-२८१* मृत्युविपस्योपमकामार्थिनां

नरकः, क्रोधादेरैरकलादिः (नमिः)

३१८

२८२-२८४* इन्द्रस्वरूपदशोऽजोयादिना

नमिस्तुतिः ३१९

२८५-२८७* अत्रासुतोसप्ततया सिद्धिम-

नेत य सुविः प्रदक्षिणश्च, वन्दित्वा

सर्वमथ ।

२८८-२८९* नमेरुकर्णः, भोगनिष्ठोत्त-

ष्टान्तभूता ३२०

॥ इति नमिप्रव्रज्याध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥ अथ दुमपत्रकाध्ययनम् ॥

२८०-२८३ दुमनिक्षेपः (४)ऽऽदिः, यथा

स्थितुषुप्रक्रमाभ्यां पत्रौपम्यं ३२१

२८४-३०६ द्वाडमहाडागानिदिदीक्षा,

क्षष्टापदविमानन्तुश्चरमसरीरका,

वर्षाज्जिवैधमणस्याप्रे पुण्डरीकाध्या-

चनक्यनं, कौण्डिन्यादीनां दीक्षा-

कैवल्ये, त्रिसंस्तुष्टादिः, गौतमनि-

त्ता शिष्योपदेशश्च ३३३

२९०* पाण्डुरपत्रपत्राणां जीवितम् ३३४

३०७-३०९ पक्षत्रक्षिरयत्रोद्वापाः (क-

स्तित्वाः)

उत्तराध्य-
यने नमिप्र-
व्रज्याध्य-
दुमपत्रा-
यं च,

॥ १७४ ॥

२९१९॥ सुशान्तिर्विन्दुवन्नरजीवितं स्तोत्रम् ।

३३५

२९२॥ हररं बहुविधं चासिन्नुक्तमनाशोपदेनाः

२९३॥ मानुषं दुर्लभं गदाश्च विषाकाः ।

२९४-३०१॥ पृथिव्यतेजोवायुवनस्पतिदि-

त्रिचतुष्टयैन्द्रियदेवनारककाय-

सिद्धिः ३३६

३०४॥ प्रमादबहुलस्य संसारभ्रमणम् ।

३०५-१०९॥ जायतेवाहीनपथेन्द्रियतोच-

मधर्मैश्चुष्टिभ्रष्टास्पर्शनानां दुर्लभवा ।

३३८

३१०-३१५॥ श्रोत्रघुमांजरसनरक्षणसर्व-

वलयानां हीनता ।

३१६॥ अरतिगण्डादिभिः शरीरपातः ।

३१७॥ व्यसिष्यस्य शारदसुदबलवत्प्रस-

न्ता । ३३९

३१८॥ बान्त्वानाश्री

३१९॥ द्वितीयमित्राद्यवेषणम् ।

३२०॥ शिनादशनेऽपि भद्रा । ३४०

३२१॥ निष्कण्टको महालयो मोक्षगन्धा ।

३२२॥ विषयमागोवागहे यस्मात्तापः ।

३२३॥ सीरुगतः पापाय त्वरस्य ३४१

३२४॥ क्षेमशिवातुत्तरां सिद्धिं गच्छ ।

३२५॥ उपदेशसर्वलम् ।

३२६॥ रागद्वेषच्छेदः सिद्धिगतिश्च गौतमस्य ।

॥ इति दुष्मन्त्रकाध्ययनम् १० ॥

॥ अथ बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ॥

३१०-३१२ बहुश्रुतपूजाशब्दानां निरूपणः (४)

द्रव्ये जीवपुद्गलाः भावे चतुर्दश पूर्वोक्ति

शास्त्रिके केवलं षडु, द्रव्ये योगद्वका-

द्विपुलकादि भावे सम्यग्भिषया-

श्रुते ३४३

३१३-३१४ शुद्धकर्मसम्यग्दष्टेः सच्छ्रुतं,

कर्मादानकृतमिध्यादष्टेरस्त

३१५-३१७॥ ईश्वरशिवादेर्द्रव्यपूजा, नि-

नादेर्भावपूजा, चतुर्दशपूर्वोक्तोऽपि

३४४

३२७॥ संयोगमुक्ताचारकथनप्रतिज्ञा ।

३२८॥ स्वव्यवस्थानिमग्नमलाप्यविनीतोऽन-

हुश्रुतः ।

३२९-३३१॥ अशिक्षाहेतवः साम्बाद्याः

(५) अथः श्रिताद्यास्तु शिक्षाहेतवः

(८) ३४५

नद्यादि-
अनु. आब.
ओष. दश.
पिण्ड. उत्त.
॥ १७५ ॥

३३२-३३९॥ अर्भाक्ष्यं क्रोयप्रवन्धावौ (१४)-
रविनीतः, मोचैर्दृष्टावौ (१५) वि-
नीतः ३४७
३४०॥ गुरुलुगवासियोगोपयानादिमतः क्षि-
प्रार्हत्तम् ३४८
३४१॥ दत्तनयोवदुहुते धर्मकीर्तौ ।
३४२-३५६॥ क्षम्वोजान्धावारुदभूरपट्टि-
हायनकुचरूपैरुदृष्टमसिंहवासुदेव-
चम्रवर्त्तान्द्रियाकरचक्रकोटप्रार-
जान्वृक्षीतामन्दरतपम्भूरमेरुवप्रा-
वहसुलस ३५३
३५४॥ गम्भीरुद्वयपर्यताचिनः सिद्धि ।
३५८॥ दृताभिप्रेत आत्मपरस्परकः ।
॥ इति बहुश्रुतपञ्चाध्ययनम् ११ ॥

॥ अथ हरिकेशाध्यायनम् ॥
३१९-३२० हरिकेशनिक्षेपा (४)ऽऽदिः ३५४
३२१-३२७ हरिकेशपूर्वमयमवः श्राविहर्ष-
मीक्षिता दीक्षा हरिकेशैर्कार्यजानि ।
जन्म क्षपिचान्ता सुमद्रा, वल्लुट्टे वल-
कोटस गौरीगान्धार्यो, सविपेतरसर्पौ,
सयोर्वेषमुच्छी, भद्रकृतोपदेशः । अत्र
छात्रादिकथायदुमुनिद्वयो जनः ॥ ३५७
३५९-३६१॥ भृषाककुलो गुणी हरिकेशः,
पञ्चसमिताक्षिगुणो यक्षपटमागतः ।
३६२-३६४॥ वपःकृतं श्रान्तोपयिमतार्यो
जातिमद्विसेन्द्रियभ्रमरवा कर्षेता-
नवकादिभिरुपहसन्ति । ३५९
३६५॥ प्राप्ते सिन्दित्वा गमनप्रेरणा ।

३६६-३६८॥ क्षरिर् प्रच्छाद्य तिनदुकयक्ष्यां-
कयं, साधुगुणकयनं मिक्षायाच्या ।
३६९
३६९॥ द्विजार्थमेतच्चद्वृच्छ (छात्राः) ३६१
३७०॥ सत्यनिम्नयायेन वेदि (यक्षः)
३७१॥ जातिविद्योपपेता द्विजाः क्षेत्रम् ।
(छात्राः) ३६२
३७२-३७३॥ जातिविद्याविहीनाः क्रोधादि-
मन्तः पापस्य क्षेत्रं, निक्षारयोर्वन्तः
पुण्यस्य (यक्षः) ३६३
३७४॥ क्षम्वतनीकाय न दक्षोऽजपानम् (छात्राः)
३७५॥ समतिसमाधिगुप्तिमतेऽदने . यक्ष-
जम्भो न (यक्षः)

उत्तराध्या-
यने दुमपत्र-
बहुश्रुत
हरिकेशी-
यानि.

॥ १७५ ॥

३७६-३७७॥ इण्डकटादिभिश्छात्रादीनां व-

धायाऽऽदेशोऽव्यापकस्य, छात्रासाह-
यन्ति प्रापिम् । ३६४

३७८-३८१॥ अनिन्दितान्नी भद्रा प्रकः कुम्भा-
रान् साग्नयति ऋषिं च हौति । ३६५

३८२-३८९॥ असुरकृतं वाहयाम्, भद्राच्छो-
पाळम्भः शरणगतिशिक्षा च । छात्रा-

वत्या, समार्याव्यापकृता धामण्या
प्रसादनं च ३६८

३९०॥ यक्षकृतमेतदिति मुनिः ।

३९१-३९४॥ शरणगतिः, अर्चनं, भक्त-
नामुक्ता, विज्ञप्तिर्दीप्तं दिव्यपञ्चकं च ।

३६९

३९५॥ विसितद्विजकृता वपःप्रशंसा । ३७० । ४०६॥ कृतनिदानब्रह्मदत्तजन्य

३९६-३९७॥ ज्योतिषरम्भबालमुद्धी न कु-

शल्लष्टे, कुशादयः पापक्रियाः ।

३९८-४००॥ प्रवृत्तिपागकर्मक्षयप्रश्नः, वधा-
दिविरतसंवृतादियज्ञयाजी । ३७२

४०१-४०२॥ ज्योतिस्तत्त्वानसुबादिप्रश्ने
तपसादीनां ज्योतिरावित्ता

४०३-४०५॥ इदृतीयादिप्रश्ने घर्मादीनां दृ-
वत्वादि । ३७४

॥ इति हरिकेशीयाध्ययनम् ॥ १२॥

॥ अथ चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ॥

३२८-३३३ चित्रसंभूतयोर्निषेधा (४)-
ऽऽदिः, चित्रसंभूतयोः पूर्वमवाः ।

(कथा संस्कृतेजः)

३७६

३३४-३५२ ब्रह्मक्षत्रपर्यादिण्डी । कन्यात-

स्त्रिणादयः । भ्रमणस्थानानि । ३८२
४०७॥ चित्रः पुरिमताले श्रेष्ठी प्रप्रजितव्य ।

४०८॥ काम्पित्ये समागतः, मिथो वार्ता च ।
पुरोज्ञातीनां प्रकाशः ऋद्धिदाना-

दव्य । ३८३

४०९-४१२॥ अन्योऽन्यसुगानुरक्तौ आवा-
भात्रौ दासा इत्यादि ब्रह्मवाक्यम् ।

४१३॥ त्वन्निदानाद्विपोगः । (मुनिः) । ३८४

४१४॥ सत्यसौचफलम् (ब्रह्म)

४१५-४१७॥ स्वबाह्यान्तःसमृद्धिवर्णना ३८५

४१८-४१९॥ प्रासादवित्तभूत्याद्यैर्मिस्रणम् ।

३८६

४२०-४२२॥ गीतचलाभरणकामानामशु-

न्या दे-

जु. आर.

ओप. दरा.

पिण्ड. उवा.

॥ १७६ ॥

मतां वित्तो सुगं च चित्रराजाय

शानिः ३८७

४२३-४२५५ पूर्वमन्त्रं दिष्टं मोक्षदेवतौ-

धोपदेवाः ३८८

४२६५ मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४२७-४२८५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

पाशराजम् ३८९

४२९-४३०५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४३१५ नरा पर्वतारोही, मा कर्म कार्पाः

(गुणिः) ३९०

४३२५ भोगाः सप्तदशः ।

४३३-४३५५ मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

गमूः, पद्मप्रमाणमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

मर्षः ३९१

४३६-४३८५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४३९-४४०५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४१-४४२५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४३-४४४५ चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४३६-४३७५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

भोगा अनित्याः, त्यागेऽप्यकोऽपि

पर्मस्त्वितो भारी देवस्तम् ३९२

४३८५ आत्मपरिमहस्रुत्तवं गच्छान्य-

इम् । (गुणिः)

४३९५ मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४०-४४१५ मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

भगवद्भवाः) ३९३

४४०५ चित्रराज मुक्तिः ।

॥ इति चित्रराजमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ॥

॥ नव द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ॥

३५९-३७२ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

पूर्वमन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४१-४४२५ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४३-४४४५ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४५-४४६५ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४७-४४८५ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४९-४५०५ द्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४४-४४५५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४४६-४४७५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

राष्ट्रराजम् ३९८

४४८-४४९५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ३९९

४५०-४५१५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

यमूलाः, अनपेक्षितो मृत्युः ।

(कमरौ) ४०१

४५६५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४५७५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४५८५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४५९-४६०५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४६१-४६२५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४६३-४६४५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४६५-४६६५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४६७-४६८५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४६९-४७०५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

४७१-४७२५ क्षीणफलद्रुमपश्चिन्मन्त्राग्नेर्जीविने पुण्याश्रितः नोपतिः ।

उत्तराध्य-

यने चित्र-

संमृति येनु-

कारिये,

॥ १७३ ॥

४६२॥ व्याधवागुराप्रहरणप्रश्नाः । (सि०)

४६३-४६५॥ मृदुजरात्रयः, ताः घर्म्यव-

र्भिणोः सफटाः अरुण्य (कु०) ४०४

४६६॥ पश्चाद् दास्यामः (सि०)

४६७-४६८॥ मृदुसख्यपलायनाभावाद्धर्मं

त्तरा । (कु०) ४०५

४६९-४७०॥ पुनस्तप्तसाशोभनता (पुरो-

दितः) ।

४७१॥ मुक्तमौली गमिष्यावः । (पु० पत्नी)

४०६

४७२॥ लमलाभालामसुखदुःखो गौनीभवि-

ष्यामि । (पु०)

४७३॥ भिक्षावर्षा दुःखं, मुहुय भोगान् ।

(पु. पत्नी) ४०७

४७४-४७५॥ पुनौ विरक्तौ, धीराणा आम-
ब्धम् । (पु०)

४७६॥ पतिपुत्रासुरणाऽनुमतिः (पु० पत्नी)

४०८

४७७-४८०॥ सद्धन्माहिणे राक्षे राज्ञोशिक्षा,

मा वान्वासौ भव, न ते दुष्टिञ्चलाः

कामा धर्मस्त्राणम् । ४०९

४८१-४८८॥ राक्ष्या वैराग्यम् । ४११

४८९-४९३॥ राजराक्ष्योर्दक्षिा, मोक्षश्च स-

र्वेणम् । ४१२

॥ इतीपुकारीषाध्ययनम् १४॥

॥ अथ सभिदुक्काध्ययनम् ॥

३७३-३७८ भिदुक्निक्षेपा(४)दिः । द्रव्यमा-

वमेचमेदेभेत्तव्यानि । राणाभिदुक्के-

दकाः सिद्ध्यन्ति । ४१३

४९४-५०९॥ मौनचरणदि-रागोपलम्भादि-

आक्रोशवधसहनादि-मान्दशयनास-

नादि-सत्त्वरातीहादि-मोहनिरासादि-

स्वरसौमादिवर्जन-मन्त्रमूलादिवर्जन-

क्षत्रियश्लोकादिवर्जन-सत्त्वबलाग-

बद्धत्वाग-शुद्धमास धूमपरिहार-नि-

र्मेय दृढसम्यक्त्वाशिल्यजीवनाविगु-

णोपेतो भिक्षुः । ४२०

॥ इति सभिदुक्काध्ययनम् १५ ॥

॥ अथ ब्रह्मचर्यसमाध्ययनम् ॥

३७९ एककनिक्षेपाः (७) । ४२१

३८० दशकनिक्षेपाः (६) दशप्रदेशिकः,

जवराहनस्थितोश्च, जीवाजीवपर्या-

याश्च ।

अनु. आ.प.
प्रोप. दश.
मिष्ट. उत्त.

॥ १७७ ॥

३८१-३८२ प्रकृतिश्रेयाः (४) सापत्न्यां १०

माद्यनोत्पत्तिः, द्रव्येच्छास्य, भावे ११
साधोः, रक्षादे स्थानान्यस्य । १२

३८३ चरणनिश्रेयाः (६), द्रव्ये गद्विमकुले । ११०-५१९३ इत्यन्त्यात्स्येराः । ४२९

३८४ समापिनिश्रेयाः (४) ४२२

३८५ साननिश्रेयाः (१४)

२५६ समापितानोदेराः । ४२३

३ इच्छा, द्यौपपुण्ड्रसंसिद्धयनादि-

सेवनं, विपर्यये दोषाः ४२४

४ पूर्ववत्प्राप्यपञ्चनम् ।

५ पूर्ववत्स्त्रीनियमावर्जनम् ।

६ पूर्ववत्निद्राप्रलोपयनेनम् । ४२५

७ गुह्याग्रान्तापूजितादिप्रवर्जनम् ।

८ पूर्ववत्तर्मादिपञ्चनम् ४२६

९ द्रव्यविदादपरजनम् ।

अतिभोजनवर्जनम् ।

विमूषालापाः । ४२७

१२ शब्दाद्यननुयातिता ।

५१०-५१९३ इत्यन्त्यात्स्येराः । ४२९

५२०-५२२३ सौसंसिद्धयनादीनां चाल-

पुटोपमत्वम् । ४२९

५२३-५२४३ दत्तकामादिः धर्मोत्तमादिरतः

स्तात् । ४३०

५२५-५२६३ अष्टवर्षमादिमा ।

॥ इति ब्रह्मचर्यसमाध्यव्ययनम् १६ ॥

॥ अथ पापश्रमणाध्ययनम् ॥

३८६-३८७ पापनिश्रेयाः (६) । होमे नरकः,

कालेऽतिदुःखमा ।

३८८ श्रमणनिश्रेयाः (४) । सानसंयमयुतो

भावे । ४३२

३८९-३९० अकारणीयसेवी पापश्रमणस्तद्व-

र्जको मुक्तिगामी ।

५२७-५२९३ प्रब्रज्य श्रव्यादिरतः सुत-

शीलः पापश्रमणः ।

५३०-५४५३ आचार्यनिन्दकाऽतर्पकप्राजा-

दिर्मर्देकप्रमाजितसंस्ताराधारोद्भू-

दुतचारिप्रतिहेतुना प्रमत्तगुरुपरिभा-

वकबहुमायिविवादोदीरकास्त्रिप्राप्तन-

सरअरक्तयनविद्वतिभोजनयावत्सू-

र्यभोजनार्थवत्यामपरोद्भवापाच्छु-

म्नपिच्छाः पापश्रमणाः । ४३६

५४६-५४७३ पापश्रमणता तद्वर्जने च फलं ।

४३७

॥ इति पापश्रमणाध्ययनम् १७ ॥

॥ १७७ ॥

॥ अथ संजयतीयाध्ययनम् ॥

३९१-३९३ संजयनिक्षेपा(४)दिः ।

५४८-५५० ह्यादियुवः मृगायानिर्गतः

संजयः । ४३८

३९४-३९५ मृगायानिर्गमः ।

५५१-५५२ कैशरोद्याने साधोः पार्थे मृग-

गतिः । ४३९

३९६ अण्णैवमण्डपे गर्धभालेर्यानम् । ४३९

५५३-५५४ ३९७-४०० सायुदर्शनं मन्द-

पुण्यतैक्षणं क्षामणा साधुर्मानं नृप-

भयं च । पूर्ववत् ।

५५८-५६४ अभयदो भव, गन्ता लागी,

चञ्चलायुः प्रेत्यार्यी, स्वार्थकुटुम्बी

तपस्वी परकार्यकर्मेष्टी । ४४१

५६५-५६६ ४०१-४०३ संजयदीक्षा गा-

यानवच्छनुवादः । ४४२

५६७-५६८ सजयं प्रति त्यागरूपनामगो-

त्रादिप्रसक्तदुत्तरं च । ४४३

५७०-५७८ क्रियावाद्याद्याः (४), बुद्ध-

प्रादुर्भूता एते, फलं चैवाम् । तेषां

मायाविता । तद्विषयं स्वज्ञानं ब्रह्मलो-

कचयकनं, नानाविचिर्जनं प्रभवर्जनं

च । ४४६

५७९ ५८० तद्वज्ञानं जितहासत्वं क्रियाऽकि-

ययोर्ग्राहणवर्जने । ४४७

५८१-५९५ भरतसगरमघवत्सनरकुमार-

शान्तिकुन्दरमहापद्महरिषेणजयद-

क्षणमद्रप्रत्येकबुद्धो (४) दायनश्चेत-

चित्तयमहाबलानां त्यागमोक्षौ । ४४९

५९८-६०० इहपरराक्रमोपदेशः, संसार-

तरणं सिद्धिश्च । ४५०

४०४ संजयसिद्धिः ।

॥ इति संजयतीयाध्ययनम् १८ ॥

॥ अथ मृगायुत्रीयाध्ययनम् ॥

४०५-४०८ मृगायुत्रनिक्षेपा(४)दिः । ४५१

६०१-६०४ सुग्रीयाधिपदलभद्रमृगायुत्रय-

लक्ष्मीः (मृगायुत्रः) देशुन्दुक इय क्रीडत्

नगरालोक्षी ।

६०५-६०८ ४०९-४१५ सायुदर्शनाज्जाति-

स्मृतिः । पूर्वोक्तानुवादः । ४५२

६०९-६१० ४१६ विरक्तः प्रव्रज्याकामः

पितरनुवाच । तदेव । ४५३

न्यादि-

अनु, आर,

ओप, दस,

पिपु, उत्त,

॥ १७८ ॥

६११-६२३५ भोग विपश्चिन्मरुदविषाकाः ४२१ वेदेव ।

नरीरानितलदायाप्रानमसारे व्या-

धियोगागळे नररोऽरिर्जन्मावि

दुःसंक्षेपनोर्वियोगः यमुदरा भोग

अपायेदादवीगमनवत्तरीमहदसल-

यसंसारः । ४५५

६२४-६४३५ साधुधर्मदुष्करता । ४५७

६४४-६५४५ नरदुःखवर्गनम् । ४६१

६५५५ निपसिर्जनं (आमये) ४६२

६५६-६८३५ अरण्यमृगयर्वा । ४६३

६८४-६८७५ मृगानुदशीया ।

४१५-४२० वेदेय ४६४

६८८-६९३५ मृगानुमानारवर्गनम् । ४६५

६९४-६९५५ मृगानुसिद्धिः ।

६९६-६९८५ उपसंहारः ४६५

॥ इति मृगाधुनीवाधयनम् १९ ॥

॥ अथ महानिर्जन्मीयाधयनम् ॥

४२२-४२४ सुहृदप्रतिपक्षमहानिर्जोषादि ।

४६६

४२५-४२८ पञ्च निर्गन्धाः प्रजापतादि (३७)

द्वाराणि । उपसंहारः । ४७१

६९९ मद्दलं कृता निद्राप्रसिद्धा । ४७२

७००-७०६५ श्रेणिकुठ्ठा संनयप्रसंसा दु-

च्छा प ४७३

७०७५ अनायत्नं मुनित्वे हेतुः ।

७०८-७०९५ नायभवत् ।

७१०-७११५ अनायः कयं नायः ।

७१२-७१३५ अथ हस्त्यादिभिर्नायत्वम् ।

४७४

७१४-७३३५ अनायत्वत्वरूपे स्वध्वंशम् ।

४७६

७३४-७३५५ आत्सतो वैतरण्यादित्वम् ।

४७७

७३६-७४८५ आमयेऽपि कुमार्गसंभवाद-

नायता । ४८०

७४९-७५१५ कुसीललागिनो मार्गेण मोक्षः ।

७५२-७५८५ श्रेणिकुट्टिः क्षामणोपसंहा-

रय । ४८१

॥ इति महानिर्जन्मीयाधयनम् ॥ २० ॥

॥ अथ समुद्रपार्त्तियाधयनम् ॥

४२९-४३० समुद्रपाण्ड्योर्निर्जोषा (४) दिग् ४८२

उपराध-

यनेसंजतीय

मृगाधुन

महानिर्ज-

न्मीयानि,

॥ १७८ ॥

७१९-७६८ समुद्रपालजन्मविषादव्यवर्त्तन-
संवेगगाविरुद्धा दीक्षा च ।

४३१-४४१ तदेव सविशेषम् ४८४

७६९-७८१ समुद्रपालागारवर्णनम् । ४८७

७८२५ समुद्रपालसिद्धिः ।

४४२ तदेव । ४८८

॥ इति ममुद्रपालीयाध्य० ॥२०॥

॥ अयं रयनेमीयाध्ययनम् ॥

४४३-४४५ रवनेमिनिधेपादिः ४८८

७८३-७९९ गद्वर्त्ता नेनेरुद्रादमहोत्सवाः,

मृगरोचनभञ्ज । सारथेरुत्तरम् ४९९

८००-८०६५ नेनेदीक्षा ४९२

८०७-८०९५ वासुदेवादिकृता नेमिसुखिः

८१०-८१२५ राजीमतीदीक्षा । वासुदेवा-

शीर्षादिः । ४९३

८१४-८३०५४४६-४५० गुहायां रयने-

मित्रा समागमः, भोगप्रार्थना,

राजीमत्या निखलता वषट्शुभम् । रय-

नेमेयार्गप्रतिपत्तिः । (नूपुरण्डिता-

रुपात्मम्) द्वयोर्मोक्षः । तदेव सवि-

शेषम् । ४९७

८३१५ वषट्स्वरः ।

॥ इति रयनेमीयाध्ययनम् २२ ॥

॥ अयं केशिगौतमीयाध्ययनम् ॥

४५१-४५४ गौतमविशेषादिः (केशिनोऽपि)

४९८

८३२५ श्रीपार्श्ववर्णनम् ।

८३३-८३५ सुविहितकेशिनस्त्रिन्दुके आ-

गतम् ।

८३६-८३९५ श्रीगौतमस्यगमनं कोष्ठके ।

४९९

८४०-८४४५ वधयोराचारनेद्विचिन्ता । ५००

८४५-८५१५ गौतमस्य गमनं, पलाशादिभिः

प्रतिपत्तिः, द्वयोः शोभा, लोकरुसा-

गमः । ५०२

८५२-८५३५ पृच्छाया अनुज्ञा ।

४५५-४५७ अतलिज्ञादि(१२) प्रश्नोद्देशः ।

८५४-८५८५ चतुःपञ्चयामयोः केशिनः

प्रश्नः, चतुर्जडवचनजडत्वादित्या गौत-

मस्तोत्तरम् । ५०३

८५९-८६४५ सखेलचिह्नक्रमः, प्रत्या-

दिमिरुत्तरम् । ५०४

८६५-८६९५ अनुज्ञायां शत्रुतत्परजनयप्रश्न

नद्यादि-
जनु, आर,
ओष, दनु,
पिण्ड, उत्त.

॥ १७९ ॥

वतरं च आलक्षणेन्द्रियवर्णादिना
५०५

८७०-८७४६ तथा पादावर्तनप्रश्नः, राग-
द्वेष्टेष्टादिना वृत्तस्य ।

८७५-८७९६ स्वोन्मूलनप्रश्नः, भववृत्त्या-
दिना वृत्तस्य । ५०६

८८०-८८४६ धर्मिनिर्वाणप्रश्नः, कृपाव्याप्ति-
मुत्तरीलवपोजलवृत्तस्य । ५०७

८८५-८८९६ दुष्टावनिग्रहप्रश्नः, मनोनिग्र-
हादिनो वृत्तस्य ।

८९०-८९४६ दुष्टावप्रश्नः, दुष्टप्रवचनादिनो-
वृत्तस्य । ५०८

८९५-८९९६ भ्रोगोचरणप्रश्नः, चरत्सम्य-
वेगधर्मद्वीपादिनो वृत्तस्य । ५०९

९००-९०४६ संसारपारगमनप्रश्नः, संसार-
नामादिभिरुत्तरस्य ५१०

९०५-९०९६ वयोनोदप्रश्नः, वित्तमालुनो-
त्तरस्य

९१०-९१५६ श्रावस्यातप्रश्नः निर्वाणदि-
नोत्तरं । ५११

९१६-९२०६ गौतमनसरजः, कैटवोयः,
समागमफलनिर्देशः, लोकसन्तोष
व्यादीनां ५१२

॥ इति केंद्रिगौतमीयाध्ययनम् २३ ॥

॥ अथ प्रपचनमात्राध्ययनम् ॥
४५८-४६२६ प्रवचने निक्षेपाः (४) । व्य-

तिरिक्ते कुत्रीर्ध्वानि भावे द्वादश-
त्रयम् । भावनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते
मानने द्रव्यम्, भावे प्रपचनमात्रः ॥

श्राव्यवननामान्वयः । ५१४

९२१-९२३६ वायव्यवननामान्वयः ५१५
९२४-९२८६ आलम्बनादि कारणेर्वा-

द्रव्यादि (४) ५१६

९२९-९३०६ अगोचारेत्सावयवविभाषा ०।

९३१-९३३६ शुद्धमिक्षादिरेषणा ५१७

९३३-९३४६ आदाननिक्षेपसमितिः ।

९३५-९३८६ अकारोदेरनापानादौ विस्तीर्णोदौ

च त्यागः समितीनामुपसंहारः, ५१८
९३९६ गुप्तिरुच्यवप्रतिष्ठा ।

९४०-९४१६ संस्मर्यादिनिवृत्ता सत्यादियुता
मनोगुप्तिः (४) तथैव वचोगुप्तिः ।

५१८

९४४-९४५६ स्वानादौ संरभादेः कायनि-
वर्तने कायगुप्तिः । ५१९

उत्तराव्य-
यने समुद्र-
पालीय रथ-
नेमीय के-
विगौतमीय
प्रवचनानि,

॥ १७९ ॥

५४६-॥ ४७॥ रामलिंगमूर्तिविशेषः
फलम् । ५२०

॥ इति प्रवचनमात्राध्ययनम् २४ ॥

॥ अथ धर्मीयाध्ययनम् ॥

४६३-४६५ यहनिष्ठाः (४) व्यतिरिक्तं द्वि-
जयश्चादि, भावे तपःसंयमयत्नता, वि-
जयसेषेष्टे जययोपसाधोरव्ययनो-

५३१

४६६-४७३ लयघोषचरित्रम् । ५२२

१४८-१५२४ मनोरमै जयघोषस्य वासाः वि-

ज्यघोषयज्ञे निभादाब्बा

९५३-९५५ ई. इस्लामाब्द

द्वैयम् । (यानकः)

१५६-१५९६ वेदयक्षादिपुरातः । (मुनिः)

23

१५०-१५२३ निवर्तमानपत्रक खरपत्र ।
(या०)

९६३-९८१ ❀ वेदाविगुलप्रादणदिसरूपम् ।

(मुनिः) ५२९

१८२-१८५३ मुनिप्रशंसा धीश्याविद्यापित्रय ।

430

०१६-०१९३३ त्रितीया गणिताभिलेखः

24

१९०९-१९१३ विजयपट्टनीमा, दूयोगोक्षस्थ ।

93

४७२-४८२ द्वयोश्चरित्रम् । ५३२

॥ इति यज्ञीयाध्ययनम् २५ ॥

॥ अयं सामाचार्यव्ययनम् ॥

४८३-४८८ सामनियेषाः (४) व्यतिरिक्ते
शर्कयदौ । मावे इच्छामिय्यादि ।

आषादनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्तं
तमनादि भाये आषादः समाचार्यः

५३३

४८९ अथयन्त्रनान्यथः ।

१९२५ दःतगोत्रिणीसगजारीकधनप्रणिना

Amount paid in cash 1000.00

138

ਫਾਈਲ: 439

११६०९८६ (१०) मागणारी विषय: ५६

००२३३ एमएचएम

(बोरो) ५३६

3. 城

637

2005 आयदा पौनीया

मन्यादि-
ओर, आर,
अनु, दनु,
पिण्ड, उपा.

१००८-१०११ यन्त्रिंशत् (४) छलं

प्राप्तानेपायम् । ५३९

१०१२-१०२८।१२ प्रतिशेगनाविपिगदरा-

नादादासम्भनि चिदासल्लाभ्याय नमः

उत्तरप्रान्त १ ५४४

१०३८॥१०४३॥
द्वयसिफयपिक्रमज

त्रिपिः पाटप्रसूणं रात्रिष्वविमग्नः

निविदा । ५५७

१०४३६ पञ्चहाड, सामानाधिकारम् ।

॥ इति गामागार्कष्ययनम् २६ ॥

॥ अग्नौ तदुदीवायनम् ॥

५९७-४९८ गण्डवुनियोगा (४) मालमल-

ॐ नमः । भगवन्महादेव । नमः

पुनः दायरा नमः आग ५४८

। १०४४-१०४५ः गंगस्य समाधिः लिख्यते-

पृष्ठसंख्या १५५०

१०४६-१०५१ ई. सत्यकामिण्ययोः समयः-

51932

१०५३-१०५४

॥ १०॥

1000

१-१०५७४३ रुद्रगज

सामावश्यः ५५४

॥ इति उलुङ्गीयाध्यायनम् २७ ॥

॥ अथ मोक्षमार्गोद्घाटनम् ॥

४२९-५०५ मोरारजीदास / (५) मरुतिदास

(श्रीगणेशाय नमः) (३) आगच्छतः

नामान्वयः । ५५५

॥ १०६ ॥ ज्ञानदिमोक्षमार्गं रुचनप्रतिष्ठा ।

443

१०६१-१०६३ ई. मार्गशीर्ष तृतीय

१०६४४४ ज्ञानपञ्चकम् । ५५७

१०६५-२०६६: मानवियो नवगणार्थः-

पल्लवः स । ५५

၁၈၇၆ ခု၊ မတ်လ ၂ ရက်

सिद्धिपूर्वकं चकार

১৩৬৩

१०३६४ १५।१७२५।

१०।११। १-०००० श्री- -

-१७९६५ आवादासुद्धामय सुमन्त्र
पदं विमानम् (१-२) मन्त्र

गाने मत्ताष्वन्वायाः (१०) सुन्दर
मत्तासिन्धुः, मत्तासिन्धुः

[illegible][illegible]

उत्तराख्य.

यने यज्ञीय

सामाचारी

सुसुकोपम्

महिलागाः

11 260 11

१०९४४ द्विविधं तपः ।

१०९५-१०९६ मोक्षप्राप्तौ ज्ञानादीनां व्या-

पारः संयमस्तपःफलं च ।

॥ इति मोक्षमार्गाध्ययनम् ॥२८॥

॥ अथ सम्यक्स्यपराक्रमाध्ययनम् ॥

५०६-५१२ सम्यस्तपपराक्रमाप्रमादरेवी-

तरागश्रवदनामानि । अप्रमादश्रुत-

निक्षेपाः (४) अध्ययनान्वयश्च ।

५७१

१३ अध्ययनोद्देशः ५७२

१४ सर्वेगर्दीनि (७३) द्वापदि ५७३

१५-८७ सर्वेग १ निर्वेद २ धर्मश्रद्धा ३ शु-

ख्या ४ऽऽलोचना ५ निन्दना ६ ग-

ईर्ष्या ७ सामायिक ८ चतुर्विदासिखव-

९ वन्दनक १० प्रतिक्रमण ११-
कायोत्सर्ग १२ प्रत्याख्यान १३ स्व-
सुखिः १४ कालग्रहण १५ प्रायश्चित्त-
१६ क्षामणा १७ स्वाध्याय १८ वा-
चना १९ प्रतिपृच्छा २० पराव-
र्त्तना २१ श्रुतेश्वा २२ धर्मक्या-
२३ श्रुताराधनै २४ काग्रमनस्त्वा-
२५ संयम २६ तपो २७ व्यवधान-
२८ सुखसाक्षा २९ प्रतिबद्धता ३०-
विविक्तकथ्यादि ३१ विनिवर्तना-
३२ सभोगो ३३ पथ्या ३४ हार-
३५ कषाय ३६ योग ३७ शरीर-
३८ सहाय ३९ भक्त ४० सद्भाव-
प्रत्याख्यान ४१ प्रसिरुत्वा ४२ वै-
यावृत्त्य ४३ सर्वगुणसंपूर्णता ४४-

वीतरागता ४५ क्षान्ति ४६ सुक्या-
४७ जैव ४८ मार्दव ४९ भाव ५०-
करण ५१ योगसत्य ५२ मनो ५३-
वचः ५४ कायगुप्ता ५५ मनो-
५६ वचः ५७ कायसमाधारणा ५८-
ज्ञान ५९ दर्शन ६० कारित्रसंप-
न्नता ६१ श्रोत्र ६२ चक्षु ६३-
घ्राण ६४ जिह्वा ६५ स्पर्शनेन्द्रिय-
निग्रह ६६ क्रोध ६७ मान ६८-
माया ६९ लोभविजय ७० भ्रम-
द्वेषमिथ्यादर्शनविजय ७१ यथायुः-
पालन ७२ सर्वहाना ७३ नां क-
लानि । ५९८

सप्तसंहारः । ५९८

८८

॥ इति सम्यक्स्यपराक्रमाध्ययनम् ॥२९॥

न्यादि-

अनु. आ.

ओप. दन.

सिद्ध. उपा.

॥ १८१ ॥

॥ अथ तपोमार्गाध्ययनम् ॥

५१३-५१६ तपोमार्गादीनां निशेषादिः ५९९

१०९८ कर्मधर्मपेक्षुल्लसः ।

१०९९-११०३ अनामयल्लटास्तद्वान्वेन,

संस्तरतिचरे ६००

११०४ पाप्माग्न्यन्तरत्पसी (६)

११०५-१११० पासं क्षपः (६) अनशने

इतररे धेनिप्रवरपनयार्गप्रसीर्णानि,

इतरस्मिन् साविचापाविचारि । ६०३

११११-११२१ क्षयमौर्ध्वं द्रव्यधेयकाळ-

भाषयार्थैः (पेदाद्वयेदायाः ६) ६०६

११२२ अष्टविष्णोचैर्यथाभिप्रायः ६०७

११२३-११२५ विष्णुआदितामः, वीरा-

सनादि, एकान्याभिः (अमेज) ६०८

११२६ क्षालस्वोपसंहारः, अध्यन्तरप्रतिष्ठा ।

११२७-११३४ सम्प्रभेदसम्प्रन्तरं तपः त-

त्तलं च । ६१०

॥ इति तपोमार्गाध्ययनम् ॥ ३० ॥

॥ अथ चरणविध्यध्ययनम् ॥

५१७-५२१ चरणविध्योनिशेषाः भावचरण-

निधिनान्नाभिप्रायः । ६११

११३५-११५५ चरणविधिप्रतिष्ठा, एका-

दित्रयक्षिप्तदन्तानामि विरती राग-

द्वेषादीनि तत्तलं च । ६१८

॥ इति चरणविध्यध्ययनम् ॥ ३१ ॥

॥ अथ प्रमादस्यनाध्ययनम् ॥

५२२-५२३ प्रमादनिशेषाः (४) ज्यतिरिक्ते

मयाद्याः, मावे विख्याः ।

५२४-५२५ स्थाननिशेषाः (१५) भावप्रमा-

देन संख्याभावस्थानाभ्यां पाधिकारः ।

६२०

५२६-५२७ आद्यान्तजिनयोः प्रमादोऽद्वेष्टा-

ग्रान्तदुहूषे ।

५२८ प्रमादिनोऽन्तसंसारः ।

५२९ ज्ञानदर्शनपादित्रिविधप्रमादः ६२१

११५६-११५८ मोक्षकथनप्रतिष्ठा मोक्ष-

कारणानि तत्कारणानि च (पुद्गले-

वादीनि) ६२२

११५९ सिवाहारनिपुणसहायविवेकनिष्ठे-

तसमाधिकामो मुनिः । ६२३

११६० कामासङ्गेनकाङ्क्षी ।

११६१-११६३ मोहकृण्वोर्भोक्तकर्मणोः

॥ १८१ ॥

सम्यक्त्व-

तपोमार्गच-

रणाप्रमादा-

ध्ययनानि

२९-३२,

नयादि.
ओप.आन.
अनु. ददा.
पिडा.उच.
॥ १८२ ॥

१३०७-११७ छेदयाग्यपरमार्गणिमाः ।

६५५

१३१३-२३३ छेदयाग्यपरमार्गणि ६५७

१३१४-४६६ छेदयाग्यपरमार्गणि, सामान्येन

गलपक्षया च जगन्मोक्षस्य स्थितिः,

६६१

१३१७-१३४८६ छेदयाग्यो गतिः ।

१३१९-५२६ छेदयाग्यपरमार्गणिपरमार्गोप-

पातः, चित्तवृत्तानुसारेण गते स्थिते च,

उपसंहारस्य । ६६२

॥ इति छेदयाग्यपरमार्गः ॥ ३४ ॥

॥ अयानपारमार्गोऽध्ययनम् ॥

५४१-५५१ अयानपारमार्गोऽध्ययनः (४)

६६३

१३५३-७३६ उपोद्घातः, सप्तशतवसत्यप-

चनपत्त्यागुद्घातः, सप्तशतवसत्यप-

सद्ध्ययननिर्गमत्वमैश्वर्यः । ६६८

॥ इत्यनपारमार्गोऽध्ययनम् ॥ ३५ ॥

॥ अय जीवाजीवविमलपक्ष्ययनम् ॥

३१-४५५ उपसंहारदितिलपम् । ६७०

५५२-५५९ जीवाजीवविमलपक्ष्ययनः निधेयाः

(४) माये (१०-१०-६) ६७१

१३७४-१३७५६ उपोद्घातः, संलयः फलं

लोकालोकद्वयं च ।

१३७६६ इत्युक्तं फलमार्गः प्रारम्भः । ६७२

१३७७-१३७९६ इत्युक्तं जीवमार्गः

१३८०-१३८२६ अयनजीवस्य क्षेत्रफल-

प्रारम्भः ६७३

१३८३-१८७६ तृतीयो भेदाः, क्षेत्रं का-

लम् । ६७५

१३८८-१४१९ वर्णान्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य-

मायः । ६७७

१४२०६ अजीवस्य विमलपक्ष्ययनः, जीवस्य

प्रारम्भः ।

१४२१-१४२३६ सिद्धमेवाः । (लीमुक्ति-

यादः) ६८३

१४२४-१४७६ अयानपारमार्गोऽध्ययनः

संख्या । ६८४

१४२८-१४२९६ अयनपारमार्गोऽध्ययनः ।

१४३०-१४३१६ सिद्धमेवाः ।

नवसंख्यं च । ६८५

१४३५-१४३६६ सिद्धमेवाः ।

॥ १८२ ॥

कर्मप्रकृति-

लेखन-

गारजीव-

जीवविम-

सिद्धमेवा-

३३-३६.

नपणाहनाजन्मसिद्धिर्गानादियुक्त-

तं च । ६८७

१४४००० सिद्धानां क्षेत्रस्वरूपे ।

१४४१-४२० संसारिणस्वस्थावयवः पृथि-

व्यजनसवयविना स्थापना ६८८

१४४३-१४४९० पृथिव्यां सूक्ष्मवायवो पर्णो-

त्तापर्णादौ वायवे स्वरूप (७) एतौ ६८९

१४५०-१४५६० सूक्ष्माः सर्पलोकेऽनाना-

त्वाः वायव्ये चो, स्थितिश्च पृथिव्याः,

पर्णादिभेदाः । ६९०

१४५७-१४६४० अण्वयैऽपि भेदस्थित्या-

युग्मोर्भिभेदाः । ६९१

१४६५-१४७०० पनसतोः प्रत्येकस्याचा-

रणप्रभेदाः सूक्ष्मस्वरूपं स्थित्यायुर्व-

णोर्भिभेदाः । स्वारोपसंहारः, प्रस-

कयनप्रतिष्ठा, तेजोयुद्धीन्द्रियाचा-

ग्रसाः । ६९३

१४८१-१४८९० तेजसो भेदाः कालस्थित्या-

युग्मोर्भिभेदाश्च । ६९४

१४९०-९८० वायोभेदकालस्थित्यायुर्वगोर्भि-

भेदाश्च । ६९५

१४९९-१५१०० द्वीन्द्रियाचा वृद्धारवसाः,

द्विध्रिचतुरिन्द्रियनारकषधेन्द्रियति-

र्येष्टमनुष्यचतुर्विधदेवानां भेदवा-

लस्थित्यायुर्वगोर्भिभेदाः । ७०५

१५२०-१५२१० सिद्धसंसारिणो जीवाः,

रूपरूपिणोऽजीवाद्यान् धृत्या अ-

द्याय संयमे रमेत । ७०५

१५२२-२७०० अतुपातिवसंयमस्य द्वादश-

वर्षाणि संलेखना ७०७

१५२८-३१० कन्दर्पोदिका अशुभा भावनाः

फलं च तासां । ७०८

१५३२-१५३३० जिनवचनकरणाकरणयोः

फलम् । ७०९

१५३४० आलोचनाध्वने बहुगमज्ञानादि

कारणम् ।

१५३५-३९० कन्दर्पोदिभावनानां स्वरूपं त-

त्फलं च ७१२

१५४०० शास्त्रोपसंहारः ।

५६०-५६२ पारतामिनो भव्याः, अभव्या न

तदधीयेत शास्त्रम् । ७१३

॥ इति जीवाजीवविमर्शध्वयनम् ॥३६॥

॥ इत्युत्तराध्ययनपट्टद्वयनिययानुक्रमः ॥

श्रीनन्दी-अनुयोगद्वार-आवश्यक-औषधनिर्मुक्ति-दशवैकालिक-पिण्डनिर्मुक्ति-उपराध्यवनाशो-सूत्रसूत्र-
गाथानिर्मुक्तिमूलभाष्यभाषाणामकारादिक्रमः अंकशुद्धिः लघुदृश्य विषयानुक्रमः समाप्तः ।

(नन्दादीनां अकारादिक्रमयुतो विषयानुक्रमः समाप्तः)

इति श्री-आगमोद्भवसमिति ग्रन्थोद्धारं ग्रन्थाङ्कः ५५.